

गांधी अभिनंदन-ग्रंथ

संपादक
सोहनलाल दिवेदी

भूमिका-लेखक
सर सचंपल्लो राधाकृष्णन

3GK
152H4D

प्रकाशक
श्रवध-पब्लिशिंग-हाउस, लखनऊ

3G12

5328

152H4D

Dwivedi, Sohan Lal
Gandhi abhinandan-
ganth

A. 19.

3350

362
152H4D

5328

● ● ● ● ●

[illegible]

11-5-0



गांधी अभिनंदन ग्रंथ

महात्मा जी के संबंध में लिखित अनेक भाषाओं के
प्रतिनिधि कवियों का काव्य-संग्रह



संपादक
सोहनलाल द्विवेदी

भूमिका-लेखक
सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन



गांधी-अभिनंदन-ग्रंथ कार्यालय,
लखनऊ.

3Gx
152H4D

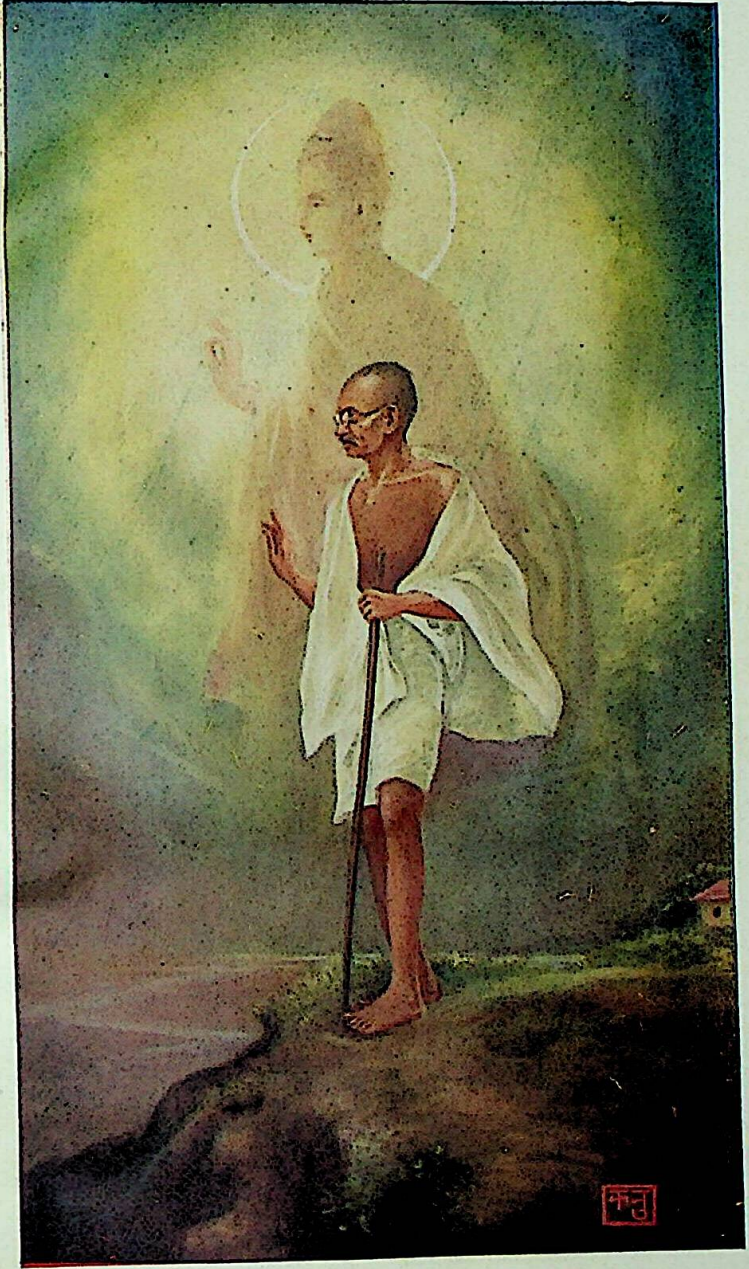
~~1572~~

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASA JVANAMANDIR
LIBRARY.

Jangamwadi Math, VARANASI

Acc. No. 3300

~~1572~~ 5328



बोधिसत्त्व-कथा पुण्या बहूनां श्रुतिमागता,
साम्प्रतं बोधिसत्त्वस्तु परं त्वय्येव दृश्यते ।



२६/१०/४४

माई सोहनलालजी,

आपकी कृति के गुण-दोष
बारे में मैं क्या कहूँ? कान्यों की
परीक्षा करने की मेरे में कोई योग्यता नहीं पाता। मेरी
स्तुति में जो कान्य लिखे गए हैं,
उस बारे में मैं क्या कह सकता हूँ? हाँ, इतना मैं कह सकता हूँ सही,
आपने परिश्रम काफ़ी उठाया है। कोई भी शुभ परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता है।

२६-१०-४४

बापू का आशीर्वाद

सेवाग्राम

माई सोहनलालजी,

आपकी कृति के गुण-दोष बारे में मैं क्या कहूँ? कान्यों की परीक्षा
करने की मेरे में कोई योग्यता नहीं पाता। मेरी स्तुति में जो कान्य लिखे गए हैं,
उस बारे में मैं क्या कह सकता हूँ? हाँ, इतना मैं कह सकता हूँ सही, आपने
परिश्रम काफ़ी उठाया है। कोई भी शुभ परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता है।

बापू के आशीर्वाद

PREFACE

Sir Sarvapalli Radhakrishnan

We are living in an age similar to the one in which the Romans were at the time of the barbarian invasions. Tacitus in the Preface to his Histories writes : "We are entering upon the history of a period rich in disasters, gloomy with wars, rent with seditions, and savage in its very hours of peace, there was defilement of sacred rites, adulteries in high places, the sea was crowded with exiles, island rocks drenched with murder. All was one delirium of hate and terror ; slaves were bribed to betray their masters, freed men their patrons ; he, who had no enemy was destroyed by his friend." The real cause of the present chaotic condition of the world is a new paganism which has displaced the ancient religious cultures. The paganism which says not : "Blessed are the meek for they shall inherit the earth", but "blessed are the strong for they possess the earth." The remedy for the present condition is a revival of the true spirit of religion. Gandhi appeals to us to adopt it. He proclaims that the law of love is not alien to human nature, that it will make for freedom and social progress, if we let love influence our social consciousness. War is a crime. It is opposed to civilised life, it is unworthy of human beings. It is false to suggest that it is a blessing in disguise that it will help us to realise noble aims. Whatever good ends are aimed at by war, can be achieved by the application of peaceful methods. In a world sunk in savagery, Gandhiji stands up for the adoption of the spirit of true love.

To India his message is the same. Our political freedom can be won, not by catch-words, but by constructive work, by the development of the capacity to work together, face difficulties, and dispose of them in a spirit of charity and love. His name will continue to be honoured as long as civilisation lasts. This book is a collection of poems contributed by writers in different languages, paying their homage to the great personality of Mahatma Gandhi.

भूमिका

सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन

बर्बरों के आक्रमणों के समय में जिसप्रकार रोमन रहते थे, आज हम उसी प्रकार के युग में रह रहे हैं। टेसीटस ने अपने 'इतिहासों' की भूमिका में लिखा है— 'हम ऐसे ऐतिहासिक युग में प्रवेश कर रहे हैं, जो सर्वनाश से समृद्ध है, युद्धों से धूमिल है, विजयों से विदीर्ण है, और जब शान्ति स्थापित होना चाहिए, तभी अमानुषिकता से आक्रान्त है। उस समय पवित्र अनुष्ठान अपवित्र किए जाते थे, प्रतिष्ठित घरानों में व्यभिचार होते थे, देश-निर्वासितों से समुद्र भरा पड़ा था, और द्वीपों की गिरि-कन्दराएँ हत्याओं से रँगी पड़ी थीं। यह सभी कुछ घृणा और विभीषिका का सन्निपात था। स्वामियों और संरक्षकों को धोखा देने के लिए दस्यु और मुक्त-दासों को घूस दी जाती थी। जिसके कोई शत्रु न होता, उसे उसके मित्र ही वध कर डालते थे।' आज के संसार की अशान्ति का मूल कारण एक नई बर्बरता है, जिसने प्राचीन धार्मिक संस्कृतियों को पदच्युत कर दिया है। वह बर्बरता जो यह तो कहती नहीं कि 'भाग्यशाली तो वे हैं जो दीन हैं, क्योंकि पृथ्वी का उत्तराधिकार उन्हींका है'; बल्कि यह कहती है कि 'भाग्यशाली तो सशक्त हैं क्योंकि, धरती उनके अधिकार में है।' आज की इस परिस्थिति के उद्धार का उपाय एक ही है और वह यह कि धर्म की सच्ची भावना का प्रवर्तन हो। गांधीजी इस धार्मिक भावना को ग्रहण करने के लिए हमें प्रेरणा देते हैं, इसीलिए वे हमें मान्य हैं। गांधीजी की घोषणा है कि प्रेम मनुष्य की प्रकृति के विरुद्ध नहीं, बल्कि, यदि हम अपनी सामाजिक चेतना के ऊपर प्रेम का प्रभाव पड़ने दें तो इसीसे हम स्वतंत्रता और सामाजिक उन्नति प्राप्त कर सकेंगे। युद्ध अपराध है। यह सभ्य-जीवन का विरोधी है। यह मानव को शोभा नहीं देता। यह कहना सरासर झूठ है कि युद्ध प्रच्छन्न वरदान है, और इससे हमारे उदात्त उद्देश्यों की पूर्ति होती है। जो उद्देश हम युद्ध के द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं, वे तो शान्ति-मय साधनों से भी प्राप्त हो सकते हैं। बर्बरतापूर्ण संसार में गांधीजी ही सच्चे प्रेम के तत्व को ग्रहण करने में अग्रगण्य हैं।

भारतवर्ष के लिए उनका यही संदेश भी है। केवल कोरे नारे लगाने से नहीं, बल्कि, रचनात्मक कार्यक्रमों से, साथ मिलकर कार्य करने की शक्ति के विकास से, कठिनाइयों से लोहा लेने से, और जो सफलता हमें प्राप्त हो, उसे प्रेम-पूर्वक उदारता से आपस में बाँट देने ही से हमें राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त हो सकती है। जब तक सभ्यता का चिह्न संसार में रहेगा, गांधीजी का नाम आदर के साथ स्मरण किया जायगा।

यह ग्रन्थ उन्हीं महात्मा गांधी के महान व्यक्तित्व के प्रति विभिन्न भाषाओं के कवियों की काव्य-श्रद्धांजलि है।

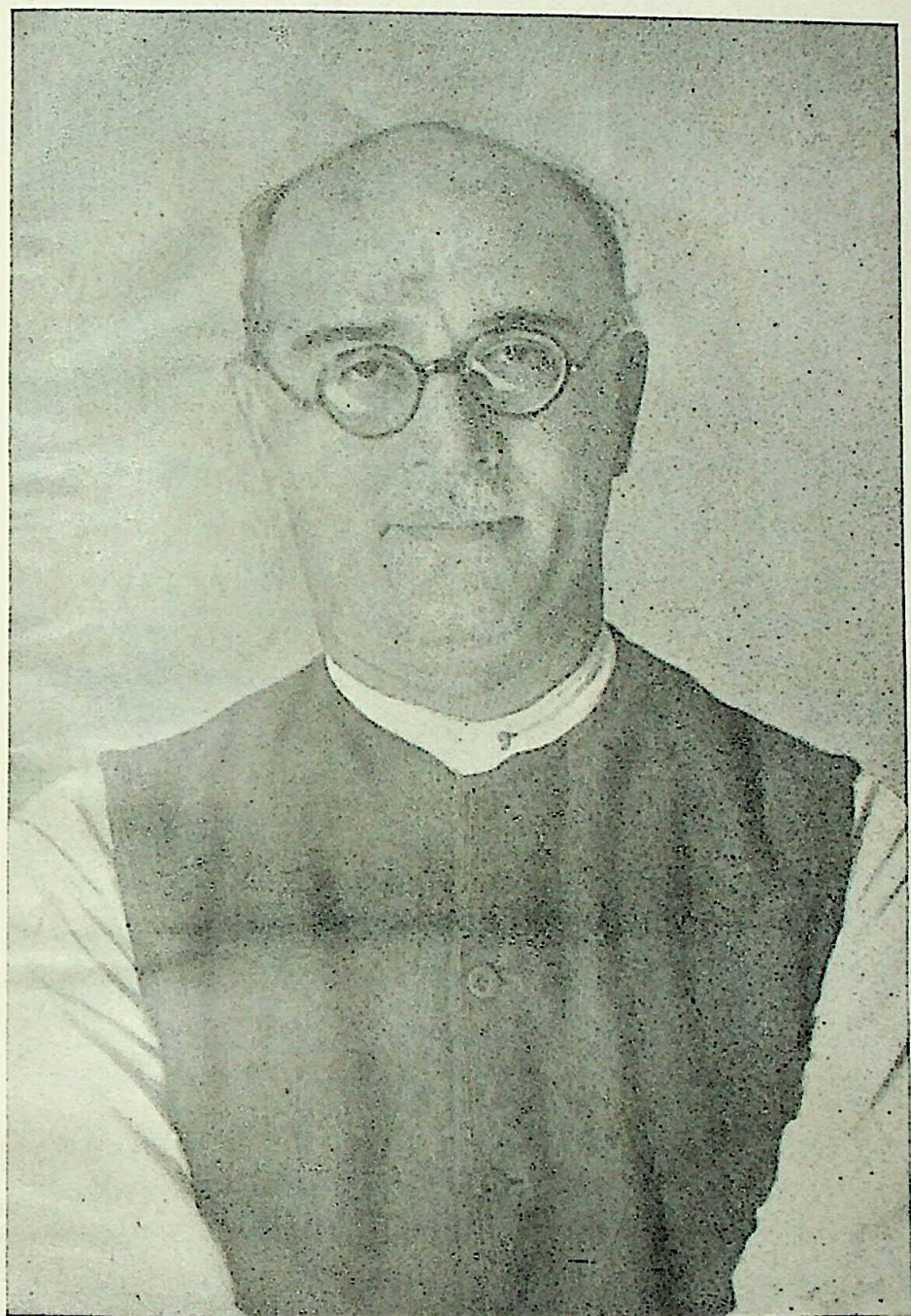
ग्रन्थ के संरक्षक

श्री घनश्यामदास जी बिड़ला का वक्तव्य

गांधीजी की ७५वीं जन्मतिथि के उपलक्ष में तरह तरह के आयोजन हो रहे हैं। कस्तूरबा स्मारक निधि यह एक बृहत् आयोजन है। किन्तु द्विवेदीजी ने इस अभिनंदन-ग्रन्थ का संपादन करके इस अवसर पर गांधीजी के साहित्यिक-अभिनंदन के साथ साथ देशवासियों को भी एक नई कृति दी है। गांधीजी के प्रति भिन्न-भिन्न उपासकों की इसमें श्रद्धांजलि है। और सबसे बड़ी बात यह है कि इसकी सारी आय महादेव-स्मारक कोष में दी जायगी।

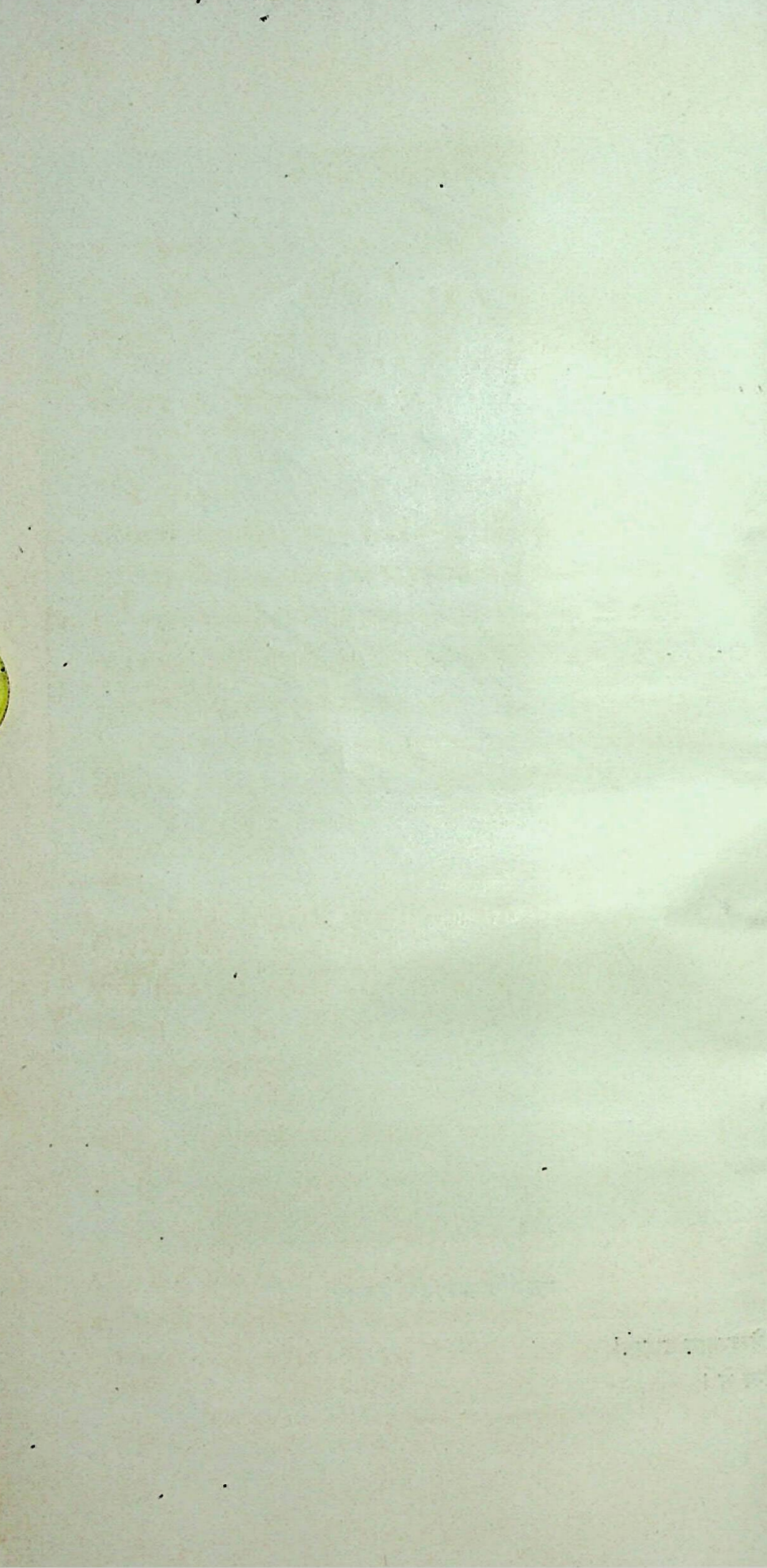
द्विवेदीजी का विचार है कि कुछ प्रतियाँ एक एक हजार में, कुछ पाँच-पाँच सौ में, कुछ एक एक सौ में बेची जायँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जिनके पास शक्ति है, वे ऊँची कीमत देकर इस पुस्तक को खरीदेंगे, क्योंकि जहाँ इसके पाठक एक तरफ पवित्र साहित्य से उपवीत होंगे, दूसरी ओर महादेव भाई कोष को सहायता पहुँचाकर पुण्यलाभ करेंगे।

महापुरुषों के तनिक से सम्पर्क से भी पुण्य की वृद्धि होती है। इसलिए, गांधीजी और महादेव भाई के सम्पर्क से इस ग्रंथ द्वारा जो कुछ पुण्यलाभ हो, उससे हमारा सबका कल्याण हो, ऐसी हम सब प्रार्थना करें।



स्वर्गीय महादेव देसाई

चित्र: 'हिन्दुस्तान टाइम्स'
के सौजन्य से।



ग्रंथ के हितैषियों की सूची

जिन्होंने विशेष मूल्य में ग्रन्थ लेकर, श्री महादेव स्मारक-निधि की योजना सफल बनाई है—

१००१ रु०

श्री घनश्यामदास जी बिड़ला, कलकत्ता

५०१ रु०

सर्वश्री सर बट्टीदास गोयनका कलकत्ता, श्री मूलचन्द्र जी अग्रवाल, कलकत्ता, श्री मिहिरचन्द्र जी घीमान कलकत्ता, श्री आर० के० भुवालका, कलकत्ता, भाई चिम्मनलाल वाडिया कलकत्ता, श्री मोतीलालजी लाठ कलकत्ता, श्री रामेश्वरजी नेपाली कलकत्ता, श्री घनश्यामदासजी लाडेलका, कलकत्ता, श्री मोहनभाई, कलकत्ता, श्री भागीरथजी कनोड़िया, कलकत्ता ।

१०१ रु०

सर्वश्री पंडित अमरनाथ जी झा, कुलपति, प्रयाग-विश्वविद्यालय, श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन, इलाहाबाद, श्री रमेशकुमार अवधेशकुमार, ठाकुरद्वारा, मुरादाबाद, श्री ब्रजकृष्ण चौंदीवाला, दिल्ली, श्री महन्त शान्तानंदनाथजी हरिद्वार, श्री हीरालालजी खन्ना, प्रिंसिपल, सनातनधर्म कालेज कानपुर, श्री रामरतन गुप्त एम० एल० ए० (केन्द्रीय) कानपुर, सेठ अमरचंदजी उरई, श्री ओमवतीजी लाहौर, श्री यतीशप्रसाद पाठक, लाहौर, श्री चिमन भाई दादू भाई, गुजरात, श्री वल्लभदासजी मोदी, एडवोकेट बंबई, श्री एम० एम० रामाराव बंबई, श्री सुखवरन सुराना, चूरू, श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल, वर्धा, श्री बी० एन० व्यास, कलकत्ता, श्री राजा यादवेन्द्र दत्त दुबे, जौनपुर, श्री कृष्णचन्द्र ब्रजकिशोर बिन्दकी यू० पी०, सेठ राजाराम, बिन्दकी यू० पी०, श्री सरदार गुरुबख्शसिंह लखनऊ, श्री पोखरमल विश्वंभरदयाल, लखनऊ, श्री निर्मलचंद्र चतुर्वेदी एडवोकेट लखनऊ, श्री विष्णुनारायण भार्गव, लखनऊ, श्री राजराजेश्वर भार्गव, लखनऊ, श्री भृगुराज भार्गव, लखनऊ, श्री सोहनलाल द्विवेदी, लखनऊ ।

शुभ कामनाएँ

पंडित अमरनाथजी भा

भारतवासियों की ईश्वर से प्रार्थना है कि महात्माजी शतायु हों, और “शतायुर्वै पुरुषः” वाक्य सिद्ध हो।

माननीय श्री पुरुषोत्तमदासजी टंडन

पूज्य महात्मा गांधी हमारे देश की अनुपम विभूति हैं। उनको पाकर हम अपनी दरिद्रता में भी भाग्यवान हैं। देश के हिन्दू-मुसलमान के, ब्राह्मण और हरिजन के, बड़े-छोटे सब अंशों के,—वह वास्तविक स्नेहपुञ्ज ‘बापू’ हैं। साधारण रीति से पचहत्तर वर्ष की आयु में मनुष्य क्षीणशक्ति हो जाता है, किन्तु अपने बापू की कल्पना हम सशक्त महारथी के रूप में करते हैं। उनकी बहुत आवश्यकता है। हमें इस आयु से सन्तोष नहीं। उनके १०० वर्ष पूरे होने की लालसा हमारे हृदय में भरी है।

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ, हमारी इस लालसा का प्रतीक होगा। सोहनलालजी की यह संकलित कृति हिन्दी-साहित्य की मूल्यवान सम्पत्ति होगी।

माननीय श्री सम्पूर्णानन्दजी

मैं गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ के निकालने के प्रास्तव का स्वागत करता हूँ। गांधी जी के सम्बन्ध में बहुत-सा पद्यात्मक वाङ्मय जमा हो गया है। हम उसके किसी-किसी रत्नकण को कभी-कभी देख भी लेते हैं। परन्तु, ऐसी रचनाओं के संग्रह का भविष्यत् में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक दृष्टि से बहुत मूल्य होगा।

माननीय श्री गोपीनाथ बारदोलाई

मेरे लिए तो कोई भी कविता इतनी ऊँची नहीं हो सकती, जो महात्मा जी के अन्तर की सहृदयता को व्यक्त कर सके, न कोई ऐसी भाषा ही समृद्ध जान पड़ती है जो गांधी जी के जीवन की गरिमा को लिख सके। हाँ, भाषा और छंद महात्मा जी को काव्य का आलंबन बनाकर अवश्य गौरवान्वित हो सकते हैं। परमात्मा करे, प्रत्येक वर्ष इस ग्रन्थ को प्रकाशित करने के अनेक अवसर मिलें।

सम्पादकीय

‘गान्धी अभिनन्दन ग्रंथ’ अपने पाठकों के हाथ में देते हुए हमें परम हर्ष हो रहा है।

इस ग्रंथ में अन्तर्प्रेरणा से लिखी हुई रचनायें ही संकलित की गई हैं, वहिर्प्रेरणा से लिखाकर नहीं। अतः, यह अपने सच्चे अर्थ में अभिनन्दन-ग्रंथ है।

हमें यह लिखते हुए गर्व होता है कि संसार की किसी भी भाषा में ऐसा ग्रंथ आज तक नहीं प्रकाशित हुआ, जिसमें संसार के सर्वश्रेष्ठ पुरुष के संबंध में इतनी भाषाओं के इतने कवियों की कविताएँ एक स्थान में संगृहीत की गई हों।

यह सौभाग्य राष्ट्रभाषा हिन्दी को प्राप्त हुआ है, अतः, यह प्रत्येक राष्ट्रभाषा-प्रेमी के गर्व का विषय है।

अनेक भाषाओं के प्रथम श्रेणी की एवं प्रतिनिधि कवियों की कवितायें इसमें प्रकाशित करने की हमें सफलता मिली है, इससे ग्रंथ का महत्त्व समझा जा सकता है।

हमारा दृढ़ विश्वास है कि इस काव्य को देश के हृदय में स्थान मिलेगा, तथा श्रद्धा एवं अनुराग से पढ़ा जायेगा।

मराठी भाषा के ‘तिलक’ के ल के स्थान में ‘ल’ प्रयुक्त किया गया है, दक्षिणी भाषाओं में भी। इसीप्रकार, तामिल भाषा के ழ zha के उच्चारण के लिए ஷ के नीचे बिंदु लगाया गया है।

मूल और अनुवाद को हमने यथासाध्य शुद्ध तथा प्रामाणिक छापने का प्रयत्न किया है; किन्तु, जिसमें अनेक भाषायें छापी गई हों, उसमें कहीं भूल न रह गई हो, ऐसा असंभव है। अनुवाद कहीं विस्तार से है, कहीं भावानुवाद।

हम विशेष रूप से उन पत्र के व्यवस्थापकों एवं संपादकों को धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने ग्रंथ की योजना को समय समय पर प्रकाशित करके हमारा हाथ बटाया है।

उन बन्धुओं तथा बहनों की प्रशंसा किन शब्दों में की जाय, जिन्होंने ऊँचे मूल्य में ग्रंथ लेकर श्री महादेव-स्मारक-निधि को सफल बनाया है।

अपने परमहितैषी श्री घनश्यामदासजी बिड़ला को धन्यवाद देने का मुझमें साहस नहीं। उनकी सद्भावना ही इसमें फलफूल रही है।

श्री भागीरथजी कनोड़िया तथा जिन अन्य मित्रों ने हमें इसकी योजना में किसी प्रकार भी सहायता दी है, हृदय से हम उनके कृतज्ञ हैं।

सोहनलाल द्विवेदी

संपादक-मंडल तथा परामर्श-दाता

संस्कृत	पं० महादेव शास्त्री, कवि-चक्रवर्ती,
हिंदी	अध्यक्ष संस्कृत-विभाग, काशी विश्वविद्यालय
उर्दू	श्री मैथिलीशरणजी गुप्त
गुजराती	श्री भूवेरचंद मेघाणी
बंगाली	पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी, शान्ति-निकेतन
मराठी	डा० माधवगोपाल देशमुख एम० ए०, पी-एच० डी०
राजस्थानी	श्री नरोत्तम गोस्वामी, बीकानेर
तामिल	दक्षिण हिंदी-प्रचार सभा, मद्रास
तेलुगू	
मलयालम	
कन्नड़	कर्नाटक साहित्य सभा, हुबली
चीनी	शान्तिनिकेतन
अंग्रेजी	प्रो० एन० के० सिद्धान्त, लखनऊ विश्वविद्यालय

अनुवादक-मंडल

संस्कृत	पंडित लक्ष्मीकान्त शास्त्री, साहित्याचार्य
बंगाली	पंडित हजारीप्रसाद द्विवेदी, शास्त्राचार्य
गुजराती	श्री शंकरदेव विद्यालंकार
मराठी	श्री र० रा० खाडेलर 'अधिकार' लखनऊ
तामिल	दक्षिण हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
तेलुगू	
मलयालम	
कन्नड़	कर्नाटक-साहित्य-संघ, हुबली
चीनी	शान्तिनिकेतन, बंगाल
अंग्रेजी	पंडित लक्ष्मीनारायण मिश्र बी० ए० आचार्य हिन्दी विद्यापीठ, प्रयाग

कवि नामानुसार क्रम सूची

संस्कृत

संख्या		पृष्ठ
१	श्री विधुशेखर भट्टाचार्य	१
२	पंडित महादेव शास्त्री	२
३	पंडित गोपाल शास्त्री	३
४	श्री भट्ट मथुरानाथ शास्त्री	३
५	„ हरिदत्त शर्मा शास्त्री	४
६	„ लक्ष्मीकान्त शास्त्री	४
७	„ नारायण शास्त्री खिल्ले	५
८	„ विद्येश्वरीप्रसाद शास्त्री	५
९	श्रीमती क्षमाराव विदुषी	६
१०	श्री ईशदत्त शास्त्री	७
११	„ वादरायण	७
१२	„ स्वामी भगवदाचार्य	८
१३	„ भदन्त शान्ति भिड्ड	८

हिन्दी

१	श्री जगन्नाथदास 'रत्नाकर'	९
२	„ पंडित सत्यनारायण कविरत्न	१०
३	„ सुंशी अजमेरी	११
४	„ पंडित अयोध्यासिंह उपाध्याय	१२
५	„ मैथिलीशरण गुप्त	१३
६	„ लोचनप्रसाद पांडेय	१३
७	„ डा० रामप्रसाद त्रिपाठी	१४
८	„ माखनलाल चतुर्वेदी	१५
९	„ पंडित बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	१६
१०	„ सियारामशरण गुप्त	१७
११	„ सुमित्रानंदन पंत	१८
१२	श्रीमती महादेवी वर्मा	२१
१३	„ सुभद्राकुमारी चौहान	२३
१४	श्री डा० रामकुमार वर्मा	२४
१५	„ पं० उदयशंकर भट्ट	...

संख्या		पृष्ठ
१६	श्री दुलारेलाल भागवत	२४
१७	„ 'दिनकर'	२५
१८	श्रीमती तोरन देवी शुक्र 'लली'	२६
१९	„ तारा पांडेय	२७
२०	श्री जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'	३१
२१	„ 'केसरी'	३२
२२	„ गोपालसिंह 'नेपाली'	३३
२३	„ 'बच्चन'	३५
२४	„ ज्वालापाद ज्योतिषी	३८
२५	„ अंचल	३९
२६	„ केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'	४०
२७	„ कुँवर चंद्रप्रकाशसिंह	४१
२८	„ विश्वनाथप्रसाद	४२
२९	„ पांडेय नमर्देश्वरसहाय	४३
३०	„ राजेश्वर गुरु	४४
३१	„ कृष्णचंद्र शर्मा	४४
३२	„ निरंकार देव	४५
३३	„ श्रीमन्नारायण अग्रवाल	४५
३४	„ रामनाथ गुप्त	४६
३५	„ नरेशकुमार	४७
३६	„ रामाधार त्रिपाठी 'जीवन'	४८
३७	„ राजीव सक्सेना	४८
३८	„ मोहन एल० गुप्त	४९
३९	„ रामदयाल पांडेय	५१
४०	„ सुधीन्द्र एम० ए०	५२
४१	„ 'रंग'	५३
४२	„ गंगाप्रसाद 'कौशल'	५४
४३	„ रामेश्वरप्रसाद बी० ए०, एल-एल० बी०	५५
४४	„ विश्वंभरनाथ	५६
४५	„ लक्ष्मीनारायण मिश्र	५७
४६	„ रामावतार यादव 'शक्र'	५८
४७	„ नरेन्द्र शर्मा	५८
४८	„ गोपीकृष्ण शर्मा	५८

संख्या		पृष्ठ
४६	श्री रामनरेश त्रिपाठी	५६
५०	„ सोहनलाल द्विवेदी	५६
	उर्दू	
१	श्री महाकवि 'अकबर'	६१
२	„ 'सीमाव' अकबराबादी	६१
३	„ अबू सईद बङ्गमी	६२
४	„ रामलाल वर्मा	६३
५	„ गोपीनाथ 'अमन'	६५
६	„ 'नसीम' अमरोहवी	६६
७	„ मेहरलाल 'ज़िया'	६८
८	„ सलीम नाल्की	६८
९	„ ब्रजकृष्ण गंजूर	७०
१०	„ 'बिस्मिल' इलाहाबादी	७१
११	„ मोहनलाल 'क्रमर' अम्बाला	७२
१२	„ मनोहरलाल 'शबनम'	७३
१३	„ अवधकिशोरप्रसाद 'कुरुता'	७४
१४	„ जगेश्वरप्रसाद 'खलिश' गया	७५
१५	„ सागर निज़ामी	७६
	बंगला	
१	श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर	७७
२	„ सत्येन्द्रनाथ दत्त	७८
३	„ बुद्धदेव वसु	८५
४	„ मोहितलाल मजुमदार	८६
५	„ प्रभातमोहन बंधोपाध्याय	८८
६	„ चपलाकान्त भट्टाचार्य	८९
७	„ यतीन्द्रमोहन बागची	९२
८	„ सजनीकान्त दास	९३
९	„ सावित्रीप्रसन्न चट्टोपाध्याय	९४
१०	„ निर्मलचन्द्र चट्टोपाध्याय	९५
११	„ विजयलाल चट्टोपाध्याय	९५
१२	„ विवेकानन्द मुखोपाध्याय	९६
	गुजराती	
१	श्री अरदेशर फरामजी खबरदार	९७
२	„ ऋवेरचन्द्र मेघाणी	१००

संख्या

	पृष्ठ
३ श्री ज्योत्स्ना शुक्ल	१०१
४ „ सुंदरजी गो० बेटाई	१०२
५ „ स्नेहरश्मि	१०३
६ „ हरिहर प्रा० भट्ट	१०४
७ „ उमाशंकर जोशी	१०५
८ „ सुन्दरम्	१०७
९ „ ललित	१०८
१० „ मस्तमयूर	११०
११ „ कोलक	११०

मराठी

१ श्री भास्कर रामचन्द्र तांबे	१११
२ „ डा० माधव ज्यूलियन् मा० त्रि० पटवर्धन	११२
३ „ साने गुरुजी	११४
४ „ आनन्दराव कृष्णाजी टेकाडे	११६
५ „ नारायण केशव वेहेरे	११६
६ „ विष्णु भिकाजी कोलते	१२०
७ „ प्रभाकर दिवाण	१२१
८ „ अज्ञात	१२२
९ „ विठ्ठलराव घाटे	१२२
१० „ ना० ग० जोशी	१२४
११ „ प्रभाकर माचवे	१२७
१२ „ डा० माधवगोपाल देशमुख	१२८

उडिया

१ श्री लक्ष्मीकान्त महापात्र	१२६
२ „ गुरुचरण परिजा	१३०
३ „ नित्यानन्द महापात्र	१३१

मैथिल

श्री नर्मदेश्वर झा	१३४
--------------------	-----

राजस्थानी

१ श्री नाथूदान महियारिया	१३६
२ „ मातादीन भगेरिया	१३६

सिंधी

१ श्री किशनचंद तीरथदास खतरी 'बेवस'	१३७
२ „ श्रीकृष्ण कृपालानी	१३६

संख्या	तामिल	पृष्ठ
१ श्री सुब्रह्मण्य भारती	...	१४०
२ „ रामलिंगम पिल्ले	...	१४१
३ „ श्रीराम	...	१४२
	तेलगू	
१ श्री मंगिपूर पुरुषोत्तम शर्मा	...	१४३
२ „ बसवराज अय्याराव	...	१४३
३ „ ऊ० कोंडय्या	...	१४४
४ „ सीतारामांजनेय शास्त्री	...	१४४
५ „ श्री	...	१४५
	मलयालम	
१ श्री नारायण राव वल्लतोल मेनन	...	१४६
२ „ पालानारायण नायर	...	१४८
	कन्नड़	
१ श्री मारा शामण्ण	...	१४९
२ „ ईश्वर सणकल्ल	...	१५१
३ „ गोविंद पाई	...	१५२
४ „ गोविंद	...	१५३
	कनारसी	
श्री सुरकुन्द अय्याजी राव	...	१५४
	चीनी	
१ श्री उ शिऔ लिङ्	...	१५५
२ „ चुआङ्, यूङ्	...	१५५
	अंग्रेजी	
१ श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर	...	१५७
२ श्रीमती सरोजिनी नायडू	...	१५८
३ श्री हुमायूँ कबीर	...	१५८
४ श्रीमती मेरी सीग्रोस्त	...	१६०
५ श्री वेंजिमिन कोलिन्स डडंबरी	...	१६१
६ „ हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय	...	१६२
७ „ एल० के० डूंगर जीनेट	...	१६२
८ „ जीनेट टाम्पकिन्स	...	१६३
९ „ एल० एन० साहू	...	१६४
१० „ साधु टी० एल० वासवानी	...	१६५
११ „ यान नागूची	...	१६७

आभार

श्री नंदलाल बोस, श्री रविशंकर रावल, श्री कनु देसाई, श्री कुमारिल स्वामी, श्रीमती महादेवी वर्मा तथा श्री कनु गांधी जैसे प्रख्यात कलाकारों ने अपने अमूल्य चित्रों को ग्रन्थ में प्रकाशनार्थ देने की कृपा की है, एतदर्थ हम अनुग्रहीत हैं ।

बापू के चरणों में



शुभाशंसा

महामना पंडित मदनमोहन मालवीयजी महाराज

गांधी जीवै वर्ष शत,

देश होय स्वाधीन;

शांति स्थापन होय जग,

मारग चलै नवीन ।*

* New world order

महात्मा

महामहोपाध्यायः श्री विधुशेखर भट्टाचार्यः शान्तिनिकेतनम्

महत्त्वान्मनसो यत्त्वं महात्मेति न संशयः ,
मनोवाक्कर्मणामैक्यादपि त्वं नो मतस्तथा ।

स्थितप्रज्ञकथां शास्त्रे को नु नाम न बुध्यते ?
स्थितप्रज्ञस्तु किं कश्चिद् दृश्यते सदृशस्त्वया !

बोधिसत्त्वकथा पुण्या बहूनां श्रुतिमागता ,
साम्प्रतं बोधिसत्त्वस्तु परं त्वय्येव दृश्यते ।

तत्किञ्चित्तपसस्तेजो यतः शक्रोऽपि कम्पते ,
इति पौराणिकीं वार्तां जानन्ति बहवो जनाः ।

सा शक्तिस्तपसः सत्या न वेति चेद् बुभुत्स्यते ,
महात्मा सोऽयमस्माकं न कस्मात्क्षणमीक्ष्यते ?

कासौ कौपीनसर्वस्वः महात्मा क्षीणविग्रहः ,
विविधायुधसन्नद्ध आङ्गलराजः क्व वा पुनः ।

निरन्तरं तथाप्यस्माद् विमेत्येष महात्मनः ,
सुगुप्तोप्याङ्गलभूपालः कम्पमानः पदे पदे ।

यस्मिञ्जीवति विश्वस्य मङ्गलं विश्वतोमुखम् ,
महात्मा श्रेयसे सोऽयं जीयाजीव्याच्च सन्ततम् !

कुसुमाञ्जलिः

सर्वतन्त्रस्वतन्त्रः पं० महादेवः शास्त्री कवि-तार्किक-चक्रवर्ती,
काशी-विश्वविद्यालयः

कौटिल्यकाल-कलिते वलिते बलौघैर्दुष्कालदुष्कलनिगालितकालकूटे,
लोलेऽबले विबुलिताकुलितेऽज्जनाभे कंसा निभालयतु लङ्घितराजलक्ष्मीः ?

क्रूरं कणन्ति परितो निगडाः कराला आपादचूडमनिशं निविडं निबद्धाः,
यैर्घोरतामुपगतैर्निजराज्यपद्मा सद्भामलं किमपरं श्रयतां शरण्यम् ?

या तादृशेऽपि सुकृताद्बलावशेषे दिष्टे विशिष्टकुरपाण्डवयुद्धभूमौ,
कृष्णेन बुद्धिबलसर्वविशेषभाजा नालम्बि नीतिरमला फलबीजलग्ना !

सत्ये वसीदति पराङ्मुखतामुपेतं धर्मे दहत्यतिभरं पृथिवीं रणाग्नौ,
मानुष्यके सुलभसंशय-जीवनाप्ते तां दिव्यशक्तिमपरः क इहाविभर्तुः ?

सत्याग्रहेऽद्भुतपराक्रमशालिशस्त्रे तां शाश्वतीं सफलतां महतीं प्रपन्ने
साम्राज्यवैभवविधूननधामपुञ्जे गुञ्जन्तु कीर्तनवचांसि सतां महान्सि ।

शक्या न या कथमपि प्रतिहिंसितुं साऽहिंसा दृढा जयति कापि महाविभूतेः,
जागर्तिमात्मनि जयोजितदेशशक्तिमुज्जृम्भयन्नतिबलस्मय - घूर्णनीया ।

स्वातन्त्र्यमूल्यमखिलं न ददाति यावत्तावन्नलम्ब्यमिदमर्चित मातृभूमेः
तत्प्राप्तये तनुमसौ तुलितो विभेद्य स्तुत्यः परामनुपयन् किल कोटि मस्याः ।

गौराङ्गभूपबलिनो ननु दर्पमार्गः 'सन्त्यज्यतां भरतभूमिविहानघोषात्—
मा मैष्ट मोहनसमूहितमन्त्रवर्णादुच्चाटनादिह हितं विमृशन्तु सत्यम् ।

सत्याग्रहव्रतधराय वराग्रचक्रहस्ताय पूर्णतपसे पर - दुःखिताय,
सम्मोहनाय बलिनां समशक्तिभाजां भक्तिः सदाभ्युदयतां ननु मोहनाय ।

सत्यासक्तः सितात्मा कविकृतिनिपुणो वृत्तगोवर्धनश्रीः
कृत्वा चक्रं कराग्रे गतिविगतिजुषां नेत्रदानैक-शक्तः ;
एको यः कर्मयोगी निखिलहितत्रिषौ बद्धकक्ष्यः श्रितेशः
सोऽव्यादव्याजभव्यः सकलनरवरो मोहनो देशमेनम् ।

शुभाभिनन्दनम्

दर्शन-केसरी पं० गोपालशास्त्री, काशी

पार्थ जगाद हरिरत्र विभूतिमान् यस्तेजोऽश एव मम स ध्रुवमित्यवेहि ,
तेनासि मोहन ! बुधैरभिनन्दनीयस्त्वत्पूजनं हि गुणपूजनमीश्वरस्य ।

स्पृश्यास्पृशि-व्यपगमादि समस्तमत्र स्वाराज्यसाधन-चतुर्दश-रत्नजातम् ,
त्वं सास्त्रं वितनुषे जनतासु तस्माद्रत्नाकरत्वमधिगच्छसि भो महात्मन् !

पाश्चात्यशासनविदूषित-भारतेऽस्मिन्नजादि-दुःख-बहुले बहुलोभयुक्तान् ,
ताञ्छासकान् वदसि हातुमिमां घरां यत्तस्मात्त्वमेव समयज्ञ ! समर्चनीयः ।

त्वं विश्वनेतासि निजप्रभावानीतिस्त्वदीयैव बुधाभिनन्द्या ,
कालः समायाति यतोऽचिरेण लोकाः समस्तास्तव मार्गगाः स्युः ।

सत्याग्रहं चक्रमहो दधानोऽप्यहिसया त्वं कवचेन नद्धः ,
सुसारथी राष्ट्रसभारथस्य कृष्णत्वमाविष्कुरुषे स्वकार्यात् ।

महात्मन् ! दीर्घायुर्भव नय नरांस्त्वं निजपथे
प्रतीच्यानां पाशं व्यपनय समन्तादपि भुवः ;
स्वतन्त्राः स्युः सर्वे जनपदभवा उद्यमपराः
न कश्चिद् देशः स्यादपरन्तपवश्योऽद्य भुवने ।

गुणगौरवम्

साहित्याचार्यो भट्टमथुरानाथः शास्त्री कविरत्नम् 'मञ्जुनाथः', जयपुर

पूर्णः कर्णधार इव धीरं धुर्यकान्त्या लसन्
शमयति शान्त्या यो हि राजनीति - नौरवम्
भारतविभवकृते धार्मिक - युधि स्थिरोऽसौ
वशयति वक्रदलं चक्रमिव कौरवम् ।
मञ्जुनाथ माननीयमान्तरमहिम्ना सदा
श्लाघ्यन्ते द्रढिम्ना यं हि नृपमिव पौरवम्
धार्मिकधनिष्ठैर्मान्यमण्डलमहिष्ठैरपि
गीयते गरिष्ठैरद्य 'गान्धी' - गुणगौरवम् ।

श्री-गान्धि-स्तवः

साहित्यायुर्वेदाचार्यः श्री हरिदत्तः शर्मा शास्त्री, सप्ततीर्थः,
आगरा

गान्धिः शिवो दीन-जनैक-बन्धुः,
प्रगाढ - काश्य - जलैक - सिन्धुः ;
जीयात् समा नैतिक - विशतान्धुः,
शताच्छतं तापस - चन्दिरेन्दुः ।
“स्वर्ग-निर्गत-निरर्गल-गङ्गा-तुङ्ग-भङ्गुर-तरङ्ग-सखानाम्,
केवलामृतमुचां वचनानां यस्य लास्य-गृहमास्य-सरोजम् ।”

सोऽयं महात्मा भुवनोपकारे,
दृढव्रती केन न माननीयः ;
विनाशयन्नन्ध-तमिस्र-तान्तिम्,
प्रभाकरः केन न वन्दनीयः ।
पञ्च-सप्तति-वर्षाणि यो ऽ हासील्लोकहेतवे,
तज्जीवनं शताब्दीयं प्रार्थयामो महेश्वरम् ।

नमस्कृतिः

विद्यावतंस-साहित्याचार्य-साहित्यरत्न-श्री लक्ष्मीकान्तः
शास्त्री, लखनऊ

क्व निस्त्रिंशशीर्षप्रशासानुरक्तिः
असृक्पायिनी प्राच्यसाम्राज्यशक्तिः,
क्व कौपीनवासा अहिंसाप्रसक्तिः
जगन्मुक्तये बद्धकाराभिमक्तिः,
परं यद्बलाद् वेपते राजचक्रम्,
नमस्कुर्महे तेजश्चानम्रशक्रम् ।
यदीयं यशः सर्वतो दिक्पटेषु,
स्थितं प्रीणयत् स्वर्णादूर्ली वरेषु,
निरस्त्रोपि जेता संशस्त्रान् रणेषु,
जनैरर्च्यमानो मनोमन्दिरेषु,
प्रसिद्धार्थसिद्धार्थसर्वस्वसिद्धिम्,
नमस्कुर्महे सत्यधाम्नः समृद्धिम् ।

पुष्पाञ्जलिः

श्री नारायणशास्त्री खिस्ते, काशी

येनापन्नस्तीर्णा वसुधा वसुधार्यमीनेन
भारतभूतिलकायितसौभाग्यं तं नरं न को नन्देत् ।
नवयुगानिर्माता यः प्रायश्चक्रं करे वहति ,
स जयति मोहनरूपो महात्मशब्दोऽद्वितीयगो यस्य ;

यः सांख्यपुरुष इव प्रकृतीरजाः स्वाः
स्वोपासनेन कुरुते बहुधा कृतार्थाः ,
शान्तः स्वयं स्वरतिरेव पुनस्तटस्थ-
स्तस्मै नमोऽस्तु मुनये किल मोहनाय ।

अभिनन्दनम्

श्री विन्ध्येश्वरीप्रसादः शास्त्री धर्माचार्यः, काशी

सत्यस्यैक - दृढव्रती नृपनयप्रज्ञान - निष्पातधी
रागद्वेषविहीन - निर्मलमतिः सत्कर्मवीरो यतिः ;
स्वीयैर्विश्वजनीनसद्गुणचयैः शशवत् सतां 'मोहनो
दासो' मातृमुखश्चिरं विजयतां श्रीकर्मवन्द्यात्मजः ।

प्रह्लादो नु भवान् हिरण्यकशिपोर्दुर्नीतिदावानलः
स्वास्थ्यामर्पयिता परोपकृतये किंवा दधीचिर्मुनिः ;
बुद्धो वा करुणाकरो रिपुसुहृत् ख्रिस्तोऽथ शान्त्यम्बुधिः
सन्तस्त्वद्विषये निरन्तरमिमं सन्देहमातन्वते ।

केचित् सत्यपराः परार्थमपरे सर्वस्वसंन्यासिनो
देशोद्धाररताः परे च कतिचित् कारुण्य-पूर्णाशयाः ;
तत्त्वज्ञान - विदस्तथान्य इतरे शिक्षा - परिष्कारिण-
स्त्वादृच्छंसुगुणाकरं नु जननी प्रांसोष्ट नाऽन्या सुतम् ।

रत्नानां जलघेर्विविच्य गणने व्योम्रस्तथा ज्योतिषां
शक्तः सन् भवतो गुणान् गणयितुं नेशः फणीशोऽपि च
इत्येवं मनसा विचिन्त्य विनयाद् विश्वेशमभ्यर्थये
दीर्घायुष्ट्व - मसौ ददातु भवते, धर्मे ददत्वं तथा ।

‘भगवान् अवतीर्णः’

श्रीमती पंडिता क्षमाराव त्रिदुषी

बहुवर्षाणि देशार्थं दीनपद्मावलम्बिना,
कृषकाणां सुमित्रेण कृतो येन महोद्यमः।

अपूर्वं - कीर्तियुक्तस्य निःस्पृहस्यानहङ्कृतेः,
माहात्म्यमस्य भूपानां वैभवाच्च विशिष्यते।

वयमाङ्गलयुगे बद्धा भविष्यामोऽधिकाधिकम्,
विवशा दुर्बलाश्चेति बोधितं दूरदर्शिना।

स्वबान्धवानसौ पौरान्मोह - सुप्तानबोधयत्,
स्वधर्मः परमो धर्मो न त्याज्योऽयं विपद्यपि।

कृषकाणां स्थितिं तेषां कष्टमूलं च वेदितुम्,
त्यक्तभोगो विपद्वन्धुर्ग्रामे ग्रामे चचार सः।

जीवन्तोऽपि न जीवन्ति परदास्य - धुरन्धराः,
पारतन्त्र्यमुदाराणां मरणादति रिच्यते।

अद्भुतं तस्य माहात्म्यं शास्ति यत्किल भारतम्,
विभूतिःकापि सा दिव्या न शक्तिः खलु मानुषी।

निक्षिप्तं विधिना तेजस्तस्मिन् गान्धौ महात्मनि,
जन्मभूमिं तमोग्रस्तां विद्योतयितुमात्मनः।

तस्मादधर्मनाशाय प्रशान्तेः स्थापनाय च,
गान्धिरूपेण भगवानवतीर्णः किमु स्वयम् ?

भारतावनिरत्नाय सिद्धतुल्य - महात्मने,
गान्धिवंश - प्रदीपाय गीतिमेतां समर्पये।

जय जय !

श्री ईशदत्तः शास्त्री 'श्रीशः' साहित्य-दर्शनाचार्यः, काशी

जय जय युग-जागरण-विधायक !

मूर्त्त-भारत-स्वामिमान जय कोटि-कोटि-जन-नायक !

जय हे मृदुल-मधुर, मङ्गलमय, मनुजमूर्तिधर ! निर्जर !

जय निश्छल, जय निर्मल, जय हे निर्मद, जय निर्मत्सर !

जय अजातशत्रो नवीन, जय वशीकरण-मधु-निर्भर !

स्मित-संवर्षण, भुवन-विभूषण, जय गीताया गायक !

जय जय युग-जागरण-विधायक !

ज्वाला-जुषां विजय-संजीवन, जाग्रत-जन-भय-भञ्जन !

ज्योतिर्मय, जय जगत्प्राण, जय जगद्वन्द्य, जन-रञ्जन !

जगतामेकमात्रजीवातो, जगती - गत - सुनिरञ्जन !

'जनताकृते जीव शरदां शतमार्थ-धर्म-परिचायक' !

जय-जय युग-जागरण-विधायक !

स्वागतम्

श्री वादरायणः

(लन्दनस्थ-गोलमेज-परिषदः परावर्त्तनकाले)

श्रुत्वा त्वन्नवशान्तिमन्त्रमपरं निस्तब्धभूतं जगद्
हिंसास्त्राणि वृथेति सत्यमवनौ ज्ञातं च सर्वैर्जनैः ;
त्वं देवोऽसि समस्तमानवकुले त्वं सेवको वै परः
शब्दे या तव शक्तिरस्ति महती स्वातन्त्र्यदान्यस्तु सा ।

घन्योऽयं दिवसः प्रसन्नवदनाः सर्वे जना आगता
नार्यः कुङ्कुमवर्णयुक्तवसना अम्भोधितीरस्थिताः ;
बाला अत्र तव प्रभाव-करणैराकर्षिता मीलिता
हिंसाया जगदुद्धरन् जनगुरो प्रत्यागतः स्वस्ति ते ।

जीयाच्चिरं स इह भारतपारिजातः

स्वामी श्रीभगवदाचार्यः

यः पारतन्त्र्यमखिलं सततं समूलं
श्रीभारतस्य च विलोपयितुं सयत्नः ;
कारागृहं परिपुनाति तु साम्प्रतं यो
जीयाच्चिरं स इह भारतपारिजातः ।

यद्दर्शनेन सहसा हृदयेषु नृणां
नित्यं समुल्लसति शान्तिमहापयोधिः ;
कौपीनमात्रपरिधान उदात्तचेता
जीयाच्चिरं स इह भारतपारिजातः ।

यस्यात्मशक्तिमनघां बहुलं च धैर्यं
बुद्धिं परां च दृढतां परमां च शान्तिम्
आश्रित्य भारतमचिन्त्यसमृद्धिमागा-
जीयाच्चिरं स इह भारतपारिजातः ।

यस्यैव बुद्धिमनुसृत्य च भारतीया
पारं व्रजेद्धि जनता परतन्त्रताब्धेः ।
मान्यः सतां जगति शश्वदजातशत्रु-
जीयाच्चिरं स इह भारतपारिजातः !

गान्धी सोऽयं जयतु—

श्री भदन्तशान्तिभिन्नुः, शान्तिनिकेतनम्

नान्यं दृष्ट्वा किमपि शरणं मानसे भीतभीता
दैत्यं नीता जननयनयोर्धूतं - दुःशासनेन ;
पाञ्चालीव श्रयति जनिभूर्यं परित्राणहेतोः
पातुं लोकाञ्जगति स चिरं जीवतान्मोहनोऽयम् ।

धर्मं प्राहुर्यमिह सुगताः सर्वनिर्वैरभावं
तं संश्रित्याचरति विमलां संयतो योऽद्य चर्याम् ;
दुःखं सर्वं करुणहृदयः प्राणिनां हर्तुकामो
गान्धी सोऽयं जयतु भुवने बोधि-सत्त्वानुगामी ।

गांधी-गोविंद

महाकवि श्री जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

जानि बल पौरुष विहीन दलहीन भयो
आपने बिगाने हूँ कटाई जाति काँधी है।
कहे 'रतनाकर' यों मति गति साधी मची
जाकी क्रांति-वेग सों असांति महा आँधी है।
कुटिल कुचारी के निगीरन मुखारी पर
बक्र चाहि चक्र चरखे की फाल बाँधी है।
असित गुरंड-ग्राह आरत अथाह परे
भारत-गयंद को गोविंद भयो गाँधी है।

गांधी-गौरव

कविरत्न पं० सत्यनारायण

जय जय सदगुन सदन अखिल भारत के प्यारे !
जय जगमधि अनवधि कीरति कल विमल उज्यारे !
जयति भुवन-विख्यात सहन प्रतिरोध सुभूरति !
सज्जन सम भ्रातृत्व शान्ति की सुखमय सूरति !
जय कर्मवीर त्यागी परम, आतप-त्यागि-विकास-कर !
जय यस-सुगंधि-वितरनकरन, गांधी मोहनदास वर !

जय परकाज निबाहन कृत बन्दीगृह पावन !
किन्तु, मुदित मन वही भाव मंजुल मनभावन !
मातृभक्त जातीय भाव-रक्षण के नेमी !
हिन्दी हिन्दू हिन्द देश के साँचे नेमी !
निज रिपुहौ कौ अपराध नित, छमत न कछु शंका धरत !
नव नवनीत समान अस, मृदुल भाव जग-हिय हरत !

जयति तनय अरु दाग सकल परिवार मोह तजि !
एकहि व्रत पावन साधारन ताहि रहे भजि !
जय स्वकार्य तत्परतारत अरु सहनशील अति !
उदाहरन करतव्य - परायनता के शुचमति !
जय देशभक्ति - आदर्श प्रिय, शुद्ध चरित अनुपम अमल !
जय जय जातीय तड़ाग के अभिनव अति कोमल कमल !

जय विपत्ति मैं धैर्य धरन अविकल अविचल मन !
हृद व्रत शुच निष्कपट दीन दुखियन आशवासन !
जय निस्स्वारथ दिव्य जोति पावन उज्जलतर !
परमारथ प्रिय प्रेम-बेलि अलबेलि मनोहर !
तुमसे बस तुमहीं लसत, और कहा कहि चित भरै ?
सिवराज प्रतापसर मेज़िनी, किन-किन सों तुलना करै !

यहि अवसर जो दियो आत्मबल को तुम परिचय ,
लची निरंकुश शक्ति अई मुदमई सत्य जय !
जननी जन्मभूमि भाषा यह आज यथारथ ,
पूत सपूत आप जैसो लहि परम कृतारथ !
लखि मोहन मुखचन्द तब, याके हृदय उमंग है !
त्रयताप हरत मनमुद भरत, लहरत भाव तरंग है !

स्वागतम्

श्री मुंशी अजमेरी

स्वागत हे शुचि, शुद्ध, सरल, महनीय महात्मा,
भावमयी, भयहीन, भव्य भारत की आत्मा !
स्वागत मोहनदास, कर्मचन्दात्मज गान्धी,
विदित अहिंसा-अती, विश्व के अचरज गान्धी !

स्वागत हे श्रीरामचरण - पङ्कज - अनुरागी !
शुद्ध सतोगुण मूर्ति, तथा रज-तम के त्यागी !
स्वागत निज कर्तव्य कार्य के करनेवाले !
दलितोद्धारक भाव देश में भरनेवाले !

स्वागत हे संसार पूज्य, भारत के नेता !
जीव मात्र के मित्र, जगत भर के शुभचेता !
स्वागत शुचि सङ्कल्प, मनोबल-रूप तपस्वी,
तन-मन-धन देशार्थ समर्पक महा यशस्वी !

स्वागत हे सर्वोच्च धर्म के सच्चे ध्यानी !
कर्मवीर हे स्थितप्रज्ञ ! गीता के ज्ञानी !
राजनीति जो रही सदा से छलिनी माया,
शुद्ध बना दी उसे पलट दी उसकी काया !

देव ! दिव्य संदेश देश को दिया आपने,
अमृतोपम उपदेश देश को दिया आपने !
सत्याग्रह का शस्त्र देश को दिया आपने;
खादी का वर वस्त्र देश को दिया आपने !

किस प्रकार उपकार आपके गिन-बतलावें !
महिमा अमित-अपार, पार हम कैसे पावें !
विभु-विभूति हैं आप, उठाने हमको आये,
हम अज्ञान थे, इसीलिए पहचान न पाये !

धीरे - धीरे किन्तु आपको जान रहे हम,
उर अन्तर उपदेश आपका मान रहे हम !
परिणत भी हम कार्य रूप में उसे करेंगे,
पराधीनता-पाश काट भवसिन्धु तरेंगे !

दिव्य दशमूर्ति

साहित्य-वाचस्पति श्री पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

जय जय जयति लोकललाम !

सकल मंगल धाम ।

भरत भू को देख अभिनव भाव से अभिभूत ,
राममोहन रूप धर भ्रम - निधन-रत अविराम ।
विविध नवल विचार विचलित युवक दल अवलोक ,
रामकृष्ण स्वरूप में अवतरित बन विश्राम ।
विपुल आकुल बाल विधवा बहु विलाप विलोक ,
विदित ईश्वरचन्द्र वपु धर स्ववश कृत विधि बाम ।
वेद विहित प्रथित सनातनधर्म मथित विचार ,
दयानन्द शरीर धर शासन निरत बसुयाम ।
यतन प्राय समाज शोधन की बताई नीति ,
बिहर रानाडे हृदय में विदित कर परिणाम ।
एकसत्ता मंत्र से ही धर्म की ध्रुव शक्ति ,
रामतीर्थ स्वरूप धर उर हार कर हरिनाम ।
दलित वंचित व्यथित महि में की अचिन्तित क्रान्ति ,
बाल गंगाधर तिलक बनकर अलौकिक काम ।
राजनीति विधान की विधिहीनता को हीन ,
गोखले गौरवित तन धर बिरच सित मनि श्याम ।
तिमिर पूरित भरत भू में ज्योति भर दी भूरि ,
मदनमोहन मूर्ति धर बनकर भुवन - अभिराम ।
विविध वाधा मुक्तिपथ की शमन की रह शान्त ,
मंजु मोहनचन्द में रमकर विहित संग्राम ।
मातृ महि हित रत करे हर हृदय कुत्सित भाव ,
द्रवित उर 'हरिऔध' गुंफित दिव्य जन-गुणग्राम ।

नाना कार्य विधायिनी निपुणता नीतिज्ञता विज्ञता ,
न्यायी जाति हितैषिता सबलता निर्भीकता दक्षता ,
सच्ची संजनता स्वधर्म मतिता स्वच्छन्दता सत्यता ,
दिव्यों की दश मूर्ति देशजन को देती रहे दिव्यता !

महात्माजी के प्रक्ति

श्री मैथिलीशरण गुप्त

तुम तो प्राण दे चुके बापू ! स्वयं उन्हें साधारण जान ,
कृपया कमी न करना अब फिर अपने दिए हुए का दान ।
उन्हें न्यास सा रखना आगे !

अब उन पर अधिकार उन्हीं का, उनमें हैं जिनके भगवान !
लिया सँभाल उन्होंने जिनको किया शक्ति भर उनका मान !
और भाग्य हैं जिनके जागे !

जय गांधी

श्री लोचनप्रसाद पांडेय

आर्य ! आपके यत्न से, भारत हो स्वाधीन ।
शुभ स्वराज भोगें सभी, हों दुख दैन्य विहीन ।
रामराज्य का दृश्य फिर, देखै भारतवर्ष ।
कलियुग में फिर प्रकट हो, त्रेता का उत्कर्ष ।
कृषक रहें ऋणमुक्त सब, हों शिक्षित सचरित्र ।
प्रति गृह को पावन करे, देशी वस्त्र पवित्र ।
देशभक्ति परिपूर्ण हो, जनता हृदय उदार ।
लहै अहिंसा-धर्म में, शान्ति अखिल संसार ।

भारत-सपूत

डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, डी० एस-सी० प्रयाग विश्वविद्यालय

साबरमती के तट जाग्यो मंत्र साबर है
जाके ढिंग यंत्र हू न नैक चलि पावै है ,
फूँकि कै बिदेसी-तंत्र, फूँकि के सुदेसी-मंत्र
यंत्रन की यंत्रणा सों देसहि बचावै है ;
कर मैं न अस्त्र अरु धर मैं न वस्त्र पै
अशस्त्र देश हू को जो सुशस्त्रहि गहावै है ,
ऐसो व्रतधारी, बलधारी, तपतेजधारी
भारत-सपूत देवदूतहि लजावै है ।

निःशस्त्र सेनानी

श्री माखनलाल चतुर्वेदी

(महात्माजी के दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह पर लिखित)

फिसलते काल-करोँ से शस्त्र, कराली कर लेती मुँह बन्द ;
पधारे ये प्यारे पद-पद्म, सलोनी वायु हुई स्वच्छन्द !
'क्लेश ?'—यह निष्कर्मों का साथ, कभी पहुँचा देता है क्लेश ;
लेश भी कभी न की परवाह, जानते इसे स्वयम् सर्वेश ।

'देश ?'—यह प्रियतम भारत देश, सदा पशु-बल से जो बेहाल ;
'वेश ?'—यदि वृन्दावन में रहे, कहा जावे प्यारा गोपाल ।
द्रौपदी भारत माँ का चीर, बढ़ाने दौड़े यह महाराज ;
मान लें, तो पहनाने लगूँ, मोर-पंखों का प्यारा ताज !

उधर वे दुःशासन के बन्धु, युद्ध-भिन्ना की भोली हाथ ;
इधर ये धर्म-बन्धु नभ-सिन्धु, शस्त्र लो, कहते हैं—'दो साथ,'
लपकती हैं लाखों तलवार, मचा डालेंगी हाहाकार ;
मारने-मरने की मनुहार, खड़े हैं बलि-पशु सब तैयार ।

किन्तु क्या कहता है आकाश ? हृदय ! हुलसो सुन यह गुंजार ;
पलट जाये चाहे संसार, 'न लूँगा इन हाथों हथियार !'
'जाति ?'—वह मज़दूरों की जाति, 'मार्ग ?' यह काँटोंवाला सत्य ;
'रंग ?' भ्रम करते जो रह जाय, देख लो दुनिया भर के भृत्य ।

'कला ?'—दुखियों की सुनकर तान, नृत्य का रंग-स्थल हो धूल ;
'टेक ?'—अन्यायों का प्रतिकार, चढ़ाकर अपना जीवन-फूल ।
'क्रान्तिकर होंगे इसके भाव ?' विश्व में इसे जानता कौन ?
'कौन सी कठिनाई है ?' यही, बोलते हैं ये भाषा मौन !

'प्यार ?' उन हथकड़ियों से और, कृष्ण के जन्मस्थल से प्यार !
'हार ?'—कन्धों पर चुभती हुई, अनोखी जंजीरें हैं हार !
'भार ?'—कुछ नहीं रहा अब शेष, अखिल जगतीतल का उद्धार !
'द्वार ?' उस बड़े भवन का द्वार, विश्व की परम मुक्ति का द्वार !

पूज्यतम कर्म-भूमि स्वच्छन्द, मची है उठ पड़ने की धूम ;
दहलता नभ-मंडल ब्रह्मांड, मुक्ति के फट पड़ने की धूम ।

हे क्षुरस्य धारा पथ-गामी !

श्री वालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

हे विशुद्ध, हे पूर्ण बुद्ध, सुनिर्द्ध तृष्ण हे संन्यासी !
हे ज्वलन्त, हे सन्त, शान्त हे, हे अनन्त के अभ्यासी !!
मानवता की तुम प्रहेलिका, जगती के तुम अचरज हे !
हे विकास की विकट समस्या, भ्रष्टज हे, जय अन्त्यज हे !!

योगयुक्त हे, शोकमुक्त हे, यज्ञभुक्त हे बलिदानी !
हे अपमानित, हे सम्मानित, श्री गुरुदेव परमज्ञानी !
हे प्रलयंकर, हे शंकर, हे किंकर, हे निष्ठुर स्वामी !
परमसेव्य हे तुम चिर-सेवक, ओ कर्मठ, ओ निष्कामी !!

हे क्षुरस्य-धारा-पथ-गामी, हे जगमोहन, जय-जय हे !
युद्धवीर हे, रुद्धपीर हे, नीति-विदोहन जय-जय हे !
अनय विजय हे अभय-निलय हे, सद्य हृदय पापक्षय हे !
हे कृतान्त से का कूट तुम, जीवन-दायक मधुपय हे !

धन्य हुई यह वसुधा वृद्धा, मानवता यह धन्य हुई !
तव विज्ञवकारी प्रसाद से भय-भावना नगण्य हुई !!
ये मिट्टी के पुतले भी बड़-बड़ लड़ गढ़ चढ़ने दौड़े,
क्या ही फूँके प्राण कि इतने सदियों के बन्धन तोड़े !

आज उठी है अश्रुत स्वर-लहरी जगती के अम्बर में,
एक नवल उत्साह-बीच फैली है सकल चराचर में ।
आज शस्त्र-अस्त्रों की घातें खूब कुण्ठिता हुईं भली,
“अक्रोधेन जिनेक्रोधम्” की क्या ही चर्चा नई चली !

अहो, विश्व के हृदय-पटल को कम्पित कर देनेवाले !
अहो, कराल, मृदुलता से मानव-ह्रिय भर देनेवाले ।
आज अहिंसा सत्य, शान्ति की परिधि विश्वव्यापिनी बनी,
यह आकुंचित तटिनी जग-विज्ञावक मन्दाकिनी बनी ।

देव, तुम्हारे एक इशारे में है उथल-पुथल जग की,
उदधि-गंभीर कण्ठध्वनि में है आभा विज्ञव के रँग की ।
अस्थि-पुंज में यज्ञ-कुण्ड की ज्वालाएँ ये प्रकट रहीं,
ओ प्रचण्ड तापस, बस-बस, जग भस्मसात् होवे न कहीं !

पञ्चत्तर वर्ष

श्री सियारामशरण गुप्त

ये पञ्चत्तर वर्ष सुप्रभ, ये पञ्चत्तर वर्ष,
पा गया है राष्ट्र का तारुण्य परमोत्कर्ष !

रात दिन प्रति प्रहर पल पल ,

सतत गति में सतत उज्ज्वल ,

बढ़ रहे करने शतक्रतु योग का संस्पर्श ,

यह महत्तर वर्ष नव नव, यह महत्तर हर्ष !

फिल गया है समय की प्रतिकूलता का रोष ,

खिल गया है राष्ट्र-उर का अमल शतदल-कोष ।

मरण - मूर्च्छा से सचेतन ,

जागरण का उच्च केतन

उड़ उठा है सर्व-समुदय का लिये सन्तोष ,

मिल गया है कण्ठ को जीवन जयी उद्धोष ।

व्याप्त है संहार-विष से जब नभस्थल सर्व ,

धन्य है तब यह हमारा अमर जीवन-पर्व !

पार कर आया गहन-धन ,

दमन के दुर्लभ्य गिरि-वन ,

गगन की इस उच्चता में रज्जु-बन्धन खर्व ,

शस्त्र के भुजबल भुजङ्गम का गलित है गर्व ।

भुक् रहा है दूर तक जिसके लिए भवितव्य ,

नमित हैं हम निकट में श्रद्धा लिये निज नव्य ।

भुवन हो प्रिय - प्रेम - दीक्षित ,

शुचि अहिंसा में परीक्षित ,

आज नव निर्वैर-पथ हो विश्व को गन्तव्य ,

आज का आनन्द हो चिर काल का कर्तव्य !!

काफू के प्रक्ति

युग प्रवर्तक कवि श्री सुमित्रानन्दन पंत

तुम मांसहीन, तुम रक्तहीन, हे अस्थि-शेष, तुम अस्थिहीन !
तुम शुद्ध बुद्ध आत्मा केवल, हे चिर पुराण, हे चिर नवीन !
तुम पूर्ण इकाई जीवन की, जिसमें असार भव शून्य लीन ;
आधार अमर, होगी जिस पर भावी की संस्कृति समासीन ।

तुम मांस, तुम्हीं हो रक्त-अस्थि, निर्मित जिससे नवयुग का तन ;
तुम धन्य ! तुम्हारा निःस्व त्याग है विश्वभोग का वर साधन !
इस भस्मकाय तन की रज से जग पूर्णकाम, नव जगजीवन ;
बीनेगा सत्य अहिंसा के तानों बानों से मानवपन ।

सदियों का दैन्य तमिस्त्र तूम, धुन तुमने कात प्रकाश-सूत ;
हे नग्न ! नग्न-पशुता ढँक दी बुन नव संस्कृत : नुजस्व पूत !
जग पीड़ित छूतों से प्रभूत, छू अमृत-स्पर्श से हे अछूत !
तुमने पावनकर, मुक्त किए मृत संस्कृतियों के विह्वत भूत !

सुख भोग खोजने आते सब, आए तुम करने सत्य खोज ;
जग की मिट्टी के पुतले जन, तुम आत्मा के, भन के मनोज ।
जड़ता, हिंसा, स्पर्धा में भर चेतना, अहिंसा नम्र ओज ;
पशुता का पंकज बना दिया तुमने मानवता का सरोज !

पशु बल की कारा से जग को दिखलाई आत्मा की विमुक्ति ;
विद्वेष, घृणा से मनुजों को, सिखलाई दुर्जय प्रेम-युक्ति ।
वर श्रमप्रसूति से की कृतार्थ तुमने विचार परिणीत युक्ति ;
विश्वानुरक्त हे अनासक्त ! सर्वस्व त्याग को बना भुक्ति ।

सहयोग मिला शासित जन को शासन का दुर्वह हरा भार ;
होकर निरख, सत्याग्रह से रोका मिथ्या का बलप्रहार ।
बहु मेद विग्रहों में खोई ली जीर्ण-जाति, क्षय से उबार ;
तुमने प्रकाश को कह प्रकाश, औ' अंधकार को अंधकार !

उर के चरखे में कात सूक्ष्म युग-युग का विषय जनित-विषाद ;
गुंजित कर दिया गगन जग का, भर तुमने आत्मा का निनाद !
रंग-रंग खहर के सूत्रों में नवजीवन, आशा, स्पृहा, 'हाद ;
मानवी-कला के सूत्रधार हर दिया यंत्र कौशल प्रवाद !

जड़वाद जर्जरित जग में तुम अवतरित हुए आत्मा महान !
 यंत्राभिभूत युग में करने मानव जीवन का परित्राण ।
 बहु छाया - बिम्बों में खोया पाने व्यक्तित्व प्रकाशमान ;
 फिर रक्तमांस प्रतिमाओं में फूँकने सत्य से अमर प्राण !

संसार छोड़कर ग्रहण किया नर जीवन का परमार्थ सार ;
 अपवाद बने मानवता के, ध्रुवनियमों का करने प्रचार !
 हो सार्वजनिकता जयी, अजित ! तुमने निजत्व निज दिया हार ;
 लौकिकता को जीवित रखने तुम हुए अलौकिक, हे उदार !

मंगल शशि लोलुप मानव थे, विस्मित ब्रह्मांड परिधि विलोक ;
 तुम केन्द्र खोजने आए तब सब में व्यापक गत राग शोक ।
 पशु पक्षी पुष्पों से प्रेरित उद्दाम-काम जन - क्रान्ति रोक ;
 जीवन इच्छा को आत्मा के वश में रख शासित किए लोक !

तुम विश्वमंच पर हुए उदित, बन जग जीवन के सूत्रधार ;
 पट पर पट उठा दिए मन से, कर नर चरित्र का नवोद्धार ।
 आत्मा को विषयाधार बना, दिशि पल के दृश्यों को सँवार ;
 गा गा — एकोहं बहुस्याम, हर लिये भेद, भव भीति-भार !

एकता इष्ट निर्देश किया, जग खोज रहा था जब समता ;
 अंतर शासन चिर रामराज्य, औ' बाह्य आत्महन अक्षमता ।
 हो कर्मनिरत जन, रागविरत, रति विरति व्यतिक्रम भ्रम ममता ;
 प्रतिक्रिया क्रिया, अवयव साधन, है सत्य सिद्धि गतियति क्षमता ।

साम्राज्यवाद का कंस, बंदिनी मानवता पशु बलाक्रांत ;
 शृंखला दासता, प्रहरी बहु निर्मम शासन-पद शक्ति भ्रांत ।
 कारागृह में दे दिव्य जन्म, मानव आत्मा को मुक्त, क्रांत ;
 जन शोषण की बढ़ती यमुना तुमने की नतपद प्रणत शांत ।

कारा थी संस्कृति विगत भित्ति, बहु धर्म जाति गत रूपनाम ।
 बंदीजग जीवन, भू विभक्त, विज्ञान मूढ़ जन प्रकृति-काम ;
 आए तुम मुक्त पुरुष ! कहने— मिथ्या जड़ बंधन सत्य राम ;
 नानृतं जयति सत्यं मा भैः, जय ज्ञानज्योति ! तुमको प्रणाम !

प्रणाम

श्रीमती महादेवी वर्मा

हे धरा के अमर सुत ! तुमको अशेष प्रणाम !
जीवन के अजस्र प्रणाम !
मानव के अनन्त प्रणाम !

दो नयन तेरे, धरा के अखिल स्वप्नों के चितेरे,
तरल तारक की अमा में बन रहे शत-शत सवेरे,
पलक के युग शुक्ति-सम्पुट, मुक्ति-मुक्ता से भरे ये,
सजल चितवन में अजर आदर्श के अंकुर हरे ये,
विश्व जीवन के मुकुर दो तिल हुए अमिराम !
चल-क्षण के विराम ! प्रणाम !

वह प्रलय उद्दाम के हित अमिट बेला एक वाणी,
वर्णमाला मनुज के अधिकार की, भू की कहानी,
साधना-अक्षर, अचल विश्वास ध्वनि-सञ्चार जिसका,
मुक्त मानवता हुई है अर्थ का संसार जिसका,
जागरण का शंख-स्वन, वह स्नेह-वंशी-ग्राम !
स्वर-छान्दस्-विशेष ! प्रणाम !

सौंस का यह तन्तु है कल्याण का निःशेष लेखा,
घेरती है सत्य के शतरूप सीधी एक रेखा,
नापते विश्वास बढ़-बढ़ लक्ष्य है अब दूर जितना ?
तोलते हैं श्वास चिर संकल्प का पायेय कितना,
साध कण-कण की सँभाले कम्प एक अकाम !
नित साकार श्रेय ! प्रणाम !

कर युगल, बिखरे क्षणों की एकता के पाश जैसे,
हार के हित अर्गला, तप-त्याग के अधिवास जैसे,
मृत्तिका के नाल जिन पर खिल उठा अपवर्ग-शतदल,
शक्ति की पवि-लेखनी पर भाव की कृतियाँ सुकोमल,
दीप-लौ सी उँगलियाँ तम-भार लेती याम !
नव आलोक लेख ! प्रणाम !

स्वर्ग ही के स्वप्न का लघु खण्ड चिर उज्ज्वल हृदय है ,
 काव्य करुणा का, धरा की कल्पना ही प्राणमय है ,
 ज्ञान की शत रश्मियों से बिच्छुरित विद्युत-छटा सी ,
 वेदना जग की यहाँ है स्वाति की क्षणदा घटा सी ,
 टेक जीवन-राग की, उत्कर्ष का चिर याम !
 दुख के दिव्य शिल्प ! प्रणाम !

युग चरण, दिव औ' धरा की, प्रगति पथ में एक कृति है ,
 न्यास में यति है सृजन की, चाप अनुकूल नियति है ,
 अंक है रज अमरता के सन्धिपत्रों की कथायें ,
 मुक्त, गति में जय चली, पग से बँधी जग की व्यथायें ,
 यह अनन्त क्षितिज हुआ इनके लिए विश्राम !
 संसृति सार्थवाह ! प्रणाम !

शेष शोणित विन्दु, नत भू-भाल पर है दीप्त टीका ,
 यह शिरायें शीर्ण, रसमय कर रहीं स्पन्दन सभी का ,
 ये सृजन . जीवी, वरण से मृत्यु के, कैसे बनी हैं ?
 चिर सजीव दधीचि ! तेरी अस्थियाँ सञ्जीवनी हैं !
 स्नेह की लिपियाँ, दलित की शक्तियाँ उद्दाम !
 इच्छाबद्ध मुक्त ! प्रणाम !

चीरकर भू व्योम को, प्राचीर हों तम की शिलायें ,
 अग्निशर-सी ध्वंस की लहरें गला दें पथ दिशायें ,
 पग रहे सीमा, बने स्वर रागिनी सूने निलय की,
 शपथ धरती की तुम्हे औ' आन है मानव-हृदय की ,
 यह विराग हुआ अमर अनुराग का परिणाम !
 हे असि-धार पथिक ! प्रणाम !

शुभ्र हिम-शतदल-किरीटिनि, किरण कोमल कुन्तला जो ,
 सरित तुंग तरंग मालिनि, मरुत-चञ्चल अञ्चला जो ,
 फेन-उज्ज्वल अतल सागर चरणपीठ जिसे मिला है ,
 आतपत्र रजत-कनक-नभ चलित रंगों से धुला है ,
 पा तुम्हे यह स्वर्ग की धात्री प्रसन्न प्रकाम !
 मानववर ! असंख्य प्रणाम !



शुभ्र हिम-शतदल-किरीटिनि, किरण कोमल कुन्तला जो ,
 सरित तुंग तरंग मालिनि, मरुत-चञ्चल अञ्चला जो ,
 फेन-उज्ज्वल अतल सागर चरणपीठ जिसे मिला है ,
 आतपत्र रजत-कनक-नभ चलित रंगों से धुला है ,
 पा तुझे यह स्वर्ग की धात्री प्रसन्न प्रकाम !
 मानववर ! असंख्य प्रणाम !

लोहे को फाँसी कर देना !

श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान

जब जब भारत पर भीर पड़ी, असुरों का अत्याचार बढ़ा ;
मानवता का अपमान हुआ, दानवता का परिवार बढ़ा ।
तब तब हो करुणा से प्लावित करुणाकर ने अवतार लिया ;
बनकर असहायों के सहाय दानव दल का संहार किया ।

दुख के बादल हट गए, ज्ञान का चारों ओर प्रकाश दिखा ;
कवि के उर में कविता जागी, ऋषि-मुनियों ने इतिहास लिखा ।
जन-जन में जागा भक्ति-भाव, दिशि-दिशि में गूँजा यशो गान ;
मन-मन में पावन प्रीति जगी, घर-घर में थे सब पुण्यवान ।

सतयुग बीता, त्रेता बीता—यश-सुरभि राम की फैलाता ;
द्वापर भी आया, गया—कृष्ण की नीति-कुशलता दर्शाता ।
कलियुग आया—जाते जाते उसके गाँधी का युग आया ;
गाँधी की महिमा फैल गई, जग ने गाँधी का गुण गाया ।

कवि गद्गद् हो अपनी अपनी श्रद्धांजलियाँ भर भर लाए ;
'शेमा रोलाँ', 'रवि ठाकुर' ने उल्लसित गीत यश के गाए ।
इस समारोह में रज-कण-सी मैं क्या गाऊँ ? कैसे गाऊँ ?
इतनी विभूतियों के सम्मुख घबराती हूँ कैसे जाऊँ ?

दुनियाँ की सब आवाज़ों से जो ऊपर उठ उठ जाती है ;
लोहे से लोहा बजने की आवाज़ उस तरफ़ आती है ।
विज्ञान, ज्ञान की परिधि आज अब नहीं किसी बन्धन में है ;
सब ओर एक ही बात एक ही चर्चा यह जन-जन में है ।

कैसे लोहे में धार करें ? कैसे लोहे की मार करें ?
मानव दानव बन किस प्रकार आपस में घोर प्रहार करें ?
चल जाँय तोप जल जाय विश्व ; बम लेकर निकले वायुयान ,
लोहे के गोले बरस पड़ें वर्षा की बूँदों के समान ।

यह लोहे के युग की महिमा—श्मशान बन गए ग्राम ग्राम ;
 यह लोहे के युग की क्षमता मिट गए धरा के धाम धाम ।
 इस लौह-पान ने क्या न किया—जीवित ग्रामों को गड़ा दिया ;
 इस लौह-ज्ञान ने क्या न किया—गिरजे से गिरजा लड़ा दिया ।

उस ओर साधना है ऐसी इस ओर अशिक्षित ओ अज्ञान ;
 फावड़ा कुदाली वाले ये—मज़दूर और भोले किसान ।

आशा करते हैं एक रोज वह अवतारी फिर आवेगा ;
 आसुरी कृत्य करके समाप्त फिर दुनिया नई बसावेगा ।
 पर किसे ज्ञात था जग में वह अवतरित हो चुका है ज्ञानी ;
 जिसके तप-बल से फुके सभी दुनिया के ज्ञानी विज्ञानी ।

वह कौन ? एक मुट्ठी भर का अध-नंगा सा बूढ़ा फकीर ;
 जिसके माथे पर सत्य-तेज, जिसकी आँखों में विश्व-पीर ।
 जिसकी वाणी में शक्ति, भेद जो कुलिश-कपाटों को जाती ;
 जिसके अन्तर का प्रेम देख असि-धारा कुंठित हो जाती ।

वह गाँधी हम सबका 'बापू' वह अखिल विश्व का प्यारा है ;
 वह उनमें ही से एक जिन्होंने आकर विश्व उबारा है ।
 हैं बुद्ध सुखी, उसमें अपने ही परम-धर्म का ज्ञान देख ;
 हैं ईसा ख़ुश बलिदान देख पैग़म्बर ख़ुश ईमान देख ।

वह चलीं तोप, गल चले टैंक, बन्दूकें पिघली जाती हैं ;
 सुनते ही मंत्र अहिंसा का अपने में आप समाती हैं ।
 पाषाण-हृदय जो थे देखो वे आज पिघल कर मोम हुए ;
 मैं 'राम' बनूँ इस आशय से, 'रावण' के घर में होम हुए ।

है यही आदि गाँधी-युग का, जो बापू ने विस्तारा है ;
 हैं यहीं अन्त लोहे के दिन, जिनका विशान सहारा है ।
 विज्ञानी की है परम सिद्धि जग को लोहे से भर देना ;
 है हँसी-खेल तुमको बापू ! लोहे को पानी कर देना ।

इस तुकबन्दी में सार नहीं पर पूजा की दो बूँदें लो ;
 इन बूँदों में छोटा-सा कण उन पावन बूँदों का भर दो ।
 जो आगा ख़ाँ के महलों में छल छल करती, थी छलक पढ़ी ;
 उन दो विभूतियों की स्मृति में बरबस आँखों से ढलक पढ़ी ।

विश्ववंद्य बापू

डा० रामकुमार वर्मा, प्रयाग विश्वविद्यालय

क्रियाशील हृद हाथ और मुख पर मृदुतम मुस्कान ,
कठिन साधना से निकली हो जैसे सिद्धि महान !
एक तेज—जिसमें कितने सूर्यो का अमृत्यान ,
एक मंत्र—जिससे अभिशापों से निकले वरदान ,
स्वर जो विश्व-ताप की सब अनुभूति लिए है साथ ,
है स्वतंत्रता के प्रदीप-सा पराधीन के हाथ !

ये सब जैसे हैं विभूतियाँ जो लेकर अनुराग ,
बापू ! सजित करने आई आज तुम्हारा त्याग !
वही त्याग—जो वैभव के स्वप्नावसान का ज्ञान—
बनकर जागृत है जीवन के क्षण-क्षण में सुख मान ।
विश्व-संपदा छोटी है, इतना महान है त्याग !
पद-वंदन के लिए तुच्छ लगती है स्वर्ण-पराग !!

कर्मयोग के साधक ! तुम हो निर्बल के बल राम !
कितने कण्ठों में गूँजा है आज तुम्हारा नाम ?
विश्ववंद्य ! तुमने खोजे हैं निष्प्राणों में प्राण ।
किया तुम्हीं ने जीवन में जीवन का नव-निर्माण !
छिद्रों में संगीत भरा, कर दिया उन्हें स्वर-द्वार ,
तुमने लघु संकेत किया, गूँजा सारा संसार ।

बापू ! तुमको पाकर युग का धन्य हुआ इतिहास !
आज तुम्हारा वर्तमान ही है भविष्य की साँस !
जिस पथ पर गतिशील तुम्हारी छाया का आकार ,
है उस पथ पर ही स्वतन्त्रता का मंगलमय द्वार !
सुन पड़ता है वीर-गीत सुन पड़ता है जय-नाद ,
विजय सामने ही है बापू ! दो तुम आशीर्वाद !

बापू !

श्री उदयशंकर भट्ट

बापू, तुम भारत के भाल की
रेखा नव, लेखा नव,
स्वधुनी विशाल के नंदित प्रबुद्ध-पोत
ओत-प्रोत अंबर में स्फटिक निरभ्र-शुभ्र
लहरों की कल्पना से जीवन से ज्योतिपुंज ।
भारतीयता के, नव-भारतीयता के
एक सद्बिवेक अभिषेक; शुद्ध बुद्ध प्राणों के
पावन प्रबुद्ध जागो—जागते ही रहो, कल्प कल्पांत तक
दूर जब तक न हो—अहो,
मानव का ज्ञान शुद्ध, मानव का प्राण शुद्ध;
मानव की वाणी, कर्म, दया, क्षमायुक्त पूर्ण ?
इस महाकाल की दंष्ट्रा में वज्रपुंज
शोणित के सागर समग्र व्यग्र हो बहते हैं,
बहते हैं जिनमें असंख्य प्राण प्राणियों के
चीत्कार ! हाहाकार, स्वर विकार, मन्द तार
तीव्रतर तीव्रतम, सविशेष निर्विशेष ।
देश देश कुंठित किंकर्तव्यमूढ़ ।
देख रहे वे ही सब एक आस-व्यास लिये
रक्षा की दीक्षा की; भिक्षा को शिक्षा को
दोगे न क्या उन्हें नव प्राण नव ज्योति ?

अंजलि

देवपुरस्कार विजेता श्री दुलारेलाल भार्गव

प्रभा प्रभाकर देत जहि, साम्राजहि दिनरात ,
ताहू को हत-प्रभ कियौ, छिन गांधी-दृग-पात ।
सिव गाँधी दोई भये, बाँके माँ के लाल ,
उन काट्यौ हिन्दू न दुख, इन जग-दृग-तम जाल ।
गुरु गांधी तै ज्ञान लै, अनहद चरखा जोर ,
भारत-सबद-तरंग पै, बहति मुकुति की ओर ।

स्वागत खण्ड प्रलय में

श्री "दिनकर"

‘जय हो’, वन भंखाड़, उदासी छायी, स्वागत कौन करें ?
चरणों में अर्पित मिथिला के अभ्र-गंडकी की लहरें !
वन्दनवार सजा सुरके किसलय, सूखे वनफूलों से,
मार्ग भाड़ती वैशाली लोहू से भरे दुकूलों से ।

पथ विदीर्ण, सरसी उद्वेलित, हाय, किधर तुझको लाऊँ ?
वनवासी, गृह-हीन, कहो हे देव ! कहाँ मैं बिठलाऊँ ?
भंकृत हुआ पुण्य नम जिसके आदि मंत्र भंकारों से,
गढ़ा गया इतिहास जहाँ लिच्छवियों की तलवारों से,

जगा कपिल का ज्ञान जहाँ, प्रकटी सीता सी कल्याणी,
जहाँ मंत्रद्रष्टा गौतम की ध्वनित हुई पावन वाणी ।
उस महान भू के प्राङ्गण में यह कैसा बलिदान हुआ ?
तज विदेह सिद्धियाँ चलीं किसका भीषण आह्वान हुआ ?

किन पापों का कुटिल शाप ? क्यों वैभव का रस भंग हुआ ?
उजड़ गया वसता सुहाग, माता का भुज निस्संग हुआ ।
स्वागत, खण्ड-प्रलय-प्राङ्गण में छिन्न-भिन्न भंकारों से,
स्वागत, शैलराज-तनया मिथिला की दीन पुकारों से ।

माताओं की आह, सुहागिन का जलता सिन्दूर यहाँ,
क्रत्रों की भयपूर्ण गहनता, आज चिता का नूर यहाँ ।
स्वागत, भस्मीभूत कर्णागढ़ के वैभव की धूलों से,
स्वागत, ‘भीर’-चमन के मोहक उन मुक्तिये फूलों से ।

भौंक रहे सुर खड़े गगन पर मानवता की जाँच हुई,
कनक कसौटी पर है यह भीषण विपत्ति की आँच हुई ।
हरिश्चन्द्र, शिवि नहीं, किसी जननी ने कर्ण न पोसा है,
ओ नवयुग दधीचि ! तेरा ही हमको बड़ा भरोसा है !!

वंदना-गति

श्रीमती तोरन देवी शुक्ल 'लली'

कितनी आशा कितनी श्रद्धा कितना विश्वास सजाने में ?
कितना वैभव कितना गौरव गांधी की गरिमा गाने में ?
कितना साहस उल्लास भरा आदेशों के अपनाने में ,
हे देव ! उसे कैसे रच दूँ शब्दों के ताने बाने में ?
जग जीवन के पहले क्षण में जननी से पहला परिचय था ,
परिचय भी एक अलौकिक सा, यह मन यह तन सब निर्भय था ;
जब आँख खुली कुछ चेत हुआ, जननी जीवन बंधनमय था ,
वेदना, विकलता, विफल रोष, मन में भय मिश्रित विस्मय था ।
कितनी लज्जा संकोच व्यथा अपना परिचय बतलाने में ?
हे देव ! उसे कैसे रच दूँ शब्दों के ताने बाने में ?
ऐसे ही मैं तुम मिले और सौभाग्य हमारा जाग उठा ,
धन-सत्ता के मदमत्तों के प्रति एक विचित्र विराग उठा ;
कुछ यकित, व्यथित कुछ, दलित पतित जनका सोया अनुराग उठा,
हृदयों के कोने कोने से फिर सत्य - अहिंसा राग उठा ।
कितना गौरवान्वित हुआ राष्ट्र तुम जैसा धन अपनाने में ?
हे देव ! उसे कैसे रच दूँ शब्दों के ताने बाने में ?

तुम हो महान् !

श्रीमती तारा पांडेय

तुम हो महान !

तुम परम पूज्य, तुम गुण - निधान !

सब कार्य तुम्हारे मनभावन, पद-चिह्न बने हैं अति पावन ,
मैं मन्त्र मुग्ध-सी देख रही, कैसे गाऊँ अब मधुर गान ?

तुम हो महान !

जीवन में जागृति को भरने, सारे जग को ज्योतिष करने ,
'सत्याग्रह' का यह महामन्त्र है आज तुम्हारा अमर दान !

तुम हो महान !

ओ भारत माता के नन्दन ! युग-युग तक होवे अभिनन्दन !
आँखों के खारे पानी से मैं देती तुमको अर्घ्य-दान !

तुम हो महान !

बाफू के आँसू

श्री जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'

एक क्षण, दो अश्रुकण लघु, मूक, निर्मल !
दूसरे ही क्षण उठा चुपचाप
वस्त्र का कोना, विकम्पित हाथ से,
ले गया वह पोंछ अपने साथ मानो
विन्दुओं में वेदना के सिन्धु दो !

हिल उठा आमूल क्षण-भर
अचल दृढ़ता का वही गिरि,
वज्र भी जिसको नहीं पाता हिला
क्रुद्ध पशुबल के दमन-आघात का ।
देखते ही रह गए सब; दूसरे ही क्षण पुनः वह
शान्त, स्थिर, निष्कम्प था ।
बौध था जो एक, युग-युग से बँधा,
एक क्षण आया व्यथा का वेग ले,
दूटता-सा ज्ञात वह उसमें हुआ;
साथ लेकर दूसरा क्षण आ गया
आत्म-संयम का सहारा,
वह सुपरिचित, वह पुराना ।
देखते ही रह गए सब,
पुनः प्रत्येक मर्यादा अखण्डित ।
अर्धशताब्दि से भी अधिक जो
साथ थीं सुख-दुःख में, संघर्ष में ;
व्याप्त जिनसे अखिल जीवन ;
अमित स्मृतियों जुड़ चुकी थीं विविध जिनके साथ ।
जो प्रथम आईं किशोरी एक बन
अपरिचित गृह में अजान किशोर के;
सत्य-पथ के पथिक पति का साथ दे श्रद्धा-सहित,
कर मूक सेवा, त्याग, तप की
साधना अति-दीर्घ,
बन गई 'माँ' दलित-शोषित मनुजता की ।

सामने , 'बा' को उठाकर, रख रहे परिजन त्रिता पर ।
 पोंछ डाले अश्रु जिनके,
 देखते वे नयन अपलक ।
 आँसुओं से भी न पति के धुल सका शव त्यागिनी का;
 अश्रु जल का भी न खुल कर
 पा सकी वह अर्घ्य अन्तिम ।
 था सदा पति ने सिखाया—
 "त्याग जीवन भर करो जग के लिए;
 किन्तु, अपने हेतु तुम, कुछ न लेना, कुछ न पाना !"
 स्नेह के कण तो, करोड़ों मानवों में बँट गए;
 रिक्त पति की रिक्तता की रह गई थी स्वामिनी वह ।
 एक क्षण चाहा—सिमटकर स्नेह वह,
 अश्रु-गंगा बन, भिगो दे अन्त में
 स्नेह की एकान्त उस अधिकारिणी को ।
 पर, विफल वह एक क्षण का यत्न था ।
 दूसरे ही क्षण नयन जल-हीन 'बापू' के हुए ।
 स्निग्ध ज्यों-के-त्यों बने ही थे हृदय
 उधर अगणित मानवों के स्नेह से,
 हो चुका निःशेष था जो सब,
 कभी का बँटकर उन्हीं के बीच में ।
 था अभी खोया सहायक वह अथक,
 जो सजीव प्रतीक था मानो बना
 विश्व-भर के सब प्रशंसक-वर्ग के विश्वास का ।
 सहचरी, अर्धांगिनी भी अब गई,
 जो अकेली मूर्ति प्रतिनिधि-रूप थीं
 अचल भद्रा को अमित अनुयायियों की ।
 अन्त के सकल क्षणों में,
 नाम के दो विफल 'आह्वान' उनको थे मिले ;
 'अश्रु' दो पोंछे गए इनके लिए ।
 लुट गए आधार दोनों,
 हों गए स्मृति-शेष कारा-वास ही में
 देखते ही रह गए लोचन चिताएँ सामने !
 किन्तु, अपने आपके प्रति ही सदा
 अधिक निष्ठुर हृदय बापू का रहा ।

पी अपनी व्यथा का सब हलाहल आप ही !
व्यक्तिगत दुःख छिपा उस उच्छ्वास में,
जो करोड़ों पीड़ितों की वेदना के ज्ञान से,
उठ हृदय से, व्याप्त हो रहता उसी में ।

सान्त्वना दी थी जवाहरलाल को
और बन्दी राष्ट्रपति आज़ाद को,
जो न अंतिम झलक भी थे पा सके
धैर्य का संदेश भेजा,
मौन द्वारा, प्रार्थना के मार्ग से ।
पर, स्वयं तुम आज जब
हो उसी क्षति से दुःखी बापू हमारे,
कौन तुमको धैर्य दे ?
कौन पोंछे अश्रु ?
और किसमें शक्ति, तुमको छोड़कर ?
तुम स्वयं दुःखी, स्वयं ही धैर्यदाता !
सिन्धु का तूफ़ान रोके कौन ?
कौन ऐसा, सिन्धु ही को छोड़कर ?
अनल-गिरि की करे ज्वाला शांत ?
कौन ऐसा शक्तिशाली है,
स्वयं गिरि के सिवा ?

तुम वचन के संयमी, आचरण के संयमी तुम,
वसन, भोजन के, विचारों के चिरन्तन संयमी तुम,
दृढ़ रहे हो !
किन्तु, दुःख के संयमी तुम, अश्रुओं के संयमी,
रूप यह दृढ़तर तुम्हारा !
वेदना अवरुद्ध किससे है हुई ?
मौन रह सहना इसे क्या है सरल ?
हृदय फट जाता व्यथा-अवरोध से !

तुम सहो, तुम सहोगे ही ;
सब हिलें, पर, गिरि न हिलते ।

चरणतल में है पड़ी जो सृष्टि विस्तृत,
प्यार उससे, भार उसका !

कर्म के, कर्तव्य के बन्दी, अचल तुम !
अश्रु दो, हाँ, अश्रु दो
पर, वे निमिष भर ही रहे !
सह गए आघात तुम रह मौन ही ;
और यह दिखला दिया—
मनुज ही हो तुम, परंतु, महान हो !

साधना अविचल तुम्हारी
और कुछ भी तो असंभव है नहीं
विश्व में यदि करे मानव साधना ।
पर, सभी तो साधनारत हैं नहीं,
सह नहीं सकते सभी यों दुःख को
विश्व के अगणित मनुज इस शोक के
प्रबलतम आघात से
रो रहे हैं, हो रहे विचलित, दुखी !

बेबसी में, बन्धनों में, दीर्घ कारावास में जो,
क्षति उठाई, अश्रु पोछे,
पृथक् जनता से रहे तुम, दूर—
सब समझते वे, हृदय जिनको मिला
समझते मूल्य हैं बापू, आँसुओं का ये तुम्हारे
कोटि-कोटि स्वदेशवासी ;

और यह भी हैं समझते
वे सभी, जो ले चुके
निज मातृभू की मुक्ति का व्रत—

“मूल्य देना है हमें इन आँसुओं का
रक्त के निज बिन्दु देकर !”

मिट्टी के दिए

श्री 'केसरी'

कंचन तन बन निखरे निखरे !

जल रहे आज चालीस कोटि मिट्टी के दिये सनेह भरे !

किस प्रेम-पुजारी के प्राणों में ऐसी है चिनगारी-सी ?
छू जिससे मिट्टी के पुतले बनते आरती सँवारी सी !
किसके इंगित पर जगा आज भारत का सुत भाग्य-तारा ?
यह कौन धरातल उदयाचल पर जिससे फूट ज्योति-धारा

छा गई हिन्द-सागर तट से उत्तर-हिमगिरि शिखरे-शिखरे ।

कंचन तन बन निखरे निखरे !

मिट्टी के दिये सनेह-पिये, शीतल ज्वाला की शिखा लिये ,
'हमसे न जले कोई हम जल-जल दें प्रकाश'—यह हौंस हिये ।
ये देख चुके आँधीवाली बिजली पिशाचिनी की माया ,
ये देख चुके बारूद गैस से कंपित यूरोप की काया ,

ये देख चुके बुझ गया प्रतीची में मानवता का चिराग ,
सूली पर टँगा दानवों की है उसकी 'मरियम' का सुहाग !
जल रहे दीप अम्लान किंतु दे यदपि चतुर्दिक् तम छाया ,
इसलिये कि इन पर प्रभु की फैली करुणा की अंचल छाया ।

इसलिये कि इनको 'मुक्ति-पुजारी' का यह है पावन निदेश ,
तुम दो प्रकाश मत देखो यह प्यारा स्वदेश है, या विदेश !
मिट्टी के दिये ! आज प्राची के ये सुहाग-सिंदूर बने ,
जग प्रेम-ज्योति हित ये अनन्त श्रीमन्त नखत शशि सूर बने ;

तुम जलो मुक्ति की आग हिन्द के गाँव-गाँव खेरे-खेरे ,
ओ सत्य पुजारी ! चिनगारियाँ तुम्हारे-चहुँ दिशि में बिखरें ।
ओ मुक्ति-मशाल ! बढ़ो आगे पीछे यह दीपावली चली ,
देखो स्वागत के लिये हिन्द की सुख-संपत्ति कमला निकली !

देवता तुम्हीं ने इस सोई मिट्टी में नवल प्राण प्रेरे ।
जल रहे आज चालीस कोटि मिट्टी के दिये उमंग-भरे !

कंचन-तन बन निखरे निखरे !

स्वागत

श्री गोपालसिंह नेपाली
(गोलमेज परिषद से लौटने पर)

स्वागत, ऐ मोहन, इस तट पर भारत के अभिमानों से,
हिन्दू, सिक्ख, मुसलमानों, ईसाई और पठानों से,
भूले-भटके गुरखों से, बंगाली वीर जवानों से,
इनसे, उनसे, सभी जनों से, जननी की संतानों से ।

हिम पर्वत पर रहनेवाले शंकर के वरदानों से,
गौतम, नानक के, रहीम के, ईसा के प्ररमानों से,
गंगा के गीले आँसू से बिजली के बलिदानों से,
छप्परहीन कुटी में बसनेवाले दीन किसानों से ।

हिमगिरि के ठंडे मस्तक से, विन्ध्या के ठंडे मन से,
यमुना-तट के ताजमहल से, कुचले दिल के रोदन से,
वृन्दावन की सूखी पतझड़ से, जननी के बंधन से,
पल-पल में माँ की छाती पर होनेवाले नर्तन से ।

काश्मीर के सड़े फलों से, हिन्दू-मुस्लिम दंगल से,
गौरव-क्षत, उजड़े 'ढाका' के फटे-पुराने मलमल से,
स्वागत है रीते हाथों का बन्दी के कर निर्मल से,
स्वागत स्वागत होनहार भावी भारत के मंगल से !

उत्तर-उत्तर जल्दी इस तट पर, गिन मां के दिल की धड़कन,
देख, नाचने को आँगन में आतुर है जब नव-चेतन,
बचपन बीता, मरा बुढ़ापा, आया है अब पागलपन,
बहती चारों ओर हवा है, उबली आहों की सन-सन !

बागडोर ले हाथों में अब, बलिवेदी पर रथ ले चल !
जिस पथ से गतवर्ष गये थे, हमें वही अब पथ ले चल !
जितने हैं ये नाग भयंकर, उन सबको तू नथ ले चल !
छोड़-छाड़ अब सात समुन्दर गंगा ही को मथ ले चल !

श्री गांधी जी के जन्म-दिवस पर भारतमाता की बधाई !

(जब गांधीजी विज्ञायत में थे !)

श्री 'वक्चन'

अहा ! दो अक्टूबर है आज, जन्मदिन मोहन का है आज,
प्रकृति तू हर्षित होकर खूब सजा अपना अति सुन्दर साज !
बुला ला जाकर मृदुल समीर, तीव्र गति बहे छोड़कर नाज़,
कि जिसमें हर पत्ते से आज नफ़ीरी की निकले आवाज़ !

आ गई, पहिले कर यह काम—बादलों को दे यह सन्देश—
करें नभ-नौबतख़ाने बैठ नगाड़े पीट निनादित देश !
फूलकर लायें मादक गंध प्रकृति कह दे फूलों से आज,
लताओं से कह दे, वे नृत्य करें, फूलों के सजकर साज !

विहंगों से जा कह दे आज खोलकर गले करें कल-गान,
मधुर कलरव से सारी देश - दिशायें हो जायें गुंजान !
प्रकृति जा कश्मीरी के पास, हमारी मालिन जो हुशियार,
बता आ, उसको होगा आज लगाना घर पर वंदनवार !

गगरियाँ गंगा-जमुना लिये करेंगी आकर स्वयं सिंचाव,
आज भीतर-बाहर सब ओर उन्हें करना होगा छिड़काव !
चाँद दिन में ही आये आज लिये कूची, किरणों के तार,
चाँदनी से दे दिन में पोत भीतरी घर की सब दीवार !

लगे जो फल हों मेरे बाग़, उन्हें मालीगण लायें आज,
तोड़ ताज़े, मीठे पहचान बाँस की डाल-डालियों साज !
आज मैं दीन जनों को न्योत कराऊँगी भोजन भरपूर,
शुभाशिष जिनका मेरे लाल को लगे जो बैठा जा दूर !

जन्मदिन आनंदित इस वर्ष बना मुझको न सका भरपूर,
हृदय जल-जल उठता है आज सोचकर मोहन मुझसे दूर !

किस तरह जन्म-दिवस की आज बधाई पहुँचे अति सुकुमार !
हमारे प्राण लाल के पास किस तरह, मेरा प्यार-दुलार !

खींच लो स्नेह-सलिल हे तात हृदय के उठते तुम उच्छ्वास !
बनो बादल का टुकड़ा एक उड़ो प्यारे मोहन के पास !
दिवस में करना उसपर छाँह सलोना जहाँ हमारा लाल ,
महफ़िलों में जैसे छिड़काव, बरसना उस पर सन्ध्या काल !

पहुँच उसके कानों के पास बूँद में कहना धीमे, स्नेह
विरहिणी माँ का आया आज बरसने तुझ पर बनकर मेह !
तुम्हारा जन्म-दिवस है आज दूर तुम इसका दुःख महान ,
मेजती हूँ आशीष स्वरूप स्नेह-जल-मुक्ताओं की माल !

पकड़ बिठलाती अपनी गोद पास यदि होते मेरे लाल ,
फेरती शिर आशिष के हाथ चूमती तेरे दोनों गाल !
लगा छाती से अपनी वत्स ! तुम्हे कर लेती क्षण भर प्यार ,
पिलाती दुह बकरी का दूध, खिलाती फल-मेवे दो-चार !

तुम्हे तो आती इस पर लाज, लिये अपने तुझ-सा सुकुमार ,
सलोना पुत्र दिया जो भेज विलायत सात समुन्दर पार !
कामना मेरी मंगल-पूर्ण रहे हर जगह तुम्हारे साथ ;
तुम्हारे ऊपर छाया रूप कोटि अस्सी हों मेरे हाथ !

हमारे अंचल का शृंगार जिये युग-युग मोहन, भगवान !
छिने मत मुझ गुदड़ी का लाल, माँगती एक यही वरदान !
ले लिया क्रूर काल ने छीन हमारा गुण, गौरव, सम्मान ,
बचाना हे भगवान कृपालु, बुढ़ाई का मेरे अभिमान !

गया है तू मेरे जिस काम सफलता उसमें देगी मोद ,
मुझे, पर यदि असफल हो पुत्र, किलकते आना मेरी गोद !
मुझे है इसकी क्या परवाह, मुझे क्या लाता मेरा लाल ,
भरे या खाली आये हाथ लगा लूँगी छाती तत्काल !

भले ही मैले, फटे कुवस्त्र ढकें यह मेरी सूखी खाल ,
चमकते हों यदि तुझसे गोद जवाहर, हीरे, मोती लाल !

युगदेवता से—

श्री ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी

कौन ! तुम युग-देवता ?

साकार—

हो उठे, सुनकर विकल भव का कष्ट चित्कार !

नाश की काली अमा सा घिर रहा तम-तोम !

उड्डप क्या, हैं खो गये जिसमें स्वयं रवि-सोम !!

खो गये ? हाँ, खो गये वे,

और वे घर, नगर, जन-पद,

सतत गुंजित था जहाँ पर ऐक्य का स्वर

इस तमिस्रा में अजाने—

भ्रम भरे से—

भ्रम भरे से—बेसहारे, बैठकाने—

भूल अपना लक्ष्य, निश्चल सो गये वे ।

और वे पथ—अटपटे, अनजान से पथ—

एक शुभ-संकल्प ही जिनका कि था अर्थ

एक चंचल साध जैसे —

चले थे निर्वाध जैसे

क्या पता, किस ओर मुड़कर खो गये वे ?

किस पतन के गर्त में जाकर समाहित हो गये वे ?

और वे शुभ फूल

साध्य के आराध्य की शुभ अर्चना के फूल,

भरा था जिनमें कि जनहित साधना का गन्ध,

भूमता था विश्व अलि मधु-अन्ध !

इस तिमिर में आज वे शुभ साधना के फूल,

हो रहे हैं वासना के दैत्य की पद-धूल ।

और वे मधु बोल—

प्राण के वे प्यार डूबे बोल,

जो विहँग से स्वरों के मृदु चंचु चंचल खोल,

स्वरित करते थे गगनवन मधुर मधु-सा घोल,

रुद्ध हैं—अवरुद्ध; अपना खो चुके हैं गान;
सिसकते हैं कण्ठ में उनके विफल आह्वान !

और जग में छा रहा है तरुण हाहाकार !
देवता, युगदेवता तब तुम हुए साकार !

मनुजता के हृदय पर जब दनुजता का नृत्य,
और शिव-साधक बना जब अशिवता का भृत्य,
यन्त्र-स्वर में खो गया जब प्राण का चिर गान,
सुर विमोहक स्वरों का जब रुक रहा संधान,
और जब है युद्ध का विकराल दानव क्रुद्ध,
देव सुत को देवमठ का द्वार है जब रुद्ध,
जबकि कंकर और पत्थर हुए नर का मोल,
स्वार्थ की वीणा बने जब वन्दना के बोल ।

कौन करुणा के भवन का खोल मंगल-द्वार,
देवता, युगदेवता, तुम हो उठे साकार !

यह असीमित तिमिर, औ' सीमित तुम्हारा दीप,
ला रहा है मुक्ति की घड़ियाँ समीप—समीप !
यह तिमिर की क्रूर कारा,
और तुमने किस अजाने—स्नेह का लेकर सहारा,
प्राण, अपने प्राण का दीपक उजारा !
मेह की भर, औ' भयंकर मत्त भ्रंभावात,
यह तुम्हारी सावना औ' यह महा उत्पात !
और लो वह युद्ध का स्वर—प्रखर था; अब है प्रखरतर ।
हो उठी इन बेड़ियों की क्रूरतर भंकार ।
देवता, युगदेवता, साकार !

कौन कहता है तुम्हारे व्यर्थ हुए प्रयास !
कौन कहता है तुम्हारा व्यर्थ गया प्रकाश !
तुम अडिग, तुम ओ अकम्पित, जल रहे निस्पन्द;
आप अपनी साधना के पूत-घट में बन्द !
तुम अधूमिल, अबुभ्र अन्तर्ज्योति के आगार !
देवता, युगदेवता, साकार !

ये शलभ चंचल शलभ पाकर तुम्हारा स्पर्श,
जल उठे औ' जग उठा लो ज्योति का नव हर्ष ।

तुम्हारे अक्षर स्वरों का अमर दीपक राग,
प्राण युग के प्राण में लो आज उठ्ठा जाग ।
और यह जो क्रूरता का दीखता विस्तार,
है सुनिश्चित यह, पराजय का प्रबल चीत्कार ।

देखता हूँ मैं कि तम का यह असीम प्रसार,
जल उठा है और ज्योति हो उठा संसार ।
औ' तुम्हारी ज्योति का सन्देश,
गूँज उठ्ठा; जाग उठ्ठा यह तुम्हारा देश ।
लो उठा प्रत्येक कण से मुक्त यह हुंकार,
'कौन है जो रुद्ध रखे मुक्ति-पथ का द्वार !'
देवता, युगदेवता, साकार !

अस्थि क्या ? क्या चर्म ?
तुम तो प्राण शाश्वत प्राण—
तुम अखिल संसार के ओ मूर्तिमय कल्याण !
अहे बापू !
तुम्हारा जय-गान—
कोटि कण्ठों में जगा बन मुक्ति का आह्वान !

तुम किसी के मचलते से उमड़ते से प्यार—
चल पड़े हो आज करने विश्व एकाकार !

ये पतन से खड्ड औ' व्योम चुम्बी शृङ्ग—
सम हुए पाकर तुम्हारे प्राण की रसधार ।
उधर लो, वह कूज उठ्ठा दूर मंगल गान—
आ रहा है नये युग का दिव्य स्वर्य विहान !
हो रहा है एक संस्कृति का नया अवतार—
देवता,
वह तुम्हारी चिर-साधना का दान !

और लो श्रद्धावनत है यह अखिल संसार—
युग-पुरुष, वन्दन तुम्हारा आज सौ सौ बार !
देवता ! तुम देवता ! साकार ।

तुम प्रज्वलित प्रतीक विभा के

श्री 'अंचल'

तुम प्रज्वलित प्रतीक विभा के नवजागृति निर्माता !
महादेश के महाप्राण नवयुग ! नवसृष्टि विधाता !
टूट गए सदियों के बंधन जब तुम देव पधारे ।
शीतल हुए तुम्हें छूकर अभिशापों के अंगारे ।

किसका मस्तक नहीं तुम्हारे चरणों पर नत होता ?
किसका गौरव नहीं तुम्हारी चरण-धूलि में सोता ?
सदियों में जलती है ऐसी महाक्रांति की ज्वाला ।
सदियों में पूरी होती है बलिदानों की माला ।

सदियों में आते हैं तुमसे नीलकंठ वरदानी ।
सदियों में पूरी होती आज़ादी की कुर्बानी !
डोल उठीं दुनिया की दीवारें—चट्टानें टूटीं
प्रतिरोधों का रोष लिए जब युग की किरणें फूटीं ।

तुम नूतन बलिपंथ सृजेता ! तेजवंत बलदाता !
वज्रप्रहारों तूफ़ानों में जो रहता मुस्काता !
रुक रुक जाती श्वास दमन की सुन निर्घोष तुम्हारा,
दीप्त तुम्हारी आहुतियों से स्वतंत्रता का तारा ।

तुम सदियों की लुटी प्रजा के संघर्षों के सम्बल !
पग पग पर नवजीवन के अध्याय लिख रहे उज्ज्वल !
आशा का उल्लास और आलोक तुम्हारा सहचर,
अविनाशी प्राणों का उद्यत दर्प तुम्हारा अनुचर ।

महाकाश की जय-ध्वनि-सी दुर्दम्य तुम्हारी वाणी
शिशिर - स्निग्ध मुस्कान तुम्हारी ओ साधक ! संधानी !
हे प्रबुद्ध हे मती ! राष्ट्र की जनता के सेनानी !
कैसे अर्चन करें तुम्हारा ? रुद्ध हमारी वाणी !

महाक्रान्ति के अग्रदूत विद्रोह शिखर—अधिनायक !
महारुद्र ओ दीप्तकंठ ! मैरव गीतों के गायक !
फिर हंगित पर चले तुम्हारे विजय लुब्ध जन गण मन
पग चिह्नों पर बदे तुम्हारे लुब्ध देश का यौवन ।

काल-पुरुष

श्री केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' एम० ए०

विश्व के हा हा रव के बीच तुम्हारा जब गूँजा आह्वान,
तृणों के तृषित अधर को चूम दौड़-सी गई मृदुल मुस्कान,
रहा जो रक्त-पान में लीन निरंतर तर्क-शक्ति के साथ,
भरे आँखों में घृणा अपार रुधिर लिपटाये दोनों हाथ,

रहा जो रक्त-पान में लीन ध्वस्त कर जग की सारी कांति,
ध्वस्त कर धरणी का छवि-जाल ध्वस्त कर अखिल-भुवन की शांति,
हृदय उस मानव का तत्काल हुआ विस्मय से मुग्ध महान,
कि उतरा कौन भूमि पर आज प्रेम का ले पावन वरदान !

शून्य ने किया शून्य से प्रश्न,—न जाने क्यों सिहरा संसार !
कि किसके पथ पर आज अनंत अनिल उमड़ा बनकर जयकार !
कि फैला किसके तप का तेज पिघलने लगे निडुर पाषाण,
द्विधा में पड़ा द्वेष गंभीर घृणा या प्रेम—कहाँ कल्याण !

चिता-लपटों के बीच अधीर भैरवी भूल गई शृंगार,
सोचने लगी नियति निस्तब्ध कि किसने किया मरण से प्यार !
देख भूतल पर क्रांति समग्र देखकर रुका प्रलय का काण्ड,
चकित-सा देख कि तम के बीच ध्वंस से बचा खड़ा ब्रह्माण्ड !

उठी शंकर की आँखें नाच खिंचा अधरों पर उज्ज्वल हास,
कि मानो लहरों पर रंगीन जगा हो सोते से मधुमास !
देख पति की चितवन में दिव्य नाश के बदले नव उल्लास,
पुलक-आकुल अंगों में देख अपरिचित एक नवीन हुलास !

उमा की वाणी खुली अधीर—“प्रलय के प्रभु ! यह कैसा हर्ष !
रहे हग आज हगों में देख नया पल, नया दिवस, नव-वर्ष” !
विहँसकर हँसकर फिर चुपचाप सजा धीरे से पन्नग-माल,
शिवा को कर उमंग से प्यार दिया शिव ने उत्तर तत्काल,

“स्वर्ग का सुधासिक्त अभिराम अमर मंगल-आलोक अनूप,
हुआ अवतरित धरा पर धन्य प्रिये ! घर काल-पुरुष का रूप !
कि जिसने लिया द्वेष को चूम घृणा को दिया हृदय का प्यार,
कि जिसने ली श्वासों में बाँध सजल-करुणा की दीन-पुकार !”

कि जिसने दिया व्यथा को अश्रु, अश्रु को जल उठने का भाव ,
 कि जिसने तूफानों के बीच छोड़ दी अपनी जीवन-नाव ;
 कि जिसने पिया प्रेम से भूमि विश्व का सकल घृणा-अपमान ,
 किया था जैसे मैंने देवि ! सुरों के लिए हलाहल-पान ।

रूप धर काल-पुरुष का आज भूमि पर उतरा वह आलोक ,
 कि जिसने तनिक दृगों से देख लिया उन्मत्त प्रलय को रोक ।
 कि जिसके शब्दों से सुकुमार रहे मेरे ज्वाला-कण भौंक ;
 पुरातन का सौन्दर्य नवीन दिया जिसने कण-कण में आँक ।

कि जिसकी निर्मल कीर्ति अखण्ड लिये नभ-चुम्बी गिरि-पाषाण ,
 कि जिसके प्रण-प्रदीप की ज्वाल रही छू मानवता के प्राण ।”
 हुए गौरीपति ज्यों ही मौन, किया नवयुग ने जयजयकार ,
 विश्व ने देखा भाव-विभोर, रहे तुम खोल मुक्ति का द्वार ।

गृह-गृह हो नित नूतन अभिनंदन

श्री चन्द्रप्रकाश सिंह एम० ए०

यह हिमगिरि जिसका पौरुष है, गंगा तप की उज्ज्वल गरिमा ?
 है अटल सत्य-सा उदित सूर्य, आलोकित दिशि-दिशि में महिमा ।
 जिसके अन्तर की करुणा का वरुणालय वह लहराता है,
 जिसके यश के मधु-सौरभ को आमोदित पवन लुटाता है,

जिसके नयनों से उठ उठ धन जगती का जीवन बन जाते,
 सब शोषित, शापित, संतापित, जिससे हैं शीतलता पाते,
 जिसके स्वप्नों में जाग रहा संसृति का मंगलमय उपक्रम,
 जिसकी वाणी में व्यंजित है निज देश-धर्म का श्रेय परम,

वह गांधी नव-युग-जाग्रति की आँधी-सा उठता आया है,
 वह मोहन जन के मन-नभ पर शुचि कर्म-चन्द्र बन छाया है ।
 वह अजर, अमर हो, अक्षय हो, भारत के प्राणों का प्रिय धन !
 वह सहस्रायु हो, चलता हो गृह-गृह नित नूतन अभिनंदन !

गंधी गीत

प्रो० विश्वनाथप्रसाद

तुम देवों के देव बने !

मानवता के सत्य हुए सब युग-युग के सपने !
पग-स्पर्श से प्राण पा जगी पाषाणी जनता ,
हथकड़ियों में आज़ादी का राग लगा बजने ।

तुम देवों के देव बने !

अगणित द्रौपदियों के दुःशासन ने वसन हरे ,
लगे सदैव तुम चक्रपाणि अक्षय पट भट्ट सजने ।

तुम देवों के देव बने !

हिंसा-प्रतिहिंसा पिशाचिनी दनुज-चृत्य में मग्न ,
चले आत्म-बलिदान-मन्त्र से मनुज-त्रास हरने ।

तुम देवों के देव बने !

अग्नि अग्नि से, वैर वैर से शान्त किया किसने ?
अतः प्यार से अनाचार संहार किया तुमने ।

तुम देवों के देव बने !

अस्त्र-शस्त्रमय दैत्यों से निर्भय निःशस्त्र डटे ,
और लगे दुर्दानवता के अंग-अंग कटने ।

तुम देवों के देव बने !

मेद-भाव मिट गए सर्ग के वर्ग-वैर बिसरे ,
राजा-रंक लगे सम स्वर से तव जय-जय रटने ।

तुम देवों के देव बने !

काली जल-भुन हुई सम्यता की लाली न रही ,
अथ तव सुनें पुकार सम्यता के शिशु बने-ठने ।

तुम देवों के देव बने !

तृप्ति विश्व-हित लिए अमृत वर कब से देव खड़े ?
सर्वनाश ! आया न जगत जो दौड़ यहाँ बचने ।

तुम देवों के देव बने !

हे पुरुषोत्तम ! जीवन से तम टले, ज्योति सरसे ,
परम-धर्म* विलसे जग में अणु-अणु हों स्नेह-सने ।

तुम देवों के देव बने !

* "अहिंसा परमो धर्मः ।"

महामानव

श्री पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

उस दिन बोल उठी अनजाने, नीरव-सी वन की छाया ;
जब अनन्त में महाज्योति के सागर-सा कुछ लहराया ।
किरण-करो से युग-मन्दिर का खोल किसी ने द्वार किया ;
स्वागत-पथ पर दम्भी-नगपति, ने भी हृदय पसार दिया ।

चकित विश्व ने कहा महामानव की छाया डोल रही ;
हिय - हिय की धड़कन में उसकी, मंगल-वाणी बोल रही ।
गूँज उठा नभ बार बार जब, युग ने जय-जयकार किया ;
पुलक-पुलक युग उठा, धरा ने निज सर्वस जब वार दिया ।

चूम चरण अभिवन्दनीय फिर उस मिट्टी की काया के ,
श्वास श्वास में गौरव-गर्भित गीत बाँध उस छाया के ।
चिनगारी बन उठी कल्पना, प्रण-प्रदीप सुलगाने को ;
आत्म-प्रलय का मंत्र फूँक, जागृति की ज्योति जगाने को ।

खुलीं चेतना की आँखें, वाणी की ज्वाला फैल चली ;
नभ को हिला, हिला धरणी को, कम्पित कर गिरि शैल चली ।
बाधा-बन्धन अपने ही लघु-तम में अन्तर्ध्यान हुए ,
अश्रु महामानव के युग-वीणा के मंगल-गान हुए ।

पतन—अभ्युदय-पथ के पन्थी, काँप रहे, वह जाता है ,
लपटों में भी मुत्काकर, आगे ही पैर बढ़ाता है ।
आसपास जो खड़े आँच से, जल जाते घबराते हैं ,
किन्तु मरण के सम्मुख भी, उसके पग बढ़ते जाते हैं ।

युग की सजग चेतना का, प्रतिनिधि पौरुष का ज्वार प्रबल ,
त्याग और तप का प्रतीक, पीड़ित का कातर प्यार सजल ।
मुट्टी भर हड्डियाँ, ज़रा-सी मिट्टी हल्की-सी धड़कन ,
आत्म-प्रलय की धुन अन्तर में, लेश न होठों पर सिझुड़न ।

दृग में शक्ति कि स्वयं रोक ले, अपनी गति से महाप्रलय !
जान हथेली पर, खतरों से प्रेम, महामानव की ज्य !

देव !!

श्री राजेश्वर गुरु

देव ! हम कैसे कहें तुमको घरा की वस्तु ?
नन्दे हीन सारे बन्धनों से मुक्त
इस विस्तीर्ण लघुता भरी समता पर महान उभार हो तुम !

अहे मानव, देव ही कैसे कहें ?
देवत्व की साकार तुम अविकार प्रतिमा,
किन्तु, जो उर किये ज्वालित, प्यार हो तुम—
नहीं तुम श्रद्धाजनित उस इला की भावना से युक्त
जिसमें भक्ति का साहस झुलंस देवत्व की महिमाभि में
ऊपर न उठ पाए चरण की धूलि से;

हम विनत दुर्बल सशंकित मानव हृदय
पाकर तुम्हें, खोने न देंगे,
पास हो तुम कहो कैसे मान लें हम देव तुमको
मानवोपरि प्राण ! बनकर देव
मानव ही रहो तुम देव-सा होने न देंगे ।

दिव्य ! छोटे दो नयन में दूर के किस देश की आभा भरें
तुम कौन ? जो आदिम युगों से धरे नाना रूप, नाना वेश
जग के किसी घन-तम-लोम-व्यापी अंध कोने में
चिरंतन प्रज्वलित किस दीप की
सिमटी किरन के प्राणदा आलोक से ही जागते हो !

वरद-कर की शरद ज्योत्स्ना विकीरित करते हुए,
हतभाग मानव किन्तु हम !
जो जानकर भी नहीं तुमको जान पाते !!

हे ज्योतिपुञ्ज अनूप ! हे गंभीर शान्त प्रशान्त !
इस अति पाप-संकुल विश्व को जो याचना के नयन फैलाये
तुम्हारी विकीरित हर किरन का प्यासा
उसे संजीविनी दो ज्योति की, वह जी उठे !

उपचार विनय

श्री कृष्णचन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

बापू ! तुम वैसे बापू हो ?

कभी कभी पर भ्रम होता है—

कहीं वहीं तो नहीं आ गया, जो क्षीरोदधि में सोता है ।

राशि नाम की भी वह ही है, और जागरण-वंशी वह ही

शान्ति-दूत वह कुरुक्षेत्र का अब भी भार वही ढोता है ।

महारास में जैसे

श्रुति की सभी ऋचाएँ नाच रही थीं ।

चीर-हरण में मुक्त-आत्मा-सम्मुख नग्न विराज रही थीं ।

आज क्या नहीं वैसे ही हम नंगे भूखे साथ तुम्हारे ।

दृष्टि आपकी भी वह ही है जो जब सब कुछ आँक रही थी ।

कठिन जाल है हीन हाल दानों पर लाल लुटे जाते हैं, आप

रोष का दावानल पीकर चुपचाप घुटे जाते हैं,

यही अवस्था रही,

व्यवस्था तो फिर किस के लिए करोगे ?

इन्द्र कोप से बचा लिए जो, अब वह प्राण लुटे जाते हैं !

बापू के करणों में

श्री निरंकार देव सेवक एम. ए.

भारतीय जन-मन के स्पन्दन, जीवन के ध्वनिकार,

जग की पुंजीभूत भक्ति और श्रद्धा के आधार !

तन से वृद्ध, प्रकृति से बालक, मन से युवक समान,

भारत के तुम एक मात्र हे आप स्वयं भगवान् !

शुचिंता शील दया की प्रतिमा, तुम ममता की मूर्ति !

नास्तिक होते हुए जगत् में तुम ईश्वर की पूर्ति !!

आज तुम्हारे हाथों में है राष्ट्र-धर्म की डोर,

इसकी गति-क्रम घुमा फिरा दो तुम चाहो जिस ओर ।

डूब रही दुर्बल मानवता महायुद्ध-मँझधार,

कितने उत्सुक नयन रहे हैं तुमको आज निहार ।

लेकर कर में सत्य अहिंसा की दोनों पतवार,

तुम्हीं करोगे इस दुखियारी के बेड़े को पार !

बापू

श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल, सेकसरिया कालेज, वर्धा

सत्य अहिंसा के मंदिर में, रहे सदा हो अटल पुजारी,
दलित अकिंचन अबल जनों के, चिर सेवक अनन्य हितकारी ।
निज शरीर को जला-जलाकर आलोकित करते हो जग को,
सुलभ बनाते त्याग तपस्या से स्वदेश के दुर्गम मग को ।
संत ! तुम्हारी मानवता ने ही मुझको खींचा है ।
विमल प्रेम जल से तुमने नित मनुज-हृदय को सींचा है ।

भारतमाता की माला का यह सुमेरु

श्री रामनाथ गुप्त

अरे, कौन हम-सा बड़भागी, अरे कौन हम-सा पावन ,
हम पद-दलितों के हित दौड़े नंगे चरण शरण - अशरण ,
खूब, आज प्रत्यक्ष हो गई कण-कण-व्यापक ज्योति गहन ,
बापू के प्राणों में प्रकटे निखिल जंगल - पति रमा - रमण ।
भक्तों की परिपाटी का विश्वास अचल हमने देखा ,
कर्मयोगियों की श्रद्धा का वास विमल हमने देखा ,
ज्ञानि - जनों का शुद्ध बुद्धि - उत्कर्ष धवल हमने देखा ,
'निर्बल के बल राम' अनास्था के युग में हमने देखा ।
उकठ - कुकाठ देखते इसमें दाहक स्फुलिंग की ज्वाला ,
अरे क्रान्तदृष्टा महान यह फेर रहा चिर गति - माला ,
दानवता के ऊपर यह मानवता की विजय - पताका ,
पूर्ण अखण्ड अजेय शक्ति का गाया इसने नव साका ।
युग-युग के पीड़ित मानव की आहों का यह एकमात्र बल ,
दलित हृदय के अश्रुदलों का यही एक त्रिभुवन में सम्बल ,
हिंसा - महाशास्त्र का कीलक, यह भैरव नटनागर शंकर ,
अचल धरित्री का साधक यह, परम-अहिंसा-धर्म-धुरंधर ;
भारतमाता की माला का यह सुमेरु—मानव-शिर-भूषण ,
युग-युग के अवतारों का यह चरम विकास—दिव्यतम पूषण ;
इसके चरणों से सतयुग का देख रहे हम अभिनव उद्भव,—
खुले हृदय से गले मिलेगा जिसमें प्रति मानव से मानव ।

वन्दन-गीति

श्री नरेशकुमार

काव्य के शत श्लोक का वन्दन तुम्हें !

घरणि-वैदिक श्वास पाकर, भी गगन शापित रहेगा ;
वज्र शम्पा के प्रहारों को, हिमालय सह सकेगा ;
कण्ठ में उलझीं ऋचायें ,
सूत्रमय हों हर शिरायें ;
एक ध्रुव का सूर्य ही केवल प्रलय तक चल सकेगा ;
सप्त ऋषि ले मेघ-अंजलि कर रहे अर्चन तुम्हें !!

सृष्टि के सब व्यंग, मानव-क्रोध के अनमोल तारे ,
तम मिटा पाया न थे मन्वन्तरों के लेख सारे ;
तिमिर तट पर सो गया है ,
दिवस किसमें खो गया है ?
एक प्रतिध्वनि लिख रही चिर आदि से ही सर्ग सारे ;
आज नूतन सर्जना में विश्व-अभिनन्दन तुम्हें !

चरण को छू आज युग के उपल में भी प्राण जागे,
पा अमृत उपवास से संहार ने सब कुलिश त्यागे ;
सृजन का जागे सवेरा ,
आज बन्दीगृह बसेरा ;
शक्ति के संकेत देते, खादियों के रजत धागे ;
कोटि जन के हृद्-कमल का अग्ररुमय चन्दन तुम्हें ।

आज पश्चिम की दिशा ने, पूर्व से रवि-ग्रंथ पाया ,
गूँजता पाताल-नभ तक, जो अमर सन्देश गाया ;
अमर ऊषा की दिशा हो,
सरल सन्ध्या की तृषा हो ;
जो न संवत् धो सके, वह नील कुंकुम दान पाया ;

सौर-मंडल कर रहा, हे विश्वगुरु ! वन्दन तुम्हें !!

अर्चना

श्री रामाधार त्रिपाठी 'जीवन'

तुम एक विन्दु में महासिन्धु की सत्ता !
तुम एक रश्मि में रवि की निखिल महत्ता !!

तुम वज्र सदृश, तुम कोमल कमल-कुसुम हो ,
तुम हो व्यापक सर्वत्र स्वयं में गुम हो ।
मानव का मन क्या मोल तुम्हारा जाने ?
तुम देव-देव, तुम से तो केवल तुम हो !

तुम मरु-प्रदेश में सुधा-सरित की लहरी !
तुम सुप्त जनों के सजग सजीले प्रहरी !

तुम ज्वलित ग्रीष्म में सावन की हरियाली ,
तुम पतझड़ के मधुमास, विकास-प्रणाली ।
नैराश्य-क्षितिज पर तुम आशा की रेखा ।
तुम भरी निशा में उदित उषा की लाली ।

तुम हो अधरों के फूल दृगों के मोती ,
तुम सभी सृष्टि के सजन समान सगोती ।
कितना विशाल हे देव ! तुम्हारा अंतर ?
जिसमें जीवन की व्यथा जागती सोती ।

भ्रम के भावों से भ्रान्त विश्व का जीवन ,
अध-ओध-भार से भ्रान्त विश्व का जीवन ,
तुम मानवता के अग्र-दूत बन आये ,
जब पशुता से आक्रान्त विश्व का जीवन ।

तुम सौँस-सौँस की गति टटोलने निकले ,
तुम विश्व-व्यथा का ताप तोलने निकले ।
जब महानाश लिख रहा प्रलय का लेखा ,
तुम सुलभ सृजन के पृष्ठ खोलने निकले ।

तुम सेनानी, तुम सहचर प्यारे बापू !
तुम दुखियों की आँखों के तारे बापू !
यह कोटि-कोटि हृदयों की प्रिय अमिलाषा ,
तुम जुग-जुग जग में जियो हमारे बापू !

युग-प्रभात

श्री राजीव सक्सेना

नित तमावृत्त, तुम सत्-निवृत्त ज्योतित प्रकाम !
ओ जन-गण-जीवन के प्रदीप ! शत शत प्रणाम !
युग-युग तक तुमने सहा ताप, नत-शिर, उदास,
तुम जले अन्य जन अकर्मण्य छाया प्रकाश !

ओ जन-गण जीवन के प्रदीप ! क्या कहूँ व्यथा ?
क्या दास और सामंत - युगों की कहूँ कथा ?
तुम जले आज पूंजीवादी यंत्रों के तल,
तब आकांक्षाएँ बनी धूम्र मिल में प्रतिपल ;
तुम बने कहीं जो कृषि-प्रांगण के वंश-दीप,
प्रिय, ज्योति-दीन, तुम जले अन्त के ही समीप !

तुम दीप्त रहे आँधी तूफ़ानों में हे अनूप !
तुम धन्य ! अमर अनुकरण तुम्हारा यह स्वरूप,
विश्वास हमें तुम एक दिवस हर अंधकार,
जग में रच दोगे युग-प्रभात, शुचि, निर्विकार !

बापू और च्यांग

श्री मोहन पल० गुप्त

मुट्ठी भर दूड़ी का ढाँचा, फिर भी वह फौलादी साँचा !
जो भी टकराया चूर हुआ, सम्मुख जो भी आया नाचा !
आँधी चलती आगे-आगे, तूफ़ान बनी जिसकी छाया !
पग-पग पर है भूकम्प मचा, बस 'गान्धी की जय' की माया !

कोई कहता है शान्ति-दूत, कोई कहता है क्रान्ति-दूत,
वह गले लगाता चलता है, हो शत्रु-मित्र, ब्राह्मण-अछूत !
हे भारत के बन्दी महान् ! जर्जर जीवनके महाप्राण !
किसके बन्दी तुम ? दे सकते, जब अखिल विश्व को मुक्ति-दान !

बन्धन में ही बन्धन बनकर, लो फिर से आई वर्षगाँठ,
मानव को दानव के करसे से, अब मुक्त करो मानव विराट् !

गांधी चरवाहा

श्री रामदयाल पांडेय

तू चरवाहा, तू चरवाहा बिल्कुल चरवाहा, चरवाहा ।

चरवाहे से तनिक नहीं कम, चरवाहे से तनिक न ज्यादा ,
एक छोकरा विर-अलबेला अलहद, भोला, सीधा-सादा ।
चंचल, फुर्तीला चरवाहा, नटखट गर्वीला चरवाहा ।

छोटी-मोटी एक लँगोटी, मोटा रुखड़ा काला कंबल ,
क्रूर काल के कोप-क्रोध से बस यह रत्नक, तेरा संबल ;
आगे उछल-उछलकर चलता डंडा पा तेरे कर का बल ,
दिखा-दिखा निद्रित पलकों को खाई-खंदक, टीले, जल-थल ;

अजब जंगली तेरी सूरत अजब जंगली तेरा बाना ,
पासी के भोपड़े सजाता तोड़ फोड़ बोतल-मयखाना ;
घास खिलाता, खुद भी खाता सदा घास के ही गुण गाता ,
अमृत को फीका बतलाता बड़े शौक से विष पी जाता !

लोट-पोटकर धूल चढ़ाता मिट्टी लेपे-पोते रहता ,
स्वर्ण-भस्म को रोग भयानक संजीवनी कीच को कहता ;
लगा लगान जंगल-भाड़ी में कहता स्वर्ग-निवास यही है ,
लेकर सिर पर बिजली-बादल कहता है मधुमास यही है !

कहता, इन शहरों को छोड़ो कहता, इन महलों को तोड़ो ,
वन-पशु वन-वन से मैं खेलो कालनाग से नाता जोड़ो ;

कहता, यम से करो नहीं भय, पालो उसको पिला-पिला पय !
कहता, नरक देव का ही है नारकीय भी पूज्य वर्ग है ,
उच्च स्वर्ग की घृणा नरक है पतित नरक का प्रेम स्वर्ग है ;

भय ही है विनाश का कारण, शस्त्र आत्महत्या का साधन ,
कहता, यही सुसंस्कृत जग है, कहता यही मुक्ति का मग है !

ऐसा दीवाना चरवाहा, ऐसा मस्ताना चरवाहा !

इसने कभी चराये जड़ भी आज चराता केवल चेतन ,
 पशु के बन्धन खोल चुका, अब खोल रहा मानव के बन्धन !
 अभय किया पशुओं का जीवन कभी सुनाकर मुरली का स्वन ,
 आज मनुज के ही स्वर से है अभय बनाता मानव-जीवन !

जन्तु-मुक्ति के लिए किया था कभी दानवों का उन्मूलन ,
 मनुज-मुक्ति के लिए मनुज की दानवता का आज विसर्जन ;
 स्वर्ग-प्राप्ति के लिए किया था कभी घोर जप-तप-आराधन ,
 आज धरा को स्वर्ग बनाने करता मनुष्यत्व का पूजन !

यही मुहम्मद, गौतम, ईसा गोकुल का गोपाल यही है ,
 कालप्रस्त बन्दी मानव की प्राणक्षिणी ढाल यही है ;
 कोई सच्चा निश्कल प्राणी कहता देव, ब्रह्म, परमात्मा ,
 कोई कहता धुनी-मनस्वी कोई कहता सिद्ध महात्मा !

मेरा कवि कहता चरवाहा यह मानवता का चरवाहा ,
 जन-गणनायक का चरवाहा क्रांति-गीत गायक चरवाहा ।

कहता, अजी चलो दृग मूँदे कहता अजी छुल्लोंगे मारो ,
 दुर्बल दीन अंग देखो मत बढ़ो अभय जीतो या हारो !
 है विश्वास कि विजय मिलेगी है विश्वास खुलेंगे बन्धन ,
 चरवाहा है आदि सनातन, नूतनता से भी नित नूतन !!

रहे तृणों से तुष्ट निरंतर जिसकी प्रकृति-प्रेरणा मांसल ,
 चले निरख, नग्न, निर्वेदन जिसे लौंघना अगम हिमाचल !
 हो भी सकता है चरवाहा जीता रहे मर्त्य में शंकर ,
 अबुझ पहिली एक स्वयं बन करता रहे त्रिलोक निरुत्तर !

रहे जगत में यदि यह जीता देता अभय और विष पीता ,
 छिन्न-भिन्न मानव के उर को सात्विक स्नेह-सूत्र से सीता !
 दे सकता अजरत्व जरा को कर सकता यह स्वर्ग धरा को ,
 अमर बना सकता यह नर को, मर्त्य बना सकता ईश्वर को !
 बना ब्रह्म से बढ़कर नर को मनुष्यत्व देगा ईश्वर को ,
 यह दुबला-पतला चरवाहा, हड्डी का पुतला चरवाहा !

कापू

श्री सुधीन्द्र एम० ए०

जड़-जर्जर था पड़ा सिसकता जग-जीवन अनिमेष,
सुलग रहा था मानवता में महाअनल-सा द्वेष।

हुई सहसा ही "यदा यदा हि" गिरा क्षिति पर उद्भूत,
सबसे प्रथम छुए तुमने ही इतने कोटि अक्षूत।
हरिजन हुए आज तुमसे फिर ये अन्त्यज अवधूत।
बिखरी ग्राम-शक्ति को बाँधा कात-कातकर सूत।

आप नग्न रह-रह, पहनाया नगनों को वर वेश।
मांसल किया लोक को बनकर स्वयम् अस्थित्वक्शेष।
भरणी घरणी पर लोहित का लखकर भीष्म विलास,
घर ही के आँगन में होते निडुर नरक का हास।

पिघलकर बहा तुम्हारा प्राण हुआ विह्वल हृद्देश,
'अक्रोधेन जयेत्क्रोधम्' का सुन अक्षर सन्देश।
स्नेह-अहिंसा-शांति-सत्य का लेकर मन्त्र अशेष,
देव! तुम्हारी ओर विश्व है देख रहा अनिमेष।

तुममें प्रकट प्रपीडित जग का वह विराट उल्लास।
विश्वम्भर आत्मा का तुममें शिव-सुन्दर आभास॥

अडिग तुम्हारा ध्येय, अजित बल पौरुष-शौर्य्य अगाध,
दिव्य दृष्टिमय चक्षु तुम्हारे कर्म-पन्थ निर्बाध।

अहिंसा वर्म, शांति शुचि मन्त्र, सत्य है शाश्वत ढाल,
अहो ऐन्द्रजालिक! दिखलाकर अपना तेज विशाल।
नचा रहे हो तुम हंगित पर पाशव बल विकराल।
मन्त्रमुग्धवत् काँप रहे ये शासन-यन्त्र कराल।

जीवन में, प्राणों में जाग्रत आज तुम्हारी साध,
आर्य! तुम्हारे चरण-चिह्न पर चलता चित्त अबाध।

गाया तुमने गायक! ऐसा अजर-अनश्वर गीत,
जन होकर तुम बने जनार्दन, जग के गीतातीत।

मुहम्मद, गौतम, ईसा, महावीर, मनु एकाकार !
 “मानवता तो चिर-स्वतन्त्र है, पारतन्त्र्य है भार,
 स्नेह (अहिंसा) से सुरपुर है यह वसुधा-परिवार !
 जन की सेवा ही जन को है खुला स्वर्ग का द्वार !”

यही अमर सन्देश तुम्हारा व्रत यह परम पुनीत,
 ‘नहीं’ अनृत की किन्तु सत्य की सतत जगत् में जीत !

साध्य सत्य को और अहिंसा उसका साधन मान,
 चले लुटाने कई बार तुम पावन अपने प्राण !

खोजने, ले प्राणों का दीप, अमरता का वरदान !
 प्राणों के शोणित से धोने जग के क्लृप्त-विधान !
 संसृति को पीयूष पिलाने कालकूट कर पान,
 ओ प्रलयंकर, शिव-शकर ओ ! अभयंकर भगवान !

अमिट सत्य के अमर उपासक ! साधक, सुधी महान !
 गाता पीडित जग का कण-कण ऋषे ! तुम्हारा गान !

मानवता के अमर पुजारी ! विभु की भव्य विभूति !
 करुणाकर की करुणा-छाया ! करुणामय अनुभूति !
 संसृति को वरदान तुम्हारी अच्युत ! पुण्य प्रसूति !
 देव तुम्हारी चरणरेणु है भाल-भाल की भूति !

राष्ट्र-संवेदना

श्री ‘रंग’

आज युगों के बाद हिमाचल आँसू भरकर रोया ।
 कर्मवीर के कर की लकुटी आज अचानक टूटी,
 मोहन की मनमोहक मुरली मृदु अधरों से छूटी,
 हिन्द महासागर की लहरें चीख उठीं गर्जन कर,
 मानवता के मूक-रुदन से सिहर उठे भू-अम्बर ।
 ओ हिमगिरि, अपने आँसू का ऐसा द्वार बना दे ।
 जो जनमत के असंतोष का ज्वालामुखी जगा दे ।
 तब सूखेगा तेरा आँचल जो है आज भिगोया,
 आज युगों के बाद हिमाचल आँसू भर कर रोया ।

कौन है वह मुस्कराता ?

श्री गङ्गाप्रसाद 'कौशल'

कौन है वह मुस्कराता ?

रक्तरंजित क्रान्ति में भी शान्ति के है गीत गाता ।

हँस रहा तूफ़ान सम्मुख; हँस रहा वह भी मनस्वी ;
सागरों की विकट लहरों में खड़ा निर्भय तपस्वी ।
प्रलय - भूभावात प्राची में प्रतीची का भयंकर ;
जब बढ़ा, गरजा गगन में कँप उठा तब विश्व थर थर ।
प्रलय - भूभावात ओ वीरान ही वीरान भाया ;
प्रलय - वीणा पर किसी ने नाश के ही राग गाया ।
विश्व की हर क्रान्ति में ही रक्त की सरिता बही है ;
और मानवता सदा संतप्त हो रोती रही है ।

देख मानव की विकलता, स्वर्ग से वह कौन आता ?

कौन है वह मुस्कराता ?

शान्ति की ले क्रान्ति अनुपम, शान्ति का संदेश देता ;
शान्ति की ही क्रान्ति से जन-विश्व का बनता विजेता ।
चकित होकर विश्व ने फिर शान्ति-संस्थापक निहारा ;
युग हँसा मन में मुदित, नवयुग प्रवर्तक देख प्यारा ।
गगन गरजा, गरजकर जब आँख यों तुमने उठाई ;
विश्व ने प्रत्येक कण में वह तुम्हारी बात पाई ।
जो कहा तुमने, हिमालय ने कहा सीना उठाकर ;
बह चले उनचास मारुत, मंत्र वह जग में गुँजाकर ।

कौन जिसके मंत्र को है विश्व का कण कण सुनाता ?

कौन है वह मुस्कराता ?

मंत्र चर्खा का सिखाकर, स्वाभिमानी फिर बनाया ;
और खहर का कवच दे, विश्व में उनको उठाया ।
विश्व के विस्तृत गगन में लग रहा नक्षत्र-मेला ;
शीघ्र प्राची में उगेगा चन्द्र, आई शुभ्र वेला ।
तुम हिमाचल से अटल हो, वृद्ध ओ मेरे तपस्वी ।
चल बसी 'बा' छोड़ तुम्हो बीच में ही हा । यशस्वी !
हाय, मां 'बा' क्या गयीं, मातृत्व ही जग से सिधारा ;
दया, नय, वर त्याग की प्रतिमा गयी बस छोड़ कारा ।

वज्र से आहत, दलित फिर भी बढ़ा जाता दिखाता ।

आँख से आँसू गिरे कुछ, शीघ्र ही पर पोंछ डाले ;
 देश के कल्याण हित बलिदान ये कितने निराले ?
 एक भारत ही नहीं संसार तुमको मानता है ;
 बुद्ध, ईसा, राम-सा तुमको सभी जग जानता है ।
 विश्व की आँखें तुम्हीं पर लग रही हैं आज त्यागी !
 कर रहा है शान्ति की वह याचना विश्वानुरागी !
 विश्व के उत्थान का यह मार्ग है किसने दिखाया ?
 रक्त का निभर मिटा, नित स्नेह का निर्भर बहाया ?
 कौन वह निज तेज से जो विश्व को जगमग बनाता ?
 कौन है वह मुस्कराता ?

महात्मा गांधी

श्री रामेश्वर वी० ए०, एल्-एल्० वी

ओ भारत के प्राण !

जड़-जङ्गम में चेतन जैसे,—अन्तर्हित अम्लान !

ओ भारत के प्राण !!

स्वर्ण-रश्मि सा प्यार प्रसारित , उर,—करुणा का कोमल कम्पन ,

जर्जर सा तन, भोली चितवन—बना विश्व का अभिनव जीवन !

अमा निशा की आँधियारी में—दीपक की मुस्कान !

ओ भारत के प्राण !!

हिमगिरि से तुम उच्च, उच्चतर ; सागर से भी गम्भीर तरल ;

सत्य बना बल, चरखा सम्बल—बनी अहिंसा मरु में मृदु जल !

मृग तृष्णा की अमिट टोह में—जीवन के अरमान !

ओ, भारत के प्राण !!

तुम चिर मुक्त, सजग, मनमोहन, दलितों के शुचितर भाव 'अहम्' ,

शूल फूल सम, विषम बना सम—साकार हुए—भगवान स्वयम् !

अश्रु विचुम्बित नयन कोर में—आशा छवि छविमान !

ओ भारत के प्राण !!

गांधीजी

श्री विश्वम्भरनाथ

नव-भारत की संस्कृति में,
आज यह अपूर्व-तिथि,
सदियों के संकलन, दयनीय इतिहास में,
कीर्ति की गर्व की गौरव की बेला है ।

आज ही के दिन, इस दूसरी अक्तूबर को,
बीते पचहत्तर वर्ष, छाया हर्ष,
भारत के अमर-प्राण,
फिर से साकार हुये—
वज्र से कठोर किन्तु करुणा से मृदुलतम,

गांधी के रूप में ।
गांधी महात्मा की हीरक जयन्ती यह—
जाग्रति की चेतना अनूपम की
जीवन की
पुण्य-तिथि बेला है;

गांधी परन्तप के,
आदर में, मान में,
महा-पर्व मेला है ।

गांधी प्रशान्त चित्त—
निर्बल, निःशस्त्र,
किन्तु आत्मा का सम्बल, आत्म-आहुति की शक्ति ले,
करते आवाहन,
खिन्न, म्लान विश्व-आत्मा का—
'प्रेम औ' अहिंसा में निहित श्रेय मानव का ।'
यही प्रबुद्ध-पथ—
सत्य, शिव, सुन्दरतम ।
भारत की जनता का—
'सत्य पर आग्रह'
मानव-कल्याण का रुचिर प्रयोग एक !

भारत निमित्त मात्र । रचता अध्याय नया—
 बुद्ध-हीन, वर्गहीन,
 प्रेम औ' अहिंसा की सुदृढ़ बुनियादों पर ।
 शोषण से मुक्त
 विश्व निर्मित हो सकता है,
 आज विश्व-प्राङ्गण में,
 पश्चिमीय सभ्यता,
 दानवी कुरूपता के बर्बर परिवेष्टन में;
 हत्या औ' हिंसा में मग्न और सोल्लास
 भस्म हो रही है स्वयं, अपने वरद-हस्त से ।

कटुता, संघर्ष और शोषण का दैत्य जगा—
 हिंसा से शान्त चलो करने है हिंसा को !
 भूले प्रतिपादन,
 अनुयायी बुद्ध, ईसा के—
 'शान्त सदा होती है हिंसा अहिंसा से ।
 'चैर विजित होता है केवल निर्वैर से !
 धृणां शान्त होती है—शुद्ध, बुद्ध प्रेम से !'

गर्व, अधिकार और कितनी उपेक्षा से
 हँसते हैं, पशुता के स्वामी नीतिज्ञ ये—
 'सत्य, आत्मबल का भी कोई प्रयोग है ?'
 'भारतीय जनता क्यों हारकर मौन हुई ?'
 किन्तु ये संभ्रम, अभिमानी, इन्हें पता नहीं—
 'ये हैं विराम स्वल्प !'

हार कहीं होती है शुद्ध आत्मबल की ?
 विश्व की शोषित जनता जब उठेगी,
 उस दिन गिरोहों का भाग्य अस्त होगा !
 नूतन संहति, औ' नूतन परिपाटी पर
 रचना करेगी वह नूतन समाज की ।
 संस्कृति नवीन होगी,
 प्रेम औ' अहिंसा की नूतन सरणि में ।
 गांधी उस युग के, उस स्वर्णिम विहान के
 द्रष्टा हैं, स्रष्टा हैं ।

मृत्युञ्जय

श्रीलक्ष्मीनारायण मिश्र

आज फिर सिन्धु कर्मयोग का,
लहरा रहा है, मातृ-भूमि के पुजारी में,
पुण्यभूमि भारत वसुन्धरा के वीर में,
निर्मम विराणी और रागी एक संग हैं
कूद रहे जिसमें । ये मृत्युञ्जय मृत्यु को
करने पराजित चले हैं । पुराकाल में
पूर्वपुरुषों ने पूतगंगा के पुलिन में,
विन्ध्य अटवी में या कि मानसर प्रान्त में,
जिसको पराजित किया था मृत्यु हारी थी ।
हारी मृत्यु । शोक निशा बीती सांख्य योग का
अंशुमाली आया, और आया ज्ञानलोक में ।
धन्य हुई भारत धरा थी यह गर्व से
गाया ऋषियों ने जहाँ गान कर्मयोग का ।
कर्मयोगियों की यह भूमि चिरकाल से
बन्धन विहीन । उस विगत अतीत का
द्वार-पट खोलने चला जो कवि आज है,
एकमात्र आशा से कि देख उस युग की
उज्ज्वल विभूति, आज पायेंगे मनीषी भी
धन्य जिनसे है हुई जन्मभूमि जननी ।

अदृश्य

श्री रामावतार यादव 'शक्र'

अस्त्र अहिंसा से लड़ करके तोप और तलवार थकी !
मरने की भावना निरखकर अनाचार की धार थकी !
अतलान्तक है शान्त और सागर प्रशान्त में ज्वार नहीं,
उसके चरणों पर जगती कब से अपने को वार चुकी !
प्रतिदिन रवि जाकर पश्चिम में—सुना रहा संदेश यही—
“मानवता का सच्चा प्रतिनिधि गौरी से बड़ और नहीं ।”

गांधीजी

श्री नरेन्द्र शर्मा

जनहित के लिए, देव, तुमने—क्या नहीं सहा ! क्या नहीं किया ?
श्री सम्पति, सुख, परिवार-मान की कौन कहे ?
अरमानों के, निज प्राणों के भी मुक्त दान की कौन कहे ?
प्रियतमा संगिनी नारी का तुमने जनहित बलिदान दिया !
जनहित के लिए, देव, तुमने—क्या नहीं सहा ! क्या नहीं किया ?
जिन आदर्शों-सिद्धान्तों के तुम अटल अचल,
इस अटल अचल को हिला न पाई अहंकार की मति चंचल !
उन आदर्शों-सिद्धान्तों का तुमने जनहित अपमान किया !
जनहित के लिए, देव, तुमने—क्या नहीं सहा ! क्या नहीं किया ?
तुम अमृत सत्य के अभिलाषी, निर्भीक सन्त,
पर मर्त्य-लोक कल्याण हेतु चिर आशंकित ममता अनन्त !
जनहित के लिए असत्त्यों से की संधि, शम्भु, विषपान किया !
जनहित के लिए, देव तुमने—क्या नहीं सहा ! क्या नहीं किया ?
सौ बार हारकर, सेनानी, तुम अपराजित !
जय और पराजय के सुख-दुख से नहीं युद्ध की गति शासित !
क्या इसीलिए मृदु पल्लव का लोहा वज्रों ने मान लिया ?
जनहित के लिए, देव, तुमने—क्या नहीं सहा ! क्या नहीं किया ?

गांधी महाराज

श्री गोपीकृष्ण शर्मा

गगन से बादल छूटने लगे, गगन पर आने को है चाँद ,
कुमुदिनी के अधरों पर अभी-अभी मुस्काने को है चाँद !
न अब तारे रोयेंगे और, न अब अम्बर रोयेगा और ,
न मानव के लोहू से हाथ मूढ़ मानव धोयेगा और !
'अहिंसा' और 'सत्य' की ज्योति दिखाता सहसा, आया कौन ,
हरिजनों के ईश्वर को, दूर स्वर्ग से भू पर लाया कौन !
उठी जो वर्षा से आवाज़, गूँजती है अम्बर के पार—
हमें अपनी मिट्टी से स्नेह, हमें अपनी माता से प्यार !
नर्मदा की बजती है बीन हिमालय भी गाता है आज ,
व्यथित जगती को देने शान्ति आ गए गांधीजी महाराज ।

गांधीजी का सचित्र इतिहास

श्री रामनरेश त्रिपाठी

बन के मनुष्य-बीज आप ही समा गया जो ,
दिललाया अपने विराट का विकास है ।
जिसकी मनुष्यता की अमर कहानी आज ,
अक्षय विभूति-सी वसुन्धरा के पास है ।
कौन कहे, कौन लिखे, खींचे कौन रेखा-चित्र ,
ऐसा क्या किसी में बुद्धि वाणी का विलास है ?
भारत स्वतंत्र होगा पीढ़ियाँ कहेंगी तब ,
गाँधीजी का चित्रित यही तो इतिहास है ।

युगावतार

श्री सोहनलाल द्विवेदी

चल पड़े जिधर दो डग, मग में, चल पड़े कोटि पग उसी ओर ;
पड़ गई जिधर भी एक दृष्टि, गढ़ गए कोटि डग उसी ओर !

जिसके शिर पर निज धरा हाथ, उसके शिर रक्षक कोटि हाथ ;
जिस पर निज मस्तक झुका दिया, झुक गए उसी पर कोटि माथ ।

हे कोटि चरण, हे कोटि बाहु ! हे कोटि रूप ! हे कोटि नाम ।
तुम एक मूर्ति, प्रतिमूर्ति कोटि, हे कोटिमूर्ति तुमको प्रणाम !

युग बढ़ा तुम्हारी हँसी देख, युग हटा तुम्हारी भ्रुकुटि देख ;
तुम अचल मेखला बन भू की, खींचते काल पर अमिट रेख ।

तुम बोल उठे, युग बोल उठा, तुम मौन बने युग मौन बना ;
कुछ कर्म तुम्हारे संचित कर, युगकर्म जगा, युगधर्म तना !

युग-परवर्तक ! युग-संस्थापक ! युग-संचालक ! हे युगाधार !
युग-निर्माता ! युग-मूर्ति ! तुम्हें, युग युग तक, युग का नमस्कार !

तुम युग युग की रुदियाँ तोड़, नित रचते रहते नई सृष्टि ;
उठती नवजीवन की नीवें, ले नवचेतन की दिव्य दृष्टि ।

धर्माडंबर के खंडहर में, कर पद प्रहार, कर धरा ध्वस्त ;
मानवता का पावन मंदिर, निर्माण कर रहे सृजन-व्यस्त !

बढ़ते ही जाते दिग्विजयी ! गढ़ते तुम अपना राम - राज ,
आत्माहुति के मणिमणिक से, मढ़ते जननी का स्वर्ण ताज ॥

तुम कालचक्र के रक्त सने, दशनों को कर से पकड़ सुदृढ़ ;
मानव को दानव के मुँह से, ला रहे खाँच बाहर बढ़ बढ़ ।

पिसती कराहती जगती के, प्राणों में भरते अभयदान ;
अधमरे देखते हैं तुमको, किसने आकर यह किया त्राण !

पद सुदृढ़, सुदृढ़ कर-संपुट से, तुम कालचक्र की चाल रोक ।
नित महाकाल की छाती पर, लिखते कृष्ण के पुण्य श्लोक ।

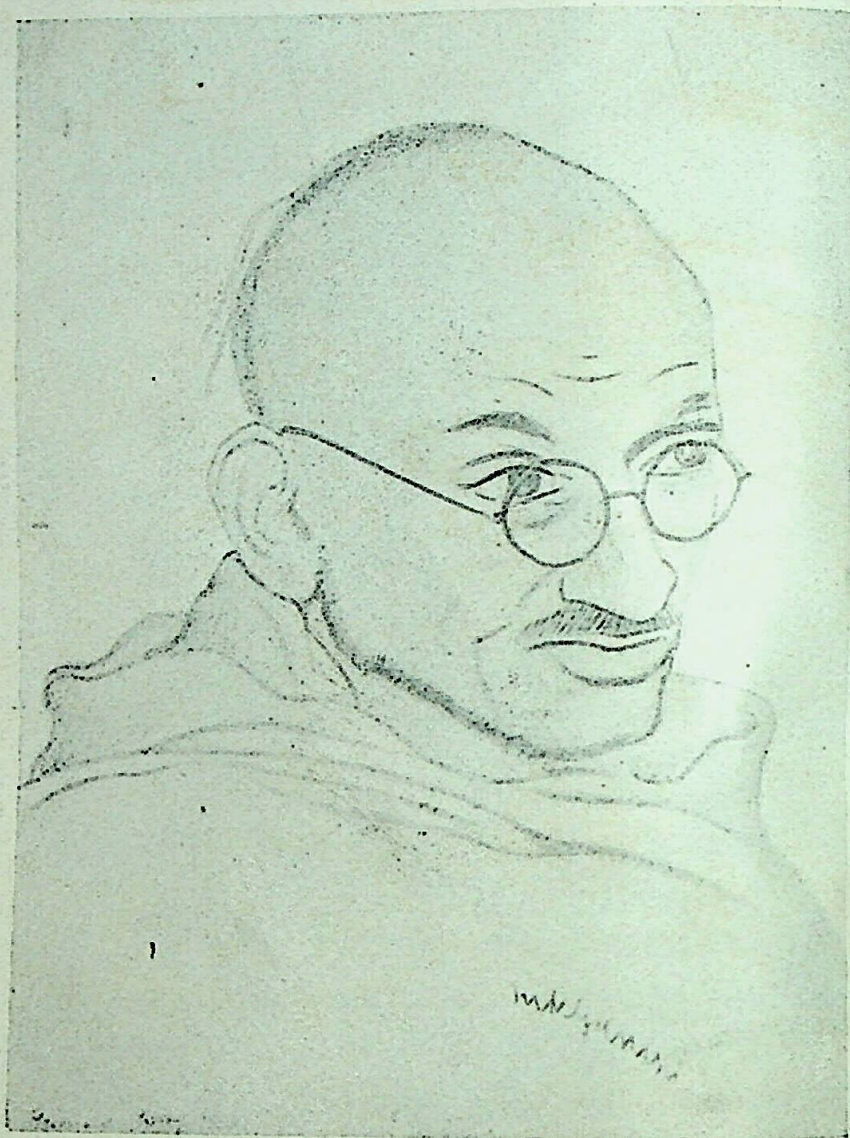
कँपता असत्य, कँपती मिथ्या, बर्बरता कँपती है थर थर ;
कँपते सिंहासन, राजमुकुट कँपते, खिसके आते भू पर ।

हैं अस्त्र-शस्त्र कुंठित लुंठित, सेनायें करतीं गृह प्रयाण ।
रणमेरी बजती है तेरी, उड़ता है तेरा ध्वज निशान !

हे युग-द्रष्टा ! हे युग-स्रष्टा ! पढ़ते कैसा यह मोक्ष-मंत्र !
इस राजतंत्र के खंडहर में, उगता अभिनव भारत स्वतंत्र !



तुम कालचक्र के रक्त सने दशनों कों कर से पकड़ सुदृढ़ ,
 मानव को दानव के मुँह से, ला रहे खींच बाहर बढ़ बढ़ ।
 पिसती कराहती जंगली के प्राणों में भरते अभयदान ;
 अधमरे देखते हैं तुमको, किसने आकर यह किया त्राण ?
 पद सुदृढ़, सुदृढ़ कर-संपुट से तुम कालचक्र की चाल रोक ,
 नित महाकाल की छाती पर, लिखते करुणा के पुण्यश्लोक ।
 चित्रः श्री रविशंकर रावल के } पृष्ठ—६०
 सौजन्य से



गांधीजी

चीनी चित्रकार यू-पिङ्ग वोङ्ग द्वारा

(विश्ववाणी) के सौजन्य से

गांधीजी के प्रति

महाकवि 'अकबर'

मदभ्रूलये गवमेंट अकबर अगर न होता ,
उसको भी आप पाते गांधी की गोपियों में ।

गांधी

श्री 'सीमाव' अकबरावादी

तसरफ़ सारी दुनिया के दिलों पर कर लिया तुने ,
ज़माने को मोहब्बत से मुसख़्कर कर लिया तुने ।
किया तहलील यूँ तुझको तेरी फ़ितरी लताफ़त ने ,
कि आँखों से गुज़र कर रुह में घर कर लिया तुने ।

तेरे क्रदमों पे होते हैं निछावर सीमणूँ डुकड़े ,
फ़िसूँ का याद ऐसा डेढ़ अंछुर कर लिया तुने ।
तमदुन फ़तह जिसको आज तक कर ही न सकता था ,
क़िला वह सादगीये वज़ा से सर कर लिया तुने ।

तेरी जय हो रही है हर तरफ़ वह कामरौं तू है ,
है जितना नातवाँ उतना ही किस्मत का जवाँ तू है ।

सिमटने को बिसाते उम्र है हंगामा बरपा कर ,
बढ़ा दे गरमिये महफ़िल वह सोजे ताज़ा पैदा कर ।

बदल दे वक़्त की आवाज़ से लय अपने नग़मों की ,
दिलों में ज़ब्रिये ईसारे हुरीयत मुहय्या कर ।
भलक नाकामिये इमरोज़ की है शामे महफ़िल में ,
इन्हीं आसार से पैदा फ़रोगे सुब्ह फ़र्दा कर ।

तज़ाब अपनी सारी उम्र के सरफ़े बतन कर दे ,
मुहिम्माते गुलामी में जवानों को सफ़्र आरा कर ।
न दे अपने अज़ायम को खुदारा रंगे मायूसी ,
जो वादा मुल्क से तू कर चुका है उसको पूरा कर ।

नवेदे दौरें आज़ादी बिदह क़ैदे दवामी रा ,
दो पारा कुन ज़दस्ते ख़ेश ज़ंजीरे गुलामी रा ।

महात्मा

श्री अबू सईद बज़मी एम० ए० संपादक 'मदोना'

ऐ सर ज़मीने हिंद तेरी बेबसी बजा ,
पर ख़ाक से उठा है तेरी वह महात्मा ।

जिससे ग़रीब हिंद को वह हौसला मिला ,
ताक़त के बुत को पाँव से जिसने कुचल दिया ।

यों तो जहाँ में और भी आये महात्मा ,
जिनके कमालो फ़ैज़ ने दुनिया को दी जिला ।

पर, तूने जो चिराग़ जलाया जहान में ,
उसके शुआये फ़ैज़ से जग जगमगा उठा ।

मज़लूम को बता के अहिंसा की ताक़तें ,
चिड़ियों को तूने बाज़ से जाकर लड़ा दिया ।

मज़लूमियत को ज़ुल्म से बेबाक कर दिया ,
सुल्तान से निडर दिले दहक़ाँ बना दिया ।

तेरी फ़रोतनी में है रुई तनों का ज़ोर ,
पोशीदा ख़ामशी में तेरी आँधियों का शोर ।

ताजदारे वतन-गांधी

श्री रामलाल वर्मा—संपादक रोज़ाना तेज देहली

ऐ अमीरे हुरियत ! और ऐ वतन के ताजदार ,
तेरी हस्ती है वक्रारे हिंद की आईनावार ।
शश जहत की कामरानी तेरे कदमों पर निसार ,
तेरे आगे हेच है सब ताजदारों का वक्रार ।

मरहबा ! ऐ कौम के सालारे आज़म ! मरहबा !
मरहबा ! ऐ मुल्क के सरदारे आज़म ! मरहबा !

वलवले इनसों के रक़सों हैं तेरे आग़ोश में ,
जमजमे आलम के ग़लतों हैं तेरे आग़ोश में ।
मसअले दुनिया के पेचों हैं तेरे आग़ोश में ,
मुश्किलें क्या क्या पर अफ़शों हैं तेरे आग़ोश में ।

तरजुमाने आदमीयत तेरा इक इक हर्फ़ है ,
जिसमें इक ख़लक़त समा जाये वह तेरा ज़र्फ़ है ।

तेरे दिल में गूँजता है जो अज़ल का साज़ है ,
उससे पैदा पर्दा हाये शैब की आवाज़ है ।
तेरी अज़मत से हरेक इनसान सर अफ़राज़ है ,
तेरी रफ़अत पर ज़मीं तो क्या फ़लक को नाज़ है ।

हर नज़र में तेरी लुत्फ़े जल्दये सदनूर है ,
तेरी चश्मे ताबर्गी में इक ख़ुदाई नूर है ।

सादगी के पैरहन में जीनते महफ़िल है तू ,
मारफ़त की अंजुमन में रौनके कामिल है तू ।
कारगाहे दह में इक मदरके आमिल है तू ,
मंज़िले सद राह में इक रहबरे आक़िल है तू ।

तू हवाओ हिंस की आलायशों से पाक है ,
तेरे आगे दौलते दुनिया भी मुश्ते झाक है ।

बेज़बानों की ज़बों, मज़लूम की आवाज़ है,
बेबसों और बेकसों का महरमो हमराज़ है।
कुश्तगाने गुर्बतो अफ़लास का दमसाज़ है,
तू जफ़ाकारों के आगे भी वफ़ापर्दाज़ है।

दिलफ़िसुदों के लिये तू जोश का पैग़ाम है,
ग़ाफ़िलों के वास्ते तू होश का पैग़ाम है।

हाथ में तेरे मथे हुब्बे वतन का जाम है,
तुझसे बड़मे क़ौम में पीरेमुग़ों का नाम है।
हिंद के इस मैकदे में तेरी बज़्रशिश आम है,
कौन बादाकश है जो महरूम तिश्ना काम है?

साज़ी ओ मैखवार दोनों हश्म तक जीते रहें,
जाम तू देता रहे हम शौक़ से पीते रहें।

है अहिंसा दीन तेरा, सच तेरा ईमान है,
रुह आज़ादी है तेरी, उंस तेरी जान है।
कजरवी और कज ख़याली की तुझे बस आन है,
सीधी सीधी चाल में तेरे चलन की शान है।

बरबरीयत, शैतनंत, सफ़फ़ाकी ओ ग़ारतगरी,
तूने इन ऐबों से इनसाँ की तबीयत फेर दी।

तूने बतलाया सियासत और सिदाक़त एक है,
तूने दिखलाया कि ताक़त और शराफ़त एक है।
तूने समझाया जहाने रंजोराहत एक है,
तूने परचाया कि बस राहे तरीक़त एक है।

तेरी तलक़ी है कि मुल्को क़ौम की ख़िदमत करो,
बहरे आज़ादी जियो और बहरे आज़ादी मरो।

गांधीजी

गोपीनाथ 'अमन'

तुझमें सुकून वह कि हिमालय की शान है,
तबए रवाँ में मौजए गंगा की आन है।
आँखों में उपनिषद के सहीफे की जान है,
गीता का फलसफा है कि जो तेरा ध्यान है।
सीने में तेरे मारफते हक़ का राज़ है,
हिन्दोस्तान को तेरी हस्ती पे नाज़ है।

तुझपर हूजमे यासो अलम का असर नहीं,
दुनिया अगर खिलाफ़ हो गुम का असर नहीं।
गैरों के जौरो जुल्मो सितम का असर नहीं,
वह आन है कि तेरे दोदम का असर नहीं।
डरने से क्या गरज़ तुझे तूफ़ान हों हज़ार,
मरने का झौफ़ क्या उन्हें जो क़ौम पर निसार।

दुरवेश ऐसे और भी गुज़रे जहान में,
था सहर जिनकी आँख में जादू ज़बान में।
साबित क़दम रहे जो हर एक इमतिहान में,
अकसर मिसालें मिलती हैं हिन्दोस्तान में।
लेकिन सियासयात से ईमान का यह मेल,
तेरे लिये बजा था कि दुश्वार है यह खेल।

जोशे अलम के साथ मोहब्बत सिखाई है,
दुश्मन से भी सुलूक, ये उलफ़त सिखाई है।
है बेनियाज़े तेरा वह हिम्मत सिखाई है,
तीरो तूफ़ान हेच वह ज़ुरअत सिखाई है।
अन्दाज़े रम्ज़ पर तेरे कहते हैं तबअबी
“लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं।”

हाँ यह भी एक जंग है और लाजवाब है,
यक सत्र जिसमें लाख सितम का जवाब है।
कहने को कहने वाले कहेँ क्या जवाब है,
यह वह जवाब है कि अनोखा जवाब है।

जिनकी निगाह उलझी हुई आबोगिल में है ,
क्या जाने वह कि जंग का मरकज तो दिल में है ।

तेरे ही दम से अहले वतन की बँधी है आस ,
जब देखते हैं तुझको तो रहते नहीं उदास ।
क्यों दिल में दखले रंज हो क्यों हो असीरे यास ?
सब कुछ है अपने पास जो गांधी है अपने पास ।
दुनियाँ में कौन ऐसे रतन का लगाए मोल ?
बाला है तेरी ज्ञात से हिन्दोस्ताँ का बोल ।

है तेरा जन्मदिन तो हरएक अहलेदिल है शाद ,
वाबस्ता तेरी ज्ञात से है क्रौम का इबाद ।
पंजाह साल और जिए सबकी है मुराद ,
हर लब पे यह सदा है कि उमरत दराज बाद ।
अब आज हिन्द में हमें जौहर दिखाए तू ,
उलफ़त का सिका सारे जहाँ पर बिठाए तू ।

बादशाह कतन

श्री "नसीम" अमरोहवी

वतन के ग़रीबों का ग़म खानेवाला ,
ख़तरनाक रस्तों में बढ़ जानेवाला ,
तड़पकर सितमगर को तड़पानेवाला ,
अहिंसा की ताक़त का दिखलानेवाला ,
सिपाही वो कमज़ोर हिंदोस्तों का ,
लरज़ता है दिल जिससे हर हुकमरों का ।

वो आज़ादिये दिल का सच्चा मुनादी ,
गुलामी का दुश्मन, असीरी का आदी ,
सजाये हुये है बदन पर जो खादी ,
लुभाती है वह उसकी पोशाक सादी ,
ये शौकत है इस सादगी की अदा में ,
कि 'मोती' 'जवाहर' है इसकी सभा में ।

दिलों पर न क्योंकर करे हुक्मरानी,
 कि हुब्बुलवतन उसकी है राजधानी,
 पहाड़ उसकी हिम्मत के आगे है पानी,
 बुढ़ापे पे उसके निछावर जवानी,
 जिन्हें खौफ़े तूफ़ान, आँधी की दहशत,
 उन्हें खाये जाती है गाँधी की दहशत।

जो चाहे दिलेज़ार ज़िंदगानी,
 जो है शौक़े आज़ाद जाविदानी,
 जो तेरी रंगों में है खूँ की रवानी,
 जो कहता है अपने को हिंदोस्तानी,
 जो आज़ाद भारत की तुझको लगन है,
 तो गाँधी का मसलक भी हुब्बेवतन है।

अनोखा है उसकी तरक्की का ज़ीना,
 कि मरने को अपने समझता है जीना,
 सियासत का उसकी निराला करीना,
 जो हँस दे, तो दुश्मन को आये पसीना,
 क्रयामत हो बरपा जो आँसू बहा दे,
 जो सीने को ताने, तो हलचल मचा दे।

वो भारत के हर मर्दोज़न का दुलारा,
 ग़रीबों फ़क़ीरों का आँखों का तारा,
 हमारी ज़मी का चमकता सितारा,
 वतन की है आज़ादियों का सहारा,
 ज़माने में ऐसे हैं कम नेक इनसाँ,
 जो धर्म उसका पूछो तो है एक इनसाँ।

फ़क़ीरी में यों उसका सिका रवाँ है,
 कि हुस्ने सियासत का क़ायल जहाँ है,
 इरादा जो पीरी में उसका जवाँ है,
 न फ़ौजें न लश्कर मगर हुक्मराँ है,
 फ़िदाए वतन, ख़ैर ख़वाहे वतन है,
 वो बेताज का बादशाहे वतन है।

गांधी

श्री मेहरलाल "ज़िया" फ़तेहाबादी, एम०, ए०

दामने मशरिक में रोशन जिस तरह है आक्रताब ,
 सुबह दम गुलशन में जैसे मुसकराता है गुलाब ।
 कोह पर जिस तरह रक्साँ है शुआओं का शबाब ,
 जैसे नग़मारेज़ रंगी आवशारों का रबाब ।

एशिया की अंजुमन में कैफ़ बरसाता है तू ,
 सोने वालों की रंगों में खून दौड़ाता है तू ।

बेसरूरो कैफ़ है पैमानये हिंदोस्ताँ ,
 तिश्ना लब हैं साकिओ मैलानये हिंदोस्ताँ ,
 बे दरो दीवार है काशानये हिंदोस्ताँ ,
 अब पुराना हो चुका अफ़सानये हिंदोस्ताँ ।

अहले मशरिक की उमीदें तुझसे बाबस्ता हुई ,
 अहेदे माज़ी की तबस्सुम पाशियाँ रफ़ता हुई ।

सोने वालों को जगाया है तेरे पैग़ाम ने ,
 है नया मुस्तक़बिले रंगी नज़र के सामने ।
 जामए नूरी पढ़िन रक्खा है सुबहो शाम ने ,
 कर दिया है मस्त सबको बादए गुलफ़ाम ने ।

यह तेरी साक़ीगरी का मोजज़ा अदना सा है ,
 बारिशे अबरे करम का हौसला अदना सा है ।

ताज है मशरिक तो उसके ताज का मोती है तू ,
 जिसपे नाज़ाँ है शहे ख़ावर वही हस्ती है तू ।
 रुह को तसकी है तू राहत दिलो जाँ की है तू ,
 ज़ीनते बज़मे चमन, फूलों की रानाई है तू ।

आम होती जा रही है कैफ़े ईजादी तेरी ,
 मंज़िले तकमील पर पहुँची है आज़ादी तेरी ।

गांधीजी

श्री सलीम नात्की सेक्रेटरी जामए अदबिया कानपुर

तारीख के वरक पर दामाने हर नज़र पर ,
 बिखरे हुये पड़े हैं हिन्दोस्तों के जौहर ।
 अपनी हवा में उड़कर ऐसे भरे तरारे ,
 झाँके वतन के ज़रें तारों में जगमगाये ।
 दुनियाए नौ का गाँधी आया पयाम लेकर ,
 आज़ादिये वतन की हर सुबह शाम लेकर ।
 पस्ती में भी बलन्दी का मरतबा दिखाया ,
 ऊँची ज़मीं बनाई, नीचा फ़लक बनाया ।
 नज़दीको दूर यकसाँ नज़रें हैं कार फ़रमा ,
 क्या क्या बदल रहा है नज़्शा दिमाग़ो दिल का ।
 अफ़सानए सलासिल अहरारियों में रहकर ,
 आज़ादियों के चरचे ज़िन्दानियों में रहकर ,
 अफ़कार की भी कसरत रुहानियत भी ग़ालिब ,
 दिल मायले सियासत उक़्बवा की जान तालिब ,
 दरया से बढ़के देखी बिजली से बढ़के पाई ,
 तहरीर की रवानी तक़रीर की सफ़ाई ।
 इनसाँ तलाशे हक़ में इतना तो झुदनिगर हो ,
 'मिस्टर' महात्मा की सूरत में जल्वागर हो ।
 कोताह दामनी में इक़ शाने बेनियाज़ी ,
 महजूब सादगी है मलबूस इस्तियाज़ी ।
 बरहम किया दिलों को तकली की गर्दिशों ने ,
 सोतों को भी जगाया चरखे की शोरिशों ने ।
 तक़सीम की मुहब्बत हर जुड़वे ज़िन्दगी पर ,
 आँखों को नूर देकर दिल को सुरूर देकर ,
 मस्ती भरी नज़र का दिल को पयाम आया ,
 हुशियार बादा नोशो ! गर्दिश में ज़ाम आया ।
 बेसाख़ता लबों पर आया हुआ तबस्सुम ,
 मोठा सा इक़ तक़ल्लुम हल्का सा इक़ तरन्नुम ।
 गर्दिश ही लेके आई आख़िर नवैदे इशरत ,
 आज़ाद हो रही है हिन्दोस्तों कि क़िसमत ।

महात्मा गांधी

श्री व्रजकृष्ण गंजूर 'फ़िदा' फ़ैजाबादी

उठा तू बिस्तरे ग़म से कि दुनिया को उठाना था ,
लड़ाई बन्द करनी थी जहालत को मिटाना था ,
तुझे तो मुल्क की फिर क़ूबतों को आजमाना था ,
करिश्मा अहले दुनिया को नया कोई दिखाना था ,

तू निकला जेल से गोया कि हंगामे अमल आया ,
घटाएँ आसमाँ से हट गईं, सूरज निकल आया ।

तू उठकर यूँ चला ज़न्दों से बाहाले परेशानी ,
कि जैसे बूए गुल निकले गरेबाँ चाक दीवानी ,
जो देखा तिश्ना लब तुझको तो पत्थर हो गए पानी ,
बिछाया क्रौम ने आँखों का अपनी फ़शें नूरानी ,

सितम बरपा किया गुलशन में नरगिस के इशारों ने ,
नसीमे सुबह इठलाई, क़वा चमी बहारों ने ।

क़यामत की बलाएँ हो रही थीं हिन्द पर नाज़िल ,
नज़र आता था गिरदाबे फ़ना में डूबता साहिल ,
वतन का काफ़ला गुमराह था और दूर थी मंज़िल ,
निगाहों से टपकना चाहता था जब कि ख़ूने दिल ,

तेरी एक जुम्बिशे लब ने फ़ना कर दी परेशानी ,
मिटाकर जुल्मते शव को दिखाई सुबह नूरानी ।

खुदारा हिन्दवालों ख़वाब से बेदार हो जाओ ,
बहुत कुछ सो चुके अब तो ज़रा हुशियार हो जाओ ,
जमाने की रविश देखो उठो तैयार हो जाओ ,
बरंगे मौज इस बहरे फ़ना से पार हो जाओ ,

तुम्हारे हर क़दम पर मुशकिलें आसान हो जायें ,
तमनायें वतन के वास्ते क़रबान हो जायें ।

महात्मा गांधी

श्री 'विस्मिल' इलाहाबादी

सुना रहा हूँ तुम्हें दास्तान गाँधी की,
जमाने भर से निराली है शान गाँधी की।
रहे रहे न रहे इसमें जान गाँधी की,
न रुक सकी न रुकेगी ज़बान गाँधी की।

यही सबब है जो वह दिल से सबको प्यारा है,
वतन का अपने चमकता हुआ सितारा है।

जो दिल में याद है तो लब पे नाम उसका है,
जो है तो ज़िफ़ फ़क़त सुबहो शाम उसका है।
मलाई सबकी हो जिससे वो काम उसका है,
जहाँ भी जाओ वहाँ एहताराम उसका है।

उठाए सर को कोई क्या, उठा नहीं सकता,
मुक्ताबिले के लिए आगे आ नहीं सकता।

किसी से उसको मुहब्बत किसी से उलफ़त है,
किसी को उसकी है उसको किसी की हसरत है।
वफ़ाओ लुप्तो तराहुम की ख़ास आदत है,
गरज़ करम है, मदारत, है और इनायत है,

किसी को देख ही सकता नहीं है मुश्किल में,
ये बात क्यों है कि रखता है दर्द वह दिल में।

जफ़ाशआर से होता है बरसरे पैकार,
न पास तोप न गोला न क्रन्जे में तलवार।
जमाना ताबए इरशाद हुक़म पर तैयार,
वह पाक शक़ल से पैदा है जोश के आसार।

किसी ख़याल से चरख़े के बल पे लड़ता है,
खड़ी है फ़ौज यह तनहा मगर अकड़ता है।

उसी को घेरे अमीरो गरीब रहते हैं ,
 नदीमो मोनिसो यारो हबीब रहते हैं ।
 अदब के साथ अदब से अदीब रहते हैं ,
 नसीबावर हैं बड़े ख़शनसीब रहते हैं ।

कोई बताए तो यों देखभाल किसकी है ,
 जो उससे बात करे यह मजाल किसकी है ।

रिफाहे आम से रसबत है और मतलब है ,
 अनोखी बात निराली रविश नया ढब है ।
 यही ख़याल था पहले यही ख़याल अब है ,
 फ़क़त है दीन यही बस यही तो मज़हब है ।

अगर बजा है तो 'बिस्मिल' की अज़्ज़ भी सुन लो ,
 चमन है सामने दो चार फूल तुम चुन लो ।

जन्मदिन पर मुबारकबाद

श्री—मोहनलाल 'क्रमर' अम्बाला

दिल क्रौम का इक़ घर है तो महमान है गाँधी ,
 बे ताज मेरे हिंद का सुलतान है गाँधी ।
 माँगी थी हिमालय पे दुआ सुबहे अज़ल ने ,
 इस सुबहे कोहन का नया अरमान है गाँधी ।

भारत है अगर फूल तो यह उसकी है ख़ुशबू ,
 है क्रौम अगर जिस्म तो फिर जान है गाँधी ।
 ऐ अहले वतन कम नहीं कुछ शान हमारी ,
 अफ़सानए तहज़ीब का उनवान है गाँधी ।

आ, इसके जनम दिन पे नए गीत सुनायें ,
 भारत की गुलामों का निगहबान है गाँधी ।
 है इसकी फ़क़ीरी में भी इक़ शाने अमीरी ,
 कहने को 'क्रमर' बेसरो सामान है गाँधी ।

महात्मा गांधी

श्री मनोहरलाल "शवनम"

ऐ कि तू हिंद का सरताज करमचंद गाँधी !
तेरे सर दुनिया ने दस्तारे फज़ीलत बाँधी ,
आज संसार में आई है ग़ज़ब की आँधी ,
किशती मँझपार में है और है तू ही माँझी ।

हाथ में सत्य अहिंसा का है पतवार तेरे ,
ज़ल्म की लहरें क़दम चूमेंगी हर बार तेरे ।

साबिक़ा हिंद की रफ़अत की निशानी तू है ,
देश के दुखियों की हॉ, सच्ची कहानी तू है ,
हम में जो आब है बस उसकी ख़ानी तू है ,
इस बुढ़ापे में भी भारत की ख़ानी तू है ।

ख़वाबे ग़फ़लत में पड़ा देश, जगाया तू ने ,
हमको सूरज का है पाठ पढ़ाया तू ने ।

राज़ आज़ादी का मुज़मिर तेरी हर बात में है ,
क़ौम की फ़िक्र तुझे दिन में है और रात में है ,
देश की हानि बड़ी समझी छुवाछात में है ,
पस्त अक़वाम उठाना तेरी ख़िदमात में है ।

गाँववालों को सही राह बताई तू ने ,
दस्तकारी की जड़े फिर से जमाई तू ने ।

उम्र लम्बी हो तेरी क़ौम के सच्चे हादी ,
हुक़म से तेरे चले चर्रें, बनाई खादी ,
राह आसान जो थी, तूने वही बतलादी ,
रहनुमाई में तेरी पायेंगे हम आज़ादी ।

तबा वालों को दिखाता रहे यों ही जौहर ;
ता अबद तेरा रहें साया हमारे सिर पर ।

मेरा गांधी

श्री अवधकिशोरप्रसाद "कुश्ता"

वतन के वास्ते धूनी रमाकर बैठनेवाला ,
ज़माने के लिये झुद को मिटाकर बैठनेवाला ,
अज़ीअत पर अज़ीअत नित उठाकर बैठनेवाला ,
हरादों पर मगर आसन जमाकर बैठनेवाला ,
सुदर्शन चक्र सा जब अपना चरखा वो चलाता है ,
ज़माना क्या, ज़मीं क्या, चक्क भी चक्कर में आता है ।

इसी न मुल्क में सोराज का डंका बजाया है ,
ज़माने की नज़र में देश का रुतबा बढ़ाया है ,
अहिंसक सत्य ग्राही हिन्द बासी को बनाया है ,
वतन की आबरू पर क़ौम को मरना सिखाया है ।
है कहता "बुज़दिली है तोप से गोली से डर जाना ,
वतन के वास्ते ज़िन्दादिली है हँसते मर जाना" ।

ज़ईज़ी में भी रखता है कज़ेजा नौजवानों का ,
तने लापर पे भी ज़ोरावरों का बस नहीं चलता ,
वो बे तलवार के तलवारवालों से है यों लड़ता ,
ज़मीनों आसमाँ चक्कर में हैं गर्दिश में है दुनिया ।

अनोखा लड़नेवाला है निराला मिलनेवाला है ,
मुक़ाबिल में न जिसके कोई गोरा है न काला है ।

वतन उजड़ा हुआ आबाद करके चैन पायेगा ,
हरेक नाश्याद को वो शाद करके चैन पायेगा ,
चमन से दाफ़ये सैयाद करके चैन पायेगा ,
यक़ीनन हिन्द को आज़ाद करके चैन पायेगा ।

सितारा हिन्द का ताविन्दा कर लेगा तो दम लेगा ,
वो गांधी हमको 'कुश्ता' ज़िन्दा कर लेगा तो दम लेगा ।

महात्मा गांधी की कर्षणंठ

श्री जगेश्वर प्रसाद 'खलिश', गया

देश पर ऐसी गुलामी की घटा छाई थी,
टेर आज़ादी की नक्क़ारए रुस्वाई थी,
थी ज़बां मुँह में, कहाँ ताक़ते गोयाई थी,
आँख थी, आँख में लेकिन नहीं बीनाई थी,

सूझता था लवे साहिल न किनारा अपना,
चाँद आता था नज़र हमको न तारा अपना।

हँसके रोती हुई हस्ती को हँसाया तू ने,
रोके हँसती हुई दुनिया को रुलाया तू ने,
घादए हुब्बे वतन सबको पिलाया तू ने,
देश भक्ती का नया पाठ पढ़ाया तू ने,

रोज़ बेमौत मरा करते हैं डरने वाले,
मरके भी मरते नहीं देश पे मरने वाले।

जाये ख़ाली न कंभी हाथ से वह वार है तू,
काट जिसकी न मिले कोई, वह तलवार है तू,
सर झुकाये हुये दुनिया है वह सरदार है तू,
जिसमें सब लोग समा जायें वह संसार है तू,

कोई ऊँचा नज़र आता है न नीचा तुझको,
सेज काँटों का है फूलों का ग़लीचा तुझको।

शान झुक जाये तेरे सामने वह शान है तू,
देश मुर्दा है, मगर जीती हुई जान है तू,
तुझपे कुर्बान ख़ुदाई है वह इन्सान है तू,
अहले इमान ये कहते हैं कि इमान है तू,

जीत तेरी हो, तेरा राज हो, लय हो तेरी,
तु जिये, देश हो आज़ाद, विजय हो तेरी।

गंधी

श्री सागर निज़ामी

तूने मगरिब पर नुमायों कर दिया हक्के-वतन ,
बाग़बाँ से खोलकर कह दी हदीसे—या—समन ।

कामगारे दुर्रियत अय शहर यारे दुर्रियत ,
अय रईसे दुर्रियत अय ताजदारे दुर्रियत ।

हिन्दियों के जड़बये कौमी की इक सूरत है तू ,
चलता फिरता परचमे—रंगीने दुर्रियत है तू ।

रख दिया कुदरत ने कान्हे पर तेरे बारे-वतन ,
कर लिया तसलीम तुझको सबने सरदार-वतन ।

अय दिसागे-जुल्म पर इक ज़बे कारीये शदीद ,
मुस्तबद-दुनिया के सर पर ज़ाला-बारीये-शदीद ।

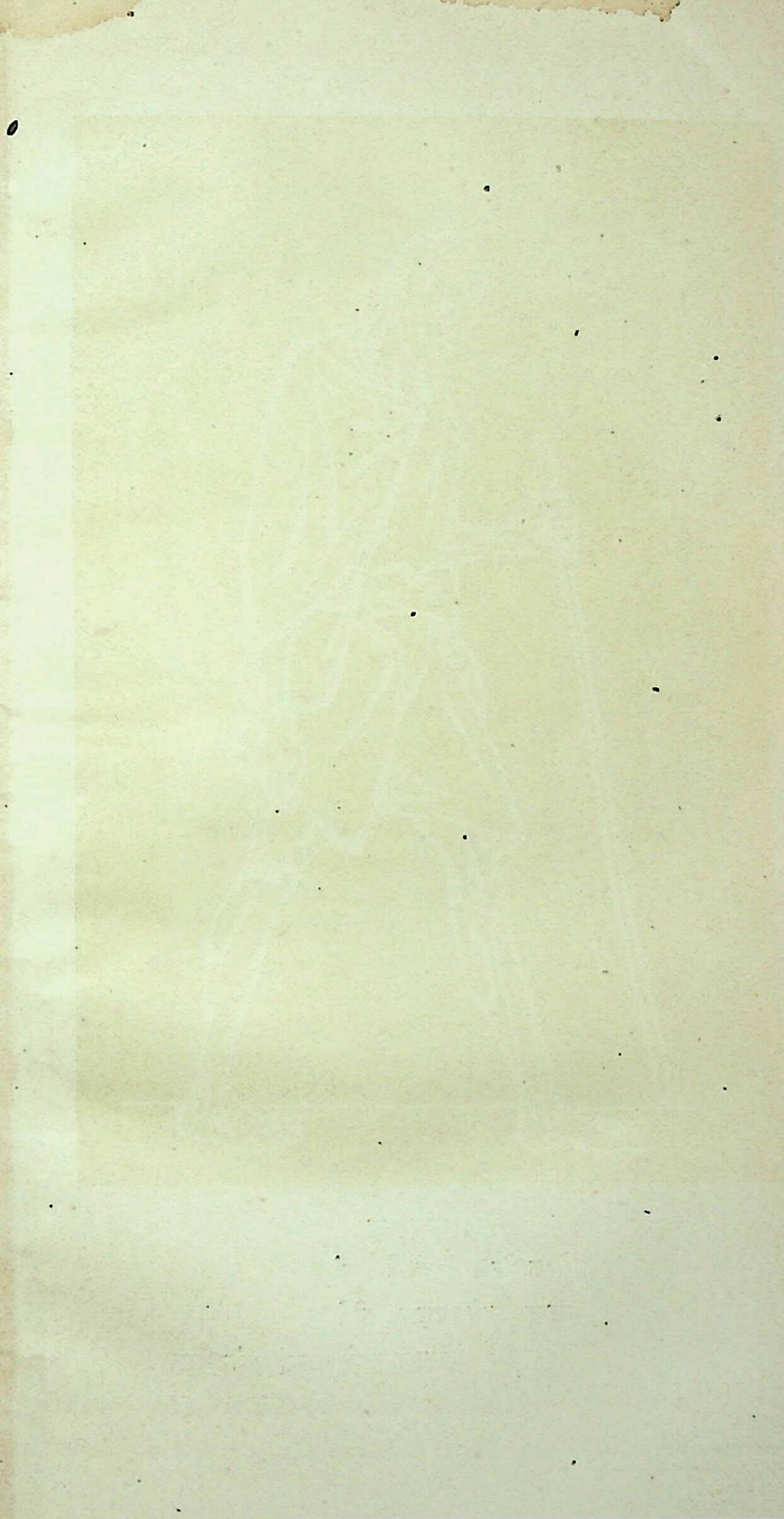
किस क्रूर आज़ाद है कितना बहादुर दिल है तू ,
खुद सरो में साइ ये आज़ादिये कामिल है तू ।

महफिले-अग़ियार तेरे ज़िक्र से आबाद है ,
बड़मे दुश्मन में भी तू आज़ादसा आज़ाद है ।

झूठ वाकिफ़ इस हकीकत से हैं दीवाने तेरे ,
बादये-फ़ितरत से हैं लबरेज़ पैमाने तेरे ।

वह तअस्सुर है तेरे इक नारये आज़ाद में ,
ज़लज़ला आया हुआ है क़स्ते-इस्तब्दाद में ।

देखिये मशरिफ़ को क्या मिलता है मगरिब से ख़िराज ,
कोई ज़ंजीरे गुलामी या कोई काँटों का ताज ।





गांधी महाराज
चिरकालेर हातकड़ि जे ,
धूलाय खसे पड़ल निजे ,
लागल भाले गान्धी राजेर छाप ।
—श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर

गान्धि महाराज

विश्वकवि श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुर

गान्धि महाराजेर शिष्य ,
केऊ बा धनी केऊ बा निःस्व ,
एक जायगाय आछे मोदेर मिल ;
गरिव मेरे भराइ ने पेट ,
धनीर काछे हइ ने तो हेंट ,
आतंके मुख हय ना कमु नील ।
षण्डा जखन आसे तेढ़े ,
जँचिये घुसि डाण्डा नेढ़े ,
आमरा हेसे बलि जोयानटाके ;
ऐ जे तोमार चोख-रांगानो
खोका बाबूर घुम-भांगानो ,
भय ना पेले भय देखावे काके ।
सिधे भाषाय बलि कथा ,
स्वच्छ ताहार सरलता ,
डिप्लमैसिर नाइको असुविधे ;
गारदखानार आइनटाके ,
खँजते हय ना कथार पाके ,
जेतेर द्वारे जाय से नियो सिधे ।
दले दले हरिण बाढ़ि ,
चलल जारा गृह छाढ़ि ,
धूचल तादेर अपमानेर शाप ;
चिर कालेर हातकाढ़िजे ,
धलाय खसे पड़ल निजे ,
लागलभाले गान्धी राजेर छाप ।

गान्धिजी

श्री सत्येन्द्रनाथ दत्त

दिने दीप ज्वालि' ओरे ओ खेयाली ! कि लिखिस् हिजिविजि !
नगरेर पये रोल ओठे शोन् 'गान्धिजी !' 'गान्धिजी !'
बातायने छाख किसेर किरण ! नव ज्योतिष्क जागे
जन-समुद्रे ओठे डेउ, कोन चन्द्रेर अनुरागे !
जगन्नाथेर रथेर सारथि के रे ओ निशान-धारी,
पथ चाय कार कातारे कातार उत्सुक नरनारी !

कृपाणेर वेशे केओ रुश-तनु—कृशानु-पुण्यछवि,—
जगतरे यागे सत्याग्रहे ढालिछे प्राणेर हवि !
कौमुलि-कुलि करे कोलाकुलि कार से पताका घेरि',
कार मृदुवाणी छापाईया ओठे गर्व्वां गोरार भेरी !
कोइ टाका कार भिक्षा-झुलिते, अपरूप अश्रदान,
आगुलिया कारे फेरे कोटि-कोटि हिन्दु-मुसलमान !
आत्मार बले के पशु-बलेर मगजे डाकाय भिं-भिं
केरे ओखर्व्व सर्व्वपूज्य ?—'गान्धिजी !' 'गान्धिजी !'

महाजीवनेर छन्दे ये-जन भरिल कुलिरओ हिया,
धनी-निर्धने एक करे निल प्रेमेर तिलक दिया ;
आचरण यार कोटि कवितार निर्भर मनोरम,
कर्म ये महाकाव्य मूर्त्त, चरिते ये अनुपम ;
देश-भाई यार गरीब बलिया सकल विलास छाडि'
'गङ्गा'ये परे गो, फेरे खालि पाये, शोय कम्बल पाडि' ;
तपस्या यार देशात्मबोध छोटार ओ छोटार साथे,
दिन-मञ्जरेर खोराके ये खुशी तीन आना पयसाते ;
स्वेच्छाय निये दैन्य ये, काछे टानिल गरीब लोके,
भालो ये बासिल लब्ध कविर धन अनुभूति-योगे,
अहिंसा यार परम साधना हिंसा सेवित बासि,
आसन याहार बुद्धेर कोले टलछेयर पाशे ;

दीनतम जने ये शिखाय गूढ आत्मार मर्यादा,
चिचेर बले लक्ष्मिया चले पाहाइ-प्रमाण बाधा,
वीर - वैष्णव - विष्णु - तेजेते उजल ये-जन भिजि'
ओइ सेइ लोक भारत-पुलक, ओइ सेइ गान्धिजी !

काफिर मिटा आफ्रिका - भूमे प्रिटोरिया - नगरीते,
बारे - बारे क्लेश सहिल ये वीर स्वदेशवासीर प्रीते,
उपनिवेशेर अपहुजुरे ना मानि' जिजिया - कर,
मुदि मा कालिरे आत्मार बले शिखाल ये निर्भर,
बारण यादेर ओठा फुटपाये तादेरि स्वजाति ह'ये,
फुट पाये होंटा पण ये करिल गोरार चाबुक स'ये,
मार खेये पथे मूर्च्छा गियेछे, पण ये छाडेनि तबु,
बारे बारे यारे जरिमाना क'रे हार मेने गोरा प्रभु
रद् क'रे बद् आइन चरमे रेहाइ पेयेछे तबे !
धीरताय वीर सेवा पृथिवीर, नाइ जोडा नाइ भवे !

प्लेगेर प्लावने कुलि पल्लीते निल ये सेवा-व्रत,
बुयार लडाइये जुहयुर युद्धे जखमी बहिल कत,
कौंसुलि-कुलि-मुदि-महाजने पल्टन ग'डे निते
उपनिवेशीर कथा-विश्वासे खाटिल ये प्राण दिये,
काजेर बेलाय इंगरेज यारे मेने छिल काजी ब'ले,
काज फुराइले पाजी ह'ल हाय वर्ण-बाधार गोले !
कथा राखिल ना यवे हीन-मना कंधार कातानेरा,
कायेम राखिल बकेया युगेर जिजिया—क्षोमेर डेरा,
तखन ये-जन कुरिल धातुते वैष्णवी सेना सृजि'
वैर्य-वीर्य मोहिल जगत, एइ सेइ गान्धिजी !

सागरेर पारे स्वदेशेर मान राखिल ये प्राण पणे,
गोरा-चाषा-देशे निग्रह सहि' निग्रो-कुलेर सने,
विदेशे स्वदेशी बटेर चाराय रोपिया ये निज-हाथे
विश्वास-वारि सेचने बाँचाल बाओबाव - आओताते,

भारत प्रजारे चोरेर मतन थानाय थानाय गिये
 नाम लेखाइते हवे शुने, हाय आङ्गलेर टिप दिये,
 ये विधि अविधि तारे निर्मूल करिबारे विधि ठेले
 देश आत्माय अपमान ह'ते बाँचाते ये गेल जेले,
 गेल चले जेले ज्वालाइया रेखे पुण्य-ज्योतिर ज्वाला
 भय तरणेर सुधा-क्षरणेर उदाहरणेर माला !
 धाय देशी कुलि देशी कुठियाल ना शुने काहारो माना,
 देखिते देखिते उठिल भरिया यत छिल जेल खाना,
 महे-मेयेते चलिल कयेदे दले दले अग्रगण,
 स्वेच्छाय घनी ह'ल देउलिया, तबु छाडिल ना पण !
 क्षुधित शिशुर वच्चे चापिया देश प्रेमी कुलि—मेये
 इंगिते यार कण्ठेर कारा वरण करेछे घेये,
 दीक्षा यार निरक्षरेओ सँतारे दुःख-नदी,
 बुके आँकडिया सद्य लब्ध मर्यादा - सम्बोधि !

तामिल-युवक मरिया अमर ये परश-मणि छु य,
 चिरपदानत माथा तोले पार मन्त्र-गर्भ फुँये,
 पुलके पोलक भितालि करिल पार चारित्र्य-गुणे,
 भारते विलाते आगुन ज्वलिल पार से दीपक शुने,
 बाँधिल याहारे प्रीति बन्धने विदेशीर ओ राखी-सूता—
 मेट पारे दिल प्रेमी अए'नडूज अयाचित बन्धुता,
 आपनार जन बलि' पारे जाने ट्रान्सवाल ह'ते फिजि,
 जीर्ण खौँचार गरुड महान्—एइ सेइ गान्धिजी !

एशिया ये नम कुलिरइ आलय प्रमाण करिल येवा,
 कुलिते जागाये महामानवता नर-नारायण-सेवा,—
 धैर्य ओ प्रेम शिखाल ये सवे काय-मने ह'ते खौँटि,
 सत्य पालिते खेल ये सरल पाठान चेलार लाठि,
 विश्वघातार वहे ये पाताका उजल जिनिया हेम,
 “सत्य” याहार एक-पिठे लेखा आर-पिठे “जीवे प्रेम”,
 सत्याग्रहे दहिया सहिया हयेछे ये खौँटि सोना,
 देशेर सेवार साथे चले यार सत्येर आराधना,

अयुतकाजेर माझारे ये पारे वसिते मौन धरि'
 शवरमतीर वरणीय तीरे ध्यानेर आसन करि',
 अर्जन यार ब्रह्मचर्य तपेर वृद्धि काजे,
 उज्ज्वल यार प्राणेर प्रदीप तर्क-आधार-माझे,
 मेयरेर मेये कुडाये ये पोषे, अशुचि न माने किड्डु,
 चाकरेर सेवा ना लय किड्डुते, नरे से ये करा नीचु,
 बुद्धे महते ये देखेछे मरि आत्मार चिर-ज्योति ;
 दास ह'ते, दास राखिते ये माने चित्तेर अधोगति,
 प्रेममय कोषे वसे ये देशेर, शक्ति, बीजेर बीजी,
 अन्तरे वैकुण्ठ याहार,—एइ सेइ गान्धिजी !

दर्पीतापन भारत - पावन एइ से वेणेर छेले,
 शुचि महिमाय द्विजकुले म्लान करिल ये अवहेले—
 कुण्ठा-रहित वैकुण्ठेर ज्योति जागे जार मने,
 साजा निते नय कुण्ठित कर्तव्येर आवाहने,
 नीलकर आर चाकर-चक्रे कुलिर काळा शुनि'
 फेरे कामरूपे चम्पारण्ये अश्रुमुकुता चुनि',
 कायरा-आकाले शासनेरकले शेखाले ये मर्मिता,
 निजे भुंकि निया खाज्ना रुखियारायतेर चिरमिता ;
 राजा-गिरि नय केवलि हुकुम केवलि डिक्रिजारि,
 हाल गोरु क्रोक आकालेर ओ कालें करिते मालगुजारि,
 ए ये अनाचार एर ठाँइ आर नाइ नाइ भूभारते,
 राजाय प्रजाय एकथा प्रथम बुभाल ये विधिमते,
 सातशत गाँये बाजारे अमोघ सत्याग्रह मेरी,
 प्रजार नालिश वोभाते राजारे ह'ल नाको पार देरी,
 अभय व्रतेर व्रती ये, सकल शङ्का ये-जन हरे,
 विश्वप्रेमेर पञ्चप्रदीपे कुलिर आरति करे ;
 आदर्श यार सुधन्वा आर प्रह्लाद महीयान,
 पितार ओ हुकुमे करे नाइ यारा आत्मार अपमान,
 पूजनीया यार वैष्णवी मीरा चितोरेर बीणापाणि,—
 राजाओ हुकुमे सत्येर पूजा छाडेनि ये राजरानी ;

जयमाले यार सारा दुनियार सत्यप्रमीर मेल ,
 ग्रीसेर शहीद सफ्रेटिस् आर इहुदीर दानियेल ,
 यार आलापने बन्दी मनेर बन्धन हय चर ,
 तार आगमनी गाओ कवि आज, गाओ गान्धिर जय !

एशियार हक्, हारणे, स्मृति, इसलाम-सन्मान,—
 मर्म वीणार तीन तारें यार पीडिया कौदाल प्राण ,
 बराज बुकेत सारा एशियार व्यथा स्पन्द बहि ,
 सब हिन्दुर हये' ये, खोलसा खेलाफते दिल सहि ,
 चित्त बलर चित्र देखाये पेले ये पूर्ण साझा ,
 सत्याग्रह-छन्दे बान्धिल भूडरे छन्द-छाङ्गा ,
 प्रीतिर राखी ये बँधे दिल दुहुँ हिन्दु-मुसलमाने ,
 पञ्चनदर जालियार ज्वाला सदा जागे चार प्राणे ,
 भारत-जनेर प्राण-हरणे हरिवारे अधिकार ,
 नैयुज्येर हल सेनापति य रथी दुर्निवार ,
 विधातार देशोया धर्मा रोषेर तलोथार चार हाते ,
 सोना हये गेछे सत्याग्रह - रसायन सम्पाते ;
 बोधि' स्वातन्त्र्य शासन - यन्त्र आमला तन्त्र सह
 अमय-मन्त्र दिये देशे देशे फिरिछे ये अहरह ;
 महारानी यार शक्ति-आधार, अनुदार कभु नहे ,
 छुकानो छुपानो किछु नाइ थार, हाटेर माफे ये कहे—
 "स्वराजप्रयासी जागो देशवासी, स्वराज स्थापिते हवे ,
 त्यागेर मूल्ये किनिव से धन, कायम कारिव तये ।

या' किछु स्ववशे सेइ तो स्वराज, सेइ तो सुखेर खनि,
 आफ्नार काज आपनि ये करे,—पेयछे स्वराज गणि ;
 स्वपाके स्वराज, स्वराज-स्वकरे निजेर बसन बोना ,
 स्वराज—स्वदेशी शिल्प-पोषणे स्वाधिकारे आनागोना,
 स्वराज—आपन भाषा—आलापने, स्वराज-स्वरीते चला,
 स्वराज—या' किछु अशुभ ताहारे निजेर दु'पाये दला ;

स्वराज—स्वयं भूल करे तारे शोधरानो निजहाते,
स्वराज—प्राणीर प्राणे अधिकार विधातार दुनियाते ।

सेइ अधिकारे धाय यारा हात प्रेष्टिज—अजु हाते,—
स्वराज—से नैयुज्य तेमला आम्लातन्त्र साथे ।
हाते हतियारे शिक्का स्वराज, स्वप्नकाशेर पये,
स्वराज—से निज विचार निजेरि स्वदेशी पञ्चायते ।
चारित्र्यवले आने ये दखले एइ स्वराजेर माला,
कर-गत तार सारा दुनियार सब दौलतशाला,
हातेरी नागोल आछे एर चावी, आयास ये करे लसे,
अक्षम भावे आपनारे भूल कोरी ना । ” कहे ये सवे ;
आत्म-अविश्वासेर ये अरि, मूर्च्छ ये प्रत्यय,
पराजय आजो जानेनि ये, सेइ गान्धिर गाह जय !
हेस ना हेस ना ह्रस्वदृष्टि, हेस ना विश हासि,
मूर्च्छ तपेरे शेख विश्वास करिते अविश्वासी,
अविश्वसेर विष-विश्वास हय ये प्राणेर क्षय,
विश्वासे रुह विश्व-विजय, विद्रूपे कम नय ।
व्यङ्गमा ! तोर व्यङ्ग एवं वङ्ग वाखान राख्,
गुञ्जने शोन् भरि' भरि' ओठे भारतेर मौचाक,
भीमूरलओ ह'ल मौमाछि आज यार पुन्येर वले,
तार कया किछु जानिसतो बल्, मन दोले कूतहले,
जानिस् तो बल्, मोहनदासेर महादुषमन् गणि,
कि किफिर ओहे सुरा-राक्षसी पूतना वोतल्-स्तनी,
वोतल काडिया मातालेर, गेल कोन् तेलि कारागरे,
कोन् लाट ढाके अशोकेर लाट मदेर इस्ताहारे ।

जानिस् तो बल् कि ये ह'ल फल आव्कारी-युद्धेर,
मध-जातकेर अभिनय सुरु ह'ल कि मगधे फेर ।
ओरे मूढ उइ आजके केवल फिरिसुने छल लुँजे,
लुँटि नाटि बोल कवे कि बलेछे ताहारि उतारे युके,

गोकुल श्रेय कि श्रेय-खानाकुल-से कलह आज देखे
भारत जुड़े ये जीवन-जोयार ने रे बुड़ ताड़ देखे ।
पारिस यदि ता शुचि ह'ये नेरे स्नान क'रे ओइ जले ,
चिने ने चिने ने महान्-आत्मा महात्मा कारे बले !
एतखानि बड़ आत्मा कखनो देखेछिस कोनो दिन ?
देश यार आत्मीय प्रिय-तबु विश्वासहीन ?
दूरवीन क'से विश्वास घाष, 'सूर्ये'र बुक पिठे ,
आछे मसी-लेखा ?" आलोरे ताहे कि हय कमि एक छिटे !

सेइ मसी निते हास्ये तपन विश्व भरिछे निति ,
रश्मिर ऋण बाढ़ाये शरीर, फूले फूले दिये प्राति !
कुटिरे कुटिरे महाजावनरे ज्वेलेछे ये होमशिखा ,
दिन-मजुरे जने जने सँधि' मर्यादा-शुचि टीका,
पौछे देखे ये पौरुष नव चाषादेर घरे घरे ,
यार बरे फिरे शिल्पीर गेह काजेर पुलके भरे ,
यार आह्वाने साढ़ा दिये छुरे तिरिश कोटिर मन ,
देशेर खतेने यशेर अङ्क लेखे साधारण जन,
आत्मविलोपा कर्मी-सद्य यार वाणी शिरे धरि,
नीरवे करिछे ब्रतेर पालन दुःसह दुःख वरि' ;
छात्रेर त्यागे स्वार्थेर त्यागे पुलकि वहे हाओया ,
राज-भृत्येर वृत्तिर त्यागे राजपथ ह'ल छाओया ,
यारे माझ पेये काजिया थामाये हिन्दु ओ मोसलेम ,
'आत्मदमन स्वराज' समझि-भुञ्जे परम प्रेम ,
महम्मदेर धर्म-शौर्य याहार जीवन-माझे
बुद्धदेवेर मैत्रीते मिलि' स्फुरिछे नवीन साजे ;
साराटा जीवन खृष्टदेवेर क्रुशये वहिछे काँचे ,
विद्वत्-पदे कण्टक-पथे 'सत्य'-व्रत ये साचे ;
यार कल्याणे कुड़ेमि पालाय प्रणमिया चरकोर ,
भरे भारतेर पल्ली-नगरी कवीरेर 'काल्चारे' ;
याहार परशे खुले गेछे यत निदमहलेर खिल ,
पूरा ह'ये गेछे यार आगमने तिरिश कोटिर दिल् ,
तार आगमनी गारे ओ खेयाली ! गोइवङ्गमय
गाओ महात्मा पुरुषोत्तम गान्धिर गाह जय !

महात्मा गान्धीर प्रक्ति

श्री बुद्धदेव वसु

आमारा पतंग जन्मा, मुषिक मृत्युर
अन्धकारे पिञ्जरित दुर्भिन्नेर कराल आकाशे
चिरस्थायी नाभिश्वास नामे आर ओठे
हताशार दुःसीम गुमोटे ।
दुःख नेह, सुखनेह, आशानेह मनुष्यत्व नेह,
शुधु धुँके धूके
धुक पुक बुके वेंचे थाका
शुधु शून्य भविष्यते आँका
नियतिर कालनेमि अभुर अक्षरे,
तार पर अन्तिम प्रहरे
क्षीण स्वरे अनिश्चित ईश्वरेरे डाका ।
जीवन्मृत जडताय वेंचे थाका तबू वेंचे थाका ।
ए नीरन्त्र निश्चेतने कोथाओ कि प्राण छिलो ?
अवाध्य, अवध्य इतिहास,
एकि तारि आकस्मिक विराट उच्छ्वास ?
एकि कोन अलौकिक अज्ञेय सत्तार
युगान्तरकारी अवतार ?
एकि सत्य, एकि सत्य नय ?
मने हय जामादेर जीवित मृत्युर
दुर्गम गोपन उत्से बुझि वा स्पन्दित
रक्त वह हृत्पिण्ड; बुझि वा सत्यह
इतिहास नियतिर अलक्ष सारथि ,
बुझि वा आमरा
अनन्त कालेर मतो नित्य म'रे तबउ अमर ।
यदिता ना हवे
ताह'ले ए असम्भव केमने सम्भवे ?
आमरा तो जानि ना केमने
कोन दूर शताब्दीर पव पार थेके
प्रति दिन विन्दु विन्दु क'रे
आमरा ढेलेछि एह प्राणमय प्राण

भारतेर कोटि कोटि हिन्दु मुसलमान ।
 तुमि आमादेर सेइ प्राण संचयन ,
 आमाराइ तूमि, निरन्नेर निर्बलेर ,
 मनुष्यत्व वंचितेर सर्व्व प्रासी अन्धकार फेटे
 कखन आगुन फोटे केउ कि ता जाने ?
 आमादेर कोटि कोटि अचेतन हृदयेर अग्नेय कणिका
 सेखाने पुञ्जित ह'ये जालायेछे अफुरान अनिर्वान शिखा ,
 तुमि सेइ आश्चर्य्य प्रदीप, प्रदीपेर अपूर्व्व इन्धन ,
 भारतेर ते प्राण पुरुष आमादेर प्राण संचयन !

महामानव

श्री मोहितलाल मजुमदार

जन्म तोमार हयेछिल कबे ऋषिर मने-
 एइ भारतेर मंहामनीषार तपेर ज्ञणे !
 सर्व्वमानवे अमेद करिया देखिल यारा--
 ता'राइ तोमाय देखेछे प्रथम, जेनेछे ता'रा
 तार पर तुमि युगे-युगे एले मुरति धरि'-
 अमृत पिया'ले मृत्यु-सागर मथित करि' !
 कुरुक्षेत्रे बाजिल शङ्ख मामैः—रवे !
 प्रथमप्रेमिक शाक्यसिंह उदिल भवे ?
 पाप-पश्चिमे भगवद्-कृपा दानिल ईशा !
 आर ओ एकजन मरू सन्ताने देखा'ल दिशा !
 सेइ एकवाणी मूर्ति धरिया आसिले तुमि !
 हे जीव-ब्रह्म-अमेद ! तोमार चरण चुमि !

हे प्राण-सागर तोमाते सकल प्राणेर नदी
 पेयेछे विराम पथेर प्लावन-विरोध बोधि' !
 हे महामौनी, गहन तोमार चेतन-तले
 महाबुद्धावरण तृप्ति-मन्त्र ज्वले !
 घन्धतरि ! मन्वन्तर-मन्थ शेष—
 तव करे हेरि अमृतभागड-अविद्वेष !
 जगत जनैर वेदना-समिध् कुड़ाये सवि-
 सेइ इन्धने ढालिले आपन प्राणेर हवि !

परिले ललाटे महावेदनार भस्म-टाका ,
जीवन तोमार होम हुताशन ऊर्द्धशिखा ।
शङ्काहरण अहिताग्निक पुरोधा तुमि ।
यज्ञ-जीवनदेवत ! तव चरण चुमि !

निरामय देहे वहिछु सवार व्याधिर भार ।
तुमि नमस्य, सवारे करिछु नमस्कार ।
चिरतमिसाहरण तोमार नयन-कूले ,
अन्ध-आँखिर अन्धकारेर अश्रु दुले ।
अर्द्ध-अशन विरल-वसन हे सन्यासि' ।
तुमिइ सत्य संसारतले दाँडा' ले आसि' ।
आदिकाल हते कतकाल तुमि एमनि रत-
हे महा जातक ! जातक-चक्र घुडिवे कत ?
कतवार दिवे आपनारे बलि यागेर यूपे ,
छोट-‘आमि’ गुलि भरिया तुलिवे तोमार रूपे ।
चिनेछि तोमारे, युगे युगे अवतीर्ण तुमि ।
हे वोधिसत्त्व ! बुद्ध ! तोमार चरण चुमि !

ध्यानीर ध्यायाने आसन तोमार चिरन्तन ,
इतिहासे यवे घरा दाआओ, से जे परमच्छण ।
देशे देशे तव शुभ-आगमन-वार्त्ता रटे ,
तोमार काहिनी कीर्त्तन हय देउले मठे !
परे येई दिन तोमारे भुलिया तोमार नाम
जप करे सवे निजेरी लागिया अविश्राम-
नरे भुल गिये शुधु ‘नारायण’-मन्त्र पढे,
मनेर मतन स्वार्थ साधन मूर्त्ति गडे—
जगत-अन्ध जगानन्दे करिया हेला
रतने-भूषणे साजाय केवलि माटीर ढेला-
जगज्जीवन-मूर्त्ति धरिया एसो गो तुमि ।
मानव-पुत्र ! मैत्रेय ! तव चरण चुमि !

एसो गो महान् अतीत-साक्षी हे तथागत !
हेर ए धरणी भरण-शासने मूर्च्छाहित !
काँटार मुकुट माथाय परिया मानव राज ।
गाह जय, गाह मानरे जय, गाहगो आज !
महाव्याधि-भार कर गो हरण परशि' कर-

धन्य हउक निजेरे निरखि' नारी ओ नर ।
 आर वार डाक' घरे घरे, 'एस आमार पिछे;
 भयेर सागर हेंटे पार हओ, भय ये मिछे !'
 मृत जने पुनः नाम धरे 'डाक' मृतक-नाथ !
 प्रेत भूमे आजि एकि हुलाहुलि रोदन साथ !
 सूतिकालयेर शोभा धरे यत श्मशान भूमि-
 महादेव नय-महामानवेर चरण चुमि' !

धर्मवीर

श्री प्रभात मोहन वंद्योपाध्याय

सुखे येते छिल दिन । धर्म कि—ता' दिव्य वृक्षिताम ,
 आद्वामरे दूर होते नित्य तारे करिते प्रणाम—
 कोनो दिन भूलि नाइ । धार्मिकेर पदभूलि ल'ये ।
 दैनन्दिन स्वार्थ द्वन्दे मग्न ह'ये छिलाम निर्भये ।
 जीवन सहज छिल हेनकाले तव तीव्र ज्योति
 केमने पशिल आसि' अन्धचक्षे अकस्मात् अति
 को था हते । धर्मवीर ! तुमि एले मत्त-भ्रष्टा-सम
 स्वार्थेर प्राकार माझि, कोटिपति ह'ते दीनतम
 गृहस्थेरे गृह हते ठेलिया फेलिले आनि पथे ।
 ब'ले दिले, "धर्म नाइ पूँथि-पत्रे मन्दिरे-पर्वते ,
 धर्म नाइ रण-क्षेत्रे पैशाचिक हत्यार गौरवे ,
 देशभानुकार नामे' विदेशेर शोणित वैभवे
 धर्म नाइ ; धर्म नाइ शृङ्खलित दासेर सेवाय ;
 तिथि दिया, मन्त्र दिया, तीर्थ दिया राखियाछु या'य
 सङ्कोचे सराये दूरे—आजि तव घरेर अङ्गते
 ताहारे प्रत्यक्ष करो ; ताहार कठिन आलिङ्गने
 धारा दिया धन्य हओ ; निखिलेर लाञ्छितेर लागि
 निरन्नेरे अन्न दिते—अत्याचारे करिवारे रोध ।
 प्रति दिवसेर काजे सहज सक्रिय धर्म बोध
 मानुषेरे मुक्ति दिवे, विश्वेरे करिवे शान्तिमय ;
 दूर ह'ते चलिवे ना आजिके गाहिले तार जय ,
 जीवने लभिते ह'वे अविभ्रान्त कर्म दिया ता'रे ।"
 कहिलाम अविश्वासे "ए कसु संभव ह'ते पारे ?"

बलिले, “प्रतीक्षा करो” ; देश जुड़े पड़े’ रोल साड़ा ;
 “धर्म आचरण करे—एसे छे एमन लक्ष्मी छाड़ा
 स्वदेशेरे मुक्ति दिते”—पण्डिते हासिल व्यंग हासि ;
 देशरे अन्तरतले स्वार्थान्वेरे मुखस्वप्न नाशी
 जागिल धर्मेरे मूर्ति ; कोटि कोटि विजुब्ध विवेके
 पूजारति होलां ता’र । हाय, आज बलिया दिवे के—
 ये होमाग्नि ह’ल ज्वाला, ये साधना मुक ह’ल सबे—
 कवे तार पूर्णाहुति ? के बलिवे सिद्धिलाभ कवे ?

महात्माजीर प्रति

श्री चपलाकान्त भट्टाचार्य, संपादक, आनंद-बाजार-पत्रिका

पञ्च नदेर वन्दे येदिन शोणितेर होलिखेला
 खेलिल पिशाच पीडित जातिर कातरता करि हेला ;
 वेदनार डेउ पड़िल भाङ्गिया तोमारि चरणमूले
 येथा छिले तुमि आपन साधने साबरमतीर कूले ;
 टुटिल धेयान, आश्रम छाड़ि बाहिरिया एले छुटि
 येथा मूर्खु देशवासी तव पड़ि रय भूरे लूटि ;
 सान्त्वना दिया अपमान व्यथा सब तुलि निशे बुके ;
 सारा भारतेर प्रतिवादध्वनि फुकारिल तव मुखे ।
 आपन तपेर तेज सञ्चारि सवारे करिया दान,
 तिरिश कोटिर कङ्काल भरि फुत्कारि दिले प्राण ।
 अमर अभय आह्वान तव उठिल गगन भरे,
 साधनलब्ध अमोघ अस्त्र दिले सवाकार करे ।
 सहसा तड़ित्-स्पर्श-चकित सकले उठिनु जागि,
 सेइ निर्घोष आजो, मने, हय श्रवणे रयेछे लागि ।
 असहयोगेर रूप धरि तव रोषेर वह्निशिखा,
 छाइल भारत, अत्याचारीरे देखाइल विभिषिका ।
 काँपिल प्रबल शासन शक्ति आपन आसन परे,
 देखाले हिंसाविहीन समर कत ये शक्ति धरे ।
 इच्छाय तव पड़िल सेनानी मृतपुत्तल हते ;
 शिखाले जातिरे कठोर दीक्षा लइते मुक्तिवते ।

प्रभात-आलोक झलिल सहसा, तोमार नयने चाहि ,
 गौरवे भरा वन्दोर दल ओठे वन्दना गाहि ।
 सेदिनेर सेइ आशा-उल्लास जीवने भुलिब ताकि ?
 स्वपनेर मत आजो भासि ओठे स्मृतिपटे थाकि ।

सहसा कखन कारार दुआर रुधिल तोमारे धिरि ,
 सङ्गीरा सव ये याहार कातो एके एके गेल फिरि ।
 फिरिले यखन व्रत गेछे भाङ्गि नीरव राष्ट्रवानी ,
 स्वपन विलासे घुमाइछे जाति सहि लाङ्छनाग्लानि ।
 दिल्ली हइते कोकनदव्यापी उपप्लवेर वेगे ,
 गान्धीर नाम डुबिया गयाछे नव-सहयोग-मेवे ।
 निष्फलतार चुकभाङ्गा श्वास नीरवे मम्मैं दलि ,
 लोकहित भावि तार पर सेइ तोमार आत्मवलि ;

सब विरोधेर हलाहल ज्वाला पियिले कण्ठ भरि ,
 सबारे शान्ति दिया नतशिरे आंश्रमे गेले सरि ।
 तारपर हाय, इतिहास माखा पतनेर घनमासी,
 आंधार हइते तुलिले याहाय आंधारेइ गेल पशि ,
 नव-सहयोग-अभिसार होलो खण्डित बारे बारे,
 तवओ फिरिते हय ना साहस आँकड़ि रहिछे तारे ।
 ये आयुध दिले करिते प्रयोग शक्ति नहिहल कारो ,
 ये जीवनवेद प्रचारिले सवे मन्त्र भुलिल तारो ।
 क्लान्त नयने हेरिले सकलि नीरव वेदना-भागी ,
 संयत-तेज रहिले धेयाने शुभचण्णोर लागि ।
 एखनो कि तव हयनि समय पुनराय देखादिते ?
 अचल राष्ट्रयेर रश्मि दृढ़करे तुलि निते ?

चालनार भार काङ्गि निल यारा अबोध-दम्भेमाति ,
 पड़े शिथिलिया; एसो, याय बुझि तव प्रियदेश जाति ।
 येइ पाशुपत करिया योजन तूनीरे राखिले तुलि ,
 मुक्ति मोदेर तारि माझे रय से कथा कि गेले भुलि ?
 फिरे एसो, डाके दीन देशवासी पोइन-कातर अति ,
 एखनओ केन रहिछु विमुख, हे तापस सेनापति ?
 भेङ्गेछे शरीर तार साथे कि गो तोमारो भाङ्गिल मन ?
 सङ्गीरा सव छाड़िल व'ले कि तुमिओ छाड़िबे पण ?

काहार नयने चाहि तवे आर लभिव पयेर आलो ,
चारि धार घेरि घनाय यखन आँधार निकष-कालो ?
बहितेछ तुमि सवाकार भार धरार धैर्यभरा ,
तोमार चरण द्विधाय टलिले टले ये बसुन्धरा ।

वृथा से एकता तार लागि यदि सत्येरे दाओ वलि ।
रसातले याक् राजनीति यदि बिपयेइ याय चलि ।
मिथ्याइ येथा धर्म हइल, नीति ह'ल येथा छल,
वञ्चना आ उत्कोचदान ह'ल येथाकार बल,

ताहारि समुखे तुमि नतशिर—ए व्यथा केमने सहि ?
सत्येरे शेवे हवे पराजय, मिथ्याइ हवे जयी ?
हेर चाहि रय तव मुखपाने पथ सन्धानी जाति,
ज्वलुक, ज्वलुक तोमार नयने सत्य-अनल-भाति ।

निमिषेर माफे पुडि हवे छाइ मिथ्या ओ कपटता,
निशीये याहारा छाडे हुङ्कार लुकाइया यावे कोथा ।
दाओ डाक दाओ, कण्ठे तोमार अमोघ सत्यवाणी,
विपुल प्लावने दुलिया उठुक भारतेर प्राणखानि ।

मरा बाँचावार अमृत मन्त्र तोमारि से जाना आछे ।
बाँचिया मरिल, दाओ डाक दाओ, पुनराय तवे बाँचे ।
कोथाय पाषाणे जीवन उत्स रुद्ध से गतिहारा,
जानो सन्धान, बहाइया दाओ पुनः से मुक्तधारा ।

हे महातापस सत्येरे पुनः जागाओ उच्चशिर,
धरमेर देशे धरमे आबार स्थाप'गो धरमवीर ।
मन्त्रे तोमार, अभय साधक, भीरु-बुके दाओ बल,
आह्वाने तव, विश्व प्रेमिक, नासुक प्रेमेर ढल ।

दाओ डाक दाओ, आसुक कमला धन, सम्भार ल'ये,
तोमार साधने सुप्त शक्ति उठुक दोस ह'ये ।
दाओ डाक दाओ, स्वराजरथेर तोलो धर्धरनाद ।
दाओ डाक दाओ, दूरे सरि याक् एइ जइ अवसाद ।

एइत सेदिन तरुन तपन पूरवेते दिल देखा
घिरिल ये मेघ काटिबे ना आर—एइ कि ललाट लेखा ?
अकाले कि शेवे नामिले सन्धा मुखिया आशार छवि ?
हाय, हाय, एइ मध्य दिवसे डुबि रय केन रवि ?

गान्धी महाराज

श्री यतीन्द्रमोहन वागची

के ऐ चले विपुल बले समुखपाने चाहि'—
उदार धोर अति गभीर चोखे पलक नाहिं ;
सरल पथे सहज मते समान ऋणु गति ,
डानेबा बामे कभुना थामे-जाने ना लाभ-क्षति ;
व्यथित लोके अभावे शोके सेविते सदा मन ,
दीनेर तरे नयन भरे करे पराण पण ;
परेर लागि' सर्वत्यागी भुलिया भय लाज !
केबा ए जन ? हाँके पवन-गान्धी महाराज !

भारतवासी गृही ओ चाषी काहार मुख चाहि'
नवीन बले मातिया चले आशार गान गाहि';
मजुर कुलि अभाव भुलि' काहार जयगीते ,
पराण मन जीवन पण चाहे बा बलि दिते ;
धनी ओ मानी, गुणी ओ ज्ञानी, गरीब गृहहीन
काहार काछे शरण यचे-शुधिते नारे ऋण ;
निखिल लोक मेलिया चोख नमिछे कोरे आज ?
देश-मातार कण्ठहार गान्धी महाराज !

परेर 'परे आशा ना धरे—निजेते निर्भर ,
सुसमाहित शान्त चित, शुद्ध कलेवर ;
सरल बास, सहज भाष, सत्यपथकामी ,
देशेर हित काहार चित भाविछे दिन-यामी ;
विरोधी भाये माथेर पाये मिलाये निज गेहे ,
सवारे डाकि' मिलन-राखी परा'ल के बा स्नेहे ;
हिन्दु टाने मुसलमाने निज बुकेर माभू—
असाध्यके साधिल ओके-गान्धी महाराज !

अ-मिले के से मिलाय हेसे, अचले करे चल,
काहार चित् शत्रुजित अन्न हृदबल ;
असहयोगे मृत्युरोगे निदान-विधि का'र
फिराये आने देशेर प्राणे बाँचार अधिकार ;—

ये बाँचा माने सकले जाने स्वाधीन यत देशे ,
 नूतन पथे नूतन रथे यात्रा या'र हेसे ;
 ये बाँचा माने बिधाता जाने अमृतलोकमाभ—
 ए बाणी के से शिखा'ल, देशे ?—गान्धी महाराज ।

गान्धीजी

श्री सजनीकान्तदास

स्वर्गे आर मर्त्ये आज चलियाछे दड़ि टाना टानि ,
 इहलोके परलोके बांधियाछे प्रचण्ड संग्राम
 इकठी मानवे धिरि । प्राण पन करियाछे प्राणी ,
 विचार चलिछे ऊर्ध्व से प्राणेर कतदुकु दाम ।
 युगे युगे याहादेर 'जन्म आर मृत्यु' इतिहास ,
 काल वारिधिर तटे यादेर बालुका परिचय—
 एल आर चले गेल, मुहूर्त्तें बुद्बुद विलास ,
 ताहारइ एकटी लागि मृत्यु दूत गनिछे संशय ।
 से कि शुधू देहसार ? देहहीन आत्मा ओ से नेह ।
 तार परिचय से ये मानवीर गर्भें सन्तान ,
 विश्व मानवेर धात्री धरा ताइ आसन्न विरहे
 मुछिछे नयन अश्रु ; नाड़ीते पड़ेछे तार टान ।
 देवता डाकिछे ऊर्ध्व, एसो एसो हे आत्मा महान
 प्रशान्त नयन मेलि जे देखे मानुषेर छेले—
 चले दड़ि टानाटानी स्वर्गे मर्त्ये खुचे व्यवधान ,
 धराहेसे केंदे कय, ए आत्मा माटिते शुधु मेले !
 माभखाने बसे स्तब्ध ध्यान. रत महान मानव ;
 मुखेते माखान तौर प्रेम आर विदायेर हामि ।
 स्वर्गेर आह्वान नाइ , थेमेछे आत्मार कलरव ,
 बले येते पारिबना , ए धरारे आसि भालवासि ।
 देहहीन देवतारा देहीरे करेन आशीर्वाद ,
 आनन्दे क्षरिया पड़े धरणीर स्तन्य दुग्धधारा
 धराय रंहिल आत्मा, स्वर्गे खुचिल विवाद—
 मृत्युरे जे नाड़ा देय देह नय से आत्मार कारा

आत्मार आत्मीय गान्धी

श्री सावित्री प्रसन्न चट्टोपाध्याय

तखन दुःखस्वप्न जागे दुर्भाग ए भारतेर बुके
मय विचलित चित्ते अविराम जागिछे संशय ,
पुतमान मनुष्यत्व कलंकित ऐतिह्य ताहार
गोपन गुहाय चले रात्रिदिन चक्रान्त हिंसार ।

जातिर वन्धन व्यथा शृंखलेर निष्ठुर पीडन
कुब्ज पृष्ठे कशाघात, लज्जाहीन दुर्बल दलन ।
विकुब्ध मनेर कोने धुमाइछे विद्रोह अनल
हेन काले देखादिले पुण्यभूमे तपस्वीर वेशे ।

विलिखि विध्वस्त देश, चारिदिके स्वजन संग्राम
ताहारि कदर्य छाया घनाइल तब चित्ताकाशे ।
दुश्चिन्तार वाणी रेखा भ्रुकुञ्जने उठिल कटिया
येमन गभीर दृष्टि तेमनि उदात्त कण्ठ स्वर ।

नूतन करिया तुमि गड्विचारे स्वदेश समाज
अहिंसार नवमंत्र शुनाइल जने जने डाकि ,
जुर धार तीक्ष्ण बुद्धि युक्ति तर्के पंडित प्रधान
सुदुर प्रसारी मन, करुणाय कोमल हृदय ।

धर्मे धर्मे रेखा रेषि आचारे विचारे कोलाहल
संस्कारेर मोहजाले छुँत मार्गे आत्म अपमान ,
मन्दिरे देवता बड़ बाहिर मानषु अप्रधान
से मानुषे बुके निले प्रसारिया उदार हृदय ।

मानुषेर महत् धर्म दीक्षा दिले ए महाभारते ,
अपनि आचारि धर्म विलाइले प्रेम अभिनव ,
अन्तरे स्वदेश लक्ष्मी, नयने उदार धरातल
सर्व साधनार अर्ध्वे मनुष्यत्व बोधनेर व्रत ।

तोमार स्मरण सौध गड्विया तुलिछे कीर्त्ति तब
आत्मार आत्मीय गांधी महात्मा ए अनात्मिक देशे
अर्चनीय सवाकार स्मरणीय प्रभाते सन्ध्याय
कविर प्रणाम सेथा फुल हये भरिषे नियत ।

महात्मा

श्री. निर्मलचन्द्र चट्टोपाध्याय

तपेर तड़ित-सूत्रे ऐक्ये गाँधि श्रेय आर प्रेय
अमोघ मैत्रीर मंत्रे चाण्डाले ओ वन्दे टाने के ओ !
निष्कलुष ध्रुवनेत्रे जागे नवयुगेर मैत्रेय ।
ए भारते कार दृष्टि निर्निमित्त आज ?
—गांधि महाराज ।

अस्थि शीर्ष कृशतनु दृढ दीप्त कृशानु-सुन्दर—
त्यागेर सर्वस्वपने महामिच्छु गुर्जर शङ्कर ;
कटिवास मात्र साजे त्रिशकोटि दरिद्र निर्भर ।
परजीवी गृध्रुदेर के बहिछे लाज ?
—गान्धि महाराज ।

क्लीव-क्लिन्न लक्ष्यहीन लक्ष प्राणे ऋत वाक्य थार
तिले तिले अलक्षिते अग्नितेज करिछे सञ्चार ;
शृङ्खल-संगीत हानि, बन्दी गाहे वन्दना ताहार
सुप्त चित्ते कार बानी समुद्यत बाज ?
—गान्धि महाराज ।

क्रोधेरे अक्रोधे जिनि' अप्रेमेरे प्रेमेर आग्रहे
अलिङ्गन दानिल ये वेदनार सर्पविष दहे ,
शक्ति तार अप्रहृत जीव यज्ञे अनन्त निग्रहे
मानव मूर्तिर ए की स्वमूर्त बिराज ?
—गान्धि महाराज ।

गांधीजी

श्री विजयलाल चट्टोपाध्याय

बर्बरता विज्ञाननेरे करिया किङ्करी—
दिगन्त व्यापिया तोले रक्तेर लहरी ,
पृथिवी जुड़िया चले मृत्युर शासन
शक्ति आसि काड़ियाछे न्यायेर आसन ।

आलोहीन आशाहीन शताब्दीरुकाने
तुमि दिले प्रेम पत्र । तोमार आह्वाने
सेइ प्रेम—विश्वे जाहा एकान्त निभय ,
वीर्ये आगुने याहा चिरदीप्तिमय ।

मृत्युमंत्रेदीक्षा तुमि दिले छो जातिरे ;—
प्राण—से तो मरनेरइ आसे वक्ष चिरे ।
मानुषेरे भालोवासी—साम्यवादी ताइ,
जेखाने शोषण, जानो, प्रेम सेथा नाइ ।
सर्वहारादेर लागि तोमार स्वराज
तुमि, ताइ, भारतेर गान्धी महाराज ।

महात्मा गान्धी

श्री विवेकानन्द मुखोपाध्याय

धुमन्त मानुष येन समुद्रेर शुनिल गर्जन—
बहुदूर शताब्दीर-निपीडित आत्मार वेदना,
लक्ष लक्ष जीवनेर सञ्चित ये विपुल क्रन्दन
तारि साथे अकस्मात् अन्धकारे हलो येन चेना ।
गान्धी दिलेछे ढाक,—सत्याग्रही वाहिरिल पथे—
लाञ्छना वरन करि लाञ्छनारे करिवे के जय ।
आहुति दिवे के आज भारतेर स्वाधीनता व्रते
जेल जरिमाना आर फाँसिकाठ नय किछु नय ।

मानव मुक्तिर दूत हे महात्मा गान्धी महाराज,
तोमार पताका तले भारतेर नया जागरण,
ग्रामे ग्रामे घरे घरे कोटि कोटि मानुषेर मने
नतुन युगेर लागि येन एक अव्यक्त गुञ्जन !

एइ लज्जा, अपमाने, दासत्वेर एइ ये शृङ्खल,
सहेना सहेना आर शताब्दीर शोषण निठुर,
तोमार आह्वाने ताइ प्राण पक्ष हलो ये चञ्चल,
मुक्तिर आलोक बुक्ति रात्रि शेषे, नहे आर दूर ?
सेइ आलोकेर तुमि वात्तावाही तापस महान,
लह तुमि भारतेर प्रेम स्निग्ध अर्घ्य-अवदान ।

ए गांधी संत सुजान

कवि वरेण्य श्री अरदेशर फराम जी खवरदार,

अंधारा ना गढ भदीने आव्युं किरण अणमोल ,
रण नी धगधगती रेती मां फूट्युं अमी भरुणुं रसलोल ;

दश दिश नां लोचन मीचातां ,
जनजननां तनमन धूधवातां ,

भारत नुं उर ग्लानि रह्युं भरतुं त्यां फरी ऊतयो प्रसुबोल ।

लाव्यो कोण परम ए वाण !
ए गांधी संत सुजाण ,
ए गांधी संत सुजाण ,
ए नवभारत नो प्राण !!

जीवतां पण मूएलां खोखां अहीं-तहीं फेरतां भारत-भोम ,
जाणे नहि लेवा दम पुरो, थथरे शीत पडे के घोम ;

ज्यारे माना केश विंखाता ,
सुत भय हिंसा मां भटकाता ,

लडता आता शुं प्रिय आता, त्यारे सांधी धरती व्योम ।

कोणे फूक्या सौमां प्राण !
ए गांधी संत सुजाण !
ए गांधी संत सुजाण !
ए नवभारत नो प्राण !!

हाल्यां चेतन मृत मट्टी मां, फाल्यां जडदये थी फूल ,
हिमढगले थी मडका ऊठ्या, भवकी सोनारज भरधूल ;

पथरनी प्रतिमा त्यां चाली ,
फूटी मूशलमां पण डाली ,

जनजनना मन मां, नव रंगे पाछी ऊगी आश अतूल ;

एवी वर्तीं कोनी आण ?
ए गांधी संत सुजाण ,
ए गांधी संत सुजाण ,
ए नवभारत नो प्राण !!

नहि वीरत्व वसे तरवारे, नहि शूरत्व वसे को बाथ ,
छे वीरत्व खरूं अंतर मां, ए सौ शीख्या साची गाथ ;

मृत्यु विषे नवजीवन लाध्युं ,
जीवन मां नवचेतन साध्युं ,

मरीने जीववानो नव मंत्र मल्यो ऐ कोने पावन हाथ ?

कोणे दीधी ए रसलहाण ?
ए गांधी संत सुजाण !
ए गांधी संत सुजाण !
ए नवभारत नो प्राण !!

सत्य अहिंसा स्नेह तणा मर्मो ज्यां ऊघळ्या तारक पेठ ,
देहबले मानव दिन दिन शिरधारे दुनियानी बधु वेठ ;

कुंदन नो कस अंकावी ने ,
नवनव तावणी मां तावी ने ,

त्यां आ आतम किमियुं देखाडो ने बांध्युं पशुबल मेठ ;

कोणे स्पर्श्या ए ऊंडाण ?—
ए गांधी संत सुजाण ,
ए गांधी संत सुजाण ,
ए नवभारत नो प्राण !!

हरिजन मां हरिजन थई बेठा, सुरजन मां सुरजनना राज ,
क्रोडो केरा हृदय विसामा, लाखोनी लाखेणी लाज ;

जगनां पाप उठाव्यां माथे ,
जग पर ढोल्यां अमृत हाथे ,

अर्थ उघाडा अंगे जीवी ढांक्यो धूजतो दलित-समाज ;

एना जडशे क्यां परिमाण !—

ए गांधी संत सुजाण !

ए गांधी संत सुजाण !

ए नवभारत नो प्राण !!

धीके धगधग जेनुं हैयुं निशदिन मानव बांधव माट ,
पेट भरी मूठी अन्ने जे सूप टूटी फूटी खाट ,

आकाशे तारकशा ऊडे ,
जेना उर-तणखा दुख ऊडे ।

एवो कोन ऊमो जग सामे भारतरत्नक आत्मविराट् ?

कोनो ए अवतार प्रमाण !—

ए गांधी संत सुजाण ,

ए गांधी संत सुजाण ,

ए नवभारत नो प्राण !!

जुग जुग नो ए अम्मर जोगी, जुग जुग नो ए नव अवतार ,
भारत जनना प्रिय बापूजी, रंको ना एकल आधार ;

एनुं कीधुं कोथी थाशे ,

एनुं कीधुं केम गवाशे ?

जुग जुग जीवो पुण्यपराधी, करता सत्यतणो टंकार !

साधो संतत जगकल्याण ,

हो गांधी संत सुजाण ,

हो गांधी संत सुजाण ,

हो पलपलना अम प्राण !!

छेक्को कटोरो

राष्ट्रकवि श्री भवेरचन्द्र मेघाणी

छेक्को कटोरो मेरनो आ, पी जजो बापू !
सागर पीनारा, अंजलि नव ढोलजो बापू !

अणखुट विश्वासे वहुं जीवन तमारूं ,
धूर्तो दगलबाजो थकी पडियुं पनारूं ,
शत्रु तणे खोले ढली सुखथी सुनारूं ;
आ आखरी ओशीकडे शिर सोंपवुं, बापू !
कापे भले गर्दन, रिपु-मन मापवुं बापू !!

सुर असुरना आ नव युगी उदधि-वल्लोणे ,
शी छे गतागम रत्नना कामी जनो ने ?
तुं विना शंभु, कोण पीशे मेर दोंणे ?
हैया लगी गलवा गरल भट जाओ रे बापू !
ओ सौम्य-रौद्र, कराल-कोमल, जाओ रे बापू !!

कहेशे जगत, जोगी तणा शुं जोग खूट्या ?
दरिया गया शोषाई, शुं घन-नीर खूट्यां ?
शुं आम सूरज-चन्द्रमा नां तेल खूट्यां ?
देखी आमारां दुःख नव अटकी जजो बापू !
सहियुं घणुं, सहिशुं वधु नव थडकजो बापू !

चाबुक, जप्ती, दंड, डंडा मारनां ,
जीवतां कब्रस्तान कारागारनां ,
थोडा घणा छुंटाव गोलीबारना ,
ए तो बघां य भरी गयां, कोठे पड्यां बापू !
फूल समां अम हैयां तमे लोढे घड्यां बापू !

शुं थयुं त्यांथी ढीगलुं लावो न लावो ,
बोसा दइशुं, भले खाली हाथ आओ !
रोपशुं तारे कंठ रस बसती भुजाओ !
दुनिया तणे मोथे जरी जई आव जो, बापू !
हमदर्दी ना संदेशडा दई आवजो बापू !

जग मारशे मेंणां, न आब्यो आत्म-ज्ञानी,
 ना ब्यो गुमानीं पोल पोतानी पिछानी,
 जगप्रेमी जोयो, दाज दुनियांनी न जानी !
 आजारं मानव-जात आकुल थई रही बापू !
 तारी तबीबी काज ए तलखी रही बापू !

जा बापू, माता आखला ने नाथवा ने !
 जा विश्वहत्या ऊपरे जल छांटवाने,
 जा सात सागर पार सेतु बांधवाने,
 घनघोर वननी वाटने अजवालतो, बापू !
 विकराल केसरियाल ने पंपालतो बापू !

चाल्यो जजे तुज भोमियो भगवान छे, बापू !
 छेळो कटोरो केर नो पी आवजे, बापू !

फूल फांखडी

श्री ज्योत्स्ना शुक्ल

देवत्व अपीं धूप दीप ना धरं,
 श्रेवं लूखुं पूजन हुं नहीं करं ;
 ने वंदना ओ, जयघोषणा ओ,
 रुचे मने ना कृति-हीण सौ ओ ।
 ना कृष्ण, ईशु कही गर्व पामुं,
 ना कोअीनी तुल्य, अतुल्य मानुं ;
 आ लोही भूख्या धीकता जगे हुं,
 ओ ओकलो मानव ओक भालुं,
 सदैव ओ जाग्रत चेतना मयों,
 प्रकाश शो भारतमां दीपी रह्यो ;
 मेलां जले, पृथ्वीतणा सरोवरे,
 प्रफुल्ल अंबुज समो रमी रह्यो ।
 ना वंदना के जयगर्जनाओ,
 निन्दा, स्तुतिपुष्प, कटु प्रहारो ;
 ओने न स्पर्शें, विचलित ना करे,
 ओ सूर्य शो निर्मल हास्य पाथरे ।

गुजराती

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA १०१
 JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
 LIBRARY.

Jangamwadi Math, VARANASI,

Acc. No. 3300 1502 532

शोणित भीना जगने बचाववा ,
 आ सृष्टिनी पाशवता मिटाववा ;
 ने दैत्यने मानवता शिखाववा ,
 ओ भव्य योगी तप अग्र आदरे !
 विशुद्ध ओ मानवता मने गमे ,
 निर्लेप ओनां तप ओ मने गमे ;
 हुं जोअं, चितुं, अर चेतना भरुं ,
 ओ मानवीने सहसा नमी पडुं ।
 शो चेतनानो वही धोष त्यां रह्यो ,
 ओ धोषमां बिंदुरूपे भडी जअं ;
 ने विश्वना तारणहार गांधीने
 स-क्रियतानी फूल-पांखडी धरुं ।

विश्वकयज्ञ

श्री सुंदरजी गो० वेटाई

रही कचकचावती दशन तीव्र सी ताटका
 अने विकृत-दर्शना अगन रोषनां वीभक्ती
 अहीं तहिं बघे घूमें सकल भान भूली समी ,
 महा फडफडाटथीं धमती वहि हिंसातणी ।
 पिपासा रक्तनी शी आ, लुधा शी हाड़ मांसनी
 द्वेषना वहिनी ज्वाला आम शें विज्ववी रही ?
 छुधर परम मंत्र एक, भइ मातृ-स्वातंत्र्यनो
 ग्रही बलि हथेली मां जीवननों पनोता ऊभा ।
 फुटे शिर, खड़ी पड़े कैक अस्थि, सौंधा टूटे,
 भले शिर, भले भणे शरीर-मिट्टी मिट्टी विशे
 न तोय प्रतिकारवो कदीय धावने घा थकी
 दै अर्पी प्राण, ते परम-प्राण पेटाववो
 डगुमगु शरीर ने विपुल आत्म को मानवी
 ऊभो, भइभड़ी रही, अनल उग्र हिंसा विशे ।

ऊँडी परम सात्विकी सकलस्पर्शिणी दृष्टिथी
 दशे दिश उकेलतो, तिमिर दुर्गने मेदतो,
 क्षणेक्षण निहालतो सतत ज्योति चैतन्यनो
 असंख्य मनुबालने अभय-प्रेरणा अर्पतो ।
 प्रियने, प्राणने, सौने होनी आ विश्वयज्ञ मां
 पामजो विश्वशांति ने साधी आ उग्र साधना ।
 भय पमाइती मायिक भीरुता,
 पणन तोय ऊठ्या भड जंपता ;
 कनककीर्ति विशेष भली श्यामिका,
 अनल उग्र महि परिशोधता ।
 बंध ने मोक्षनो आ तो महाविग्रह वर्ततो ।
 विश्वदेव, महाकाल, आपनो अमी वर्षजो !

नाखुदा

श्री स्नेहरश्मि

वहे वेगे नौका सरल सरती सिंधु उपरे
 तरंगों ने तारा शशियर मीठा गान उचरे,
 रमे, खेले पेलां गमरू बडुको गम्मत करे
 प्रवासी आनन्दें अहीं तहीं फरें तूतय परे ।
 नहीं चिन्ता कोने स्थल समय बाधा नहीं करे
 बधे हैये केवी स्मित लहरियो रम्य विलसे ।
 अरे ! किंतु पेलां क्षितिज परथी बादल धसे
 बनी गांडो अब्धि उलटी सहसा तांडव करे ।
 डुबी ज्योत्स्ना राणी विरमी गयुं ए हास्य उजलुं
 ध्रुजे भीरूँ सर्वे निमिष महीं शुं चित्र पलट्युं ।
 परन्तु पेलो त्याँ तुतक उपरे सौम्य गिरि शो
 ऊभो छे नख्खुदा थिर अडग गम्मीर अटुलो ।
 उषा संध्या एने, दिवस रजनी एक सरलां,
 रह्यो जोई जाणे जग अखिल ए एक ध्रुवमां !

श्री भव्य डोसा

श्री हरिहर प्रा० भट्ट

आज शां भाग्य आ हिन्द सौ जगत नां
विश्व ना सन्त नां वर्ष षष्टि ।
जूज सन्तो तणी तप हुताशे टकी
एटला दिन लगी देह्यष्टि ।

जे. यकी हिन्द-शिर उच्च आलम महीं
जन्म दिन थी वड़ा उत्सव शा !
हिन्द-संकष्ट-हर, वर्ष शत जीव ओ
दीन भारत तणां भव्य डोसा !

आवजो कविवरो, दिव्य गायकगणो,
सौ कलाना कलाकार आवो ।
कैक सैका लगी तम कलाकाज को
ईश विण नहिं मले विषय आवो ।

जेह जीवनकला सौ कला प्रेरती,
ते कला-हीन अम जीवनो शां
जीवन अम प्रेरवा वर्ष शत जीव ओ
सत्य-सौन्दर्य ना भक्त डोसा !

जगत थी दूर निज धर्मजीवन मही
प्रेम-पथ बुद्ध महावीर बोध्यो ।
जगत समुदाय मां, राज्यना कार्य मां,
एह संदेश अधूरो रह्यो तो ।

किन्तु सर्वाङ्ग जीवन विषय तैं करीं
प्रेमना तत्त्व की कार्य-घोषा ।
तत्त्व भीलाववा वर्षशत जीव ओ
प्रेम शाश्वत भया भव्य डोसा !

जगत ने मोकली,ती] महासंस्कृति
 गौतमे बोधितरु छाँय माँथी।
 मोकली,ती] इशए महा संस्कृति
 क्रौंस-अधिरुद निज काय माँथी।

आज सजें तुं भावि महासंस्कृति
 साभ्र-गंगा-तटे विश्वपोषा
 संस्कृति-पूर हजु दर ये लाववा
 वर्षशत जीव ओ विश्व-डोसा !

देहतलयी उँचे, बुद्धितलयी उँचे
 आत्मबल-तल ऊपरे तू फरे छे।
 बुद्धिनी दृष्टि ना क्षितिजनी पेली गम,
 सत्यनूँ क्रान्तदर्शन करे छे।

मुट्ठी-भर अस्थिनी देह तुझ दूबली
 आत्मनां दाखव्याँ ते बलो शौं
 शक्ति भरवा जगे वर्षशत जीव ओ
 दिव्य भारत तणां भव्य डोसा।

सृष्ट्युक्तो यात्री

श्री उमाशंकर जोशी

‘अरे गांधी राजा,’ शब्द अधूरा ए रही गया,
 अने कंपी वाचा कही नव शकी ते नयननी

मूँगी अश्रुवाणी रही टपकी, गाँधी चरणमाँ
 पड़ी ए मूर्ति, ए हजी अण खील्या-बुद्ध-चरणे

अजाणी को जाणे लयी पड़ी सुजाता उरमीनी
 हजी लोही लेखो सृजन इतिहासे नव सूक्या,

नवुं पानुं तेवे लखवुं अमी ओँके शरु कर्ये
 अनेरूँ गाँधीए, गिरमिट थकी हिंदी मजूरों

बचा'वा आफ्रिका महीं लडत सत्याग्रह तणी
लड्या पोते वेठी, हृदय पलटाव्याँ अरितणाँ

नवेला ए युद्धे हृदय-वीर को हिन्द नवीरो
पडेलो, एनी आ तरण विषवा अश्रु वचने

वदे: 'गांधीराजा' ! शिर चरण-धूलि पर सुहे
निसासे दाम्भ्यां, जे चखजलथी भीज्यां चरण, ना !

अरे ! भीज्युं, दाम्भ्युं हृदय ! हजी तो अंबर परे
अभो तो एवां कै शत समरने वीर नर ए

हजी तो पोतामां शत-शत लडाई लडवी छे
लपेटी विश्वोने हजी न प्रकट्यो प्रेम अरुमां

पूरो, तो ये आवी करुण कुरबानी निज कने
थती, तेना साक्षी थवुं ज्यम ! वलोवायुं उर ए

कंअरी एवुं एवुं पल महीं उडुं, वाणी नीतरी ;
'अरे बाअरी ! रो ना ! तुज पति मर्यो ना गणीश तुं ,

गयो मुक्ति काजे सहुतणी, थयो ए अमर छे,
अने गद्गद् कंठे वधु न वदवा दीध कंअरी तो ,

परंतु अठाडी निज कर थकी, ने अमी करी
खमे मायालु ए कर रही गयो, ने अभूभरती

घवाएली आँखों महीं डबक गांधी चख डूब्यां
अने पोतामां ए नयन जल लाव्यां भरी वधां

हती थंभी वाचा, नयन जल थंभ्यां पण तहीं
अचिंतां, गांधीना मुखथी शब्दो कै सरी पडया

अनायासे, 'बाअरी ! तुज सम कंअरी हिन्द-रमणी
यशे स्वामी-हीणी, जननी भूमि त्यारेज छूटशे

अने मारी मोली पण तुज शी ज्यारे थअरी हशे' ॥

त्रिमूर्ति

श्री सुन्दरम्

बुद्ध

घरी आ जन्मे थी प्रणय-रस-दीक्षा तडफतुँ,
हतुं जे संतापे जगत दुखियुँ, क्लिन्न रडतुँ;

लई गोदे भायुँ हृदयरसनी हूँफ मही ने,
वद्या, 'शांति, व्हालां, रुदन नहिं छुट्टी दुखतणी' ।

अने बुट्टी लेवा वन उपवनो खूंदी वलिया,
तपश्चर्या कीधी, गुरुचरण सेव्या, व्यरथ सौ ।

निहाली, आत्मा मां करण सहु संकेली उतर्या,
महायुद्धे जीती विषय लई बुट्टी निकलीया ।

प्रबोध्या धैर्ये ते विरल सुखमंत्रो जगतने,
निवायुँ हिंसाथी कुटिल व्यवहारे सरलता

प्रसारी, सृष्टिना अघउदधि चूस्या मुखथकी,
जगत् आत्मौपम्ये भरती बहवी गंगकरुणा ।

प्रभो ! तारा मंत्रों प्रगट बनता जे युग-युगे,
अहिंसा केरो आ प्रथम प्रगटयों मंत्र जगते,

ईशु

महारौद्रे स्वार्थे जगत गरक्युंतुँ बलतणा,
मदे घेला लोको निरबल दरिद्रो कचडता,

विसारी हैयाथी प्रभु, जगत सर्वस्व गणाता,
प्रति स्थाने स्थाने बस नरक लीली ज प्रगटी ।

अहो, तेवे टाणो वचन वदतो मार्दवतणां,
डुबेलां ने दुःखे सुख मिलन दुखेन कयतो,

द्रिद्रे ऊगाड़ी प्रबल वचने वृद्ध बलनां ,
अमी-कूपी लेई जग पर भूम्यो बाल प्रभुनो ।

डग्यो जुल्मी तख्तो बलमद भर्यो ताजस रक्क्या ,
नमेलो ए आत्मा प्रबल रिपु दुर्दम्य बनियो ,

भभूक्यो क्रोधाग्नि प्रभुविमुखनो भाल भलकी ,
तहीं तैं होमाई जगत दुःखनो होम करियो ।

सरी त्यो जे शांति सरित बलिदाने उभरती ,
कृपास्नाने एना जगत धवतुं शीतल थयूं ।

गांधी

पटे पृथ्वी केरे उदय युग पाम्यो बलतणो ,
भर्यो विद्युत् वायु स्थल जल मुठीमाँ जगजने ,

शिकारो खेल्या त्यो मदभर जनो निर्बलतणां ,
रक्यां त्यो उचेरां जनरुधिररंग्या भवन कै ।

धरा ब्रासी, छाई मलिन दुख छाया जग परे ,
वन्यां गांधी रूपे प्रगट धरतीनां रुदन सौ ।

बहती ए धारा खड्गकरणना कातिल पथे ,
प्रगल्भा अन्ते ये मुदित सरला वाच प्रगटी ।

हणो ना पापीने द्विगुण बनशे पाप जगना ,
लडो पापो सामे अडग दिलना गुप्त बलथी ,

प्रभु साक्षी धारी हृदयभवने, शांति मनडे ,
प्रतिद्वेषी केरू हित चहि लडो पाप मटशे ।

प्रभो, तैं वी बाब्यो जग प्रणयना भूमि उदरे ,
फल्यो आजे वृद्धो मरणपथ शु पाप पलतुं ।

मनमोहन गांधीजी ने

श्री ललित

गांधी ! तूं हो सुकानी रे:

साचो हिन्दवान !

हिन्दनी जिन्दगी अमारी—

अफलाती अस्थिर न्यारी—

तेने जोगवतो नुं हो सुकानी रे:

साचो हिन्दवान !

राज्य प्रजाना हितनुं—

मन्थन देशे छलकातुं—

नवनीत उतारे तूं हो सुकानी रे:

साचो हिन्दवान !

जनताना जग महाराज्ये—

हिन्दीजन तणां स्वराज्ये—

गजवे हिन्दी हाक तूं हो सुकानी रे:

साचो हिन्दवान !

हिन्दी जात ज जन्मावी,

जगमां विख्यात बनावी—

धपावे सत्याग्रहे नुं हो सुकानी रे:

साचो हिन्दवान !

मनमोहन, उदार भावे,

वीरताना प्रसंग लावे,

हिन्दहितकस्तूरी मृग ! तूं हो सुकानी रे:

साचो हिन्दवान !

सुदामापुरना दीपक !

श्रीकृष्णनां जगवे स्मारक:

भारत-नाविक वीर ! तूं हो सुकानी रे:

साचो हिन्दवान !

गांधी ! तुज सुजोड पगले,

हिन्द संतति संचरिये ।

शांति जय प्रभु अप्पें ! तूं हो सुकानी रे:

साचो हिन्दवान !

युग अवतार

श्री मस्तमयूर

भारतनी आरत भरनारा ।
अमोघ चेतनना फूवारा ।
विराटमां निजने वणनारा ।

त्रिशकोटितारक, श्रुतज्योति.

सचेत कर्म कवि तरस धार
मोहन ओ ! नवयुग अवतार !

आप प्रताप अमाप अरुण सम,
प्रलयपति, तम गतिं अति दुर्दम,
नीलकण्ठ, पीधु विष विषम
सावजशूरजनोना संगी,

नवल हिन्दना सरजनहार !
मोहन ओ ! नवयुग अवतार !

अर्पण

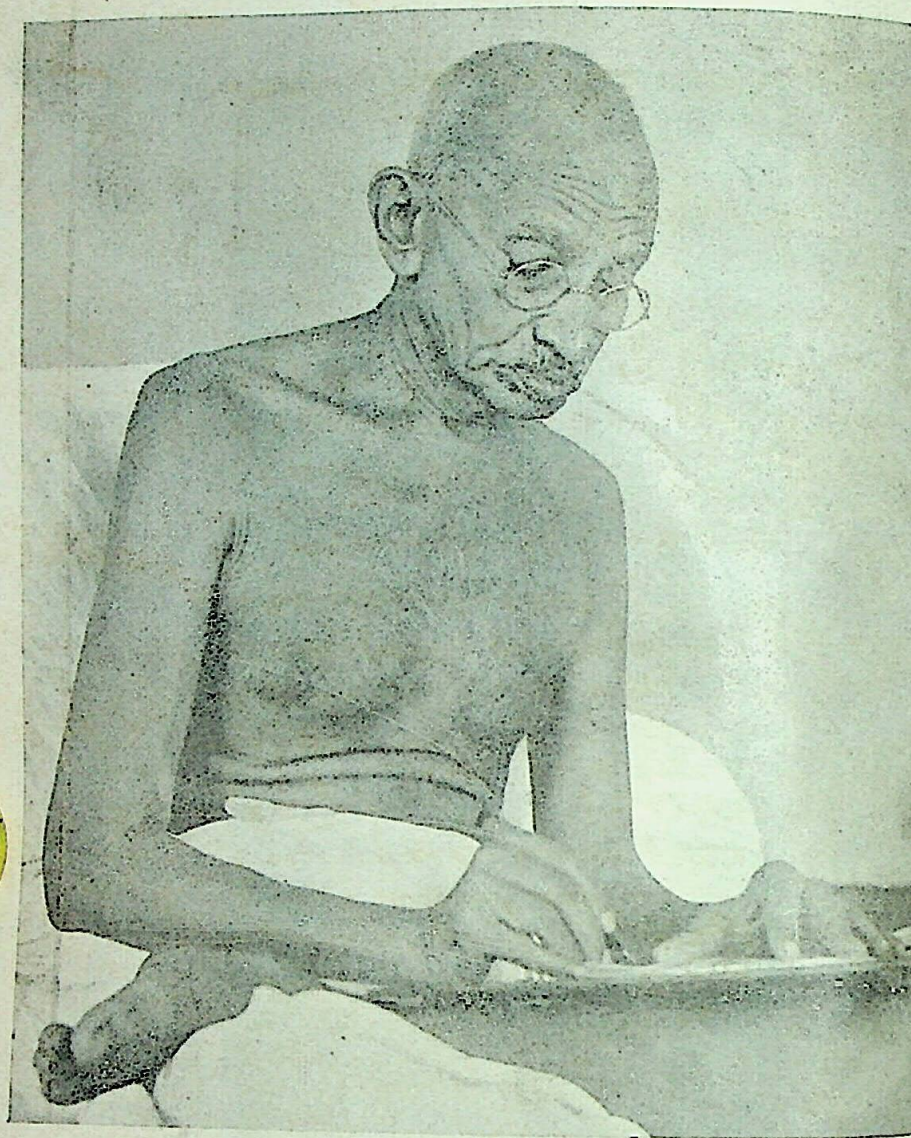
श्री कोलक

प्रदीप्त अतिस्त्रोतथी प्रगटी गांधी बापु तमे
जगावी उर उरमां धगश पूर्ण स्वातंत्र्यनी
पडया रण-पथे, महोर्ध्व ध्वज मुक्ति-संग्रामनो
सगर्व फरकन्त राखी, चिर मुक्ति ने पामवा
पिता । युग कलंक हिंदु धरमे समूलुं तमे
फिराड्युं प्रीति भक्ति थी दलित मेदने टालतां ।
प्रबुद्ध तम आत्मनां तप चिरंजीवी भूलशे
मनुष्य-इतिहासमां युग प्रवती रे'शे नवो ।
निरन्तर अनंत काल धुधवी रहेशे, अने—
समौन पृथ्वी नमी नमन कोटि देशे तने ।
पिता ! पण नमुंय हुं स्मरण-दीपना ओजसे
धरी हृदय मर्मथी तम पदे कविता कली ।



राष्ट्रमाता

कस्तूर बा



महात्माजी का सबसे अभिनव चित्र

श्री कनु गांधी के सौजन्य से

वाटलें नाथ हो !

कविवर्य श्री भास्कर रामचंद्र तांबे

वाटलें नाथ हो तुम्ही उतरतां खाली ,
दे असहकारिता हाक तुम्हां ज्या काली !

हंबरडा फोडी आर्त महात्मा जेव्हा
आघात झेलिले घोर उरावर तेव्हा ,
त्या यज्ञें द्रजुनी गमे धावलां देवा ,
रोकिली आर्त किकाली !

वाटलें उघडिलीं द्वारे तीं स्वर्गाचीं ,
वाटलें धावली माउलि ती गरिबांची ,
वाटलें पलालीं सकल संकटें साचीं ,
गरिबांचा आला वाली !

घेतली धाव हो तुम्ही द्रौपदीसाठी ,
गरिबांस्तव धरिली तुम्ही कांबली-काठी ,
गुरगुरला, होउनि पशुहि गांजल्यापाठी ,
ती वेल वाटलें आली !

परि हाय ! कोणतें पाप आडवें आलें !
हा कपाल फुटलें, संचित तें ओडवलें !
परतली माउली, स्वार्थाने अडवीलें ,
आशेची माती झाली !

हा दुष्णावला हो घोर अता अंधार
ह्या दिशा करिति हो भयाण हाहाकार !
जखडिती पाश हो अता अधिक अनिवार ,
हा हाय गति कशी झाली !

महात्मा काय करिल एकला ?

कविवर्य 'माधव ज्यूलियन' (डा० मा० त्रि० पटवर्धन)

जिकडे तिकडे देशभक्त हे आणि पुढारी किती !
युक्तिने महात्म्यास जिकिती
पैका, पदवी, राजमान्यता यांना मुकल्यावर
थोर ये देशभक्तिला भर
मानपत्र, मिरवणूक, टाळया, नावाचा घोष तो
पुढारी या वरती पोसतो
या कुटिलगतींचा द्विजवृद्धता सद्गुण
ठेविती तृणतलीं विस्तव विस्तारुन,
मग अजाण दीनावर संकट दारुण !
आटयापाटया विवेकासिवें खेले यांची कला—
महात्मा काय करिल एकला ?

प्रिय एकहि नच तत्त्व जीवही द्यावा ज्या कारणें,
नित्य परि पडती शार्ब्दिक रणें ;
मर्द थिती सम्पमर्द-मताला म्हणुनि सनातन किती
गताचे देव्हारे मांडिती !
तत्त्व मान्य, तपशील न माने म्हणती हे धोरणी ;
नको तप-शील राजकारणीं
सौराज्यशत्रु हें स्वराज्येच्छु फाकडे
हे लोकसंग्रही समतेशी वाकडे,
हे स्वार्थापुरते बघती धर्माकडे,
काकच धरच्या म्हातारीचा शूरवीर येथला—
महात्मा काय करिल एकला ?

व्यक्तीचे महात्म्य घालवी असा नियम कां हवा
कुणाला लोकवटीं ? वाहवा !
नीतिकटाक्षहि फक्त लैङ्गिक क्षेत्रापुरता असे,
धर्मही मेघ शोधित बसे
भिन्न मतांच्या स्वकीयांस या स्वतंत्रता कासया
हवी ती जैसी परक्यांस या ?
विद्यार्थिदशेमधिं जहाल जे ते किती !

तोंडातुनि कुळुपी गोके जे फेकिती,
होऊनि थंड मग राज्यदास्य सेविती,
स्वस्थ होउनी शिकोप्यास परि म्हणति 'देश पेटला !'
महात्मा काय करिल एकला !

घेउनि सत्यप्रीति अहिंसा यांचा भोंडा करी
संचरे गांधी देशवरी,
खादी पटका, त्यावर चरका; अर्घा उघडा गडी
तोंड दे जुलुमाला हरषडी
सान थोर रंजले गांजसे यांना हृदयीं घरी
योग हा अनासक्तिचा वरी
हा क्रांति कराया भट्टे राज्यघोरणीं
हा पुढें सरे की प्रथम मी पडो रणीं
हा हिरा न फुटणें, हाणा घण रोरणीं !
भूतदयेचा सागर अथवा म्हणा दिसे चेवला,
महात्मा काय करिल एकला !

न लगे शिष्यप्रपंच, होणें गुरु वा पैगंबर,
मानवी किती थोर अंतर !
धर्मवेड काधें मनास न शिवे, धन्य खरा वैष्णव,
वाढवी सत्यान्वें वैभव;
कृपण म्याड ती क्रियाशून्यता तो न अहिंसा गणी,
पाहिजे धैर्य आणि लागणी
उद्योगी भिन्न, शेतकरी, विणकर,
दुबलयांचा प्रतिनिधि, कैवारी, चाकर,
दे बलाढ्य साम्राज्याशीही टक्कर,
राज्यमान्यता, लोकमान्यता यांस न भाले भला—
महात्मा काय करिल एकला !

कट्ट पथ्यकर सत्य बोलतां भीति न ज्या वाटते,
अंतरी प्रीति गाढ दाटते,
राजनीतिचा रामबाण हा शिकवी—सत्याग्रह—
नवीनच परन्तु न भयावह
परि अनुयायी तोंड देखले म्याड बोलघेवडे—
संकट ओढविती केवढें !

हे प्रगतिद्रोही फंडगुंड मातले,
हे पोटपुजारी, गुलाम वंशातले,
भद्दालु यांडुनि अशिक्षितच चांगले !
हुल्लडहौशी मित्र दाविती अत्यचारें गला —
महात्मा काय करिल एकला !

महात्मा जीस

श्री साने गुरुजी

विश्वाला दिवला तुम्हीच भगवन् संदेश मोठा नवा ,
ज्यानें जीवन सौख्यपूर्ण करणें साधेल या मानवा ,
तें वैराग्य किती ! क्षमा किती ! तपश्चर्या किती ! थोरवी ,
केशी एकमुखें स्तवूं ! मिखतां भास्वान् जसा तो रवी ।

आशां तुम्हि अम्हां सदभ्युदयही तुम्हीच आधार हो ,
तें चारित्र्य सुदिव्य पाहुनि अम्हां कर्तव्य संस्फूर्ति हो ,
तुम्हीं भूषण भारता, तुमच्या सत्कीर्तिचीं भूषणें,
हैं त्रैलोक्य धरील, धन्य तुमचें लोकार्तिहारी जिणें ।

बुद्धाचे अवतार आज गमतां, येशूच किंवा नवे ,
प्रेमांमोधि तुम्ही, भवद्यश मला देवा ! न तें वानवे ,
इच्छा एक मनीं सदा मम, भवत्पादांबुजा चितणें ,
त्यानें उन्नति अल्प होइल अशी आशा मनी राखणें ।

गीतामाफि तुम्ही श्रुतिस्मृति तुम्ही तुम्हीच सत्संस्कृति ,
त्यांचा अर्थ मला विशंक शिकवी ती आपुली सत्कृती ,
पुण्याई तुम्हि मूर्त आज दिसतां या भारताची शुभ ;
घावे दिव्य म्हणून आज भुवनीं या भूमिचा सौरम ।

तुम्ही दीपच भारता अविचल, प्रबुध या सागरी,
भद्रा निर्मितसां तुम्हीच अमुच्या निर्जीव या अंतरी,
तुम्ही जीवन देतसां नव तसा उत्साह आम्हां मृतां,
राष्ट्रा जागविलें तुम्ही प्रभु खरें पाजूनियां अमृता ।

तुम्ही दृष्टि दिली, तुम्ही पथ दिला, आशाहि तुम्ही दिली,
राष्ट्रा तेजकला तुम्ही चढविली मार्गीं प्रजा लाविली,
त्या मार्गे जरि राष्ट्र संतत उभें सज्जद हें जाइल,
भाग्याला मिलवील, भव्य विमल स्वातंत्र्य संपादिल ।

विभ्रांति क्षण ना तुम्ही जलतसां सूर्यापरी संतत,
आम्हांला जगवावया शिजवितां हाडें, सदा राबत,
सारें जीवन होमकुंड तुमचें तें पेटललें सदा,
चिंता एक तुम्हां कशी परिहूरुं ही घोर दीनापदा ।

होली पेटलिसे दिसे हृदयिं ती त्या आपुल्या कोमल,
देऊं पोटमरी कसा कवल मदबंधूंस या निर्मल,
ह्याची एक अहर्निश प्रभु तुम्हां ती घोर चिंता असे,
चिंताचिंतन नित्य नूतन असे उद्योग दावीतसे ।

कमें नित्य भवत्करीं विविध तीं होती सहस्रावधीं,
ती शांति स्मित तें न लोपत नसे आसक्ति चित्तामयीं,
शेधीं शांत हरी तसेच दिसतां तुम्ही पसाज्यांत या,
सिधु जुळव वरी न शांति परि ती आंतील जाई लया ।

गामा-यांत जिवाशिवाजवल तें संगीत चाले सदा,
वीणा वाजतसे अखंड हृदयीं तो थांबतो ना कदा,
भोंपे पार्थ तरी गुरूच मजन श्रीकृष्ण श्रीकृष्णसैं,
देवाचां तुमचा वियोग न कदा तो रोमरोमीं वसे ।

वणूं मी किति काय मूल जणूं मी वेडावते मन्मती,
पायांना प्रणति प्रभो भरति हें डोलयांत अश्रू किति,
ज्या या भारति आपुल्यापरिःमहा होती विभूती, तया,
आहे उज्ज्वल तो भविष्य, दिसते विश्वभराची दया ।

अद्भुत रण-संग्राम

श्री आनंदराव कृष्णाजी टेकाडे

हा प्राण हिन्दभूमीचा
जयघोष स्वातंत्र्याचा
मुखि करित चालला साचा
स्वातंत्र्य-दुर्ग ध्यावया, मुक्त व्हावया
बंधनामधुनी, जो गलां फांस, चहुंकडुनी ।

जणुं सुदाम-यष्टी ज्याची
परि मूर्ति भानु-तेजाची
तशि पूर्ण चंद्र शांतीची
शोमतो हिन्द-राउलीं, कृष्ण गोकुलीं
श्यामवर्णाचा, हा पुतला स्वातंत्र्याचा ।

स्वतंत्र्य-समर जे झाले
आजवरी कीं घडलेले
इतिहास-पुराणीं लिहिलें
खड्गांचा खणखणाट, बाहती पाट
तस रुधिराचे, पण रण हें बहु नवलाचें ।

कौटिल्य रोमरोमांत
शस्त्रास्त्रे तीक्ष्ण अनंत
करिं सत्ता दृढ बलवंत
हा असा शत्रु सामोर तसा चौफेर
सागरावाणी हा तेथें. टिटवीवाणी ।

स्वार्थाग्रिणि जगतीं तेंवी
तामसी वृत्ति निर्दयी
पत्थरही लाजे हृदयीं
रिपु मदांध पुढतीं असा पाहिना कसा
पापपुण्यातें हा फकीर केवल तेथें ।

ह्य शत्रू-राहुच्यापाशीं
सांपडुनी भारत-शशी

सर्वथा दीन, परवशी
जो पूर्वी लक्ष्मीधर अस्थिपंजर
आजला उरला बघवे न तथा हें डोलां ।

कसलें न शस्त्र त्याजवलीं
दुती नर्म ठावें मुली
समभाव चित्तमंडली
आत्म्याचें बल एकलें हृदयिं पूजिलें.
वर्धिलें ज्यास सत्याची धरुनी कांस ।

दीनांचा जो सेवक
धर्मांला जो धारक
जो पारतंत्र्य-भंजक
तो आत्म-बला घेउनी निघाला रणों
धैर्य मेरुचें मुखिं हास्य बालसूर्याचें ।

वट विशाल एकीकडे
तृण दुर्बल दुसरीकडे
रिपु असले दोन्हीकडे
क्रोधाग्नि एक वर्षतो दुजा फेंकितो
प्रेम-लहरींस जणुं मृदुल सुमन मानस ।

नृप गाधिजाची राजेता
ऋषि वशिष्ठाची सत्वता
मधि कामधेनु भूमाता
ही कथा पुराणीं किती तीच भारती
दिसे अजि जगता जय कुणा !—काल ठरविता ।

‘पारतंत्र्य-नरकामधुन
निज राष्ट्र मुक्त करीन
नातरी मृत्यु कवलीन’
ही अमर प्रतिज्ञा करुनि जाइ तो रणी
वेइ शेवटचें दर्शन निज प्रिय कुटिराचें ।

ठाकली द्वारिं रणमूर्ति
तिथें भारत-भागीरथी
द्यावया निरोपाप्रति

सारखा चालुनी गजर घुमवि अंबर
लोकगंगेचा साधूचा, स्वातंत्र्याचा ।

कुणि फुलें शिरी उधळिती
कुणि प्रेमें आर्लिगिती
कुणि पदांबुजा बंदिती
कुणि ललना ओवाळिती तिलक लाविती
कुंकुमी भाली जो सुभग सुमंगल काली ।

हो दुमंग जन-सागर
पथ घरी घोर गंभीर
अनुचरांसधें तो वीर
तो दुःखमुखाच्या लहरि उडुनि सागरी
मेढती गगना हालविलें साऱ्या सुवना ।

हृदयीच्या आनंदाची
प्रेमाची भक्तिरसाची
नयनि हो गर्दि अश्रूंची
जलधारा ज्या वर्षती त्यांची सती
निकटिची सरिता वाटलें तेथवा चित्ता ।

इतक्यांत रवी उगवला
तोंच ये दृश्य हें डोलां
आश्चर्य वाटलें त्याला
शतकानुशतक जाहले नाहिं देखिलें
अशा चित्राला जो अवर्ण्य सुखसोहलां ।

मथुरेस गोकुलामधुनी
अक्रुरासवें वज्रमणी
मर्दिण्या निघे खलमणी
तदुपरी दृश्य हृदयिचें पाहि सुवनिचें
आजचें असलें म्हणुनि त्या नवल वाटलें ।

सन्मनें हर्ष पावुनी
करछत्र शुभद निज तरणी
त्या मक्त-शिरावरि धरुनी
'हा अद्भुत रण-संग्राम होउ सुख-धाम
हिन्द भाग्याचें !' दे आशिर्वच द्विज-वाचें ।

बंडवाला

श्री नारायण केशव बेहेरे

हा नवा बंडवाला । पुढें आला ।
पाऊल जगाचे पडे यामुलें, तारक हा भाला ।

अंधार पसरला स्वैर,
देशांत माजलें वैर !
तो वाद फेर-नाफेर
की नष्ट करी हा एक कटाक्ष, बंडखोर आला
पाऊल जगाचें पुढें यामुलें तारक हा भाला ।

धर्मावर भाली स्वार
रुढि पिशाची अनिवार
माजलासे अनाचार
आचार दाखवी खराखुरा हा, बंडखोर आला
पाऊल जगाचें पुढें यामुलें, तारक हा भाला ।

अस्पृश्य दूरचे ठरले
यवनही शत्रुसे गमले
परि इंग्रज हृदयीं घरले !—
पटविला मनाचा हास जनाला, बंडखोर आला
पाऊल जगाचें यामुलें तारक हा भाला ।

सत्यावर चढलें कीट
पसरला दंभ मोकाट
देशभक्ति हो वेळूट
पेटवी जागती ज्योत सत्यता । बंडखोर आला
पाऊल जगाचें पुढें यामुलें तारक हा भाला ।

जाहली स्वभाषा जेर
इंग्रजी चालवी जोर
काढितसे घरची केर
धंदें मातृभाषेस तुष्टवी, बंडखोर आला
पाऊल जगाचें पुढें यामुलें तारक हा भाला ।

दारिद्र्य लागलें भालीं
 पोटाची पेटे होली
 देशास दीनता आली
 उदार-मार्ग दाखवी जनाला, बंडखोर आला
 पाऊल जगाचें पुढें यामुलें तारक हा झाला ।

दास्यत्व कपाली जडलें
 स्वातंत्र्य लयाला गेलें
 काहीं न कुणाचें चालें !
 स्वर्गास सुतानें मार्ग दाखवी, बंडखोर आला
 पाऊल जगाचें पुढें यामुलें तारक हा झाला ।

हा सुधारकी आगरकर
 हा भाषेचा चिपळूणकर
 स्वातंत्र्य-टिलक हा नरवर
 हा बंड यशस्वी करी जगभरी, बंडखोर आला
 पाऊल जगाचें पुढें यामुलें तारक हा झाला ।

महात्मन् !

श्री विष्णु भिकाजी कोलते, पम्० प०, पल् पल्० वी०

महात्मन् ! तुझे नाम येता मुलीं उमे मूर्त पावित्र्य राहे मनी !
 गले दंभ सारा नुरे भानही मुके भाव जातात हेलावुनी !

मुखोर्मी मनामाजि येती किती उभी राहती आसवे लोचनी !
 तुम्ही विश्वप्रीती त्रिलोकांतरी जणूं वाहते शुद्ध मंदाकिनी !

तुम्हा स्वार्थ संन्यास आलोकुनी हरिश्चंद्र जाईल ओशलुनी !
 असो शत्रु वा मित्र सर्वासही गमे हर्ष त्वन्नाम-संकीर्तनी !

जर्गी घन्य केली तुवा आर्यभू तिच्या कंठिचा दिव्य तू तन्मयी !
 तुम्हे वंद्य चारित्र्य देवो अम्हासदा स्फूर्ति स्वातंत्र्य-संपादनी !

महात्मा गांधी

श्री प्रभाकर दिवाण

हा फाकडा फकीर । चालला नाही काही फिकीर ।

पार्यी साध्यासुध्या वाहणा ,

जाड कांबलें शीतवारणा ,

टक्कलवाला महा शाहणा ,

निःशस्त्राचा वीर ।

देहा वरतीं मुली न मांस ,

अडका नाही खर्चायास ,

विद्वतेचा ज्वल न पास ,

परीं असे खंबीर ।

ऐश्या मिकारळ्याच्या मागे ,

चालिस कोटि जनता लागे ,

बादशहाही मिउनी वागे ,

नमती मत्त अमीर ।

स्वातंत्र्याचा पाइक निघडा ,

गरिबांचा कैवारी उघडा ,

सत्याचा मूर्तिमंत पुतला ,

घेवून हाती शीर ।

सत्ताप्रमत्त बोजड घेंडें ,

आसामांतिल जैसे गेंडे ,

तोडुन टाकुन आपुले शेंडें ,

बनती ज्याचे कीर ।

खेडेगांवांत पिकेटिंग

श्री अन्नात

चला समद्याजनी घरहरसिनी गं घालवून देऊं ।

गांधी बाबा आला

तुम्हा सांगून गेला

“घालवा दारूडं” घालवून पाहू । चला०

पोराबिरा दुष्काल

बाटलीचा सुकाल

गुराढोरास इकून देऊं । चला०

आई बाप न्हाई

सासु सासरा काई

बायको दिली न ध्यानात राहू । चला०

असली कसली दारू

चला दुकान घेरू

गांधी बा बा चा जय जय बोलू । चला०

तो फहा महात्मा आला

श्री विठ्ठलराव घाटे

[आसमांतील चहांच्या मलयांतील एक करुण कहाणी ! महात्माजींचे नांव ऐकून जीं कुली स्त्री-पुरुषें आपले काम टाकून भयंकर जंगलांतून मार्ग काढून चांदपुरास येऊन पोचलीं, त्यांच्यांत खालील गीत गाणार्या अनाथ लेकर बाचया वट्टिचा समावेश केला आहे ।]

कां उगा विलगसी राजा ? स्तनिं दूध कुठोनी यावे ?

चार दिवस भाले पुरते भाकरिचें नांव न ठावें ,

चीत्कार मत्त हत्तीचे कानावर यावे जावे

चाललो परी नेटानें कीं गांधीजींस पहावें

घेउनी नांव गांधीचें ,
सेबिले कंद रानीचे
प्यालों पाणी ओढ्याचें ,

आसाम पालथा केला, तो पहा महात्मा आला !
तो मला चहाचा कसला, तो नरक याच लोकीचा ,
देतात गरिब गरिबांच्या जाव जेथ बा ! पापाचा ,
काला वा गोरा असला मेद भाव तेथें कसचा ,
श्वनलोभें आत्मा काला बाला भाला दोषांचा

धनिकांनी सुख भोगावे ,
गरिबांनी कष्टी व्हावे ,
हे कसें बरे चालावे ,

तो काल बदलला गेला तो पहा महात्मा आला !
गरिबांची मूक तपस्या वाढली, नमाला भिडली ,
जुलुमाचे आसन हललें इंद्राची मांडी चलली ,
गरिबांची उष्टीं बोरे देवाला ज्या प्रिय भालीं ,
तो करुणासागर द्रवला ही यशमूर्ति अवतरली !

डामडौल नाहीं बा रे !
खादीचे कपडे सारे
नच वहाणही पायीं रे

गरिबांचा राजा असला तो पहा महात्मा आला
त्या कृश खाद्यावर भार तेतीस कोटि दुःखांचा !
त्या निश्चल निष्ठुर नेत्री धोर आपल्या अज्ञाचा
मानेवर डोंगर थोर हिंदूच्या गतपापांचा !
हासरा परी तो अवर हासवी द्वेष दैन्यांचा

त्या विशाल हृदयपाशीं ,
आसरा गांजलेल्याशीं
भुलु, महार वा मांगाशीं

त्या आणण्यास चल बाला ! तो पहा महात्मा आला !

हे विश्वमानव !

श्री ना० ग० जोशी

प्रकृतीच्या जुब्ब सागरांतरीं, शेषशय्येवरी
योगनारायण योगनिद्रेमध्यें तल्लीन होतां
नाभिविवर्ती उमललेल्या,
कांचनगंगा शैलावरल्या संध्येप्रमाणें रंगीं रंगल्या,
अनंतदल कमलावरी
तुझा झाला कैवी प्रथम उद्भव
हे विश्वमानव !

चैतन्याचे चार सजीव अणु—
असंख्य सूक्ष्मसे चेतनकोश—
एकातून दोन, दोहोंतून चार, बहुत्व पावले,
“एकोऽहं बहु स्यां, प्रजायेय” —
उत्कट झाली अनंत अणुस सृजन-इच्छा,
एकातून द्वैत निर्माण झालें—
त्यांतून तुझें विकासले द्वन्द्व गूढ अपूर्व,
हे विश्वमानव !

ज्ञानमय नी / विज्ञानमय,
सत्-चित्-आनंदमय,
आदिकारण परमब्रह्म,
विश्वसर्जनाच्या उन्मादामध्यें बेहोष होतां
कल्पनाकंपाच्या लहरीमधून एक तरंग अवकाशांत तरंगला—
अब्ज सूर्याच्या कीं ब्रह्मांडव्यापी स्वयंसंचारांत
इन्द्रगतीतून निखललेला,
परागतीतून स्वयंगतीमध्ये येऊन ठेला,
विश्वाकर्षणांचा कोणी सूक्ष्म अंश-अगम्य, अनन्त
वातावरणांत गरगरला,
इन्द्रीयविहीन सजीव अणुंत मिलून गेल,
अन् झाला तेथें “संज्ञेचा” प्रभव,
हे विश्वमानव !

सूक्ष्म बीजांतून
दण्डकारण्यांत कबीरवड भव्य जन्मले,
आमाभोनेच्या विस्तीर्ण खोऱ्यात देवदारवृक्ष विस्तार पावले,

काँगो दरीमधें दुर्गम भयाण जंगल गुंतले;—
 तेंवी संशेचा रेशीमकोश
 तरल, तलम, विकासमान
 अंगम्य तंतूनीं गुंतगुंतला,
 असंख्य युगांच्या परिवर्तनांत पूर्ण जाहला,
 जनावरामधें वानर तेथून नरयोनींमध्ये विकास पावला—
 जीवनसंज्ञा-समूहमति-सामर्थ्यकल्पना
 ऐशा गतींतून प्रगत जाहलें, श्रेष्ठत्व पावलें;
 विवेकरूपी तूम्हेच गौरव
 हे विश्वमानव !
 पर्वत-पहाडीं धातू अन् पत्थर,
 भीषण अरण्यां जीव-जनावर,
 बर्फाल वेटांत मत्स्य नी आस्वल
 यांच्याच सांगातीं विकासे नटला तव संजालव
 हे विश्वमानव !
 बुडबुड्यांत ध्रुव-उषेचीं पदमें उमलावीं आणि कोमेजावीं ;
 वालूच्या कणांत नन्दनवने बहरे खुलावीं आणि करपावीं ,
 चकमकोतून ठिणगी पडतां सूर्यमाला तेथे प्रज्वलवी नी विरून जावी
 तैशा मिसर, मय, असुर, रोम, यवन,
 पर्शु, सिंधु, जावा, द्रविड, चीन,
 स्थलो-स्थलींच्या संस्कृति जन्मल्या, विनष्ट झाल्या !
 अपार अंबरीं निर्वात जागेंत
 स्वैर उल्का-ग्रह अज्ञातपणें भ्रमण करीती,
 त्यांतलि काही क्षण दिखावे नि अदृश्य व्हावे
 तैशा फुरारल्या जीवसागरीं विस्मयकारी तरंगरेखा,
 तीरास येऊन स्थिरावल्या आणि फिरून मूलांत विलीन झाल्या
 संस्कृति चक्राच्या वर्तुलगतींत
 अनेक आले प्रलयकाल,
 सुमेरु-मंदार बुडून गेले
 आन्डीज-आल्प्स नी हिमालय हो धाकुटे झाले, लोपून गेले;
 त्यांच्या शिखरीं-उंच खांबाला,
 बांधिली नौका
 मनुमुनीने-पण्य नोआने !
 प्रलयसागर ऊसलून येतां महापूर घोर विश्वांत पसरे
 तयांत सारे हे उंच शैलही कंप पावले, लहाले बनले,

त्यांतही टिकून, तगून राहून,
पुन्हां तूं निर्मिलें आपुलें वैभव
हे विश्वमानव !

निसर्ग शक्तीशीं दुर्धरसंग्राम
अन्योन्य कलहीं स्वार्थी कालक्रम,
व्यक्ती तरीही जीवनासाठीं चालवी सारखा संगर सूद्धम,
आणि शेवटी असीम तृष्णा भयानक करी संहारकांड
तेव्हां कुठेंसा मोक्षमंत्राचा आयकूं येई अस्फुटरव
हे विश्वमानव !

जह् सृष्टीमध्ये उपजे चेतन,
चेतनामधून मानवपण ,
माणूसपणाला देवगण थोर आणायसाठीं
कुणी सोशीती

जीवनविकासी टाकीचे धाव
ऐके कोण परी ! उसंत कोणास !
पंचभूतांचे तांडव चालतां हिमाद्रिदरींत
बिजली चमके पिवली-नीली, कडाड करी मेघांच्या उदरीं,
तयावेली जरी गुहेतून कोणी आदेश करी योगीन्द्र-देव
काय त्या वाणीचा तेथे ना प्रभाव
हे विश्वमानव !

पंचभौतिक वासना नाचती उद्यब्धानागड्या बेहोष होवोनी,
तयानां भांकाया विखीली ओढणी
सुंदर, मोहक, तलम धाटणी
मानव्याच्या अन् लोकशाहीच्या मोठामोठाल्या गोड वल्गनांची !
नजरबंदी त्यांची विषारी
भांकून भांकेल केवी नाशकारी—?
परंतु नाही विवेकाची आतां उरली जाणीव
हे विश्वमानव !

असंख्य युगींचा चक्रनेमिक्रम
भिरभिर फेऱ्या अशाच करील
प्रलय पुन्हा नवसंस्कृतीना ग्रासून टाकील
परंतु शेवटीं संशयाशक्तीचे आत्मज्योतीशीं होईल मीलन
तेव्हांच मूलचे एकत्व तूझे दीसेल जगतीं पुन्हां अभिनव
हे विश्वमानव !

मार्क्स व गांधी

श्री प्रभाकर माचवे

दाढीचें जंगल, भयंकर तोंडाचा, यहुदी तो मासला
खादीच्या पंच्यात गुंडाललेला हा हाडांचा सांपला !

रक्तप्रिय एक, दुजा वैष्णव अहिंसामक्त,
फक्त वेष-देशांतर, नाहीतर कोणाला

म्हणू जास्त मी सशक्त ?
दोघेही सारखेच जगता विटलेले
दोघेही सारखेच जगता चिकटलेले
मला तरी दोघेही सारखेच पटलेले

एक अश्रुपूजक, तर दुसऱ्याचा अश्रुद्वेष,
दोघांना एक वेड, दोघांना प्यार देश !

दोघांचा एक दोषः श्रम आणि आश्रम या वल्पित्या देवता,
दोघेही पडलेत रणभूत सत्यशोध करतांना चैतन्य-ज्योत

नित्य तेवतां !

दोघेही अद्वितीय, दोघेही एकटेच,
दोघेही अर्धसत्य, दोघांना लागे ठेच !

दोघांना एक पेंच—
मानवमानवगत हें वैषम्य होईल कैचे दूर
एक म्हणे 'क्रोध नको' दुसरा—तो तर 'जरूर',

'क्रूरपणा व्यर्थ कां करा सबूर',
'रणतूर्य वाजले ते, थांबणार कसे शूर !'

एक संत, सेनानी दुसरा, दोघे थकले चकले पुरे .
जगगोल तैसाच फिरत राहिला नकले कैसा अरे !

आजच्या जगांत अम्हां
 दोन्ही अपुरे अगदीं
 आजच्या जगांत अम्हां सत्य पाहिजे नगदीं .
 ते प्रयोगशालेंतील सत्य नको,
 पाहिजे तर खण् खण् खण

वाजेल नाण्यांच्या-शस्त्रांच्या-वेढ्यांच्या तालावर
 माजेल जेव्हां रण;
 आणि अरुण रक्ताच्या तरुणांचे
 तांडे त्या वेढ्यांच्या
 नादांत जातील संरक्षण
 करण्या निज जन्मजात हक्कांचे
 जन्मजात आकर्षण !
 होईल मग वर्षण
 आणि जी उठेल् ठिणगी

त्यांत शेंकडों असले मार्क्स अन् गांधींचे अनुयायी होतील भंस्मसात्,
 जग फिनिक्स पक्ष्यासम ज्वालापूत होईल्, अहा !

सांगावे कुणी ते भविष्य निश्चये-करुनी
 तुका म्हणे 'पहा, पहा'
 होईल जे कांहीं ? (जगुनी कीं मरुनी ?)

गांधी-अभिनंदन

डा० माधव गोपाल देखमुख, एम्० ए०, पी-एच्० डी०

बहु शीघ्र वीली कायाः लोकां लावीयली माया ।
 बीजफल देखावया, हो चिरायु, गांधीराया !

येश-बुद्धां भाग्य न हें, कोण जीवन्मुक्ति पाहे !
 याच देहीं याच डोला, भोगीं कीर्तीचा सोहला !

करूं देव कृपा थोर, येजं दिन वारंवार ।
 हाच भक्ति भाव मोला, अर्पितो मराठमोला !

युगावतार

श्री लक्ष्मीकान्त महापात्र

दुष्कृत विनाश सन्धजन परित्राण,
कारणे धरारे अवतरि महाप्राण ।
स्वर्गर वारता घेनि आहे देवदुत,
पुण्य भूमि भारतकु करि अछ पूत ।

धर्म संस्थापन पाई युगे युगे यहि,
अवतरि अशी शक्ति उश्वासइ मही ।
सव्यसाची ! करिअछ स्तम्भित जगत,
लभिछ तपस्याबले अस्त्र पाशुपत ।

अजेय “अहिंसा” बाण—महाशक्ति धरि,
करे शत्रु संमोहन कल्याण बितरि ।
भारतर येते दुःख येतेक वेदना,
येतेक आकांक्षा, आशा, कर्म ओ साधना ।

येते भूत, भविष्यत, येतेक अतीत,
उल होइ तूम्भठारे हेला रुपायित ।
‘बिपद’ पारिनि करि चित्तकु बिकल,
‘भीति’ हरि नाहि तब हृदयर बल ।

छुईनि “कल्पना” सीमा केबेहें “हताशा”,
नुहेंकि व्यर्थता, भीरु, कापुरुष भाषा ।
जाणिछ निःसंग कर्म नाहिं पराजय,
रखिछ ईश्वर जेणु जीबन्त प्रत्यय ।

हे मोहन कि मोहन मन्त्र देइ चालि,
भारतर बचेदेल अग्निशिला ज्वालि ।
जगाइल कोटि कोटि प्राणे उद्दिपना,
खेलिगला सारा देशे तत्त उन्मादना ।

तुम्हारी साधना फले आहे भगिरथ,
प्रेम मन्दाकिनी धारा प्लाविला भारत ।
हिमाचल कुमारीका अखंड मण्डले,
महा मुक्ति मन्त्र कम्पि उठिल उच्छले,

विन्ध्यगिरि शृंगे तार मन्द्र प्रतिध्वनि,
गम्भीरे उठिला गर्जि बिज्वलि अशनि ।
गहन मानव धर्म आचरि आपणे,
शिखाइल मानवर आदर्श जीवने ।

सत्यर महिमा आपे करिण परीक्षा,
जगत जनंकु देल सेहि मन्त्र दीक्षा ।
बिभासिला दिशि दिशि सत्यर आलोक,
अमृते उठिला पूरि द्युलोक, भूलोक ।

हिंसा, द्वेष, तापक्लिष्ट मानव सन्तान,
लमिला परम शान्ति करि तर्हि स्नान ।
हे महर्षि, जगद्गुरु हे महामानव,
सहस्र प्रणति मोर श्रीचरणे तव ।

सत्य, शिव, सुन्दर

श्री गुरुचरण परिजा

सत्य त तूमे—तूमेइतशिव—सुन्दर महीयान,
तूमे त स्रष्टा—तूमेत रुद्र—तूमेइ त भगवान ।
बिप्लवी तूमे रचिल प्रलय सुप्त ऐ धरातटे,
तूमे त करिल संचार आशा लक्ष जीवन पटे ।
तूमे त करिल रुग्ण माटिकि नवीन शक्तिदान,
उषर धरणी सबुज करिल मर्त्यर भगवान ।

ओ तब चरणुँ जन्मिछि आजि ओ युगर इतिहास ,
 मन्त्र तूमरि करिछि धरारे लक्ष्मी जीवन न्यास ।
 ओंकार तब शुभेदेशे-से ये साम्बर महागोति ,
 संधाने यार आगन्तुकिर सुन्दर परिणति ।
 ओइत तूमरि सत्य साधना ओइत अमरदान ,
 चिर सत्यहे—हे चिर बिजयी-नित्य हे बलौयान ।

नुआँइछि मथा हिंसार युग तूमरि चरण तले ,
 तुहाइ तुहाइ ताहारि कलुष बन्ने जले ।
 आपणा हस्ते जलाइ आयणे माटि कलुष भार ,
 मै श्रीर बीज माटिरे बुणिछि सत्यर अबतार ।
 ओइ माटि तुले उठिब तदिने मुक्तिर महागान ,
 हे चिर रुद्र—चिर बिप्लवी—जय तब अभियान ।

ओकइ बपुरे डुलत करिछि बुद्धर महागोति ,
 कल्याणकर नानकर बाणी, खीष्टर परिणति ।
 अंगरे तब जडाइ रखिछि राणा प्रतापर आशा ,
 देश मातृकार गौरव आशे, महा वेदव्यास भाषा ।
 मुंजरि उठे कंठरे तब मन्त्रसे महागान ,
 नित्य हे तूमे—चिरबिप्लवी—मर्त्यर भगवान ।
 सत्य हे तूमे—मंगलमय—सुन्दर महीयान ।

गान्धिजी

श्री नित्यानन्द महापात्र

भारत रक्त-शताब्दी गते अतीत बन्ने लिमि ,
 उदिछि योद्धा तब नामे बाजे डिडिम डिडिडि ।
 तब नाम आसे सागर सेपार मौसुमी सने भासि ,
 तब नाम गाओ हिमालय सीमा तरल तुषार राशि ।

समर सजा नाहिं तब आजि मजा चरम सार ,
 तथापि देहर प्रति पन्जर ऋषि दधिचीर हाइ ।
 कला मथा परे सहि सैनिक गर्बी गोरार लाठि ,
 तेजियाइ नाहिं उपनिवेशीर निग्रोदेशीय माटि ।

देश भाई सने निग्रह नेल हथि हसिनि जे सहि ,
 बुहाइल बीर शीतल रक्त समरे सत्याग्रही ।
 दुर्बल परे पशुबलीदल-पीडन चम्पारने ,
 देखि अभिनव निर्माणकल निरस्त्र महारणे ।

इसलाम परे आफत देखि ये खिलाफत कला जान ,
 “अकताहिबल” अ कथारे योखि हिन्दु-मुसलमान ।
 पर उपकारे पेशि भारत रु योद्धाये जरमाने ,
 जालिआना वाला नाला मईदान ज्वाला पाइ प्रतिदाने ।

तथापि धरिला अहिंस भावे अस्त्र असहयोग ,
 सत्यहि तार जनम साधना कर्महि उपभोग ।
 सर्कारकर अर्दलि येवे हाहाकार रव—
 पडे, जगाइच बहोलि देशे सद्गार बल्लभ ।

भारतर मोति भारत जहर जलि उठि तबडाके ,
 जड जगतर युवक जीवन जगाओ दुर्बिपाके ।
 आरब सागर ठेउरे ठेउरे शव मसाइबा पणे ,
 बद् लुणकर रदकल याइ आइन् अमान्य रणे ।

सुप्त भारते लुप्त बिभव चर्खा फेराइ आणि ,
 स्वदेश प्रीतिर निहँशे देशे घोषिल मन्द्रवाणी ।
 “भारतर येते मो की शोषि अछु आस आजि दले दले ,
 स्वदेश हि धन, स्वदेश स्वाधीन कर स्वदेशीर बले ।

हकारि कहिछु, “स्वाधीनता अटे हक दाबी मानवर ,
 प्राण देइ आण नाहिं तहुँ बलि पुण्य अधिकतर ।
 मय ठारु बलि पाप नाहिं आउ, निर्भय स्वाधीनता ,
 स्वाधीनता अटे स्वपथे चलन आत्मनिर्भरता ।”

शिखाइछु तमे दुर्बल जने “आत्मशक्ति” बल ,
 शत्रु हृदय जय करिबार अभिनव कउशल ।
 धन्य हे आजि जगत धन्य तमर आलोक लभि ,
 नव भारतर प्राची नमे तमे प्राचीन अरुण छुबि ।

चातुर्वर्ण्य भूलि येवे आजि अबनत भारतीय ,
आदर्श तमे शुद्र, वैश्य, ब्राह्मण, क्षत्रीय ।
संयत यार प्रति इन्द्रिय संयमी फल त्यागी ,
प्रतिष्ठा येहु जीवन करिछि भारत मुक्ति लागि ।

अरट याहार आदरर धन खड्ड यार प्राण ,
हरिजन यार बुकुर वेदना सेवायार सम्मान ।
उदिछ हे तमे आदर्श ऋषि भारतरहितकारी ,
गरीबर सखा गरीबर धन दोन दोन कौपीन धारी ।

जगत आगरे बीर सन्यासी थोइ आजि नूआ रीति ,
गंगा, यमुना योग कराइछ धर्म ओ राजनीति ।
जनमिछ तमे परमहिन्दु संयमी चिर त्यागी ,
जगतर आजि द्वितीय ख्रीस्ट प्राण देइ पर लागि ।

सत्य पाइँ कि करिछ लढाइ कोरान धर्म भाषि ,
धन्य हे तमे शाबरमतोर नव तन सन्यासी ।
सबु जाति सबुधर्मर येते भारतीयः नर-नारी ,
गात्र आजि सबु गान्धिर जय-नव-जीव-संचारी ।

भारतर कोटि गरीब दुःखी पाइँ यिओ कान्दिछि ,
अत्याचारित पीडितर सखा सेहि तम गान्धिजी ।
पतितोद्वार पाइँ उपवासे तिल तिल दिओ प्राण ,
गात्र गात्र सेहि गरीब बन्धु गान्धिर जय गान ।

तेत्रिश कोटि भारतीय प्राण गात्र आजि समुदय ,
गात्र गात्र सबु, उपवासी बीर गान्धिर जय जय ।
भारतर कोटि गरीब दुःखी पाइँ यिओ कान्दिछि ,
अत्याचारित पीडितर सखा जय जय गान्धिजी ।

बापू क प्रक्ति

श्री नर्मदेश्वर भा

‘मास भादर’ दुर्दिन-सम ‘बादर’
गरजइछल, भेटइछल ‘दुःखक न
ओर’; कंसक पापसँ कपइत
छल भारत; बन्दी छल सभ लोक,
भाग देशक, ग्लानि छल धर्मक;
जे दिन तन घए आएल रहथि गोपाल ।

दासत्त्वक आतंक जे दिन द्वीप हभर
बनि गेल, बिन प्राचीरक जेल, कैदीक
न्याय मेल बन्द सबहि-टा द्वार; मात्र
अपमान भेटल उपहार सकल सेवाक;
जखन भादब छल संसारक
आएल रहथि बापू, आइ पचहत्तरि बीतल ।

सिखने जाइ छलहुँ हम नव-नव पंथ
परक, असत्यक; विसरल परम—
स्वधर्म । दासत्त्वक जञ्जीर कसने
जाइछल जीवनक कंठ
जे दिन वेणु जकाँ बाजल
चरखाक गान, गाम गाम में देशक ।

उगला दिनमान, प्रकाश मेल,
चिह्नलहुँ स्वदेश । अपन पथ
घएलहुँ, खोलि विदेशक बन्धन
जे सम स्वयं बनओने चलहुँ ;

विदेशी पहिरव, भालव, सोचव
ओ सपनाएव । सभ स्मरण मेल ;
के थिकहुँ ? की मेलहुँ ? की कर
आव उपाय उधारक लेल !

बापू अहाँक पथ अनुसरि एहि
छुधा-भुक्त जन-देवक पेट भरल,
लज्जाक निवारण मेल । मंगलक,
मन्दिरक द्वार खुजल, हरिजनक लेल ।
ऐक्यक प्रसाद सभ पाओल । सत्यक,
उपवासक सभ प्रयोग अपनेक, देशकें
शुद्धि देल । मन पड़ल भाइ, जागल देहात-
सूतल जीवन ई देशक, टूटल कत जञ्जीर ।

ई पुण्य पर्व ; बापूक नवकला प्रकट
मेलि; बीतल पचहत्तरि बरख । बापूक लेल
की पचहत्तरि, की सए । कालक बन्धनसँ ओ
ऊपर छथि; भारतक—महाभारतक—महात्मा
चिरपुराण; छथि चिर-नूतन; चिर शाश्वत ।
ओ नेता, भारत आत्मनिष्ठ, अछि
समाधिस्थ, अछि चिर-विमुक्त,
पशुबलक पहुँचिसँ ऊपर ।

बापूक लेल मधु वात, सिन्धु, निशि-वासर,
रवि, तरु, व्योम; सकल मधुमय भए जाइन्हि—
अमर आशीष देश । जीवनक सत्य ओ
पावि जाथि । बापूकें पावि-ईश्वरक
अमर आशीष पावि—हम धन्य मेलहुँ,
जग धन्य मेल । आइ कए
काव्य-चरित्रक बन्दन ई अगणिता—
मैथिली धन्य मेलि ।

गांधी रो गजब

श्री कविराज नाथूदान महियारिया

फौजां रोकै फिरंग रो, तोकै नह तरवार ।
गांधी, तैं लीधो गजब भारत रो भुज भार ।

अरब

श्री मातादीन भगेरिया

ये विदरोही छो जदी, हिवड़ां रा समराट ;
तो बाग्यां री भीड़ सूं, द्यां जेलां नै पाट ।
लाजां थां पर वारतां, गज-मोत्यां रा थाल ;
वारां थारा त्याग पर, म्हे प्राणां री माल ।
निकलै थारा होव सूं, काचो सत रो तार ;
भारत-हिवड़ा-चक्र रो, तूंई सूत्राधार ।
भारत-हिवड़ा स्यारखै, दूट्या हल नै आज ;
जोतै तूंई खेत मै, बूढ़ा हाली-राज ।
नन्दन बागां सूं अठे, परकोटां नै लांघ ;
क्यूं तू कूचो भूम पर, ओरै बूढ़ा बाघ ।
सुधा-देस रा पावणा ! ओ हिवड़ां रा साह ;
बागी मिनखा-लोक रा, क्रान्ति-वाल रा नाह ।
बागीड़ा ! थानै अठे, बांघ घरांला जेल ;
उथल पुथल थां सूं मचै, बिगड़े म्हारो खेल ।
नहीं चढावां “क्रूस” पर, घण्टी बड़ी या बात ;
गीत प्रात रा क्यूं सुणै, म्हारी मीठी रात ।
क्यूं बिख पीवो रात-दिन, कांई थारी बाण ;
ये ना जोगी सेवड़ा, तजो न कुलूरी काण ।
म्हारै हिवड़ा गरल रा, प्याला भरथा हजार ;
हार न जाज्यो पीवतां, करां घण्टी मनवार ।
हिवड़े-नीरधि सूं भरी, मधु-निधि बेसम्मार ;
कितणा खेतां छै पड़ी, जीवण-धार अपार ।
जड़ मूल्यां रा भोड़ सूं, छै थाकेला प्राण ;
नव विहाण रा दूत तूं, ये जीवन रा गान ।

सावरमतीअ जो सन्त

श्री किशनचंद तीरथदास खतरी 'वेवस'

तू करोई हिन्दवासिनन जे ज़बानन जी ज़बान ;
तुँहँजी झामोशी बताए तेज़ तूफ़ानी न्यान ।

मुक़ तुँहँजे में समायिल सरसुदरदी दास्तान ;
तुँहँजे पेशानीअ मंझाँ साबत सचाईअ जो निशान ।

पौण ते परचा वठी पोइ की बि कहँणीअ सौँ कहँ ;
सो चँवण चाहँ न बिए खे जो न खुद रहणीअ रहँ ।

वीर ! कुरबानी-मन्दिर में दरद जे देवीअ अग्यौँ ;
छा न छा भेटा धरी तो शौक़ ऐं पूरछा मंझाँ ।

दिल, दिमाग़ ऐं बल, बुद्धि, जिंद, जान चादिह्य चाह सौँ ;
माल मिलकियत ऐं कुटुंब परवार मुलकी प्यार तां ।

आर्दश ओडो अमुल हीरो हयातीअ जो रखी ;
सूर सेजा ताँ शहादत जी मिठी माखी चली ।

तो जड़हँ जाच्यो गुलामीअ जे मुंभयल तसवीर खे ;
कारगर जातो न की शमशेर या तक्ररीर खे ।

माठ सौँ भेटण घुरियो तदबीर सौँ तक्रदीर खे ;
रमज़ सौँ टोणण घुरियो दिन जुल्म जे जंजीर खे ।

ज़ोर जिसमानी लड़े, तो राज़ रुहानी सल्यो ;
ऐं अहिंसा जो नश्रो हथियार हैरानी सल्यो ।

मगरबी दुनियां रुनी थे जंग जूँ सख्तियों सह्यो ;
लड़क नेणन माँ बह्यो थे, झून झूलमन माँ बह्यो ।

जिन जथा थी जंग खे पायां पट्टण लै पे पद्यो ;
ओचतो आवाज़ हि कन से अचि तिन जे रह्यो ।

कामयाबीअ लाए कीन्हें झून हारिण जो जरूर ;
तेज़ तोबन सौं मरण जो ऐं न मारण जो जरूर ।

थो तके तुहँजे तहरिक ते मथौं शमसो क्रमर ;
तुहँजे हलचल तैं फिरे थी खास दुनिया जो नज़र ।

आहे आइन्दा ते हिनई आज़मूदे जो असर ;
सोभ तुहँजी सहकंदण संसार खातर झुशझवर ।

जंगजू तबोयत जो थ्येणो आहे इन्मा खातमो ;
काव शाही कीन खूँद खून नाहक जो ज़िमो ।

तुहँजे हिम्मत जे अग्यौं मुशकुल न पहुचण कोह काफ़ ;
तुहँजे खामोशी तरीको झूनरेज़ीअ जे खिलाफ़ ।

तुहँजे पासे प्रेम, ऐं पाकीग़गी, इनसाफ़ साफ़ ;
तुहँजे साथिन जी सफाई आहे शीशे खा शफ़ाफ़ ।

चोट तुहँजी नाहि कैभी खास सांया आम सां ;
थो लड़ीं आला उसूलन ते सुष्टी खाम सां ।

पैजे आँडुर जो इशारो कर सँभाले गौर सां ;
आहे हि तुहँजो इशारो खास ग़ैबी ज़ोर सां ।

जे हली व्यो हुकुम हेकर कहें मुख़ालिफ़ तौर सां ;
हिंदसागर ऐं हिमालय टकरंदा शह शोर सां ।

हिन इशारे डे डिसन थ्यो अज अखियों केई करोड़ ;
हिन इशारे ते खजन बाहूँ सज्यों केई करोड़ !

जैं जे रुहानी रहत में आहे “बेवस” सादगी ;
जैं जे चेहरे जे चिमक मां आहि ताबां ताज़गी ।

जै जे झलकत में न केहँ लै नफरती नाराज़गी ;
आहे तैह साबरमतीअ जे संतजी आज़ादगी ।

ताछु आज़ादी घुरे भारत, ढकण तूँहजे हथों ;
आहे हिन्दुस्तान खे अज लाड लाँगोखे मथां !

गंधी-जयन्ती

श्री श्रीकृष्ण कृपालानी

जे विघाता बइल क्या भारत जे सुभाग् सों,
जे अज् लडे व्या राजर्षि ऐ सूरमा,
जे सम् डीहँ पिठ्य पाण खे
डंभी दे डुहाग् खे,
त बि हिक् डीहँ अहड़ो आये ।
जो इतिहास गुर्क वरायो
ऐ नकुलन जे निभाग् में असुल बरी आयो ।
अज् नाह् को गुमान् भारत जे भाग् जो ।
तो मोटी डिनो डुहाग्यून विन्यायल सोमान्
हे भारत जा अगवान् !
हे ईश्वरी रथवान् !
हिन् सत्याग्रही युद्ध में अ महन्दारी !
तुहिजे रथस्वारिय गीदी क्या अज् गाण्डोबधारी ।
जे तो नाह् साण
को अरजुन धनुष बाण,
जे तो मोटी विधि म्याण में शिवाजीय तलवार,
तबि वेहथियार
तो अहिङ्गी आह दहशत
जो कंवे तुहिजे नाम ते थी शाही सुल्तनत ।
अज् तुहिजे जनम आह
ए होयान् जा हमराह !
तुहिजी सच्ची जयन्ती
आह विघाता खे बेनती
त ओहे सूर सहाय जिनमां उतपन थ्यन सूरमा,—
इहो भाग् भारत जो जो सच विलोड्य सूर मां ।

गांधी

कविवर्य श्री सुब्रह्मण्य भारती

वा.ष्ह नी एम्मान इन्द वैयत्तु नाट्टिलेल्लाम
ताप्पुट्टु वरुमै मिच्चि विडुतलै तवरिककेट्टु
पा.ष्पट्टु निन्दामोर भारत देशम् तन्नै
वा.ष्वक्क वन्द गांधी महात्मा जी वा.ष्ह वा.ष्ह।

अडिमै वा.ष्वकन्निनाहार विडुतलैयान्दु शेत्त्वम्
कुडिमयिलुयवु, कल्लि ज्ञानमुम कूडियोक्कि
पडुमिशैत्तलैमै एय्दम पडिक्कोरु सूच्चि सेय्ताय
मुडिविलाक्कीर्ति पेद्राय पुबिक्कुलो मुदन्नै पेद्राय।

कोडिय वेन्नाग पासत्तै माट्ट मूलिगै कोणन्तव नेन्नो,
इडिमिन्नल काक्कुम कुडैसेय्तानेन्नो, एनसोलिप्पुक्कवदु इंगुनैये,
विडिविलात्तुन्बम सेय्युम पराधीन वेम्पिणियहट्टिडुम वरणम
पडिमिसै पुदिताच्चालवुम एलिताम पडिक्कोरु सूच्चि नी पडैत्ताय।

तन्नयिर पोल तनक्कि वेण्णुम पिरनुयिर तन्नैयुम कणित्तल
मन्नयिरेल्लाम कडवुलिन वडिवम् कडवुलिन मक्कल एन्कण्णर्दल
इन्नमेय्जानत्तुणिविनै मट्टाङ्ग किषिपडुपोर कोलै दण्डम्
पिन्निये किडक्कुम अरसियल तनिल पिणैत्तिडत्तुण्णिन्दनै पेरुमाल।

पेरुं कोलै वषियाम पोर वषि इक्कन्ताय अदनिळुम तिरन पेरिडुडैत्ताम
अरुक्कलैवाण्णर मेय्त्तोण्डर तंगल अर वषि एन्क नी अरिन्दाय,
नेरुं किय पयन सेर ओत्तुपैयामै नेरियिनाल इन्दियाविर्कु
वरुदंगाहि कण्डु पहेत्तोषिल मरन्दु वैयहम वाष्ह नल्लारत्ते।

उत्तमन् गांधी

श्री रामलिंगम पिल्ले

उल्लम् उरुहुदु कल्लम् करुहुदु
उत्तमन गांधियै निनैत्तु विट्टाल
वेक्कम पेरुडिड कण्णीर वरुहुदु
वेर्क्किदु इन्बम् तेक्कुदडा ।.....

चित्तम् कलिन्दुल पित्तम तेलिन्दिडुम
शीरियन गान्धियिन पेर शोन्नाल
पुत्तम् पुदियन मुट्रम् इनियन
पोळ्ळिडुम उण्णिहिल् येगिरुन्दो ।.....

किलर्चिकोण्डान्मा पलिच्चेन मिन्नुदु
किष्वन गांधियिनपषमै शोन्नाल
तलच्चिहल नीगिय वलर्चियिल् ओगिय
ताट्टिहम् उडलिल् कूडुदडा ।.....

शोट्रैयुम वेरुक्कुदु काट्रैयुम मरक्कुदु
शुत्तनक्कादियिन शक्ति शोन्नाल्
कूट्रैयुम मिरड्डिडुम् आट्रलैत्तिरड्डिड
कूडुदडा मनम् तेडुदडा ।.....

तक्कमुम कलैन्दुदु एकमुम कुलैन्दुदु
तुन्वक्कनपुहल् तोलैन्ददडा
वाष्क्कयुम तिरुन्दिड नोक्कमुम् विरिन्दुदु
वल्लल् क्कादियिन निनैप्पाले ।.....

वञ्जनैनडुंगिडुम, वेञ्जिनम अडंगिडुम
वाष्मयिन गांधियिन तूय्यै शोन्नाल
अन्जिन मनिदरुम केञ्जुदल इनियिल्लै
आरामैयुम अन्बुम् अरुलुमडा ।.....

जीवहल उलहुल यावरुम सममेन
 शेयहैयिल काट्टिय गान्धियडा
 पावमुम पण्डिलुम तीविनै वण्डिलुम
 पदुंगुमडा, कण्डु ओदुंगुमडा ।.....

ये.षुवदुम नालुम कुष कुष वयलिनिल्,
 एन्ने गांधियिन इलमैयडा,
 मुषुवदुम अदिशयप्पुदर वण्क्कैयिन्
 मुत्तनडा पेरुम सिद्धनडा ।.....

गान्धियिन तवक्कनल् शष्पन्दु अलहिनै
 कामदहनमेन येरियुदु पार
 तोयन्दन श्शुदुहल् ओयन्दन वादुहल्
 दिक्कुदिशैहलेल्लाम तिहैत्तिडवे ।

एषैहल् एलियरिन् तोपन अक्कान्दियै
 एप्पडिप्पुहण्डिनुम पोदादे
 वाणिय अवनू पेयर ऊणियिन कालमुम्
 वैयहम् मुषुवदुम् वाणियवे ।

गांधी कपि पक्ष्ण ?

श्री श्रीराम

कलह मेल्लाम कै कोर्त्तु कलिकूत्ताड
 करडि पुलि शिंगमेन मनिदर शीर
 अलहै पट्टि आट्टुदल्पोल् अहिलम् अञ्ज
 अडितडियुम कोलै कलवे अरंपोल ओञ्ज

उलहमेल्लाम गांधियये उट्टुप्पार्तु
 उय्वदकोर पुदिय वणि उरैत्तानेन्ऱ
 पलकलैयिन् अरिअरेल्लाम पुहण्णार्त्तुम्
 परिहसित्ताय नी अवनै पाविनेञ्जे ।

अच्चमिक इरुट्टरैयिल अडैपट्ट मे
 अषुवदकुम जीवनट्टकिडन्द अन्ने
 मिच्चमुल्ल मूच्चुमट्टणोहुमुत्ताल्
 मीट्टणैल्ल मेनियेयुविट्टान गांधी !
 इच्चहत्तिल अरिवरिन्दोर एन्दम वाषुत्ति
 इन्बमिहुम गांधिविषि पषशामेन्नाल
 पच्चइलंकाय पुदियदेन्न् कोण्डु
 पषुत्तपषम पषशेन्नुम पान्मेयाहुम ?

महात्मा

श्री मंगिपूरि पुरुषोत्तम शर्मा

अपुहु नी सत्य तपमु महाद्भुतमुग
 पूचि पलिथिचे नोक्क अपूर्व फलमु
 भारतुले काडु आशान्त प्रजलु हर्ष
 मेचि निनु किरिटिचि कीर्तिश्चिनारु
 इपुहु नी सत्य दोच्चा परीच्चा मुरले
 नी पराजित लज्जित निदितमगु
 शिलुव गोष्ठिन नेत्तुटि शरिमु पैन
 सेसलनु जल्लि ओक्कि याशीर्वादिन्नु
 एदि जयमु ? पराजयमेदि नीकु ?
 मेदिनि गलंचु पशु बल्लोन्मादमेदिरि
 देबुनकु धर्मवनकुनु देशमुनकुनु
 आत्म बलि इच्चु पूत सत्यावहमुन ।

मा गांधी

श्री वसवररजु अप्याराव

कोल्लाड गड्डिते नेमी—मा गान्धी
 कोमटै पुड्डिते नेमी
 वेन्नपूसा मनसु, कन्न तल्ली प्रेम
 पंडटि मोमुपै ब्रह्म देजसु

नालुगु परकल पिलक नाट्य माडे पिलक
 नालुगू बेदाल नाणय मेरिगिन पिलक
 नोसिनोर्विप्पिते मुत्याल तोलकरी
 चिरुनव्वु नव्विते बरहाल वर्षमे
 चकचका नडिस्तेनु जगति कंप्पिचेनु
 पल्लुकु पलिकितेनु ब्रह्म वाक्केनु
 कौशिकुडु चन्निमुडु कालेद ब्रह्मर्षि
 नेडु कोमटि बिडु कूड ब्रह्मर्षाये

गंधी महात्मा

श्री ऊ० कौंडय्या

रम्मंदि राट्न्म
 मिम्मल्लि मिम्मल्लि चेरा रम्मंदि सेवाग्राम
 रम्मंदि राट्न्म
 ई जन्म मी ब्रतुकु लिविये कावंदि
 पोदामु रम्मंदि एन्नोव बेंडो, रम्मंदि राट्न्म
 तातय्य ब्रतुके तलपोयमंदि
 मनिषि देबुडुगा मारिनाडंदि रम्मंदि राट्न्म।

फिचिक् कावू

श्री सीतारामांजनेय शास्त्री

आयन गायत्रिनि ओदिलिन कर्मिन्डी
 वांछुलु तोरनि स्वेच्छा ज्ञानी
 गुल्लोकन्ना बेह्मनि भक्तुडु
 आयनलो अद्वैतपु चिटारुकोम्मन
 अनेकत्वपु अभासं
 ब्रह्माचर्यपु गार्हस्थ्यं
 वानप्रस्थम् लो सन्यासं
 कुलालन्निटि कलगापुल्लगं

आयनदि आयुनि चंपिन अहिंसा
 स्वराज्यंतैलेनि सत्यवाक्कु
 आयन उद्देशं अंतर्वाशि आत्मदर्शनमनि
 अरुणारुण रुधिर ज्योतिषो
 अमृतकांतुलु चूदामनि
 अयनकि शत्रुबुकानि मित्रुडु लेडु
 अयिना, आयन अजातशत्रु
 अंदुकने मनुषुलिकि कावालि मा पिन्चि बाबू ।

जन्मदिनोत्सव गीति

श्री श्री

मरचि पोयिन साम्राज्यालकु
 चिरिगिपोयिन जेंडा चिन्हं
 मायमैन महासमुद्रालनु
 मरुभूमिलोनि अनुगु जाड स्मरिस्तुंदि
 शिथिलमैन नगरान्नि सूचिस्तुंदि
 शिलाशासनम् मौनंगा
 इंद्रघनस्सुनु पील्चे इवालटि मन नेत्रं
 सांद्र तमस्सुनु चोल्चे रेपटि मिनुगुरु पुरुगु
 करपूर धूम धूपंलांदि
 कालं कालुत्तने उंडुंदि
 एक्कडो एक्कडो पाडिन पाट
 एण्डुडो एंडुको नव्वे पाप
 बांबुल वर्षालु वेलिसिपोयाक
 बाकुल नाटयालु अलसिपोयाक
 गड्डि पुव्वुलु हेलनगा नव्वुतायी
 गालि जालिगा निश्वसिस्तुंदि
 पोलंलो हलंतो रैतु
 निलुस्ताडिन्वाल
 प्रपंचान्नि पीडिचिन पाडु कलनि
 प्रभात नीरजातंलो वेदककु

उत्पातं वेनुकंज वेसिदि
 उत्साहं उत्सवं नेडु
 अवनीमात पूर्णं गर्भेला
 अशियाखंडं मुष्पोगिन्दि
 नवप्रपंचयोनि द्वारं
 भारतं मेलुकुंटोदि
 नेस्तं मन दुखालकु वाइदावेदां
 असौकर्याल्लु मूटकट्टि अवतल पारेदां
 इंकोमाडु वाग्वादं इंकोनाडु कोट्लाट
 इव्वालमात्रं आह्वादं इवाल तुरुफासु ।

गुरुदेव

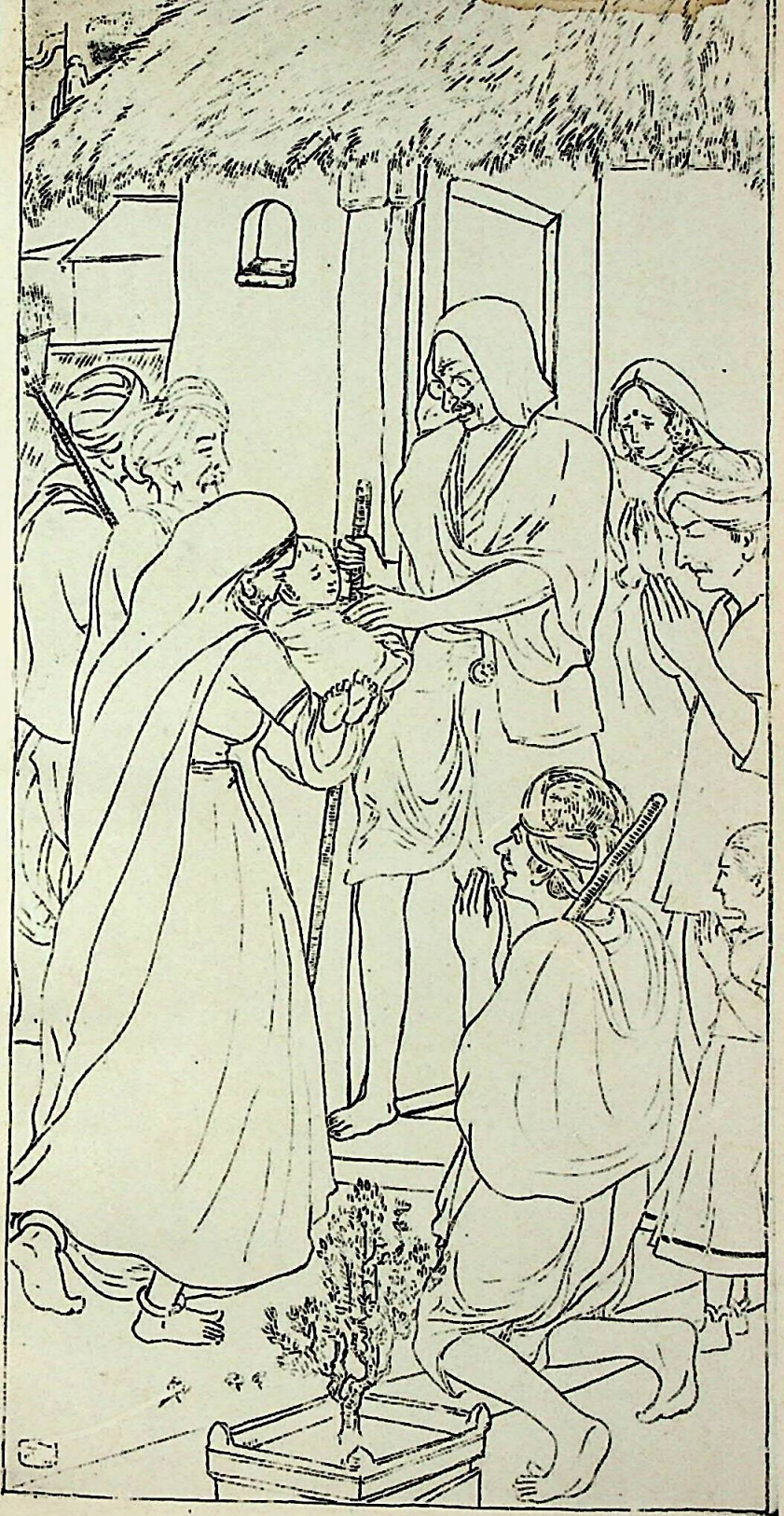
श्री नारायणराव बल्लतोल

लोक में, तरवाडु तनिकी चेटिकलुं,
 पुलुकलुम्, पुलुकलुम् कूडित्तन कुटुं वक्कार्
 त्यागमेन्नते नेट्टम् तालमता-नभ्युन्नति,
 योग वित्तेवं जयिकु-न्नितेन गुरु देवन ।

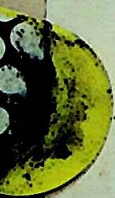
तारका मणिमाल चार्त्तिया-लतुम् कोल्लाम्
 कारणि चलि नीले पुरण्डा-लतुम कोल्लाम्
 इल्लिह च्चेराम् लोप मेन्निव सम स्वच्छ
 मल्लयो विहायस्स-व्वरण मेन् गुरु नाथन्

दुर्जन्तु विहीनमाम् दुर्लभ तीर्थ हृदम्
 कज्ज-लोल्लगम मिल्लात्तोरु मंगल दीपम्
 पाम्पुकल तीण्टीडात्त माणिक्य महानिधि
 पालनिलाउंडाकान्त पूनिला वेन्नार्चार्यन्

शस्त्र मेन्निये धर्म संगरम् नटचुन्नोन्
 पुस्तक मेन्निये पुण्याध्यापनम् पुलत्तुन्नोन्
 औषध मेन्निये रोगम् शमिपिपवन हिंसा
 दोष मेन्निये यज्ञम् चैय्ववनेजाचार्यन्



दुर्जन्तु विहीनमाम् दुर्लभं तोर्थं हृदम्,
 कज्ज-लोलूगम मिल्लात्तोरु मंगल दीपम् ;
 पाम्पुकल तीण्णटीडात्त माणिक्य महानिधि ,
 पालनिलाउंडाकान्त पूनिला वेन्नार्चार्यन् ।



शाश्वत-महिंसा - शम्भुमाविन् व्रतम्
 शांतिपाणविदुन्तु पूजिकुम् परदैवम्
 ओतुमारुण्टदेहमहिंसामणिचट्ट—
 येतुटवालिन कदुवायतल मटकात् ।

भार्यये कण्डेत्तिय धर्मत्तिन् सल्लापङ्गल्
 आर्य सत्यत्तिन सदस्सिकले स्संगीतङ्गल्
 मुक्तितनं मणिमय कालतल किङ्कड्डल्
 मट्टुमेन् गुरुविन्ते शोभन वचनङ्गल

प्रणयत्ताले लोकम् वेल्लुमी योद्धाविन्नो
 प्रणवम् धनुस्सात्मशासनम् ब्रह्मम् लक्ष्यम्
 ओम् मारत्तेयुक क्तमाललियिच्चलियिच्चु
 तान् कैकोल्लुन्नु तुलोम् सूक्ष्ममा मंशंमात्रम्

किंस्तु देवन्ते परित्याग शीलवुम् साक्षात्
 कृष्णनाम भगवान्ते धर्म रक्षोपायवुम्
 बुद्धन्ते अहिंसयुम् शंकराचार्य रूटे
 बुद्धिशक्तियुम् रन्ति देवन्ते दयावायुपुम्

श्री हरिश्चन्द्र नुल्ल सत्यवुम् सुहृन्मदिन
 स्थैर्यवुम् भोरालिल् चेन्नोत्तु काण्ण मँकिल
 चेल्लुविन भवान्मारेन गुरुविन निकटत्ति—
 लल्लैकिलविदुत्ते चरित्रम् वायिककुविन्

हा ! तत्र भवत्पाद भोरिकल दुर्शिच्चेन्नाल्
 कातरनतिधीरन कर्कशन् कृपावशन्
 शिशुन् प्रदानोत्कन् पिशुनन् सुवचन
 नशुद्धन् परिशुद्धनलसन सदायसन्

आततप्रशमना मत्तपस्वितन्मुनि—
 लाततायितन कैवाल करिङ्गुवल माल्यम्
 कूर्त्त दम्पङ्गल् चेर्न् केसरियोरु मान् कुञ्जा
 तेर्न्ति तटम् तल्लुम् वन्कटल कलिण्णोयिक

कार्यं चिन्तनं चैय्युम् न्नेरमन्नेताविन्नु
 काननं प्रदेशबुम् कांचनं समातलम्
 चट्टं समाधियि लेपेंडु मायोगिककु
 पट्टणं नडुत्तट्टुम् पर्वतं गुहान्तरम्

शुद्धमाम् तंकत्तेत्तानल्लयो विलयिप्प
 तद्धर्मं कर्षकण्टे सत्कर्मम् वयल्लु तोरुम्
 सिद्धना मविटुत्ते तृक्कण्णो कनकत्ते
 यिद्धरित्रितन् वेरुम् मंज मन्नायि काष्ण्
 चामरं चलनत्ता लिलिच्चु काट्टुम् पिशा—
 चा महाविरक्तन्नु पूज्य साम्राज्य श्रीयुम्

चेरुपुंकुललिन्नु मल्लल तोन्नाऽवानारी
 स्वातन्त्र्य दुर्गा ध्वाविल पट्टुकल विरिक्कुन्नु
 अत्तिरूवटि वल्ल वल्लकलचुंदमुडु
 तर्धनग्ननायल्लो मेवुन्नु सदा कालम्

गीतक्कु मातावाय भूमिये दड मिटु
 मातिरि योरु कर्मयोगिने प्रसविक्कु
 हिमवद्विन्ध्याचल मध्यदेशत्ते क्काण्
 शममे शोलिन्चेलु मित्तरम् सिंहत्तिने

गंगारोलुक्कुन्न नाट्टिले शरिक्किन्न
 मंगलम् वायूकुम् कल्प पादप मुरडायवरु
 नमस्ते गतवर्ष ! नमस्ते दुरा धर्ष
 नमस्ते सुमहात्मन ! नमस्ते जगद्गुरो ।

महात्मा गांधी

श्री पाला नारायण नायर

मङ्गलम् मालिन्यबुम् तट्टाते महनीय-
 रंगमायुत्तुंगमाय् निलकुमा हिमाचलम्
 नक्षत्र लोकत्तोडु नर्म सल्लापम् चैय्यु-
 मल्लय ज्योतिस्सामेन् जन्म भू कुयिक्कुन्न

मोक्षयुम् निर्वाणयुम् तोष्टिहुम् वृन्दावन-
मोहनम् कुलीन मेन जन्म भू जयिककुन्नु,
मानवन्नुणरवेका निजिता पेतुम् गीता-
माधुरी मनोज्ञमां पूमधु वेषुनेल्लि

अंषिके भारतोर्वि निकल निनु दिच्चुल्लो-
रिम्महात्मावा लेनुम् धन्यसु वायल्लोनी ।
अज्ञता द्रारिद्रयान्वकारत्ते निहनिच्चु
प्रशतन् विलकेन्ति निलकुनु तवात्यजन्

अत्रयुम् द्ररिद्रना मीयोरु पुमा नत्रे,
वृद्धियुम् समृद्धियुम् नीलवे विलम्बुनु
अर्द्धनमनाय निलकुमिस्साधु सत्यान्येषि
यत्र मेल पुतप्पिच्चु नाटिने प्रयत्तत्तिन्न

शक्तिहीनमी रण्डु कैकलालुलकिन्टे-
द्वत्तिने चलिप्पिप्प तिप्पोलुम् विवेकत्तिल
वार्द्धक क्षीणम् वटि कुत्तिकु मिक्कालत्तु-
मात्तरेत्ताडुनुण्डा मायिर कणकिनाय
अतुमल्ल हो तप शुष्कनी नेताविल्लिनि-
न्नहिंसा धर्मत्तिन्टे कम्म काहलम् केजप्पु ।

नम्म गांधीजि

कविवरेण्य मारा शामरण

भारतांबियत्ति जनसि
पारतंत्र्यदणक सहिसि
सार स्वाऽतंत्र्य वयसि
होरुतिरपनार् !
धीरनागि मारगवन्नु
तोरुतिरपनार् !—नम्म गांधिजि ।

भोग भाग्यदासे तोरेदु
रागद्वेष मोहवळिदु

योगियंते बालुतिरुद
 त्यागवीरनार ?
 लोगरक्षि त्यागदोलुमे
 बीरुद वीरनार ?—नम्म बापुजि !

हीरियरल्लि हिरियनागि
 किरियरल्लि किरियनागि
 तिरेगे मारुगदरुशियागि
 चरिसुतिरुपनार ?
 परम चरितेयात्तमवन्न
 हरिसुतिरुपनार ?—नम्म गांधिजि !

देशसेवेगागि बंदि-
 वास हल्लु सहिसि कुंदि
 कूसिनंते बालुतिरुद
 देशबंधुवार ?
 देशसेवेगादयस्थान-
 विस्त बंधुवार ?—नम्म बापुजि !

निराहारवृत्तव हिडिदु
 सरि अहिंसेयल्लि नडेदु
 धरेयनेल्ल नहुगिसिरुव
 पुरुषश्रेष्ठनार ?
 धरेय नयन तन्न कडेगे
 सेलेद हिरियनार ?—नम्म गांधिजि !

ज्ञान मधुवनरसि सुलिव
 मानवालियासे कलेव
 ज्ञानमधुव निरुत सुरिव
 पुष्पराजनार ?
 दीन तुंबिगलनु करैव
 कलप वृत्तवार ?—नम्म बापुजि !

सामसुवेय वयसि बरुव
 जेमिगलिगे बलवनीव

कषेमसुधेय सतत करेव
 कामधेनुवार् ?
 भूमिगेल्ल कषेम कोरव
 सामसचिवनार् ?—नम्म गांधिजि !

कांतियल्लि सूर्यनंते
 शांतियल्लि चन्द्रनंते
 करांतियल्लि संतनंते
 मेरेयुतिरपनार् ?
 शांतियन्ने सरुवरल्लि
 कोरुतिरपनार् ?—नम्म बापुजि !

भारताबेयात्मपुत्र
 भारताबेयात्मनेत्र
 भारतीयरोलमेपात्र
 नाद मित्रनार् ?
 भारताबेयणगरल्लि
 अग्र्यगयनार् ?—नम्म गांधिजि !

गांधी महात्मनु

श्री ईश्वर सणकल्ल

निन्न हेसरनु केलि मैयुब्बुतिहुदु,
 सन्नुतने चैतन्यनिधिये नी गांधि !
 निन्न चित्रव नोडि कंबनियु तुंबि,
 निन्न पदकेरगिदेनु मनदोलगे नंबि !

नोडिदोडे भूलेगल हंदरद मैयु,
 ओलगिनात्मद गुडुगिगदरुतिदे महियु !
 विश्ववनु हुरुपलिप विलयाग्नियन्नु,
 हुल्लिनोल गडगिसिद कडु धीर नीनु !

मैयल्लि सोतरु सोल सोलिसिदे,
 कैयु बरिदिदरु हसिव हिंसिदिदे !

तिरुक्कनंतिदरु तिरैयरसनादे
वरि मैयनिदरु जगव होदेयिसिदे !

निन्न बिगियुव सेरेये बिडुगडेयदायु,
निन्न सायिप सावे सायुवंतायु !
मोगदलिह वेलगिनंतिह मुगुलुनगेगे,
मुगिबिदद दुगुडदिरुलोडुतिदे केलगे !

नीनु होदल्लेळ अण्णुगद वेलेयु,
नीनिरुव तलदि सुखदशांतिगल मलेयु !
कनसिनेच्चरविदु निन्निदे वीरा,
अच्चरद कनसायु भारतद वीरा !

कनस बिडुगडेयिदु निन्निदे तंदे,
बिडुगडेय कनसायु दीन जन बंधु !
निन्नने अडि जगके काणिकेयनित्ते,
अदरिंदलेल्लेळु काणुतिहेयल्ले !

अनिंतेल्ल वयेयुतलि निन्नेडेगे बंदे,
मनदलिह तवकवदु हिडिसदेये निंदे !
नोडुंनोडुतलिरलु नोट मंकायु,
नुडिनुडियुतिरे कोनेगे नुडि मूकावायु !

द्वंद्वमय जगवेळ निन्न वलि तंदे,
अंदागि हरियुतिह अनुभवव कंड़े !
निन्निदे भारतव पुण्यमयवायु,
निन्न नोडिद कणु सार्थकवदायु !

निःस्व

श्री गोविन्द पाई

तट्टने दधीचि सुररिगे नीडिदं दुरिय
तन्न मांसवनित्तु खगव शिवि कादं
शिलिकेतनं पदेदनेरेवरं मेय्यरेव
मृगशिशिव साके भरतर्षि मविथादं ,

चरिगेबोदं बुद्ध, सुरिगेगादं तेग,
वेन्दलभोजिनि चितोरवं काये—
निःस्वनेनेन्नीग ! निःस्वनिन्देनाग !
इलेये, निःस्वने, परार्थके नोये, साये ।

इले नोन्दे बालु, निःस्वं नोन्दु हेब्बालु-
वरडदातन नोववन सावु, काण ।
नोन्दु निःस्वं लोक मुन्दरियुतिरे, हालु
गेडेयदातन गोत्तु, कडेगोलदे माण ।
इदो, मात्म, कैगूडुतिदे निन्न निःस्व
दिन्देम्म भारतद भाग्य सर्वस्व ।

उपकाश

श्री गोविन्द

मञ्जिनेकान्तदलि श्री हरिय हम्बलिसि
हृदय लुपेयन्नुडुतोडल हसिविन्दं,
मनद कम्मेय गेदुदु शुक्रनातनञ्जोलिसि
भक्तिगणेय भारतदे तुषेगे तन्दं ।

उरुवेलेयरलियडियलि चिरं हसिदरेदु,
मारनं मुरिदु, सम्बुद्धनेमगागं
निम्बाणामोन्दे तण्हेयरणयमं तरिदु
तोर्दनरियटुक्किद धम्ममगं ।

कट्टलेयं कुरुडिनलि वेलकिनोडेयन सोसु
वेम्मेदेय परेय हेरेदेम्मोलगे निसदं
नेलसिरुव स्वाराज्यवेमगे तोरिसे येसु
योर्दनिन बनदि नलवत्तु दिन हसिदं ।

अरबरेदेयरविन्द नोन्दु, नवजीवनव
नुपवासदिन्दरसि हिरेय कन्दरियि
देवरल्लदे देवरिल्लेम्म कावनव
नेम्ब सत्यदि कण्डनदनरबरेरेयं ।

गुरुवे, इष्यतोन्दु दिनदुपोष्यव नोन्दु
 धिल्लियि नी चेस्तिदी प्रेमबीजं
 भारतद भाग्यलतेयापि मडलिडदेन्दु ?
 वेलसदेन्तमर सोन्दर्यमिदु साजं ?

युगे युगे

श्री सुरकुन्द अरण्याजी राव

अं दु जेतायुगदि दशरथ,
 नंदननु कपि सेनेयोदिगे,
 बंदिरलु रावणन लंका नगरदेडेयस्ति ।
 चन्द्रवदनेय कद्ध आ दश,
 कंदरन निज राजधानिय,
 संधिसुत दुःखिसिद नीतेर अश्रुविलिसुत्ता ।

हर हरा ई सोगसुपट्टण
 बरिदे आहा हाल गेडेबुदैतले
 निरत नागलु युद्धदलि दशशिरन यदुराणि ।
 अरियलारु सुरर ई तेर
 सरि समानद नगर कट्टलु
 हर हरा ना नैतु कांबुदु नगर नाशवनु ।

इन्दु कलियुग मद्यदलि वर,
 गांधिनीयवरोन्दु दिन ता,
 संधिसिरे वर देहलि नगरदि राजप्रतिनिधिय ।
 रामचंद्रन तेर महात्मनु,
 समर दलि आंग्लेय पुरगलु,
 जमीन समवागुक्वेनु तलि अश्रुविलिसिदनु ।

शत्रु मित्ररोल एक नडतेयु ।
 व्यत्यास वेल्लिदे गांधी रामरोल ।
 सत्यापालनेगासि इवरवतार बैत्तिहर ।
 उत्तमनु सजनरोल गांधीयु,
 उत्तमनु नृपरल्लि रामनु,
 उत्तमोऽत्तमगांधी रामर ई धरित्रियलि ।

फा मो चुङ् ती ल्यू चउ

श्री उ—शिअौ-लिङ् “दिवाकर” उपाध्याय

कान्—ती,
 षा मो चुङ् ती ल्यू चउ,
 चिङ् थाव् शिअा ती ई हुङ् छिङ् छुअान्,
 लङ् खु, पिङ् इए स ती,
 ली मिअान्, पाय् रअो चाय् रान् षाव्।
 छि षउ निअान्, चुअाङ् मान् लिअाव् इअउ हुअान्,

उअोमन् थिङ् ताव् ती छयू ष अ थुङ् ती—
 थिअान् चन् ती छिङ् छुअइ शिअाव् षङ्।
 रन् मन् छुङ् ना अ नङ् थि हुअइ ई तिअान्—
 ती चन् ती रन् ती षङ् हुअो नी!
 चो अ।

कान्-ती ती उअइ

श्री चुअाङ्-यूङ्

रान्-मन् चङ्-चिङ् यू स-ता-लिन्-को-लो छान्-खु ती चङ्-तुङ्,
 शिङ्—रङ् था, सुअो था ष “ती-चङ्-ती-चुङ्-शिङ्”,
 चिए फाङ् लिअाव् ती स-ता-लिन्-को-अो-इअा।
 छुङ् नी षङ्-ली ती सुअान्-हु ली।
 उअो थिङ्-तालिअाव् ती-शिन् ती थिअाव्-ताङ्,
 च इअउ ना को साव् शिङ् ती लाव् कान्-ती,
 चाय् ष रान्-मन् लाय् ष छिङ्-चु ती ष-हाव्,
 था लाय्-ष पु-छ-तुङ्-शि,

शिआड् चाय् रो लिए इअउ शिङ् ती चिए ष ती,
 ता चिए षाङ्
 ई को लाव् छि-काय् चाय् शिआड् खउ खु-छी।
 शिआड् स-ता-लिन्-छाङ् ष ती छिअउ ती शिन् चाङ् ई इआङ्,
 कान् ती ती उअइ इए ताय् पिआव् लिआव् ती छिअउ ती शिआव्
 हुआ छी।
 उओ-मन् चान् नङ्-कउ चान् छि लाय् नी?
 उओ मन् ती शिन् सुअइ रान् यिआव् वुङ् लिआव्,
 उओ मन् ती उअइ सुआन् ष चाव् रो हो फान् लुआन्
 रान् षाव् चुओ ती खुङ् रयू।

अ छुङ् ना-शिए “ष-चिए-चुअइ ना’ ती
 तिआन् थाय् ती कुआङ् पो,
 च-इअउ हो चङ्-ई, चुआङ् इआन् मइ-ली—
 ती शी-उआङ्,
 इए-च ष छान् चाय् ताय् सुअइ ली ती ई
 तिआन् कुङ च अ।

मिआन् शिआङ् चुओ कुआङ् मिङ् लाय् च ती शी-फाङ्
 फु-ष-चिन् ती छाव् यूआन् पाय् लुन् स्यूए—
 लाय्-ती-हाय्-इआङ्।
 उओ रो छिए ती निङ् ष,
 उओ शि उआङ्।
 उओ ती चुओ-इआन् नङ् कउ हो इअउ इमान् ई इआङ्
 फा-लिआङ्।#

* अनुलेखन के लिये विश्वभारती पत्रिका, वर्ष ३ अंक २ में प्रकाशित
 “नागरी में चीनी ध्वनियों के संकेत” की पद्धति बर्ती गई है। पर चं, छं, र के
 स्थान पर च, छ, र नये सङ्केत प्रयोग में लाये गये हैं।

Gandhi Maharaj

Sri Rabindranāth Tagore

We, who follow Gandhi Maharaj's lead,
Have one thing in common among us ;
We never fill our purses with spoils from the poor
Nor bend our knees to the rich.

When they come bullying to us
With raised fist and menacing stick,
We smile to them, and say,
Your reddening stare
May startle babies out of sleep
But how frighten those who refuse to fear ?

Our speeches are straight and simple,
No diplomatic turns to twist their meaning !
Confounding Penal Code,
They guide with perfect ease the victims
To the border of jail.

And when these crowd the path of the prison gate
Their stains of insult are washed clean,
Their age-long shackles drop to the dust,
And on their forehead are stamped
Gandhiji's blessings.

अंग्रेजी

Eternal India

Srimati Sarojini Naidu

Thou whose unaging eyes have gazed upon
The visions of Time's glory and decay,
Round thee have flowere-like centuries rolled away.
Into the silence of primeval dawn,
Thou hast out-lived Earth's empires and outshone
The fabled grace and grandeur of their sway,
The far-famed rivals of thine yesterday
Iran and Egypt, Greece and Babylon,
Sealed in Tomorrow's vast abysmal womb.
What do thy grave prophetic eyes foresee
Of swift or strange world-destiny and doom ?
What sudden kingdoms that shall rise and fall,
While thou dost still survive, surpass them all,
Secure, supreme in ageless ecstasy ?

Gandhi

Sri Humayun Kabir

Across vast spaces and vast times he strode
buoyed upon the hopes of ancient race,
achieving courage out of dark despair.
Like a huge serpent resting coil on coil
slept the vast country in involuted sloth,
but a breath of life stirs every vein,
for Gandhi breaks the charm of magic sleep,
brings back life till age-long lassitude
drops like old dead skin from frozen limbs.

A puny figure strides upon the scene
of vast and elemental suffering : Strides
against the back-ground where slow death
paints in dull phantasmagoral grey
the end of all endeavour, hope and faith.
What secret magic transforms the scene ?
Whence springs forth a deep abiding force
that thrills the landscape with abundant life
till the puny figure dominates the scene,
over vast and elemental suffering triumphs,
and with new birth's pain and radiance shoots
the landscape's dull phantasmagoral grey ?

The static, dead and slothful continent,
thrills to a new song of hope, of forward move.
The momentum gathers, the masses shake,
and strain and quiver for the onward march
from slow—decaying death to resplendent life.

A lone figure stands upon the sands of time,
stands upon the shores of India's timeless space,
draws upon its vast and primeval wells
of granite suffering and immortal hopes :
Launches India's resistless caravan
into adventures new, a perilous path
where out of life's substance must be carved
new values, new directions, order new—
GANDHI, Mahatma, India's Leader, India's soul.

Gandhi

Mary Siegrist

Who is it walks across the world today,
A Christ or Buddha on the common way
This man of peace through whom all India draws
Breathlessly near to the eternal will?
Hush, what if on our earth is born again
A leader who shall conquer by the sign
Of one who went strange ways in Nazareth?
Who is it sits within his prison cell
The while his spirit goes astride the world?
This age-fulfilling one through whom speak out
The Vedas and the Upanishads—who went
Naked and hungry forth to find the place
Where human woe is deepest and to feel
The bitterest grief of India's tragic land?
Whose is this place that challenges the world,
That calls divine resistance to a will
No man upholds? Whose is this voice
Through whom the orient comes articulate?
Whose love is this that is an unsheathed sword
To pierce the body of hypocrisy?
Whose silence this that calls across the world?
In this strange leader are all races met;
In his heart East and West are one immortally
Through him love sounds her clarion endlessly
To millions prostrate who have lain age long

Beneath the oppressor's heel, unwearied saint
Who gives them back the ancient memory
Of a great dawn, a lot inheritance?

In his deep prison there in India
Somehow abreast with sun and sky he waits.
What is again, a Christ is crucified
By some reluctant pilate-if again
The blind enact their old Gethsemane?

Tread softly, world, perhaps a Christ leads on
Today in India.

Gandhi

Sri Benjamin Collins Woodbury

When shall there be again revealed a Saint,
A holy man a Saviour of his race,
When shall the Christ once more reveal His face?
Gautama left his bode without complaint,
Till weary, hungered, d-solate and faint
He sank beneath the Bo-Tree with his load,
As on the path of solitude he stood ;
And Jesus died to still the sinner's plaint.

Lives there a man as faithful to his vow ?
Mahatma to a bonded race of men ?
Aye, Gandhi seeks his nation's soul to free :
Unto the least, ye do it unto Me !

Hath Buddha found in peace Nirvana now
Or doth a Christ walk on the earth again ?

अंग्रेजी

To Democracy

Sri Harindranath Chattopadhyaya

He is the symbol of the world's white peace,
His light no tyranny dare touch or dim :
The country now behind the bars with him
Will find release only with his release.

Democracy. ! Is it not more than odd
That you should gag the one who stands for you?
We are too wrath now even to cry : 'O God !
Forgive them for they know not what they do.

Release him—'now' History cannot wait,
Release him for the hour is red with strife ;
Release him for the hour is full of fate;
Democracy ! it shall decide your life.

Let not Humanity's relentless pen
Dipped in his blood pronounce you but a lie,
Which it shall do if now the man of men
Behind the bars should bid the world good-bye.

Ring the Temple Bells

Sri S. K. Dongre

There's jubilation o'er the country wide,
Because her patriot saint, her greatest son,
Hath, through a fiery ordeal sorely tried,
By force of soul alone a victory won.
When he proclaimed his fast, a death-like gloom
Spread like a deepening shadow through the land ;
And many thought it was the crack of doom,
And dread disasters seemed to be at hand.
And prayers went forth to God from hearth and
home

All o'er the world, in near and distant parts :
The spreading sky became a temple dome
Beneath which millions knelt with throbbing
hearts.....

Rejoice and ring the temple bells aloud,
For now he smiles and waves Truth's banner proud.

Mahatma Gandhi

Sri Jeannete Tompkins

*"But what was'nt ye out for to see?
A reed shaken by the wind?"*

There was this man ;
Who strove to see
 Truth, veiled within
 Mortality.
His flesh he scorned,
And fleshly bonds ;
 Yet saw his brother's
 Bleeding wounds.
In love, he turned
His soul, to find
 Freedom from pain
 For humankind.
And found an Empire
In his path—
 He seized a weapon—
 Love, not wrath.
Even his enemies
He loved.
 Stones, blows, nor jail,
 His kindness moved.
The Empire rides
Its bloody way ;
 His kingdom not
 Of this brief day
Love knows no bondage
Kings have thrown
 But claims the universe
 Its own.
Across the world
Ten watching wait
 Before that humble
 Home of fate.
Where love is reigning
Over power
 And coming into
 Its own hour.

The Old Man

Sri L. N. Sahu,

Gandhi, the old man, Gandhi, the old man,
Oh, how strong is he, oh wonderful, indeed,
He dies not, kill him if you will, he dies not,
He is immortal, he is a Satyagrahi, he is an
Undying hero.

Gandhi, the old man,
Is built after many a Sadhna,
He fought with the fire of youth,
He fought with the flames of desire,
He killed all ignoble impulse, he rose high,
He played with the wind, he played with the fire
in the company of high stars,
He crosses past them, he sees the Mahamaheswari,
the mother of the universe.
He walks over the earth, walks over another,
yet another,
Every place is his, nothing strange.
He is power, being one with the Mahamaya.
This is Gandhi, the old man.
He lives, as the embodiment of the ache and anger
of Hindustan.
He is all fire, he is all beauty.
For over twenty years he passes through what fire.
He pulls the whole of Hindustan with him through
power, through deliverance.
The enemy is all round, the war drums are
beating high,
But Gandhi, the old man, who has crossed the
youth safely,
A great Sadhak, all ascetic in mind,
He is India's living voice and symbol.

The Martyred Man

Sri Sadhu T. L. Vaswani

I woke this morn with a song in my heart
Like the breeze in yon tree ;
It said : "The Dream will yet come true ;
For God's dreams are Deeds ;
And India's Dream of Liberty is His."
"Where is the way to victory?" I asked ;
And my lute answered :
"They who suffer win."

Walled and sentinelled to-day
Is the great-souled Gandhi ;
But when did walls and prison bars
Sunder soul from soul ?
The saint in suffering has to-day,
His mystic throne in a million hearts ;
And round the world the rumour runs :
"Might battles with Right once"

Imprisoned,—they say ;
I say : his soul goes marching on ;
And even in the dark,
His faith, springing up as the light,

Speeds from heart to heart ;
And still his meek spirit leads
The struggle which has one only end :
For freedom cannot die.

Homage to him :—
The Apostle of Unity and Love ;
I see his vision pass
Into the Nation-Life,
Over us still the blessings of heroes
And the gods and *rishis* of old ;
And still our Gandhi leads us on.

Comrades, at this dark hour of our Destiny,
I yet believe in this belief,
I yet have faith that something Beautiful
Will be the final end of India's ills ;
And every morning sun
I worship with a wounded heart,
Brings the healing message of the Martyred Man :
A suffering nation still shall win.

Mahatma Gandhi

Sri Yone Noguchi

Not a king in agony,

But a saintly little goat smiling on his bare legs,

Cricket-lean, steel-stiff.

(Gandhi is lying down ill in a tent pitched on the
roof of a house

Where the love of the sunlight falls like rain.)

Pointing at a cotton bag on his head, he says:

"Sprang I from the earth,—'tis Indian earth that
crowns me!"

Feeling safer to be paid by God what the world
owes him,

A warrior in combat near Heaven with a prospect
of unseen victory,

Blowing a bugle that rings to the last gulf of Hell

A lonely hero challenging the future for response,

Withered and thin,

But with a mammoth soul shaking the world in fear;

Through this man love, profaned and ignored,

Through this man life's independence, shattered and
fallen,

Through this man, body—labour thrown from
honour and prize,

Cry rebel-call against tyranny. May God's justice
assent and praise !

A sad chanter of life close to the mother-earth,
(Where is there a more burning patriot than this
man ?)

A lone seeker of truth denying the night and self-
pleasure,

(Where is there a more prophetic soul than this
man's ?)

Al pilgrim along the endless road of hunger and
sorrow.

In joy of seeking a man in the form nature first
fashioned,

A man worshipping God through serving the poor,

A man feeling lighter because of his possessions
all lost,

("Who-but the poor can save other poor?")

I left Gandhi's tent, descending the staircase,

Into the outward yard where nature, unknown to
caste and censure,—

Birds and trees are magnanimous in peaceful song.

Under the shade of tree, three goats are playing,—

I pass by them, the symbol of toleration and love.



Tread softly, world, perhaps a Christ leads on

Today in India.

—*Mary Siegrist*



तुम उदार-चेता होने के नाते 'महात्मा' हो इसमें संशय ही क्या ? वरंच हमारी दृष्टि में तो मन, वाणी और कर्म का जो अविच्छिन्न एकत्व तुममें प्रतिष्ठित है, उस कारण ही तुम सब 'महात्मा' हो ।

शास्त्रों में वर्णित 'स्थित-प्रज्ञ' की चर्चा तो सभी जानते हैं पर क्या सच्चा 'स्थित-प्रज्ञ' इस जगतीतल पर तुम्हारे सदृश कोई दूसरा भी है ?

'बोधिसत्त्व' की लोकपावनी कथा सर्वत्र बहुश्रुत है । वर्तमान काल में तुम्हीं बोधिसत्त्व की अभिनव मूर्ति हो ।

इस पौराणिक सत्य को सभी जानते हैं कि 'तप की महिमा अद्वितीय है, उसके प्रभाव से देवराज इन्द्र का भी सिंहासन हिल उठता है ।' तप की इस शक्तिमत्ता में जिसे सन्देह हो वह इस महापुरुष के दर्शन कर अपने को निःसंशय बना ले ।

कहाँ तो लँगोटी पहने हुए यह मुट्ठी भर अस्थियों की देह और कहाँ वह असंख्य शस्त्रास्त्रों से सज्जद आंगल सम्राट् ! किन्तु फिर भी वह सर्वथा सुरक्षित सम्राट् इस महात्मा से पग-पग पर काँपता है ।

जिसमें विश्व का अनन्त मङ्गल प्रतिष्ठित है वह महात्मा युग-युग तक जिये और विजयी हो ।

कुसुमाञ्जलि

पंडित महादेव शास्त्री

जिस समय भारतीय जनवर्ग कुटिल काल-चक्र से निष्पीडित है, निष्ठुर शासन-शक्तियों से निगडित है, अनवरत विषपान कराये जाने से मूर्च्छित है, अस्थिर चित्त, निर्बल मति, आकुल और विखुलित है, उस दुष्काल में भारतवर्ष की प्रताडित राजलक्ष्मी तुम्हें छोड़कर और किस महापुरुष को आशान्वित दृष्टि से देखे ?

जिसके सिर से लेकर पैर तक बँधी हुई कठोर लौहशृङ्खलाएँ चारो ओर फनफना रही हैं वह भारतवर्ष की राजलक्ष्मी इस समय तुम्हारे अतिरिक्त और किसकी शरण में जाय ?

महामारत के अवसर पर भगवान् श्रीकृष्ण भी जिस प्रशस्त नीति का अवलम्बन न कर सके, उस अहिंसा रूपी अस्त्र का तुमने आविर्भाव किया है ।

जब सत्य अवसर हो रहा है, धर्म को अधर्म ने आच्छादित कर रखा है, पृथ्वी युद्ध-ज्वालाओं में भस्म हो रही है, मनुष्य-जीवन प्रतिपद संशयाक्रान्त है, उस बेला में तुम्हारे अतिरिक्त भूमण्डल पर अहिंसारूपी दिव्य शक्ति को कौन धारण करता ?

वह सत्याग्रह दिग्दिगन्त में अभिवन्दित हो जो चिरन्तनी सफलता का प्रतीक, प्रशस्त पराक्रमशालियों का अद्भुत शस्त्र, और साम्राज्यवाद को कँपा देनेवाला तेजपुञ्ज है।

वह अहिंसा सर्वत्र विजयिनी हो जिसकी हिंसा किसी भी प्रकार नहीं हो सकती और जो जागृति एवं शक्ति की पूर्वपीठिका है।

हे अँगरेज़ शासक ! 'भारत छोड़कर चले जाओ' के नारे से तुम घबड़ाओ मत। अपने दर्पमार्ग को छोड़ दो और देखो कि 'मोहन' के इस उच्चाटन मन्त्र में तुम्हारा भी कल्याण निहित है।

जो सत्याग्रह का व्रत धारण किये है (पक्षे-सत्यभामा के परिग्रहण के लिये प्रतिज्ञाबद्ध है), प्रशस्तचक्र-रेखा जिसके हाथ में है (पक्षे-चक्र नामक अस्त्र धारण किये है); जो पूर्ण तपस्वी है, परदुःख-दुःखित है, शक्तिशाली सम्राटों पर भी प्रभाव रखनेवाला है (पक्षे-राजा बलि को छलनेवाला है) उस 'मोहन' (महात्मा गांधी तथा श्रीकृष्ण) के प्रति सबकी भक्ति बढ़े।

सत्य में आसक्त (सत्यभामा में अनुरक्त), पवित्र-आत्मा, महापुरुषों के समान सदाचार में निपुण, गोरक्षा के कार्य में यशस्वी (गोवर्धन धारण द्वारा यशस्वी), चक्ररेखा से युक्त पाणिवाले (हाथ में चक्र धारण किये), जनवर्ग के पथ प्रदर्शक, अपने युग के अद्वितीय कर्मयोगी, प्राणिमात्र की हितकामना में तत्पर, परमेश्वर पर भरोसा रखनेवाले (शिव के पूजक), मानवकुलश्रेष्ठ, अव्याजभव्य, 'मोहन' (भगवान् श्रीकृष्ण) इस भारत भूमि की रक्षा करें।

शुभाभिनन्दन

पंडित गोपाल शास्त्री

भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में अर्जुन से कहा था कि जो जो विभूतिमान सत्त्व हैं उन्हें निश्चय ही मेरे महातेज का अंश समझो। हे मोहन ! इसीलिये गुणिजन तुम्हारा अभिनन्दन करते हैं; तुम्हारी पूजा वस्तुतः सगुण परमेश्वर की पूजा है।

इस कलिकाल में अस्पृश्यता-निवारण आदि चौदह रत्नों को तुमने आविर्भूत किया है अतः हे महात्मा तुम सच्चे अर्थ में 'रत्नाकर' हो।

पश्चिमीय शासन-प्रणाली द्वारा शोषित होने से जो अकाल महामारी आदि सङ्कटों से परित्रस्त है, उस भारतवर्ष को छोड़ देने के लिये (क्विट इण्डिया) तुम इन लोलुप शासकों से आग्रह करते हो, अतः हे समयज्ञ तुम्हीं पूजनीय हो।

तुम अपने ही प्रभाव से विश्व का नेतृत्व कर रहे हो। संसार के विज्ञ पुरुष तुम्हारी नीति का स्वागत करते हैं। वह समय दूर नहीं जब समस्त संसार तुम्हारे निर्दिष्ट पथ पर अग्रसर होगा।

सत्याग्रह रूपी चक्र तुम्हारे हाथ में है, अहिंसा के कवच से तुम आनद्ध हो,

और राष्ट्रीय महासभा रूपी रथ के तुम सारथी हो, फिर तुम्हें किस बात में भगवान् श्रीकृष्ण से कम समझें ?

हे महात्मन् ! तुम चिरजीवी रहो । जनता को अपने प्रशस्त पथ पर अग्रसर करते रहो । इस भूमण्डल को पश्चिमीय-शासकों के बन्धन से मुक्त करो । समस्त देशवासी स्वतंत्र और उन्नमपरायण हों । कोई भी देश किसी परदेशीय राजा के शासन में निगडित न रहे । यही मेरी मङ्गल कामना है ।

गांधी-गुणगौरव

श्री भट्ट मथुरानाथ शास्त्री

दत्त कर्णधार की भाँति जो राजनीति-नौका के भीषण घर्षर को शान्त कर देता है, भारत के अभ्युदय के लिये सत्याग्रह-रूपी धार्मिक युद्ध में जो युधिष्ठिर के सदृश अनधीर चेता है, एवं कौरवों के समूह की भाँति वर्तमान विरोधी दल को अपने वश में कर लेता है; महामना होने के नाते जो सदा माननीय रहा है तथा दृढ़ता में पौरव-नरेश के सदृश जिसकी प्रशंसा हो रही है, उस महात्मा गांधी के गुणगौरव का गान आज जगतीतल के समस्त महापुरुष कर रहे हैं ।

गान्धिस्तव

श्री हरिदत्त शर्मा शास्त्री

जो जगन्मङ्गलकारी हैं, परम दीनबन्धु हैं, करुणा के समुद्र हैं, पाण्डित्य के निधि हैं और तपस्विकुल-चन्द्रमा हैं, ऐसे महात्मा गांधी सैकड़ों वर्ष तक अमर रहें ।

‘जिसका मुखकमल, स्वर्गज्ञा की तरङ्गों के सदृश ताम्रहारी, पवित्र, निर्मल एवं अमृतवर्षी वचनों का लास्यग्रह है उस लोकोपकार-व्रती महात्मा का हार्दिक सम्मान कौन न करेगा ? घने अन्धकार-पटल को ध्वस्त करनेवाले भगवान् भास्कर की अभिवन्दना कौन नहीं करता ?’

जिसने अपने जीवन के अमूल्य ७५ वर्ष जन-कल्याण के लिये दान दे दिये, उस महात्मा को भगवान् महेश्वर सौ वर्ष की आयु और प्रदान करें ।

नमस्कृति

श्री लक्ष्मीकान्त शास्त्री

कहाँ तो वह साम्राज्यवाद का भीषण स्वरूप जो नर-शोषित का आचामक है तथा जिसे कृपाणों के कठोर मस्तकों से अनन्त अनुराग है; और कहाँ यह अहिंसाप्राण, कौपीनधारी, दुर्बलकाय महात्मा जिसने संसार की स्वतन्त्रता के लिये अपने को कारा में आबद्ध कर रखा है ! पर समस्त राजचक्र उस महा-पुरुष की शक्ति से काँपता है, इन्द्र भी उसके तेज के आगे नत-मस्तक हो जाते हैं । उसे हमारी नमस्कृति ।

जिसका प्रशस्त यश, विशालकाय दिक्पटों पर स्वर्णतूलिका चला रहा है; निःशस्त्र होते हुए भी जो शस्त्रधारियों का विजेता है; जनता जिसकी पूजा अपने मनोलोक में अनवरत कर रही है; भगवान् बुद्ध की पवित्रतम सिद्धि का जो नवीन अवतार है और सत्य की अभिनव समृद्धि है उस महापुरुष के आगे हमारी नमस्कृति ।

पुष्पाञ्जलि

श्रीनारायण शास्त्री

सामन्तशाही के प्रति अत्यन्त निर्भीक रहनेवाले जिस व्यक्ति ने देश के कष्टों को पराजित किया उस भारत-भूतिलक रूप सौभाग्यशील महापुरुष का अभिनन्दन कौन न करेगा ?

‘महात्मा’ शब्द जिस महापुरुष का पर्याय हो गया है, जो नवयुग का निर्माता है और अपने हाथ में चक्र (रेखा विशेष एवं अस्त्र विशेष) धारण किये है वह मोहक स्वरूपवाला ‘मोहन’ (गांधी तथा कृष्ण) सर्वदा विजयी हो ।

जो सांख्यपुरुष के समान अपनी अजा प्रकृति (जनता एवं प्रधान) को अपनी उपासना (समीप आनयन एवं मतानुसरण) द्वारा कृतार्थ करता है, जो शान्त, स्वरतिशील तथा तटस्थ है उस ‘मोहन’ स्वरूपवाले महामुनि को हमारा प्रणाम ।

अभिनन्दन

श्री विन्ध्येश्वरीप्रसाद शास्त्री

सत्यव्रतधारी, राजनीति में परिपक्व बुद्धिशाली, अनुराग और द्वेष से विहीन, शुभ्र मतिमान्, अपने लोकोपकारी गुणों से महापुरुषों को मुग्ध कर देनेवाले, मातृभूमि के सर्वश्रेष्ठ सेवक, कर्मवीर, यतिराज, श्रीमोहनदास कर्मचन्द्र गांधी युग-युग तक विजयी हों ।

महापुरुष तुम्हारे विषय में यह निश्चय नहीं कर पाते कि तुम हिरण्यकशिपु के दुर्नीति-कानन को भस्म कर देने के लिये उत्पन्न प्रह्लाद हो ? या लोकोपकार के लिये अपनी अस्थियों तक को दे डालनेवाले महर्षि-दधीचि हो ? अथवा करुणावतार भगवान् बुद्ध हो ? अथवा अपने शत्रुओं के परममित्र एवं शान्ति-महोदधि ईसामसीह हो ?

इस संसार में कुछ महापुरुष सत्य के धनी, कुछ प्रशस्त परोपकारी, कुछ देशसेवा के अग्रदूत, कुछ करुणा के महासागर, कुछ महान् तत्त्ववेत्ता, और कुछ शिक्षा-विशारद हो चुके हैं तथा हैं; पर तुम्हारे ऐसा सर्वगुणनिधान महापुरुषरत्न संसार में किसी भी जननी ने पैदा नहीं किया ।

समुद्र के अन्तस्तल में निलीन असंख्य रत्नों और आकाशमण्डल में मरी तारिकाओं के गिनने में भले ही कोई समर्थ हो जाय पर तुम्हारे गुणों की

गणना नहीं हो सकती, सहस्रमुख शेषनाग भी इस कार्य में अशक्त होंगे, फिर हमारे ऐसे व्यक्तियों की बात ही क्या ? हमारी भगवान् से यही प्रार्थना है कि वह तुम्हें चिरायु और धार्मिक-दृढ़ता प्रदान करें ।

भगवान् अवतीर्ण

श्रीमती पंडिता चमाराव विदुषी

दीन-दुखियों के सहायक और किसानों के परम मित्र ने स्वदेश के लिये अनवरत रूप से महान् कार्य किये हैं ।

चतुर्दिक्-व्यापिनी कीर्त्ति, निर्ममता और निरहङ्कारता ने उसकी महत्ता को चक्रवर्त्तियों के वैभव से भी सहस्र गुणित बढ़ा रखा है ।

उस दूरदर्शी ने बहुत पहले से बता रखा है कि हम लोग अँगरेजों के शासन-काल में स्वतन्त्र होने के अतिरिक्त उलटे परतन्त्रता में अधिकाधिक जकड़ते चले जायेंगे ।

उसने मोहग्रस्त भारतीयों के कान में यह महामन्त्र फूँका कि 'स्वधर्म' को बड़ी से बड़ी विपत्ति पड़ने पर भी नहीं छोड़ना चाहिये ।

किसानों की वर्तमान दुर्दशा जानने के लिये और उसके मुख्य कारण की खोज के लिये उसने समस्त ऐश्वर्य का परित्याग कर कष्टों से अपनी मैत्री की और भारतवर्ष के गाँव गाँव का पर्यटन किया ।

उसने समझाया कि 'परतन्त्रता मृत्यु से अधिक दुःख-दायिनी है । दासों का जीवित रहना मरे के ही समान है ।'

उसकी अद्भुत महत्ता भारत पर अपना निर्बन्ध शासन कर रही है । वह वस्तुतः कोई स्वर्गीय विभूति है—मानुषी शक्ति नहीं ।

स्रष्टा ने इस अन्धकारावृत भारतभूमि को प्रकाशित करने के लिये उस महात्मा में अद्भुत तेज निहित किया है ।

तो क्या इस भू-लोक पर फैले अधर्म को नष्ट करने और शान्ति को स्थापित करने के लिये स्वयं भगवान् ही गान्धी के रूप में अवतीर्ण हुए हैं ?

भारत वसुन्धरा के अमूल्य रत्न और गान्धिकुल के अक्षय प्रदीप उस सिद्ध तुल्य महात्मा को मेरी यह गीति समर्पित है ।

जय जय

श्री ईशदत्त शास्त्री 'श्रीश'

हे युग के जागरण दूत ! तुम विजयी बनो ।

भारत के व्यक्त स्वाभिमान ! कोटि कोटि जनवर्ग के नेता ! मृदुल ! मधुर ! मङ्गलमय ! मदमत्सर विरहित ! अभिनव अजातशत्रु ! वशीकरण के मधुर निर्माता ! तुम विजयी बनो ।

मधुर मुसकान के मेघ ! जगदाभूषण ! गीता के उपदेश ! अग्नि में कूदने-
वालों के लिये विजय-संजीवन ! जन-मय-भंजन ! तेजोमय ! जगत्प्राण ! जगद्-
वन्द्य ! जनरञ्जन ! समस्त लोकों के एकमात्र प्राण ! भू पर अवतीर्ण परमेश्वर
के अंश ! आर्यधर्मपरिचायक ! तुम जन-कल्याण के लिये शत वर्ष पर्यन्त
जीवित रहो ।

हे युग के जागरण दूत ! तुम विजयी बनो ।

स्वागत

श्री वादरायण

हे महात्मन् ! तुम्हारा अभिनव शान्तिमन्त्र सुनकर यह उच्छृङ्खल जगत्
शान्त हो रहा है । मानवमात्र इस तत्त्व को समझ गया कि संहारक अस्त्र-शस्त्र
वस्तुतः शान्तिस्थापना के लिये बूथा हैं । तुम इस लोक के देव हो और तुम्हीं
इस लोक के सबसे बड़े सेवक हो । तुम्हारी वाणी में जो अक्षय्य शक्ति भरी है
वह भारत को स्वतन्त्रता देनेवाली हो, यही हमारी कामना है ।

यह दिवस धन्य है जब कि बम्बई के समुद्रतट पर असंख्य नर-नारी तथा
बालक स्वागत के लिये एकत्र हैं क्योंकि हिंसा-गर्त से संसार का उद्धार करने-
वाले जगद्गुरु इंगलैंड की राउण्डटेबिल कान्फ़रेंस से वापस आ रहे हैं ।

भारत पारिजात

स्वामी श्री भगवदाचार्य

जो भारतवर्ष की परतन्त्रता को सर्वदा के लिये नष्ट कर देने में प्रयत्न-
शील है, अतएव जिसने कारागार को अपना वासस्थल चुना है, वह भारत-
कल्पद्रुम चिरजीवी हो ।

जिसके दर्शन से मानवमात्र के हृदय में शान्तिसागर उमड़ पड़ता है
तथा जो महामना केवल कौपीन धारण करता है, वह भारत-कल्पद्रुम चिर-
जीवी हो ।

जिसके पवित्र आत्मबल, अद्वैत धैर्य, सर्वश्रेष्ठ बुद्धि, अविचल दृढ़ता और
परम शान्ति का आश्रय प्राप्त कर यह भारतभूमि ऐश्वर्यशालिनी बन सकी है
वह भारतकल्पद्रुम चिरजीवी हो ।

जिसके ज्ञानबल का अवलम्बन कर भारतीय जनता परतन्त्रता-सागर के
पार उतर सकती है, एवं जो अज्ञातशत्रु संसार में सर्वत्र वन्दनीय हो रहा है,
वह भारत-कल्पद्रुम चिरजीवी हो ।

गांधी सोऽयं जयतु भुवन

श्री भदन्त शान्ति भिन्दु

धूर्त-दुःशासन के द्वारा अपमानित द्रौपदी की भाँति यह भारतभूमि अन्य

किसी को भी अपना शरण न पाकर जिस 'मोहन' का आश्रय ले रही है वह चिरजीवी हो ।

बौद्ध लोग सर्व-निर्वैर-भाव को ही धर्म बताते हैं । तथोक्त सर्वनिर्वैरभाव को ही मुख्य आधार मानकर जो अपना कर्तव्य-पथ निश्चित करता है एवं प्राणि-मात्र के समस्त दुःख को हर लेना चाहता है, भगवान् बोधिसत्त्व का अनुगमन करनेवाला वह परम-कारुणिक गान्धी जगतीतल पर विजयी हो ।

गांधी महाराज

श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर

गांधी महाराज के धनी औ' दीन शिष्य अनेक ;
पर एक ऐसी बात है जिसमें सभी हैं एक,
हम पेट के हित दीन - पीड़न में नहीं अम्यस्त,
मुक्ते न धनियों से कभी होते न भय से त्रस्त ।

होते मुसण्डे जब जमा
मुक्के उठा, डण्डे धुमा,

हम उन मुसण्डों से विहँस कहते यही ललकार,

ये लाल आँखें देखकर
बालक भले ही जायँ डर,

डरते नहीं हम, डर दिखाते हो किसे बेकार ?

बेबाक सीधी औ' सरल,
हम बोलते भाषा विमल,

उस डिप्लोमेसी के नहीं इसमें कहीं कुछ पेंच,

जिसकी पकड़ को अतिघना

कानून पड़ता छानना,

यह बात सीधे जेल में लेती हमें है खेंच ।

दल बाँध कर जो मनचले

घर-बार अपना तज चले

फिर मिट गया उनके सकल अपमान का अभिशाप,

चिर काल की वह हथकड़ी

खुद खिसक भूपर गिर पड़ी

औ' भाल पर लग गई गांधीराज की चिर छाप ।

दिन के उजाले में भी दीपक जलाकर अरे ओ मौजी ! तू यह कौन-सा आड़ा-टेढ़ा लेख लिख रहा है ? सुन, नगर के पथ पर कोलाहल उठ रहा है—‘गांधीजी’ ‘गांधीजी’ !! वातायन से यह किसकी किरण-रेखा किस नवीन ज्योतिष्क से विकीर्ण होकर चली आ रही है ? किस चंद्र के अनुराग से जन-समुद्र में आज तरंगें उठ रही हैं ? जगन्नाथ के निशानधारी रथ का वह कौन सारथी है जिसके लिये कृतार की कृतार उत्सुक नर-नारी राह देख रहे हैं ! किसान के वेश में कुशदेह—अग्नि की लय छवि के समान—वह कौन जगत् के यज्ञ में सत्याग्रह के द्वारा प्राणों की हवि अर्पण कर रहा है ? किसकी पताका को घेरकर वकील और मंज़दूर परस्पर प्रेमालिंगन कर रहे हैं, किसकी मृदुवाणी में गर्वीं गोरों की भेरी का शब्द आज डूब गया है ? किसकी भिन्ना की झोली में कोटि-कोटि मुद्रा आ समाती हैं, किसकी कीर्ति ऐसी महा-सुंदरी है, किसकी अँगुलियों के इशारे पर कोटि-कोटि हिंदू-मुसलमान आज संकल्प-तत्पर हैं ! आत्मा के जल से पशुबल के मस्तिष्क में किसने सनसनी फैला दी है ? वह कौन है जो इतना सा है फिर भी सर्वपूज्य है ?—‘गांधीजी’ ! ‘गांधीजी’ !

साधारण श्रमिक के हृदय को भी जिसने महाजीवन के छंद से भरपूर कर दिया है, प्रेम की तिलक-छाप देकर धनी-निर्धन को जिसने एक कर लिया है; जिसका आचरण कोटि-कोटि कविताओं का मनोरम निर्मल है, जो अपने कर्म में मानो मूर्त महाकाव्य है, चरित्र में अनुपम है; जिसके देशभाई दैन्य के कारण सारे विलास त्यागकर गाढ़ा पहनते हैं, नंगे पाँव फिरते हैं, कमली फैलाकर सोते हैं; जिसकी तपस्या छोटे से छोटे के साथ भी देशात्मबोध है; रोज़न्दार मंज़दूर की तीन आने पैसे की खुराक से भी जो खुश है; अपनी ही इच्छा से जिसने दीनता अस्त्रियार की है, गरीबों को हृदय के निकट खींचा है, लाख-लाख कवियों की सधन अनुभूति लेकर जिसने प्यार किया है; हिंसा-सेवित आवास में भी अहिंसा ही जिसकी परम साधना है, जिसका आसन बुद्ध के क्रोड़ में, टात्सटाय के पार्श्व में है; दीनतम व्यक्ति को भी जिसने गूढ़ आत्म-सम्मान सिखलाया है; जो आत्मा की शक्ति से ही पर्वत-प्रमाण बाधाओं को उल्लंघन कर चलता है, वीर-वैष्णव है जो, विष्णु के तेज की उज्ज्वलता से भीना जो व्यक्ति है वही भारतवर्ष की पुलक के समान गांधीजी हैं, गांधीजी हैं ।

काफ़िरों के देश अफ़्रीका भूमि में—विक्टोरिया नगरी में—जिस धीर ने बार-बार स्वदेशवासियों के प्रेम के अर्थ क्लेश सहा, उपनिवेश के कुशासकों ने जज़िया कर को अग्राह्य करके बनिया-मोदियों को आत्मशक्ति पर निर्भर होना सिखलाया, जिनका फ़ुटपाथ पर चलना भी निषिद्ध था उनका सजातीय बनकर

जिस वीर ने गोरों के चाबुक सहकर भी अपने इस सामान्य अधिकार के प्रयोग का संकल्प किया, मार खा-खाकर जो बेहोश हो गया फिर भी संकल्प नहीं त्यागा, बार-बार जिसका जुरमाना करके अंत में गौरांग प्रभु ने हारकर बंद-कानून को रद्द करके ही चरम रिहाई पाई। धीरज में वह वीर पृथिवी में अग्रणी है, अद्वितीय है। प्लेग-प्लावित मज़दूरों की वस्ती में उसने सेवा का व्रत लिया, बोअर युद्ध के जूल्म युद्ध में ज़ख्मियों को ढोता फिरा। वकील-मज़दूर-मोदी-महाजनों को लेकर पल्टन खड़ी कर दी, उपनिवेशों की बात पर विश्वास करके अपने प्राण होम दिये। काम के समय अंग्रेजों ने जिसे 'काजी' (कर्मठ) माना था, काम निकल जाने पर वही पाजी हो गया। हाय री बर्णवाधा ! बातों के हीनमना कप्तानों ने जब अपनी बात नहीं रखी, बीते युग के लुब्ध करने-वाले जज़िया-कर को अन्तुगुण रखा, तब जिस व्यक्ति ने कुलियों की मज्जा में वैष्णव-सेना संघटित करके धैर्य और वीर्य द्वारा जगत् को मुग्ध कर दिया—वही ये गांधीजी हैं।

जिसने सागर पार स्वदेश का सम्मान प्राणपण से जीवित रख छोड़ा, गोरों किसानों के देश में निग्रह सहकर नीग्रो-कुलियों का साथ दिया, विदेश में स्वदेशी वट का पौधा रोपकर अपने ही हाथों से विश्वास का पानी सींच-सींच जिसने उसे सँजो-सँजोकर बचा रखा; भारतीय प्रजा को चोर की तरह थाने-थाने नाम लिखाते फिरना होगा—समाचार सुनकर अँगुली की छाप देकर जिस विधि से उस अविधि को निर्मूल करने की विधि निकाली; देशात्मा को अपमान से बचाने जाकर जो कारावासी हुआ—पुण्य ज्योति की ज्वाला जलाकर जो जेल का अधिवासी हुआ; भय-तरण के सुधा-क्षरण की जो उदाहरण माला के समान है। देशी कुली, देशी कोठी वाला कोई किसी का निषेध नहीं सुनता, देखते-देखते सारे जेलखाने भर उठे ! झुंड-के-झुंड अनगिनती स्त्री-पुरुष कैद हो चले, धनीमानी स्वेच्छा से दिवालिए हो गए—तब भी प्रण नहीं त्यागा। लुब्ध शिशु को छाती से लगाए देश की प्रेमिका मज़दूर नारी जिसके इशारे पर कष्ट-कारा वरण करने दौड़ पड़ी; जिसकी दीक्षा पाकर निरक्षर भी दुःख की नदी में संतरण कर पाया—छाती से सद्य पाई हुई मर्यादा को चिपटाए ! चिरपदानत तामिल-युवक जिसकी मंत्र-गर्भ फूँक के निश्वास से ही अमर पारस छूकर जाग उठा ! जिसके चारित्र्यगुण से मुग्ध होकर पुलकित पोलक मित्रता करने आए ; जिसके दीपक से आज भारत और विलायत में सबने आग जलाई और जिसकी यह कीर्ति सुनकर विदेशियों ने भी जिसे अपने प्रेम-पाश में—अपनी राखी में—बाँधा, प्रेमी एन्ड्रूज़ ने जिसके लिये अयाचित मित्रता का उपहार सँजोया; ट्रान्सवाल से फ़िज़ी तक सभी जिसे अपना ही मानते हैं, वही जीर्ण पिंजर के अधिवासी, महान् गरुड़, गांधीजी हैं।

एशिया निरा मज़दूरों का ही घर नहीं है, इसे जिसने प्रमाणित किया; नरनारायण की सेवा का आदर्श, महामानवता, जिसने श्रमिकों में भी संचरमाण कर दी; धैर्य और प्रेम का पाठ, देह और मन द्वारा विशुद्ध सत्य का पालन जिसने सिखाया, इस पथ पर जिसने पठानों के चेलों की लाठियाँ खाई, जो विधाता की उस स्वर्णोज्ज्वल पताका को लिये हुए है जिसके एक ओर “सत्य” और दूसरी ओर “जीवमात्र पर प्रेम” का मंत्र अंकित है; सत्याग्रह की दाह में गलकर जो विशुद्ध कांचन प्रमाणित हुआ है; देश की सेवा के साथ ही साथ जिसकी सत्याराधना भी चलती है; अटूट काम की धारावाहिकता के बीच भी जो साबरमती के वरणीय तट पर ध्यानासन से मौन बैठ पाता है; तपस्या की वृद्धि के लिये ब्रह्मचर्य ही जिसका उपार्जन है; तर्कजाल के घटाटोप में जिसके प्राणों का दीपक उज्ज्वल रहता है; मेहतर की कन्या को भी उठाकर जो पालता है, अशुचि नहीं अनुभव करता; नौकर की सेवा जिसे कुबूल नहीं—क्योंकि वह मानव को छोटा करना है; छोटे-बड़े के अन्तर में जिसने आत्मा की शाश्वत ज्योति लाभ की है; दास बनने और दास बनाने—दोनों को ही जो चित्त की अधोगति मानता है; जो देश के प्रेममय कोष में आसीन है, शक्तिबीज का बीज है, जिसके अन्तर में वैकुण्ठ है; वह गांधीजी यही हैं !

दर्पी का दर्पनाशक, भारत को पवित्र करनेवाला है यह वणिक-पुत्र ! शुचि-महिमा में जो सहज अवहेलासहित द्विजकुल को भी लजित किए है; कुंठा-हीन वैकुण्ठ की ज्योति जिसके मन में जाग्रत् है; कर्त्तव्य के आह्वान पर कभी दंड मेलते जो कुंठित नहीं है; नील की खेती और चाय के काण्डकारियों के राज्य में मज़दूरों का क्रंदन सुनकर कामरूप और चंपारन के अरण्यों में आँसुओं के मोती चुनता फिरता है; शासन-पीड़ित अकाल कायरों को जिसने मार्मिकता सिखाई; प्रजा का सदा का मीत—जो स्वयं बीड़ा उठाकर लगान-वन्दी करने जुट गया; जिसने पहली बार विधिवत् राजा और प्रजा को यह समझाया कि राज करना केवल हुकुम चलाना और डिगरी जारी करना नहीं है; बीज-बखर कुर्क करना, अकाल के समय मालगुजारी हाँकना—यह सब अत्याचार है, यह हमारी भारत-भूमि में और नहीं टिकेगा—नहीं चलेगा; सात-सात सौ गाँवों में जिसने अमोघ सत्याग्रह की मेरी निनादित की; राजा के दरबार में निःशंक होकर प्रजा की शिकायत पहुँचाते जिसे विलंब नहीं होता; जो अभय व्रत का व्रती है; सम्पूर्ण शंकाएँ हरण करता है; विश्वप्रेम के प्रपंचप्रदीप द्वारा मज़दूरों-श्रमिकों की आरती करता है; सुधन्वा और प्रह्लाद जिसके महीयान् आदर्श हैं—जिन्होंने पिता की आज्ञा पर भी आत्मा का अपमान नहीं किया; चित्तौर की वीणापाणि वैष्णवी मीरा जिसका आदर्श है, जिसने राजा के आदेश पर

राजरानी होकर भी सत्य की पूजा नहीं छोड़ी; जिसके जप की माला में सारी दुनिया के सत्य के पुजारियों का मेल है—यूनान के शहीद सुकरात के यहू-दियों के दानियाल तक—जिसकी बातचीत से ही बन्दी मन के बंधन छिन्न होते हैं, हे कवि, आज उसी की आगमनी गाओ, गांधी का जयगान करो !!

एशिया के अधिकार, हारूँ की स्मृति, इस्लाम के सम्मान में जिसकी मर्मवीणा के तारों में पीड़ा से प्राण काँप उठे, उदार छाती लेकर समग्र एशिया व्यथा का स्पंदन वहन करते हुए सब हिंदुओं की ओर से जिसने प्रत्यक्ष खिला-फत पर हस्ताक्षर किए; चित्तबल की फाँकी दिखाकर जिसने आह्वान का संवेदन पाया; तूफान की विशृंखलता को जिसने सत्याग्रह के छंद में बाँधा, प्रीति की राखी से जिसने हिंदू-मुसलमान दोनों को अनायास बाँध दिया; पञ्चनद के जलियाँवाले की ज्वाला जिसके प्राणों में सदा जाग्रत रहती है, भारतीयों के प्राण-हरण का अपना अधिकार समझनेवालों अन्यथा करने के लिये जो दुर्नि-वार रथी भारतीयों का सेनापति हुआ; दैवदत्त धर्म-रोष की तलवार जिसके हाथों सत्याग्रह के रसायन-संपात से सोना हो गई; वर्तमान शासन के साथ स्वतंत्र शासनतंत्र की लड़ाई ठानकर जो सदा देश-देशान्तरों में अभय मंत्र देते घुमा-फिरा; जिसकी महावाणी शक्ति का आधार है; जो कभी लेश भी अनुदार नहीं; जिसका कुछ भी लुका-छिपा नहीं—जो सरेबाज़ार यह घोषित करता है: “स्वराज्यप्रयासी देशवासी ! जागो; स्वराज्य स्थापन करना होगा; त्याग की क्रीमत देकर ही हम वह धन खरीदेंगे, तपस्या से उसे स्थायी बनाएँगे । जो कुछ अपने वश में है, वही तो स्वराज्य है, वही तो सुख की खानि है; अपने कर्म के लिये जो दूसरों का मोहताज नहीं, उसी को स्वराज्य पाया मानना । स्वपाक में स्वराज्य है; अपने ही हाथों अपने वस्त्र बुन लेने में स्वराज्य है; देश के शिष्य-पोषण पर अपना ही सहज अधिकार स्वराज्य है; अपनी ही भाषा बोलने—अपनी ही रीति से चलने में स्वराज्य है; अशुभ को दोनों पावों से कुचलते चलने में स्वराज्य है; अपनी भूलों का स्वयं ही संशोधन कर डालने में स्वराज्य है—इसे अनुभव करने में कि विधाता की सृष्टि में प्राणी का अपने प्राणों पर अपना ही अधिकार है, स्वराज्य है । उस अधिकार में जो व्यक्ति ‘प्रेस्टिज’ की वजह दिखाकर हस्तक्षेप करता है, उस समय स्वराज्य का अर्थ अमला—तंत्र के साथ जूझ जाना है । अपने हाथों अपनी ही शिक्षा का हथियार स्वराज्य है—स्वप्रकाश के पथ पर चलना स्वराज्य है, अपनी ही देशी पंचायत में अपना फ़ैसला करना स्वराज्य है । ऐसे स्वराज्य की माला को जो अपने चारित्र्यबल से स्वायत्त करता है, उसीके करगत संसार की सारी दौलत होती है; हाथों के भीतर ही इसकी चाबी है, प्रयत्न करते ही पाओगे । अपने को अक्षम समझने की भूल न करना ।” जो

सबके निकट यह महामंत्र घोषित करता है, आत्म-अविश्वास का जो अरि है, जो मूर्तिमान् विश्वास है, जिसने आज तक पराजय नहीं जानी, हे कवि, आज उन्हीं गांधी का जयगान करो !

हँसो मत, हे ह्रस्वदृष्टि ! हँसो मत ! विश्व की तरह मत हँसो, अविश्वासी, मूर्त्त तपस्या पर श्रद्धा रखना सीखो; अविश्वास के विष-निश्वास से प्राण छीजते हैं, विश्वास से विश्व पर विजय होती है—विद्रूप से नहीं। व्यंग-माँ, तू अपना व्यंग-वंग बखान बंद कर; ठुक देख, भारत का मधुचक्र किस तरह गुंजन से मुखरित है; मौँरा भी आज मधुमक्खी हो उठा है जिसके पुण्यबल से, उसकी बात यदि कुछ जानती हो तो कह। मन कुतूहल से आन्दोलित है। यदि मालूम हो तो सुना कि मोहनदास की महादुश्मन सुरारात्नसी—बोतलस्तनी पूतना—किस कौशल से अपना मतलब सिद्ध कर रही थी; मतवाले के हाथ से बोतल छीनकर कौन तैलिक कारावास चला गया; कौन लाट अशोक की लाट को मदिरा के इशितहार से ढक रखता है ! यदि मुझे पता हो तो बतला कि आबकारी-युद्ध का क्या फल हुआ; मध-जातक का क्या फिर मगध में अभिनय शुरू होगया ? अरे ओ मूढ़ ! तू आज केवल छल अन्वेषण करता मत भटक। छोटी-मोटी कौनसी बात कब-क्या कह दी थी, उसी का जवाब देते मत फिर। 'गोकुल' श्रेय है अथवा 'खानाकुल', इस कलह को आज रहने दे, देशव्यापी जो जीवन का ज्वार आज उमड़ रहा है उसी को देख ले। यदि बन सके तो पवित्र होकर उसी जल में अवगाहन कर ले, महान्-आत्मा महात्मा किसे कहते हैं, तनिक देख ले, पहचान ले !

इतना बड़ा विराट् आत्मा क्या कभी तूने देखा है ?—देश जिसका प्रिय आत्मीय है, तब भी जो विश्वासहीन है ? दूरबीन लगाकर विश्व लोग घोषणा करते हैं कि सूर्य के हृदयपट पर कालिमा अंकित है ! क्या इससे उसके भास्वर प्रकाश का एक कण भी कम होता है ? उसी कलंक को छाती में वहन करके सूर्य प्रतिदिन जगत् को आलोक से परिपूर्ण किए हुए है, प्रति देह, प्रति पुष्प में रश्मि का ऋण बढ़ाता जा रहा है, उसे प्रीति से भरे दे रहा है। हर मोपड़ी में जिसने होम-शिखा प्रज्वलित की है, हर मज्जदूर-किसान को जिसने सम्मान-भर्यादा के पावन तिलक से सम्मानित किया है; कृषकों के घर-घर जिसने नव-पौरुष पहुँचा दिया है; जिसके वरदानस्वरूप शिल्पी का घर आज कर्म की पुलक से ओतप्रोत है, जिसके आह्वान पर तीस कोटि चित्त ने आज संवेदना दी है; देश की खतौनी में आज साधारण आदमी भी यश का अंक लिखे जा रहा है; जिसकी वाणी शिरोधार्य करके आत्मविलोपी कर्मीसंध आज दुःसह दुःख का वरण करके चुपचाप व्रत का पालन किए जा रहा है; छात्रों के त्याग से, स्थाय के त्याग से, आज वायु पुलकित होकर

मातृ-स्वातन्त्र्य का पवित्र मंत्र लेकर अनेक वीर पवित्र जीवन का उपहार हथेली में लिए खड़े हुए हैं। युद्ध में उनके मस्तक, हाथ-पाँव, संधि-बन्ध और अस्थियाँ टूट रही हैं। इनकी उन्हें कुछ चिन्ता नहीं। सिर भले ही चला जाय। देह की मिट्टी भले ही मिट्टी में मिल जाय परन्तु धाव का प्रतिकार धात से नहीं करना, यही उनकी टेक है। अपने प्राणों को अर्पण करते हुए परम प्राण की ज्योति का जगाना ही उनका ध्येय है।

वह देखो, उग्र हिंसा की अग्नि भड़क रही है और वहीं पर दुर्बल देहयष्टि-वाला परन्तु विपुल आत्मशक्तिवाला एक मानव खड़ा है।

वह अपनी परम सात्विक, सकलस्पर्शी और गहरी दृष्टि से दशों दिशाओं को निहार रहा है और अंधकार के दुर्ग को तोड़ता हुआ चला जा रहा है।

प्रतिक्षण चैतन्य की सतत ज्योति को निहारता हुआ वह असंख्य मानवों को अभय दान दे रहा है।

बंधुओ, इस विश्वयज्ञ में प्रिय की प्राण की और सर्वस्व की आहुति देकर ऐसी उग्र साधना को साधकर, विश्वशांति को प्राप्त करना !

माया, ममता और भीरुता अनेक प्रकार के भय दिखाती है। परन्तु एक बार कमर कसकर उठे हुए वीर विश्राम नहीं लिया करते !, कीर्ति के कांचन में मिली हुई श्यामता को वे तीव्र आँच में तपा तपाकर परिशुद्ध करते हैं।

यह तो बंधन और मोक्ष का महाविग्रह प्रवर्तित हो रहा है। विश्वदेव, हे महाकाल, उस पर आप अपने अमृत का अभिषेक करना !!

नाखुदा

श्री स्नेहरश्मि

सागर की सपाटी पर नौका वेग से बहती जा रही है। लहरों की मधुर ध्वनि आ रही है। ऊपर चन्द्रतारिकाएँ मधुर गान गा रही हैं। नन्हे-नन्हे बाल-वृन्द खेल कूद मचा रहे हैं। जहाज़ के फ़र्श पर यात्रीजन भी आनन्दपूर्वक इधर उधर घूम रहे हैं। किसी के मन में कोई चिन्ता नहीं है। सभी के हृदयों में सुरम्य स्मित लहरियाँ विलस रही हैं।

परन्तु ज़रा उस क्षितिज की ओर निहारो। वह देखो एक श्यामल घटा उमड़ती आ रही है। समुद्र पागल सा होकर सहसा ताण्डवं नर्तन करने लगा। ज्योत्स्ना रानी विलीन हो गई ! वे उज्ज्वल हास्य विनोद शान्त हो गए ! एक पलक भर में सारा दृश्य बदल गया। भीरु जन काँपने लगे ! सर्वत्र भय का राज्य छा गया !

परन्तु वह देखो, पतवार के पास वह माँझी सौम्यरूप में पर्वत सा अचल खड़ा है। अकेला, धीर गंभीर, स्थिर और अडिग वह कर्णधार खड़ा है। सदा समस्वर रहनेवाला वह अविचल है। उषा-संध्या और अहोरात्र उसके लिए समान है।

वह सदा जागरूक है, मानो समस्त विश्व को वह एक ध्रुव में ही निहार रहा है।

हे भव्य वृद्ध बापू

श्री हरिहर प्रा० भट्ट

भारतभूमि के लिए—नहीं नहीं समस्त संसार के लिए—आज का दिन कितने सौभाग्य और आनंद का है। आज विश्ववन्द्य संत गांधीजी की जन्म-जयंती है। संसार के इतिहास में इतने सुदीर्घ समय तक इने गिने संतजनों की देह-यष्टि टिक सकी है। जिस संत के कारण विश्व में भारत का मस्तक उन्नत बना हुआ है, उसकी आज जयंती है। दीन भारतवर्ष के कष्ट-हर्त्ता हैं वृद्ध बापू, आप शतवर्ष तक जीवित रहो।

कविवरो आओ, हे दिव्य गायको पधारो, हे कलाकारो पधारो ! कई सदियों तक तुम्हें अपनी कला को सँवारने के लिए ईश्वर के अतिरिक्त ऐसा उत्तम अन्य कोई विषय मिलनेवाला नहीं है। हमारे कला-विहीन जीवन किस काम के हैं ? जिस बापू की जीवनकला समस्त कलाओं को प्रेरणा देती है उसकी वंदना करो। सत्य-सौंदर्य के भक्त हे वृद्ध बापू, हमारे जीवनो को प्रेरणा देने के लिए आप शत संवत्सर तक जीते रहो।

भगवान् बुद्ध और महावीर स्वामी ने जगत् से दूर रहकर अपने धर्मजीवन में प्रेमपंथ का प्रदर्शन किया था। जगत्-समुदाय में और राज्य के कार्य में उनका वह संदेश अधूरा रहा था। परन्तु हे वृद्ध बापू, तुमने जीवन के समग्र अंगों में प्रेमतत्व की कार्य-घोषणा कर दिखाई है। इस उदात्त तत्व को हमें सिखाने के लिए, शाश्वत प्रेम से पूरिपूर्ण हे भव्य वृद्ध बापू, तुम शतवर्ष जीते रहो।

महात्मा गौतम बुद्ध ने बोधिवृक्ष की छाया में विश्व के लिए महासंस्कृति भेजी थी। इसीप्रकार ईसामसीह ने क्रौंस पर चढ़कर अपनी माया द्वारा एक महासंस्कृति भेजी थीं। आज साबरमती नदी ने पावनतीर पर हे बापू, आप भविष्य के लिए एक विश्वपोषा महासंस्कृति का नवसर्जन कर रहे हो। उस संस्कृति का प्रवाहपूर अभी दूर है। उसे लाने के लिए हे विश्व के प्यारे बूढ़े बापू, सौ वर्ष तक जीवित रहो।

हे बापू, तुम भौतिक देह की भूमिका से ऊँचे हो, बौद्धिक धरातल से भी ऊँचे हो। तुम आत्म-बल के धरातल पर भ्रमण करते हो। तुम बौद्धिक-दृष्टि के-क्षितिज से परे सत्य का क्रान्त दर्शन करते हो। आपकी दुर्बल देह मुझी भर अस्थियों पर टिकी हुई है। आत्मबल के न जाने कितने अद्भुत चमत्कार अपने दिखाए हैं। विश्व में उस आत्मशक्ति को भरने के लिए, दिव्य भारत के हे भव्य वृद्ध पुरुष बापू, तुम शतवर्ष तक जीते रहो।

गिरगिट प्रथा को दूर करने के लिये दक्षिण आफ्रिका में गांधी जी ने सत्याग्रह किया था। उसमें आठ मज़दूरों पर गोलियाँ चलाई गई थीं। उनमें से एक मज़दूर की विधवा स्त्री 'गांधी राजा' के चरणों में गिरकर विलाप करती है। इस प्रसंग को इस काव्य में चित्रित किया गया है। वह बेचारी गांधी राजा से अपनी करुण कहानी कहने आई थी। उसके दिल पर न मालूम क्या गुज़र रही थी कि वह 'अरे ! गांधी राजा !' के सिवा कुछ भी नहीं बोल सकी। उसकी वाचा काँप उठी, गला भर आया। उसकी आँखों से मूक वाणी के रूप में टप टप आँसू टपकने लगे। गांधी के चरणों में उसने अपना सिर रख दिया। गांधीजी की आँखें मूँदी हुई थीं। उनके दिल में भी एक बड़ी भारी हलचल मची हुई थी। इस वक्त का दृश्य मानों, भगवान् बुद्ध, अर्ध विकसित आँखों से चरणों में गिरी हुई प्रेमाद्रं सुजाता को देख रहे हों, ऐसा लगता था। अभी इतिहास के पृष्ठों पर लिखे हुए रक्त के लेख सूखने भी नहीं पाये थे कि गांधीजी ने अहिंसा रूपी अमृत से सींचे हुए शब्दों से एक नया पृष्ठ लिखना शुरू किया। गिरगिट प्रथा से भारतीय मज़दूरों की रक्षा करने के लिये उन्होंने आफ्रिका में सत्याग्रह शुरू किया। अनेक कष्टों को सहन कर, शत्रु का हृदय परिवर्तन किया। गांधी के उस नये युद्ध ने एक वीर हृदय युवक की बलि ली। उस युवक की तरुण विधवा आँखों में आँसू भरकर गांधी के चरणों में गिर पड़ी। उसके मुख से केवल इतने ही शब्द निकले, "अरे ! गांधी राजा"। गांधी के चरणों की धूलि पर उसका सिर सुहाने लगा। उसकी आह से उनके पैर जलने लगे तथा वे आँसू से भीगने लगे। इतना ही नहीं, उनका हृदय भी द्रवित हो गया। अभी तो वह वीर नर-जीवन में खेले जानेवाले सैकड़ों युद्धों के द्वार पर खड़ा था। अभी उनके दिल में न मालूम कितनी लड़ाइयाँ लड़ने की तीव्र अभिलाषाएँ थीं, अभी उनके हृदय में सारे संसार को आवृत कर देनेवाला प्रेमपूर्ण रूप से प्रकट भी नहीं हो पाया था कि ऐसी एक करुण कुरवानी उनके समक्ष हो गई। उनके दिल में एक बड़ी भारी उथल पुथल मच गई। सारे हृदय के गहरे मंथन के बाद उसके मुँह से निखरी हुई वाणी निकलने लगी। "अरे बहन ! तू रो मत। तू अपने पति को मरा हुआ न मान। वह तो सब लोगों की आज़ादी के लिये मरा है। वह अमर हो गया।" इतना कहते कहते गांधी जी का गला भर आया। उन्होंने अपने हाथ से उसे उठाया। उसके कंधों पर उस महापुरुष का स्नेहार्द्र कर आ गया। गांधीजी की वेदनापूर्ण आँखों में आँसू आ गये, मानों दुनिया के दुःख का सारा जल इन दो नयनों में आकर इकट्ठा हो गया हो। वाचा स्थिर थी।

आँसू भी स्थिर हो गये थे। सहसा गांधीजी के मुँह से ये शब्द निकल पड़े—
 “हे बहन ! तेरे समान ही हिन्द की कितनी ही स्त्रियाँ पति हीन होंगी तब मातृभूमि
 स्वतंत्र होगी। मेरी मोलीमाली पत्नी की भी तेरी ही जैसी दशा होगी तब
 भारत को स्वातंत्र्य मिलेगा।”

त्रिमूर्ति

श्री सुन्दरम्

बुद्ध

जन्म से ही प्रणय रस की दीक्षा पाया हुआ यह संसार संताप से संतप्त
 और खिन्न हो रहा था, रुदन कर रहा था। हे तथागत, तुमने उस संतप्त विश्व
 को अपनी गोद में उठा लिया। अपने हृदय की प्रेम-ऊष्मा देकर तुमने उससे
 कहा—“शान्त हो प्यारे, दुःख की दवा रुदन नहीं है।”

उसकी बूटी को खोजने के लिए आपने वन उपवन छान डाले ! तपश्चर्या
 की और गुरुओं की चरण-सेवा की। उन सबकी व्यर्थता निहारकर अपने
 अन्तःकरण के समस्त तत्वों को समाहित किया। उस आन्तरिक महासमर
 में विषय-वासनाओं पर विजय पाकर और दुःखविनाशक बूटी को खोजकर
 आप बाहर आए।

धैर्यपूर्वक आपने उन विरल सुख-मंत्रों का जगत् को उपदेश किया।
 विश्व को हिंसा से हटाया, कुटिलता से हटाकर सरलता की ओर प्रवृत्त किया !
 सृष्टि के पाप-सागर को आपने अपने मुख से पी लिया। विश्व की फुलवारी
 को आत्मौपम्य के सलिल से सींचनेवाली करुणा-गंगा आपने प्रवाहित की।

हे प्रभो, आपके मंत्र युग-युग में प्रकट होते रहे हैं। तुम्हारे द्वारा अहिंसा
 के मंत्र जगत् में प्रथम बार प्रबुद्ध हुए।

ईसा

यह संसार स्वार्थ और शक्ति के मद में डूबा जा रहा था। उन्मत्त शक्ति-
 मान् लोग निर्बल दरिद्रों को पीसते जा रहे थे ! लोग हृदय से प्रभु को भुला
 चुके थे। दुनिया की भौतिकता को ही सर्वस्व मान रहे थे ! सर्वत्र नरक लीला
 का विस्तार हो रहा था !

ऐसे विषम समय में मृदुवचन बोलते हुए प्रभुपुत्र ईसामसीह अवतीर्ण हुए !
 उन्होंने कहा—दुःख भोगकर ही सुख का मिलन होगा ! बिना कष्ट सुख की
 प्राप्ति नहीं होती ! वह प्रभु का बालक संसार के संताप को शीतल करने के
 लिए अमृत की सुराही लेकर विश्व में घूमता रहा !

अत्याचारियों के आसन डोल उठे ! शक्ति-मद से भरे ताज सरक गए ! उसी समय प्रभुविरोधी लोगों की क्रोधाग्नि प्रज्वलित हो उठी। उस क्रोधाग्नि में तुमने अपनी आहुति देकर विश्ववेदना को भस्म कर दिया !

तभी वहाँ बलिदान के जलों से उफनती हुई शांति-सरिता प्रकट हुई। उसी के करुणास्नान द्वारा धक्-धक् जलता हुआ जगत् शीतल हो गया

गांधी

पृथ्वीतल पर पुनः पशु-बल का युग उदित हुआ। संसार के समर्थ मनुष्यों ने विद्युत्, वायु, जल और स्थल को अपनी मुट्ठी में कर लिया। शक्ति के उन्माद में पागल पुरुषों ने निर्बलों का शिकार शुरू किया और वहाँ पर जनरुधिर से रंगे हुए अनेक प्रासाद खड़े हुए !

वसुंधरा काँप उठी। संसार पर मलिन दुःख की छाया आ गई। उसी समय धरती का समस्त रुदन गांधी के रूप में प्रकट हुआ। चट्टानों के भयानक मार्ग में बहनेवाली वह धारा प्रथम तो अतिप्रगल्भा हो उठी, बाद को प्रसन्न और सरल होकर कहने लगी—“पापी का घात मत करो; उससे तो जगत् के पाप द्विगुणित हो जायँगे। अपने आत्मा के गुप्त बल के साहाय्य से तुम पाप के साथ युद्ध करो। अपने हृदयमंदिर में प्रभु को साक्षी रखो ! शांत मन से प्रतिद्वेषी का हित चाहते हुए युद्ध करो। इस प्रकार पाप विनष्ट हो जायगा।

हे प्रभो, तुमने पृथ्वी के उदर में विश्वप्रेम के बीज बोए थे। उन बीजों के वृक्ष आज फूल फल रहे हैं।

मनमोहन गांधी

श्री ललित

हे गांधी ! तू ही सच्चा भारतीय है। तू ही हम सबका कुशल कर्णधार बन। हम भारतीयों की अस्थिर जीवन नौका अस्तव्यस्त दशा में इधर उधर टकरा रही है। उसका योग्य एवं समर्थ कर्णधार एक मात्र तू ही है। राजा एवं प्रजा के हितों का देशव्यापी मंथन हो रहा है। हे कर्णधार ! उसमें से नवनीत निकाल लेने की सामर्थ्य एकमात्र तुझमें ही है। जनता के संसार रूपी महाराज्य में भारतीय स्वतंत्रता की आवाज़ को हे कर्णधार ! तू ही बुलंद कर सकेगा।

तूने ही भारतीय नामक जाति को जन्म दिया है और उसे विश्व विख्यात किया है। हे कर्णधार ! तू ही आज सत्याग्रह में अग्रसर हो रहा है। तू उदात्त भावों सहित वीरता के अनेकों मनमोहक प्रसंग सामने लाता है। हे मृग ! तू ही भारत के लिए कस्तूरी अपने अंदर धारण करता है। हे सुदामापुरी के उज्ज्वल

गुजराती

उन्तीस

दीप ! कृष्ण-स्मारक को अनुग्रह रखनेवाले वीर भारत नाविक ! तू ही एक मात्र कर्णधार है। हे गांधी ! हम समस्त हिन्द-सन्तति पग मिलाकर आपका अनुगमन करें। हमें ईश्वर शांति एवं जय प्रदान करें। आप ही हमारे कर्णधार बनें।

युग-अवतार

श्री मस्तमथूर

हे भारत के दुःखों में सहायता देनेवाले, चेतना के अचूक निर्भर ! विराट् में अपने को लीन करनेवाले, तीस करोड़ के तारनेवाले !

सत्य के प्रकाश ! जाग्रत ! कर्म रूपी कविता के रसखोत ! हे मोहन ! हे नवयुग अवतार ! आप का प्रताप अतुल एवं प्रभात के समान जाजुल्यमान है। हे प्रलयपति ! आपकी गति को कोई रोकनेवाला नहीं है। हे नीलकण्ठ ! आपने विषम विष का पान किया है। हे सिंह के समान बली जनों के साथ रहनेवाले ! नूतन हिंद के सृजन करनेवाले। हे मोहन ! हे नवयुग अवतार !

अर्पण

श्री कोलक

हे गांधी ! प्रज्वलित प्रकाश स्रोत से प्रकट होकर तुमने प्रति भारतीय हृदय में पूर्ण स्वातंत्र्य की ज्योति जगा दी है और चिर मुक्ति की प्राप्ति के लिये लहराते हुये स्वतंत्रता के झंडे को सगर्व धारण करके समर-पथ की राह ली है। बापू प्रेमपूर्वक दलित भेद को मिटाकर तुमने हिंदूधर्म का कलंक समूल धो दिया है। आपकी जाग्रत आत्मा के तप मानवीय इतिहास में नित नवीन बने रहेंगे और नवयुग का निर्माण करने में समर्थ होंगे।

अनंत काल सदैव गर्जना करता रहेगा, और मौन रूप से पृथ्वी तुम्हें कोटि कोटि नमन करती रहेगी।

हे पिता ! आपके स्मारक-दीप को चिरकाल तक प्रज्वलित रखने के लिये भावपूर्ण कविता द्वारा मैं स्वयं आपके चरणों में नमन करता हूँ।

महात्मा

श्री भास्कर रामचन्द्र तांबे

असहकारिता ने जब तुम्हें पुकारा तो ऐसा लगा कि तुम नीचे आ रहे हो। महात्मा ने जब आर्तनाद किया तो हृदय पर आपने आघात भेले। उसी यज्ञ से द्रवित होकर देव आप दौड़े आते ज्ञात हुए। ऐसा लगा जैसे स्वर्ग के द्वार खुल गये, गरीबों की माँ दौड़ पड़ी, सारे संकट भाग गये।

तीस

मराठी

द्रौपदी के लिए तुम दौड़े थे, गरीबों के लिए कमरी-डंडा तुमने लिया था, लगा जैसे वह समय आ गया। पर हाय ! कौनसा पाप बीच में आया। भाग्य बिगड़ गया, माता लौट पड़ी। अन्धकार अब दूना हो गया, दिशाएँ भीषण हाहाकार करने लगीं, कैसी गति हो गयी !

महात्मा अकेला क्या करेगा ?

श्री माधव ज्यूलियन्

इधर उधर के देशभक्त और नेता महात्मा को जीत रहे हैं। धन, उपाधियाँ, आदि होने पर ये देशभक्त बन जाते हैं। नेता, मानपत्र जुलूस, करतल ध्वनि और जयजयकारों से पोसा जाता है। इनकी कला खेल खेलती है, अज्ञानी गरीबों पर संकट आता है। महात्मा अकेला क्या करेगा ?

एक भी सिद्धांत के लिए प्राण देने की तत्परता नहीं, पर उनके लिए शाब्दिक लड़ाई नित्य लड़ेंगे। ये केवल स्वार्थ के लिए धर्म की ओर देखते हैं, ये शूरवीर घर की बूढ़ी का ज़रूर बलिदान लेंगे। महात्मा बेचारा अकेला क्या करेगा ?

छात्रावस्था में जो उग्र दल के थे, मुँह से तोप के गोले फेंकते थे, वे ठंडे होकर सरकारी नौकरी करते, फिर आराम कुर्सी पर लेटकर कहेंगे—देश में आग लगी है। महात्मा बेचारा अकेला क्या करेगा ?

सत्य-अहिंसा का झंडा लेकर गांधी देशभर में शक्ति का संचार करते हैं। चरखे के चित्रवाला खादी का झंडा लेकर अर्ध नग्न यह अन्याय का सदैव विरोध करता है। अनासक्तियोग का वरण कर यह शोषितों-पीड़ितों की सदा सहायता करता है। यह क्रांति करने निकला है, मैदान में पहले अपना सिर देने के लिए तैयार है, यह हीरा कसौटी पर घन लगाने से भी नहीं फूटेगा, पर महात्मा अकेला क्या करेगा ?

न शिष्यों का प्रपंच है, न गुरु या पैगंबर हुआ है, सच्चा वैष्णव यही है, भीरुता और क्रियाशून्यता को वह अहिंसा नहीं मानता, दुर्बल का संन्यास यह बलवान् साम्राज्यवाद से लोहा लेता है, न इसे लोकमान्यता की विभूति है न राजमान्यता की, पर महात्मा अकेला क्या करेगा ?

कटु, पर सत्य बोलने में जिसे डर नहीं लगता, राजनीति में सत्याग्रह की नयी चीज़ जिसने सिखायी, पर उसके मुँह पर मीठी बात करनेवाले, भीरु हैं और संकट मोल लेते हैं। ये लोभी और गला काटनेवाले हैं, इसीलिए महात्मा अकेला क्या करेगा ?

महात्माजी

भगवान् तुने विश्व को बड़ा शुभ संदेश दिया। मानव इससे अपना जीवन सुखपूर्ण कर सकेगा। वैराग्य, क्षमा, तपश्चर्या, मैं एक मुख से इन सबका स्तवन कैसे करूँ ?

तुम हमारे आशा और आधार हो, तुम्हारे चरित्र से हमें स्फूर्ति प्राप्त होती है। तुम भारत-भूषण हो। तुम्हारी सत्कीर्ति के भूषण त्रैलोक्य धारण करेगा। लोकहित के लिए तुम्हारा जीवन धन्य है।

तुम बुद्धावतार हो, नये ईसामसीह हो, तुम्हारे पद की मैं पूजा करूँ ताकि अल्प भी उन्नति की आशा मन में हो जाय।

मेरी गीता, श्रुति स्मृति, सत्संस्कृति तुम्हीं हो। आपके जीवन से मुझे उन सबके अर्थ मालूम हो जाते हैं। पुण्य तो तुम मूर्तिमान हो।

इस प्रज्जुब्ध सागर में तुम भारत के लिए दीप हो। हमारे निर्जीव अंतर में तुम श्रद्धा का निर्माण करते हो। हम मृतों को तुम जीवन और उत्साह देते हो। अमृत पिलाकर तुमने राष्ट्र को जगा दिया है।

तुमने दृष्टि, पथ और आशा दी, राष्ट्र को तेज दिया, प्रजा को मार्ग दिखाया। इसी मार्ग से यदि वह जायगी तो स्वातंत्र्य प्राप्ति निश्चय है।

तुमको विश्राम नहीं, सूर्य की तरह तुम जलते रहते हो। हमें जगाने के लिए अपन हड्डियाँ घिस जाने देते हो। तुम्हारा सारा जीवन दग्ध होम-कुंड है। तुम्हारी चिंता मैं कैसे हरण करूँ ?

तुम्हारे कोमल हृदय में होली जल रही है। चिंता यह सताती है कि देश-बंधुओं को पेट भर खाना कैसे मिले। इसी चिंता का चिंतन तुमको नित्य-प्रति नये मार्ग दिखाता है।

हज़ारों कर्म हाथ से करते हो, पर शांति और मुसकान बनी रहती है। हृदय में कोई आसक्ति नहीं। शेष पर विराजमान हरि के समान तुम दिखाई देते हो, जो समुद्र ऊपर से लुब्ध होने पर भी भीतर से जिस प्रकार शांत रहता है।

तुमसे ईश्वर का वियोग कभी नहीं होता। मैं तुम्हारा कितना वर्णन करूँ। मैं पागल बालक हूँ। अश्रुओं से आँखें भर आई हैं। जिस भारत में तुम्हारी जैसी महाविभूति का जन्म हुआ उसका भविष्य अवश्य उज्ज्वल होगा।

अद्भुत रण संग्राम

श्री आनंदराव कृष्णाजी टेकाडे

भारतवर्ष मुख और प्राण से स्वातंत्र्य का जयघोष करते हुए स्वातंत्र्य दुर्ग लेने और गले में लगी फाँसी के बंधन से मुक्त होने के लिए आगे बढ़ रहा है।

इसका शरीर सुदामा जैसा है पर मूर्ति सूर्य के तेज और मयंक की शांति जैसी है। गोकुल के कृष्ण की तरह श्याम वर्ण का यह स्वतंत्रता का पुतला शोभा देता है।

आज तक जितने स्वाधीनता-संग्राम हुए उन सबमें खड्गों की झनकार होती और रुधिर की नदियाँ बहती रहीं, पर यह नया रण आश्चर्यजनक है।

शत्रु बड़ा कुटिल है, उसके पास अनंत शस्त्रास्त्र हैं, जहाँ वह सागर है वहाँ यह लुद्र झील। वह स्वार्थियों में अग्रणी, तामसी, निर्दय, पत्थर को भी लजानेवाला मदांध है। इधर केवल यह फकीर है।

इस राहु रूपी शत्रु के पाश में भारत शशि पड़ गया है। यह पहले लक्ष्मी-धर था, परवश हो अब अस्थिपंजर रह गया है।

इसके पास कोई शस्त्र नहीं, हृदय में समभाव, आत्मबल और सत्य है।

दोन सेनक, धर्मवारक, पारतंत्र्यमंजक, मेरु का धीरज और बाल-सूर्य का हास्य ले, आत्मबल के साथ संग्राम के लिए चला है।

एक ओर विशाल तट है तो दूसरी ओर दुर्बल तृण। दोनों ओर ऐसे शत्रु हैं। एक क्रोधाग्नि की वर्षा करता है तो दूसरा मृदुल सुमन मानस से प्रेम लहरी फेंकता है।

गाधित्र की राजता, वशिष्ठ की सत्त्वता, कामधेनु आदि की कथाएँ आज फिर दिखाई देती हैं।

पारतंत्र्य-नरक से राष्ट्र को मुक्त करेंगे या मृत्यु का आलिंगन करेंगे—यह अमर प्रतिज्ञा कर अपनी प्रिय कुटी का अंतिम दर्शन कर वह रण की ओर जाता है।

द्वार पर रणमूर्ति भारत-भागीरथी बिदाई देने खड़ी होती है। जयजयकारों से आकाश निनादित होता है। कोई फूल बरसाता है, कोई प्रेमालिंगन करता है, कोई पद वंदन करता है कोई ललना तिलक लगाकर आरती करती है।

संसार सागर में ज्वार उठता है और धीर-गंभीर वीर अपने अनुचरों के बीच से जाता है। सुख-दुख की कहानियाँ सागर में उठकर आकाश में जा मिलती हैं।

हृदय के आनंद, प्रेम, भक्ति-रस के अश्रुओं की आँखों में भीड़ होती है और जलधारा की वर्षा होती है।

इतने में रवि का उदय हुआ। उसने यह सदियों का अभूतपूर्व दृश्य देखा और आश्चर्यचकित हो गया।

मथुरा गोकुल से अक्रूर के साथ वज्रमणि जब खलमणि का मर्दन करने निकला था वैसा ही फिर दृश्य देखकर उसे आश्चर्य हुआ।

वह हर्षित हो आशीर्वाद देता है कि इस अद्भुत रणसंग्राम के फलस्वरूप हिंदू सुखधाम हो जाय।

विद्रोही

यह नया विद्रोही आगे आया है, दुनिया इसके कारण आगे जा रही है, यह तारक है।

अँधेरा फैला है, मगड़े हो रहे हैं। यह विद्रोही एक कटाक्ष से उन सबको नष्ट करता है।

धर्मपर रुढ़ि पिशाची सवार हो गई है, अनाचार फैला है, सच्चा आचार यही विद्रोही दिखाता है।

अच्छूत दूर के हो गये थे, यवन शत्रु बन गये थे, पर अंग्रेज़ हृदय में समा गये थे।

सत्य पर मैल जम गया था, दंभ फैल गया था। देशभक्ति वेलगाम हो गयी थी। इसने सत्य की ज्योति जगा दी।

अंग्रेज़ी के आगे स्वभाषा हार मान रही थी। इसने मातृभाषा की वंदना कर उसे संतुष्ट किया।

दरिद्रता ने पेट में होली जला दी थी, देश दीन हो गया था, इसने जनता को उद्धार का मार्ग दिखाया।

स्वतंत्रता चली गई थी, दासता आ गयी थी, किसी की भी नहीं चल रही थी। इसने स्वर्ग का मार्ग दिखा दिया।

मुधारकों का आगरकर, भाषा का चिपलुनकर, स्वातंत्र्य का तिलक यह नरवर दुनिया भर में विद्रोह को सफल बना रहा है।

महात्मन् !

श्री विष्णु भिकाजी कोलते

हे महात्मा, तुम्हारा नाम मुँह पर आते ही मन में पावित्र्य मूर्तमान हो जाता है। दंभ नष्ट हो जाता है, चेतना विलीन हो जाती है, मूक भाव जग जाते हैं।

मन में सुख की ऊर्मियाँ उठती हैं, नयनों में आँसू भर जाते हैं, तुम्हारी विश्व-प्रीति त्रिलोक में शुद्ध मंदाकिनी की भाँति बहती है।

तुम्हारा स्वार्थ-संन्यास देखकर हरिश्चन्द्र भी लज्जित हो जायगा। शत्रु-मित्र सबको तुम्हारे नाम-संकीर्तन से आनंद मिलता है।

विश्व में तुमने आर्यभू को धन्य किया, तुम उसके कंठ का दिव्य मणि हो। तुम्हारा वंदनीय चरित्र हमें सदा स्वातंत्र्य-संपादन में स्फूर्ति दे।

महात्मा गांधी

श्री प्रभाकर दिवाण

यह फकीर चला, इसे किसी प्रकार की चिन्ता नहीं है। पैर में सीधी सादी चप्पल, सर्दी से बचने के लिए मोटा कंबल, निःशस्त्र यह वीर है।

शरीर पर मांस विलकुल नहीं है, खर्चने को एक पैसा नहीं, न पास में विद्वत्ता का कोई 'पास' है, पर है दबंग ।

ऐसे मिखमंगे के पीछे चालीस करोड़ जनता लगी है । सम्राट् भी इससे डरता है । मत्त धनी भी नत होते हैं ।

स्वातंत्र्य का यह नेता शरीरों का हिमायती, सत्य का मूर्तिमान् पुतला, शिर को हथेली में लिए खड़ा है ।

सत्ता से प्रमत्त बड़े बड़े गर्ववाले लोग भी इसके दास बन जाते हैं ।

देहात में पिकेटिंग

श्री अज्ञात

चलो सब जन मिलकर शराब को भगा दें । गांधी बाबा आया, कह गया, शराब को भगाओ, चलो भगावें । शराब आती है तो दुष्काल आता है, बोतल की बन आती है, गाय बैल बिक जाते हैं । माँ, बाप, सास, ससुर, बीबी किसी की परवाह नहीं रहती । कैसी यह शराब है । चलो दूकान घेर लें गांधी जी की जय जय बोलें ।

वह देखो महात्मा आया

श्री विठ्ठलराव घाटे

आसाम के चाय के बगीचे की एक कहानी । गांधीजी का नाम सुनकर कुली स्त्री-पुरुष अपना अपना काम छोड़कर भीषण जंगलों से पैदल चलकर चाँदपुर पहुँचे ? उन्हीं में नीचे लिखा गीत गानेवाली एक बच्चेवाली अनाथ स्त्री है ।

राजा, क्यों फिजूल चिपकतेहो, स्तन में दूध कहाँ है । चार दिन पूरेहो गये, रोटी का नाम नहीं मालूम । मत्त हाथियों का चीत्कार कान पर आता जाता है, फिर भी हम गांधीजी को देखने जा रही हैं । गांधीजी का नाम लेकर जंगल के कंदों का सेवन किया, झरने का पानी पिया । आसाम रौंद डाला । वह देखो महात्मा आया ।

वह चाय का बगीचा कैसा, वह तो इस लोक पर नरक है । जहाँ शरीर शरीरों के पाप का ही जवाब देता है, जहाँ काले-गोरे का भेद है । धन लोभ से उनकी आत्मा काली हो गई है । धनिक सुख भोगें, शरीर कष्ट भोगें, यह कैसे चलेगा ? वह समय बदल गया । वह देखो महात्मा आया ।

शरीरों की मूक तपस्या फलित होकर आकाश तक पहुँच गई । जुल्म की गद्दी हिली, इन्द्र का आसन डोला । शरीर के जूठे वेर जिस देवता ने खाये वह करुणासागर पिघल गया और यह यज्ञमूर्ति अवतरित हुई । इसमें वैभवविभूति नहीं, खादी के कपड़े पहनता है, पैर में चप्पल भी नहीं । शरीरों का ऐसा राजा है । वह देखो महात्मा आया ।

उसके दुर्बल कंधों पर तैंतीस करोड़ दुःखों का भार है। उसके निश्चल निष्ठुर नेत्र में अन्न की समस्या भरी हुई है। हिंदुओं के पिछले पापों का पहाड़ उसकी गर्दन पर है। उसका हँसमुख दीनों के द्वेष को भी हँसाता है। उसके विशाल हृदय में शोषितों और हरिजनों को आश्रय मिलता है। उसी को लाने चलो बिटिया। वह देखो महात्मा आया।

हे विश्वमानव !

श्री ना० ग० जोशी

प्रकृति के लुब्ध सागर के अंतर पर शेषशय्या पर योगनारायण योग निद्रा में तल्लीन थे। अनंतदल कमल पर हे विश्वमानव तुम्हारा उद्भव कैसे हुआ ?

चैतन्य के चार सजीव अणु असंख्य सूक्ष्म चेतनकोश—एक से दो, दो से चार, चार से बहुत्व को प्राप्त हुए। “एकोऽहं बहुस्यां, प्रजाजेय” —अनंत अणु को उत्कट सृजन की इच्छा हुई। एक से द्वैत का निर्माण हुआ, हे विश्वमानव उसी से तुम्हारा गूढ़ अपूर्व द्वंद्व विकसित हुआ।

ज्ञानमय और विज्ञानमय, सत-चित्त-आनंदमय, आदिकारण परब्रह्म विश्वसर्जन के उन्माद में वेहोश होकर कल्पनाकंप की लहर से एक तरंग अवकाश में तरंगित हुई—अब्ज सूर्य के, ब्रह्मांडव्यापी स्वयं संचार में इंद्र-गति से गिरा हुआ परागति से स्वयं गति में आया हुआ, विश्वकर्षण के कोण में सूक्ष्म अंश अगम्य अनंत वातावरण में घूमा और इन्द्रियविहीन सजीव अणु में मिल गया और तब हे विश्वमानव ‘संज्ञा’ का प्रादुर्भाव हुआ।

सूक्ष्म बीज से दंडकारण्य में भव्य वट का उद्भव हुआ। आमासोन की विस्तृत घाटी में साखू के वृक्ष बड़े हुए। कांगो की घाटी में दुर्गम भीषण जंगल का निर्माण हुआ। तब ‘संज्ञा’ का रेशमी कोश, तरल, तलय, अगम्य तंतुओं से बना असंख्य युग के परिवर्तन से पूर्ण हुआ। जानवर का वानर और वानर का नरयोनि में विकास हुआ। जीवन संज्ञा समूह-मति सामर्थ्य कल्पना इस गति से प्रगत होती हुई श्रेष्ठता को प्राप्त हुई है। हे विश्वमानव यह विवेक और सभी गौरव तुम्हारा ही है।

पर्वत-पहाड़, धातु और पत्थर, भीषण जंगल, जीव-जानवर, वर्षा के टापुओं में मत्स्य और भालू, हे मानव ! इन्हीं के साथ साथ तुम्हारा संज्ञाभव परिवेष्टित और विकसित हुआ। ऊषा में कमल पैदा हों और कुम्हला जायँ, बालू के कण में नंदन वन बनें और जल जायँ, चकमक पत्थर की चिनगारी निकलकर वहाँ सूर्यमाला प्रज्वलित हो और लय हो जाय। उसी प्रकार मिस्र, भय, असुर, रोम, यवन, पर्शु, सिंधु, जावा, द्रविड़, चीन, आदि स्थल-जल की संस्कृतियों का जन्म हुआ और वे नष्ट हुई। अपार अंबर की

बह रही है; राजभृत्य की वृत्ति के त्याग से राजपथ छायायान्वित है; जिसे अपने बीच पाकर हिन्दू और मुसलमानों ने वैषम्य छुट कर दिया है; 'आत्मसंयम' ही 'स्वराज्य' है—ऐसा समझकर परम प्रेम का उपभोग किया है; जिसके जीवन में हज़रत मोहम्मद का धर्म-शौर्य जाग्रत है, और बुद्धदेव की मैत्री-भावना से मिलकर जो आज नवीन सजा से स्फुटित है; जिसने सारे जीवन ईसा का क्रूस कंधों पर ढोया है; काँटों से भरी राह में जो विद्वत पैरों से 'सत्य'-व्रत की साधना किए जा रहा है; जिसके कल्याण से आलस्य आज चरखे को प्रणाम करके पलायमान होता है—कवीर की संस्कृति से भारत के नगर और देहात को जो परिपूर्ण किए हुए है, जिसके स्पर्श से हर निद्रालोक की अर्गला विच्छिन्न हो गई है; तीस कोटि प्राणियों के दिल जिसके आगमन से भर उठे हैं। ओ मौजी, आज उसी का स्वागत-गान उसी की आगमनी गा, गौड़-बंग देश, आज महात्मा पुरुषोत्तम गांधी का जयगान करो—जयगान करो !!

महात्मा गांधी के प्रति

श्री बुद्धदेव वसु

हम लोग पतंग-जन्मा हैं मूषिक हैं मृत्यु के
 अंधकार में पिंजरित; दुर्मिद्व के कराल आकाश में
 (हमारा) चिरस्थायी नाभि-श्वास उतरता है और चढ़ता है
 हताशा की दुःसीम गुमसुम में
 न दुःख है, न सुख है, न आशा है, न मनुष्यत्व है
 केवल धक्धक्
 धुकुर-धुकुर चलते हुए किसी प्रकार बच रहना
 केवल शून्य भविष्यत् में अंकित करना
 नियति काल-नेमि को अश्रु के अक्षरों में,
 इसके बाद अंतिम प्रहर में
 क्षीण आवाज़ में अनिश्चित ईश्वर को पुकारना ।
 जीवन मृत जड़ता में जीते रहना—और फिर भी जीते रहना ।
 इस निरन्त्र निश्चेतनता में क्या कहीं प्राण रह गया था ?—
 अबध्य, अवध्य, इतिहास,
 यह क्या उसी का आकस्मिक विराट् उच्छ्वास है ?
 यह क्या किसी अलौकिक अज्ञेय सत्ता का युगान्तरकारी अवतार है ?
 यह क्या सत्य है ? यह क्या सत्य नहीं है ?
 जान पड़ता है हमारे जीवित मृत्यु के
 दुर्गम गोपन उत्स से स्पन्दित
 रक्त वहनकारी हृत्पिंड हो; या सचमुच ही

इतिहास नियति का अलक्ष्य सारथी है
 या शायद हम लोग
 अनंत काल के समान नित्य मरकर भी अमर हैं ।
 यदि ऐसा न होता
 तो यह असंभव कैसे संभव होता
 हम तो जानते नहीं किस प्रकार
 किस दूर शताब्दी के उस पार से
 प्रति दिन बूंद-बूंद करके
 हमने ढाला है इस प्राणमय प्राण को,
 (हम) भारत के कोटि-कोटि हिन्दू मुसलमान ।
 तुम हमारे वही प्राण-संचयन हो,
 हमीं तुम हैं । निरन्न की, निर्बल की, मनुष्यत्व-वंचित की
 सर्वग्रासी अंधकार फटकर
 कब अग्नि फूट उठती है क्या कोई उसे जानता है ?
 हम कोटि-कोटि अचेतन हृदयों की आग्नेय कणिका
 जहां पुंजित होकर जलाए है असमाप्य, अनिर्वाण शिखा को,
 तुम वही आश्चर्य प्रदीप हो, प्रदीप के अपूर्व ईंधन हो,
 भारत के हे प्राण-पुरुष, हमारे प्राण-संचयन हो !

महामानव

श्री मोहितलाल मजुमदार

न जाने कब ऋषि के मन में तुम्हारा जन्म हुआ था—इस भारत की महा-
 मनीषा की तपस्या-काल में । जिन लोगों ने मानव मात्र में अभेद करके देखा
 था उन्होंने ही तुम्हें प्रथम बार देखा और जाना । इसके बाद तुम नाना युगों
 में मूर्ति धारण करके आए, मृत्यु का समुद्र मथित करके अमृतपान कराया !
 कुरुक्षेत्र में 'मा मैः' (मत डरो) की ध्वनि के साथ शंख बजा । प्रथम प्रेमी
 शाक्यसिंह का संसार में उदय हुआ ! पापलित पश्चिम में भगवत् कृपा ने
 ईसा का दान दिया ! और और भी एक मरु-संतान को (उचित) दिशा दिखाई !
 उसी एक वाणी मूर्ति को धारण करके तुम आए ! हे जीव और ब्रह्म के
 अभेदद्रष्टा, तुम्हारा चरण चूमता हूँ ।

हे प्राणसागर, तुममें प्राणों की समस्त नदियों ने पथ के स्लावन-विरोध को
 समझकर विराम पाया है । हे महामौनी, तुम्हारे गहन चेतन तल में महाबुद्धि
 को तृप्त करनेवाला मंत्र जल रहा है । हे धन्वन्तरि, मन्वन्तरकालीन महामंथ
 से निकला हुआ अविद्वेष रूप अमृत भांड देख रहा हूँ । जगत् जन की समस्त
 वेदना रूपी समिधा का आहरण करके उसी ईंधन में अपने प्राणों की हवि ढाल

दी है। ललाट पर तुमने महावेदना की मस्म टीका धारण की है, तुम्हारा जीवन होम हुताशन की ऊर्ध्व शिखा है। शंका को हरण करनेवाले तुम आहिताग्नि के पुरोधा हो ! हे यज्ञ-जीवन देवता ! मैं तुम्हारा चरण चूमता हूँ।

अपने निरामय देह में सबकी व्याधियों का भार ढो रहे हो। नमस्य होकर भी तुम सबको नमस्कार कर रहे हो ! चिर अंधकार को दूर करनेवाले तुम्हारे नयन प्रान्त में अंधी आँखों के अंधकार का अश्रु ढल रहा है। हे अर्द्ध-भोजन-कारी विरल वसन संन्यासी तुम सत्य संसार के नीचे आकर खड़े हो। आदि काल से लेकर अब तुम इसी प्रकार मगन रहे हो। हे महाजातक, यह जातक-चक्र कितना घूमेगा ! अपने को कितनी बार यज्ञ के यूप पर बलिदान करेगा—छोटे 'मैं'-समूहों को तुम्हारे रूप से मर देगा। मैंने तुम्हें पहचाना है, तुमने युग-युग में अवतार धारण किया है। हे बोधिसत्त्व, हे बुद्ध मैं तुम्हारा चरण चूमता हूँ !

ध्यानी के ध्यान में तुम्हारा अपना आसन चिरंतन है, जिस समय तुम इतिहास में पकड़ाई देते हो वह महान् क्षण होता है। देश-देश में तुम्हारे शुभा-गमन की वार्ता फैल जाती है; तुम्हारी कहानी देवालियों और मठों में कीर्तित होती है। वाद में जिस दिन भूलकर अपने ही लिये तुम्हारे नाम का जप करने लगते हैं—नर को भूलकर केवल 'नारायण' का मंत्र पढ़ने लगते हैं, अपने मन की स्वार्थसाधना की मूर्ति गढ़ने लगते हैं—दुनियादारी के अन्धे जगत् के आनंद की अवहेला करके रत्न और भूषणों के द्वारा मिट्टी के ढेले सजाया करते हैं—जगज्जीवन मूर्ति धारण करके, हे मानवपुत्र मैत्रेय, आओ, मैं तुम्हारा चरण चूमता हूँ।

हे महान् अतीत के साक्षी, हे तथागत आओ ! इस मरण शासन की मूच्छा से आहत पृथ्वी को देखो। हे मानवराज, काँटे का मुकुट सिर पर धारण करके आज मनुष्य का जयगान करो। हाथ के स्पर्श से महाव्याधि के भार को हरण करो—अपने आपको देखकर पुरुष और स्त्री धन्य हो जायँ। और बार तुम घर-घर पुकारते हो, 'मेरे पीछे चले आओ, भय का समुद्र पैदल ही पार कर जाओ, क्योंकि भय मिथ्या है।' हे मृतकनाथ, मरे हुआँ को फिर से नाम लेकर पुकारो। इस प्रेत-भूमि में रोदन के साथ यह कैसी काटा काटी चल रही है ? जितनी स्मशान भूमियाँ हैं, वे सूतिकालियों की शोभा धारण कर रही हैं—आज महादेव का नहीं—महामानव का—तुम्हारा—चरण चूमता हूँ।

धर्मवीर

श्री प्रभातमोहन बन्धोपाध्याय

दिन सुख से ही कट रहे थे। धर्म क्या है सो अच्छी तरह ही तो समझता था, श्रद्धा सहित नित्य उसे दूर से प्रणाम निवेदन करते किसी दिन भूल नहीं

बंगला

पन्द्रह

हुई। धार्मिक व्यक्तियों की चरणरेणु लेकर प्रतिदिन के स्वार्थ-द्वन्द्व में निःशंक होकर निमग्न था। जीवन आसान था।—

कि ऐसे ही समय तुम्हारी तीव्र ज्योति न जाने कैसे मेरी अंधी आँखों में अकस्मात् कहीं से आ-समाई ! हे धर्मवीर, तुम स्वार्थ की प्राचीर भग्न करके मत्त-मंमत्ता के समान आ पहुँचे। करोड़-पति से लेकर दीनतम गृहस्थ को तुमने घर से ठेलकर पथ पर ला खड़ा किया। कहा : “धर्म पोथी-पत्रा, मन्दिर और तपोवन में नहीं है, रणक्षेत्र की पैशाचिक हत्या के गौरव में भी नहीं है; देशमाता के नाम पर विदेश के शोषित वैभव में भी धर्म का निवास नहीं और न शृंखलित दासत्व में ही धर्म का आवास है। मंत्र, तिथि, तीर्थ आदि साधनों द्वारा जिसे संकोच से तुमने दूर हटा रखा है, आज अपने घर के आँगन में उसे ही प्रत्यक्ष करो; उसके निविड़ आलिङ्गन में घिरकर आज धन्य होओ। अखिल विश्व के लाञ्छितों के लिये धर्म अभय का संदेश लाया है, आज निरन्न को अन्न देने में, अत्याचार का अवरोध करने में धर्म जाग उठा है। प्रतिदिन के कामकाज में यह सहज और सक्रिय धर्मबोध मनुष्य को मुक्ति देगा, विश्व को शांतिमय करेगा; आज उसी धर्म का दूर ही से जयगान करके नहीं चलेगा; ‘जीवन में अविश्रांत कर्म के भीतर से उसे उपलब्ध करना होगा।’”

मैंने अविश्वास से कहा; ‘कभी यह भी संभव हुआ है’ उत्तर मिला ‘परीक्षा कर देखो न।’

सारे देश में संवेदन जाग उठा। पंडितों ने व्यंग्य की हँसी हँसकर कहा: “ऐसा भी हतमागा आया है जो धर्माचरण-द्वारा देश को मुक्ति देने चला है।” किन्तु देश के अंतस्तल में स्वार्थान्ध के सुख-सपनों का नाश करनेवाली धर्म-मूर्ति जाग उठी। कोटि-कोटि विन्तुब्ध-विवेक से उसकी पूजा-आरती हुई !!

हाय, आज कौन बताएगा कि जो होमाग्नि प्रज्वलित की गई, जो साधना अभी शुरू हुई है, उसकी पूर्णाहुति कब होगी ? कौन कहेगा कि सिद्धिलाम कब होगा ??

महात्माजी के प्रति

श्री चपलाकांत भट्टाचार्य

जिस दिन पंजाब की भूमि में पिशाच ने रक्त की होली खेली उस दिन साबरमती के आश्रम में तुम्हारा ध्यान भंग हुआ, तुम वहाँ से बाहर आए और देशवासियों का अपमान अपने वक्षःस्थल में ले लिया, तीस कोटि प्राणहीन कंकालों में जीवन भर दिया। उस दिन जिस निर्घोष को सुनकर हम सहसा जाग उठे थे वह अब भी कानों में लगा हुआ-सा लग रहा है।

सोलह

बंगला

असहयोग का रूप धारण करके तुम्हारे रोष की वहि-शिखा भारत में छा गई, उससे प्रबल शासन-शक्ति काँप उठी। तुमने दिखा दिया कि हिंसा-विहीन युद्ध में कितनी शक्ति है। जाति को तुमने कठोर व्रत की दीक्षा दी—वह दिन क्या भूल सकते हैं ?

सहसा तुम्हें कारागार की दीवारों रुद्ध कर दिया, संगी-साथी अपने अपने कामों पर लौट गए। जब तुम बाहर आए तो देखा कि जाति लाञ्छना और अपमान को सहती हुई सो गई है। दिल्ली से लेकर कोकन तक के उपस्रव के वेग से गांधी का नाम झूब गया है। निष्फलता की हताशा को दलन करके सब विरोधों का जहर पीकर, सबको शान्ति देकर तुम चुपचाप अपने आश्रम को लौट गए।

हाय, इसके बाद का इतिहास पतन की कालिमा से पुता है। नवीन सहयोग का अभिसार बार बार खंडित हुआ है, तो भी वे लोग उससे चिपटे पड़े हैं, लौटने का उनमें साहस ही नहीं है। तुमने जो जीवन का वेद सिखाया उसे वे भूल गए हैं। तुमने क्लान्त नयनों से उन लोगों की ओर देखा ज. अबोध दम्भ से मत्त होकर राष्ट्र चालना का भार लिए हुए हैं। हे तापस सेनापति, आओ तुम्हारी देश और जाति झूबने जा रही है, क्या अब भी तुम्हारे नेतृत्व ग्रहण करने का समय नहीं आया ?

तुम्हारा शरीर टूट गया है। पर उसी के साथ क्या तुम्हारा मन भी टूट गया है ? क्या सब साथियों ने प्रण छोड़ दिया तो तुम भी छोड़ दोगे ? फिर हम किसकी आँखों की ओर देखकर पथ का आलोक पाएँगे—विशेषकर उस समय जब चारों ओर काला अंधकार घुमड़ आया है ? तुम धरणी के भार को वहन कर रहे हो, यदि द्विविधा में पड़कर तुम्हारा चरण टल गया तो वसुंधरा टलमला जाएगी।

गांधी महाराज

श्री यतीन्द्रमोहन बागची

सम्मुख पथ पर विपुल बल लेकर वह कौन जा रहा है—उदार, धीर, अत्यंत गंभीर—जिसकी पलकें नहीं क्षिपती; सरल पथ पर, सहज भाव से—समान ऋजुगति से चलता हुआ—वह न दाएँ रुकता है न बाएँ—न लाभ गिनता है न हानि। व्यथित जनों के शोक और अभाव में, उनकी सेवा में ही जिसका मन नियोजित है; दीनों के लिये झरती आँखों से आँसू बरसाता हुआ जो प्राणों की बाजी लगा देता है, दूसरों के लिये सर्वस्व त्यागकर जो भय और लाज भुलाए हुए है,—

वह कौन है ?

पवन हाँकती हुई कहती फिर रही है; गांधी महाराज !

भारतवासी—यही और किसान किसका मुँह देखकर नवीन बल से मत्त होकर आशा का गान गाते हुए चल पड़ते हैं; कुली और मजदूर अभाव को भूलकर किसके जयगीत को सुनकर मन-प्राण-जीवन बलि देने का संकल्प दृढ़ करते हैं; धनी-मानी, गुणी-ज्ञानी, दरिद्र और यहहीन सभी किसके निकट शरण माँगते हैं—अर्थ को शोध नहीं पाते—नेत्र उठाकर निखिल जगत् किसे नमस्कार कर रहा है ?

देशमाता के कण्ठहार—गांधी महाराज को ।

जो दूसरों से आशा नहीं करता—अपने ही पर निर्भर है; चित्त जिसका शांत सुसमाहित है, शुद्ध जिसका कलेवर है, सरल-वास, सरलभाषा, सत्यपथगामी—वह कौन है, जिसका चित्त अहर्निश देश की हित-चिन्ता में ही सन्निविष्ट है ?

विरोधी भाइयों को माता के चरणों के निकट अपने ही घर बुलाकर, सबका आह्वान करके मिलन की राखी, अशेष ममता के साथ किसने बाँधी है ?—हिन्दू आज मुसलमान को अपनी छाती से लगाता है, असाध्य आज किसके संकल्प से साधित हुआ है ?—गांधी महाराज के । वह कौन है जो बेमेल को हँसते-हँसते मेल के छंद में बाँध देता है, अचल को चलमान कर देता है; किसका चित्त शत्रु को जीतनेवाला है, अस्त्र हृदय का बल है; मृत्यु की व्याधि में असहयोग की निदान-विधि किसकी है जो देश के प्राणों में अस्तित्व का अधिकार लौटा लाती है;—जिस अस्तित्व का अर्थ सभी स्वाधीन देशों का जाना हुआ है, नवीन पथ पर नवीन रथ में जिसकी यात्रा हँसते-खेलते संपन्न होती है; जिस अस्तित्व का अर्थ, विधाता को मालूम है, अमृत लोक में ही प्रतिष्ठित है । यह वाणी मंत्र हमें किसने सिखाया ?—गांधी महाराज ने !

गांधीजी का मृत्यु-प्रण

श्री सजनीकान्त दास

स्वर्ग और मर्त्य में आज रस्साकशी चली है । इस लोक और परलोक में एक मनुष्य को केन्द्र करके प्रचंड संग्राम छिड़ गया है । प्राणवान् प्राणी ने प्राण की बाज़ी लगा दी है, विचार चला है ऊर्ध्व लोक में कि उस प्राण का दाम कितना है । युग-युग में जिनका इतिहास 'जन्म और मृत्यु' है काल-वारिधि के तट पर जिनका अस्तित्व बालुका के समान है—आए और चल पड़े, मुहूर्त भर के जो बुदबुद विलास हैं उन्हीं में से एक के लिये मृत्युदूत आज संशय के चक्र में पड़ गया है ! वह क्या केवल देहमात्र है ? वह देह-हीन आत्मा भी नहीं है ! उसका परिचय सिर्फ यह है कि वह मानवी के गर्भ का संतान है इसीलिये विश्व-मानव की धात्री धरणी आसन्न विरह से आँसू पोछ रही है; उसकी नाड़ी में एक खिंचाव आ गया है । देवता ऊपर पुकार रहे हैं,

आओ आओ हे महान् आत्मा, प्रशान्त नयनों को बंद करके जो देख रहा है मनुष्य के बालक को—रसाकशी चल रही है; स्वर्ग और मर्त्य का व्यवधान घट रहा है, पृथ्वी हँसकर और रोकर कहती है कि ईश्वर आत्मा सिर्फ मिट्टी ही में मिलती है। बीच में बैठा हुआ है स्तब्ध ध्यानरत महामानव; उसके मुख में प्रेम और विदाई की हँसी लगी हुई है, स्वर्ग की पुकार नहीं है; रुक गया है आत्मा का कलरव, यह कहकर नहीं जा सकूँगा कि इस पृथ्वी को मैं प्यार करता हूँ। देहहीन देवता लोग देही को आशीर्वाद कर रहे हैं, आनन्द से क्षरित हो रही है धरणी की स्तन्य दुग्ध-धारा—आत्मा पृथ्वी पर ही रह गई; स्वर्ग और मर्त्य का विवाद मिट गया, मृत्यु को जो झकझोर दे वह देह नहीं, आत्मा का कारागार है।

आत्मा का आत्मीय गांधी

श्री सावित्रीप्रसन्न चट्टोपाध्याय

उस समय इस दुर्भाग्य-ग्रस्त भारत के वक्षस्थल में दुःस्वप्न जाग्रत हुआ था, भयविचलित चित्त में अविраम संशय जग रहा था, उसका मनुष्यत्व का मान हत हो गया था, इतिहास कलंकित था, गोपन गुहा में दिन रात हिंसा का षड़यन्त्र चल रहा था। जाति की बंधन-व्यथा, बंधन-शृंखला का निष्ठुर पीड़न, कुबड़ी पीठ पर कोड़े की मार, लज्जाहीन दुर्बल-दलन चल रहा था, विविक्षु मन के कोने में विद्रोहाग्नि सोई हुई थी। ऐसे ही समय में इस पुण्य-भूमि में तुम तपस्वी वेष में दिखाई पड़े। देश विच्छिन्न विध्वस्त था, चारों ओर अपने ही आदमियों में संग्राम छिड़ा हुआ था, उसी की कदर्य छाया तुम्हारे चिन्ता-आकाश में आ जमी, दुश्चिन्ता की वाणी रेखा भ्रूकुंचन मात्र के कट गई। जैसी ही तुम्हारी गभीर दृष्टि थी वैसा ही उदात्त था कंठ-स्वर। नूतन करके तुमने स्वदेश समाज को गढ़ने के लिये एक एक व्यक्ति को पुकार कर अहिंसा का नवीन मंत्र सुनाया, क्षुर-धार के समान तीक्ष्ण है तुम्हारी बुद्धि; युक्ति और तर्क के तुम बड़े पंडित हो, सुदूर प्रसारी है तुम्हारा मन, करुणा से कोमल है तुम्हारा हृदय। धर्म-धर्म में मारामारी, आचार-विचार का झगड़ा, संस्कार का मोहजाल, छूतछात का मान-अपमान, मंदिर का देवता बड़ा है और बाहर का मनुष्य छोटा, उसी मनुष्य को तुमने अपना उदार हृदय फैलाकर छाती से लगा लिया। मनुष्य के महत् धर्म में इस महाभारत को तुमने दीक्षा दी, स्वयं धर्माचरण करके अभिनव प्रेम का प्रचार किया, तुम्हारे हृदय में स्वदेश-लक्ष्मी का निवास है, नयनों में उदार धरातल है, समस्त साधनाओं के ऊपर मनुष्यत्व के जगाने का व्रत है। तुम्हारी कीर्ति ने तुम्हारा स्मरण-सौध निर्माण किया है। इस अनात्मिक देश में हे महात्मा गांधी, तुम आत्मा के आत्मीय हो।

सबके अर्चनीय और प्रातःकाल और संध्या समय स्मरणीय हो, मैं तुमको प्रणाम करूँगा वहाँ, जहाँ नियति फूल होकर झड़ा करती है।

महातपा—

श्री निर्मलचंद्र चट्टोपाध्याय

तप के तड़ित्-सूत्र से श्रेय और प्रेम को किसने एक में बाँध दिया है ? किसने अमोघ मित्रता के मंत्र से वक्ष में चांडाल को लगा लिया है ? किसके निर्मल ध्रुव नेत्र में निर्मल मित्रता जग रही है ? निर्निमेष दृष्टि से आज भारत को कौन देख रहा है ?—गांधी महाराज।

किसके अस्थिशीर्ष शरीर में दृढ़दीप्ति चमक रही है ? और अपनी कृशता से कौन सुंदर लग रहा है ? सर्वस्व त्याग के प्रण में कौन गुजरात का शंकर कटि में वस्त्र मात्र धारण करके दरिद्रों का पोषण कर रहा है ? परजीवी श्रमिकों की लाज कौन रखे हुए है ?—गांधी महाराज !

झीव और लक्ष्यहीन प्राणों में किसकी वाण तिल तिल में अग्नितेज का संचार कर रही है ? आज शृंखला की कड़ियों में बंदीगण किसकी वंदना गा रहे हैं ?—सोये हुए चित्त में किसकी वाणी आज ऊँचे स्वर से बज रही है ?—गांधी महाराज को !

‘क्रोध को अक्रोध से जीतो, अप्रेम को प्रेम से जीतो’ यह कहकर वेदना के विष से दग्ध मानव को किसने हृदय से लगा लिया है ? अनन्त निग्रह और मानवों के कल्याण के यज्ञ में उसकी शक्ति अप्रहत है। मानव की मूर्ति जो धारण किए है वह गांधी महाराज हैं।

गांधीजी—

श्री विजयलाल

बर्बरता ने विज्ञान को दासी बनाकर रक्त की धारा दिगन्त में फैला दी है। मृत्यु का शासन पृथ्वी को आच्छन्न कर चल रहा है। न्याय के आसन को शक्ति ने आकर छीन लिया है।

प्रकाशहीन, आशाहीन, शताब्दी के कानों में तुमने प्रेम पत्र दिया। तुम्हारे आह्वान में वही प्रेम—संसार में जो बिलकुल निर्भय, वीर्य की अग्नि में जो चिर दीप्तिमय।

तुमने ज्ञाति को मृत्युमंत्र से दीक्षा दी है—प्राण—वह तो मरने के ही लिए हृदय फाड़कर आता है। मनुष्य को प्यार करते हो, तभी तो साम्यवादी हो।

जहाँ शोषण है, तुम जानते हो, प्रेम वहाँ नहीं। तुम्हारा स्वराज सर्वहाराओं के लिए है; तभी तुम गांधी महाराज हो।

सोते हुए मनुष्य ने मानो समुद्र का गर्जन सुना—बहुत दूर की शताब्दी निपीड़ित आत्मा की वेदना, लाख लाख जीवन का संचित विपुल क्रन्दन, उसी के साथ मानों अकस्मात् अंधकार में पहचान हुई ।

गांधीजी ने आह्वान किया है—सत्याग्रही रास्ते पर निकल पड़े—कौन है जो लांछना का वरण करके लांछना को जीतेगा ? कौन है जो आज भारत की स्वाधीनता के व्रत में अपनी आहुति देगा ? जेल, जुर्माना फाँसी का तख्ता कुछ भी नहीं है, कुछ भी नहीं है ।

हे मानव मुक्ति के दूत, महात्मा गांधी महाराज तुम्हारी पताका के नीचे भारत का नया जागरण हुआ है । गाँव-गाँव, घर-घर में कोटि-कोटि मनुष्यों के चित्त में नवीन युग के लिये एक अव्यक्त गुंजन (आरंभ हुआ है) !

यह लज्जा, अपमान, दासत्व का यह जो स्खलन है, शताब्दी से चला आता हुआ यह जो निष्ठुर शोषण है, वह अब सहा नहीं जाता, इसीलिये तुम्हारे आह्वान से प्राण-पद्म चंचल हो उठा है । ऐसा लगता है कि मुक्ति का आलोक अब अधिक दूर नहीं है । तुम उसी आलोक के वार्त्तावाही महान् तापस हो, भारतवर्ष का यह प्रेमस्निग्ध अर्घ्य ग्रहण करो ।

ये संत सुजान गांधी जी !

श्री अरदेशर फराम जी खबरदार

अन्धकार के दुर्ग को तोड़कर एक अमूल्य उज्ज्वल किरण आई है । मरुस्थली की धधकती हुई बालुका से भी रस से ललित अमृत-निर्झर फूट पड़ा है । दशों दिशाओं के लोचन मिंचे जा रहे हैं । मनुष्यों के तन और मन अंदर अंदर कलप रहे थे, भारत का हृदय ग्लानि में डूबा जा रहा था, इसी समय में प्रभु की वाणी अवतीर्ण हुई । इस परम वाणी को कौन लाया ? उसे तो यह सुजान संत गांधीजी लाए हैं, गांधीजी लाए हैं, जो कि नवभारत के प्राण हैं !

जीते हुए भी मृत-समान देहपंजर भारतभूमि में यत्र तत्र घूम रहे थे, जिनमें पूरी श्वास लेने की भी शक्ति नहीं थी । शीत में उनके गात थर-थर काँपते थे । जब माँ के केश खींचे जाते थे, तब उसके पुत्र हिंसा के भय से भटकते फिरते थे । भाई भाई लड़ रहे थे ! ऐसे विषम समय में व्योम और वसुधा का संधान किसने किया—किसने ज़मीन आसमान एक कर दिखाया ? किसने सबमें प्राणों का संचार किया ? वे तो सुजान संत गांधीजी हैं, बापूजी हैं, नवभारत के प्राण गांधीजी हैं !

मरी हुई मिट्टी में चैतन्य का संचार हो उठा ! पाषाण-हृदयों में फूल खिल उठे । हिम-संतति में ज्वालाएँ जाग उठीं और धूलि में सुवर्णरज

चमक उठी। प्रस्तर की प्रतिमा भी चलने लगी। स्थाणु (डूँठ) में पक्षियों की डाली फूट निकली। प्रत्येक जन के मन में फिर से नव आशा उदित हो उठी। यह सब किसका चमत्कार है? यह तो संत सुजान गांधीजी का प्रभाव है, प्यारे बापूजी की महिमा है, जो कि नवभारत के प्राण हैं!

वीरता का वास तलवार में नहीं होता, न शूरो के समूह में बसती है। सच्चा वीरत्व तो हृदय में वास करता है—इस सच्ची गाथा को सब सीख गए हैं—हृदयङ्गम कर पाए हैं। मृत्यु में नव-जीवन का संचार हुआ। जीवन ने नवचैतन्य पाया है। किसके पावन हाथ से मरकर जीने का यह नवीन मंत्र प्राप्त हुआ? जीवन-रस का यह उपहार किसने प्रदान किया? संत सुजान गांधीजी ने यह रस उपहार दिया है, जो कि नवीन भारत के जीवनप्राण हैं!

आकाश में तारकावली की तरह सत्य, अहिंसा और स्नेह के मर्म प्रकट हुए और मानव अपने देहबल से समस्त संसार के संकटों को वहन करने के लिए तैयार हो उठा है। हे बापू, तुमने कुंदन को नई नई भट्टियों में तपा तपा कर तेजोदीप्त बना दिया है, उसका सच्चा मूल्याङ्कन करवाया है। अपने आत्मबल का चमत्कार दिखाकर तुमने पशुबल को तिरस्कृत कर दिया है। वस्तु को इस गहराई तक किसने निहारा है? सुजान संत गांधीजी ने, संत बापूजी ने, जो कि नूतन भारत के प्राण हैं!

हरिजनों में जाकर हरिजन बन गए और सुरजनों में सुरजनों के राजा हो गए। कोटि-कोटि हृदयों के आप विश्रामदाता हैं! लाखों की लाज के रखवारे आप हैं। जगती के पाप-तापों को तुमने अपने माथे पर उठाया है, और संसार पर अपने हाथों से तुमने अमृत का अभिषेक किया है। स्वयं आप अंग नग्न रहकर काँपते हुए दलित-समाज को तुमने ढाँक दिया है। ऐसे प्यारे बापू के कायों का माप कहाँ मिलेगा? जो कि संत और सुजान हैं और नवीन भारत के प्राण हैं!

मुझी भर अन्न से पेट भरकर जो टूटी फूटी खटिया पर सो रहते हैं, ऐसे मानव बान्धवों के हित के लिए जिसका हृदय सदा धक्धक् करके जलता रहता है। गहरी वेदना के कारण जिसके हृदय की चिनगारियाँ, आकाश की तारिकाओं की तरह उड़ती रहती हैं। जगत् के सामने भारत-रक्षक बनकर यह कौन विराट् आत्मा खड़ा है? यह किसका अवतार है? ये तो सुजान संत गांधीजी हैं, नवभारत के प्राण रूप बापूजी हैं!

यह तो युग-युग का अमर योगी है। यह युग-युग का नव अवतार है। ये तो भारतजनों के प्यारे बापूजी हैं, रंकों के एकमात्र आश्रय गांधीजी हैं। इनका किया हुआ कौन कर सकेगा? इनका किया हुआ कैसे गाया जा सकेगा। हे पुण्य परार्थी, सत्य का टंकार करते हुए युग-युग तक जीते रहो। सदा विश्व का मंगल साधते रहो। तुम संत और सुजान हो, हमारे पल-पल के प्राण हो, हे बापूजी!

हे बापू, विष का यह अन्तिम कटोरा है, इसे पी जाओ, । सागर पी जाने-वाले हे बापू, इस अंजलि को ढुलका मत देना !

हे बापू, अब तक तुम अपने जीवन को अन्त्य विश्वास के साथ वहन करते आए हो । तुम्हारा जीवन धूर्तों और प्रपंचियों का भी साथ देता रहा है । वह जीवन शत्रु की गोद में जाकर भी सुख से सोता रहा है । हे बापू, अब इस अन्तिम तकिए पर अपना सिर सौंप दो । शत्रु भले ही तुम्हारी ग्रीवा काट ले । हे बापू, शत्रु के मन की थाह अवश्य मापकर आना !

सुर और असुर मिलकर नवयुग के सागर का मंथन कर रहे हैं । रत्न के लोभी जनों को विवेक नहीं है । हे बापू, तुम्हारे बिना ऐसा कौन है जो शंभु बनकर विष पान कर जाए । गरल को हृदय तक निगल जाने के लिए हे बापू, शीघ्र प्रयाण करो । हे सौम्य-रौद्र, और हे कोमल-कराल बापू, जाओ ।

संसार पूछेगा, क्या जोगी के योग खुट गए ? क्या समुद्र सूख गए और मेघ का नीर समाप्त हो गया ? क्या व्योम के सूर्य और चन्द्रमा का तेल समाप्त हो गया ? हे बापू, हमारे दुःखों को देखकर अटक मत जाना । आज तक बहुत सहा है, आगे और अधिक सहेंगे । पर हे बापू, विचलित मत होना !

चाबुकों के प्रहार, जन्तियाँ, जुमाने, लाठियों की मार, कारागारों के जीवित-से कब्रस्तान, और गोलियों की वर्षाएँ—ये सब तो समाप्त हो गए । इन सबको हमने पी लिया है । हे बापू, तुमने हमारे फूल-से कोमल हृदयों को लोहे से बढ़कर सुदृढ़ बना दिया है !

कोई हर्ज नहीं । यदि तुम वहाँ से गुड़िया भी लाओ या न लाओ । भले ही तुम खाली हाथ आओ । तो भी हम तुम्हारे हाथ का चुम्बन करेंगे । तुम्हारी ग्रीवा में हम अपनी प्यारी मुजाएँ डाल देंगे । हे बापू, ज़रा दुनियाँ के द्वार पर ही आओ । और समवेदना के संदेश देकर आओ हे बापू !

हे बापू, यदि तुम वहाँ न गए तो संसार उपालम्भ देगा कि आत्मज्ञानी नहीं आया । वह कहेगा कि अभिमानी अपनी पोल जान गया है, अतः आया नहीं । वह कहेगा कि देख लिया हमने उसका विश्वप्रेम । वह विश्वप्रेम नहीं जानता है ।

हे बापू, मानव जाति रोगी होकर आकुल व्याकुल हो रही है । हे बापू, वह तुम्हारे समान वैद्य की चिकित्सा पाने के लिए तरस रही है ।

हे बापू, मस्त सॉड को नाथ डालने के लिए जाओ । विश्वहत्या पर जल छिड़कने के लिए हे बापू, जाओ । सात सागर पार सेतु रचने के लिए हे बापू, प्रयाण करो । हे बापू, घनघोर वन की राह को प्रकाशित करते हुए जाओ !

विकराल केसरी की थपकियाँ देते हुए चलते जाओ ! हे बापू, प्रयाण करो, भगवान् तुम्हारे पथप्रदर्शक हैं। विष का अन्तिम प्याला पीकर प्यारे बापू, आ जाओ।

फूल पाँखड़ी

श्री ज्योत्स्ना शुक्ल

इस उदात्तचेता महापुरुष गांधी में देवत्व का आरोपण करके इसके आगे धूप-दीप रखना मुझे पसंद नहीं है। ऐसा शुष्क पूजन मैं नहीं करूँगी। वंदन और जय-घोषणाएँ भी मुझे रुचिकर नहीं हैं, ये सब कृतिहीन हैं।

कृष्ण और ईसा मसीह से इसकी क्या तुलना करूँ ? यह तो अतुल है, अनुपम है। रक्तप्यासे इस विश्व में अकेला यही मानव मेरी पूजा का अधिकारी है !

सदा जागरूक रहनेवाला यह प्रेरणा से परिपूर्ण होकर, भारतभूमि में प्रदीप्त हो रहा है। पृथ्वीरूपी सरोवर के मलिन जल में प्रफुल्लित कमल की तरह यह शोभित हो रहा है।

वन्दनाएँ, जप निनाद, निंदा, स्तुतिपुष्प और कटु-प्रहार इसको स्पर्श नहीं कर पाते हैं। यह दिव्यात्मा उनसे विचलित होनेवाला नहीं है। इनको सुनकर भी वह तो सूर्य का सा निर्मल हास्य बिखेरता रहता है।

शोणित से सने हुए जगत् को बचाने के लिए, इस सृष्टि की पशुता को मिटाने के लिए, और दानव को मानवता सिखाने के लिए, यह भव्य योगी उग्र तपश्चर्या कर रहा है।

इसकी यह विमल मानवता मुझे प्यारी लगती है। इसकी निर्लेप तपस्या मुझे पसंद आती है। मैं चाहती हूँ इसे निहारती रहूँ, इसका चिंतन करती रहूँ। अपने प्राणों में उसे बसा लूँ। इस मानव के सामने नम्र हो जाऊँ।

चेतना का क्या सुंदर निर्मर ऋर रहा है। इस निर्मर में विन्दुरूप होकर मिल जाने की मेरी अभिलाषा होती है। विश्व के उद्धारकर्त्ता इन गांधीजी को सक्रियता की पुष्प पंखुड़ी अर्पित करना मुझे अभीष्ट है !!

विश्वयज्ञ

श्री सुंदर गो० बेटाई

हिंसा की अग्नि ताड़का राक्षसी की तरह अपने तीखे दाँत कटकटा रही है। विकृत आकृति बनाकर क्रोधाग्नि को प्रज्वलित कर रही है। अपना भान भूलकर वह यत्र तत्र सर्वत्र घुमती फिरती है। अहो, उसे रक्त की कैसी पिपासा है ? हाड़-मांस की कैसी अद्भुत लुधा उसे लगी हुई है ? परन्तु क्या द्वेषाग्नि की ज्वाला इस प्रकार शांत हो सकती है ?

चौबीस

गुजराती ०

निर्वात स्थान में सौर उल्का ग्रह अज्ञात रूप से भ्रमण करते हैं। उनमें कुछ क्षण भर दिखाई देते हैं और अदृश्य हो जाते हैं। उसी प्रकार जीवन-सागर में आश्चर्यजनक तरंग रेखाएँ उधर आती हैं, तट पर टकराकर रुक जाती हैं, और फिर मूल में विलीन हो जाती हैं। संस्कृति-चक्र की वर्तुल गति में अनेक प्रलय-काल आये—सुमेरु मंदार डूब गये, आण्डीज, आल्प और हिमालय भी छोटे हो गये, विलीन हो गये, उनके शिखर पर—ऊँचे खंभे में मनु ने अपनी नौका बाँधी। प्रलय सागर में तूफान आने पर विश्व में भीषण बाढ़ आ गयी। उसमें ये सब ऊँचे शैल भी कंपित हुए। उसमें भी टिककर हे विश्वमानव ! तुने अपना वैभव फिर से निर्माण किया।

निसर्ग शक्ति के साथ दुर्धर संग्राम, अन्योन्य कलह में स्वार्थी कालक्रम, फिर भी, व्यक्ति जीवन के लिए सूक्ष्म संग्राम करता रहता है, और अंत में असीम तृष्णा भयानक संहारकांड करती है, तब कहीं हे विश्वमानव ! मोक्षमंत्र का अस्फुट रव सुनाई देता है।

सृष्टि से चेतन उत्पन्न होता है और चेतन से मानवपन। मानवपन को देवपन लाने के लिए कोई जीवन विकास में कसौटी के धाव सहता है, पर कौन सुनता है, अवकाश किसे है ? हिमाद्रिदरी में पंचभूत का तांडव चलता है, पीली-नीली बिजली चमकती है और मेघ के उदर में कड़कती है। उस समय यदि कोई योगीन्द्र देव भी गुफा से आदेश करता है, हे विश्वमानव, उस वाणी का क्या तब प्रभाव नहीं पड़ता ?

पंचभौतिक वासनाएँ नग्न होकर बेहोश नाचती हैं। उनको ढकने के लिये सुंदर, मोहन, महीन अवगुंठन बनाया गया है। मानव और लोकसत्ता की बड़ी बड़ी कल्पनाओं की विपैली नज़रबंदी कब तक छिपाये छिपी रहेगी ? हे विश्वमानव ! पर अब विवेक की चेतनता नहीं रही।

असंख्य युग का चक्र-क्रम इसी तरह फेरे करता रहेगा। नवसंस्कृति को प्रलय फिर ग्रसित कर लेगा, पर अंत में संज्ञाशक्ति का आत्मज्योति से मिलन होगा, तभी हे विश्वमानव, तुम्हारे मूल का एकत्व संसार के नये रूप में दिखाई देगा।

मार्क्स और गांधी

श्री प्रभाकर मात्रवे

दाढ़ी का जंगल, भयानक मुख, यह उस यहूदी का नमूना—यह खाद के गमछे में लपेटा हड्डियों का ढाँचा।

एक रक्तप्रिय, दूसरा अहिंसाभक्त वैष्णव। अधिक शक्तिवाला मैं किसे कहूँ ? दोनों समान रूप से दुनियादारी से उकताए हुए और समान रूप से दुनियादारी में चिपके हुए—मुझे तो दोनों समान ही मालूम होते हैं।

एक अश्रुपूजक तो दूसरे को अश्रुओं से द्वेष । दोनों में एक ही पागल-पन—अपने अपने देश का प्यार । सत्यशोध करने के लिए दोनों रणभूमि में उतरे हैं । चैतन्य ज्योति नित्य जलते जलते दोनों ही अद्वितीय, दोनों अकेले, दोनों अर्द्धसत्य, दोनों को ठोकरं लगती है ।

दोनों के सामने एक समस्या—मानव-मानव के बीच की विषमता कैसे दूर होगी । एक कहता है कि क्रोध बुरा है तो दूसरा उसे आवश्यक बताता है । व्यर्थ क्रूरता क्यों, धैर्य रखो, रणतूर्य बजा, शूर कैसे रुके ? एक संत, दूसरा सेनापति, दोनों थके, धोखा खा गये । भूगोल उसी तरह कैसे घूम रहा है, नहीं मालूम ।

आज की दुनिया के लिए हमें दोनों अपूर्ण हैं । आज की दुनिया में हमें नक्रद सत्य चाहिये । अन्वेषणशाला का सत्य नहीं, खन खन खन नक्रद सत्य चाहिये ।

जब लड़ाई छिड़ेगी, सिक्कों, शास्त्रों, वेड़ियों के ताल पर शब्द होगा और नवरक्त के युवकों के जत्थे उस पागल के पीछे पीछे अपने जन्मजात अधिकार की रक्षा करने के लिए जायेंगे । फिर संघर्ष होगा और जो चनगारी उठेगी उसमें ऐसे मार्क्स के सैकड़ों अनुयायी भस्मीभूत हो जायेंगे ।

दुनिया फिनिक्स पक्षी की तरह ज्वालाभूत होगी । पर वह भविष्य निश्चय-पूर्वक कौन बता सकता है ? देखें क्या क्या होता है ?

गांधी-अभिनंदन

डाक्टर माधव गोपाल देशमुख

अपना शरीर बहुत घिसवाया, लोगों को माया लगवायी बीजफल देखने के लिए हे गांधी तू चिरायु हो ।

ईसा-बुद्ध को भी यह भाग्य नहीं मिला—किसने जीवन्मुक्ति देखी ? इसी देह से इन्हीं आँखों से कीर्तिका उत्सव किसने देखा ?

देव यही बड़ी कृपा करें । ऐसा दिन बार बार आवे । मैं गरीब मराठा यही भक्तिभाव अर्पण करता हूँ ।

युगावतार गांधी

श्री लक्ष्मीकान्त महापात्र

हे महाप्राण, तुम दुष्कृत का विनाश करके साधुओं की रक्षा के लिए आज इस धरा में अवतीर्ण हुए हो । हे देवदूत, तुमने स्वर्गीय संदेश लाकर इस पुण्य भूमि भारत को पूत किया है, जहाँ युग युग से ऐसी शक्ति अवतीर्ण होकर धर्म-स्थापन करने के लिये पृथ्वी का भार दूर करती रही है ।

अड़तीस

उड़िया

हे सव्यसाची, तपस्या के बल से तुमने पाशुपत अस्त्र प्राप्त किया है और सारे संसार को स्तंभित कर दिया है। तुम अजेय “अहिंसा रूपी बाण—महा-शक्ति को धारण करके शत्रु को भी मुग्ध कर देते हो और संसार का कल्याण-साधन करते हो।”

भारत का जितना दुःख, जितनी वेदना, जितनी आकांक्षा, आशा, कर्म और साधना और जितना भूत, भविष्य तथा वर्तमान सर्व मूर्तिमान होकर तुममें संकलित हुए हैं। तुम्हारे चित्त को विपद् कभी व्याकुल नहीं कर सकी। भीति तुम्हारे मन का बल कभी दूर नहीं कर सकी। नैराश्य तुम्हारी कल्पना की सीमा तक छू नहीं सका। अतएव “व्यर्थता” का पुरुषों की भाषा नहीं है क्या ? तुमको अच्छी तरह ज्ञात है कि निःसंग कर्म में कभी पराजय नहीं है ? इसलिये, तुमने ईश्वर के पास जीवनपर्यंत असीम श्रद्धा रखी है।

हे मोहन, तुमने ऐसा कौनसा मोहन मंत्र चला दिया है ? भारत में अग्नि-शिखा जलाकर करोड़ों प्राणों में उद्दीपना जगा दी है, जिससे देश भर में तप्त उन्मादना फैल गयी है ?

हे भगीरथ, तुम्हारी साधना के फलस्वरूप भारत की छाती पर प्रेमरूपी मन्दाकिनी-धारा प्रवाहित होने लगी। हिमाचल से कुमारिका तक फैले इस अखंड देश में महामुक्ति-मंत्र व्याप्त हो गूँज उठा और उसकी मंत्र प्रतिध्वनि ने विंध्यगिरि के शिखरप्रदेश में भी टकराकर अशान्ति-वज्राग्नि पैदा कर दी। अतीव महान् तथा दुर्गम्य मानव धर्म का आचरण करके मानवों को आदर्श-मनुष्यता की शिक्षा दी है। क्षुद्र सत्य की महिमा की परीक्षा करके जगत् को उसी मंत्र की दीक्षा दी है। इसके द्वारा संसार के कोने-कोने में सत्यका आलोक प्रकाशित हो उठा। उसी सत्यामृत के द्वारा ब्रुलोक तथा भूलोक भरपूर हो गया और हिंसा, द्वेष, तापक्लिष्ट मानव उसमें स्नान करके परम शांतिलाभ कर सका।

हे महर्षि, हे जगद्गुरु, हे महामानव, तुम्हारे श्रीचरणों में मेरी सहस्र प्रणति है, स्वीकार करो।

सत्यं शिवं सुन्दरम्

श्री गुरुचरण परिजा

बापूजी,

तुम महीयान् सत्य, शिव और सुन्दर हो। तुम स्रष्टा, रुद्र और भगवान् भी हो। हे विप्लवी, तुमने इस सुप्त धरा के तट में प्रलय की रचना की है। फिर तुम्हीं ने लाखों प्राणियों के जीवन-पट में आशा का संचार किया है। तुम्हीं ने इस रुग्णभूमि में नवीन शक्ति का प्रदान किया है। हे मर्त्य के भगवान्, तुम्हीं ने इस उजड़ी हुई भूमि को हरा भरा कर दिया है।

उडिया

उन्तालीस

इस युग का इतिहास तुम्हारे इन चरणों से जन्मा है। तुम्हारा मंत्र इस धरा में लाखों जीवनों में न्यस्त है। तुम्हारा साम्य-महागीत ओंकार देश-विदेशों में गूँज रहा है, हे चिर सत्य, हे चिर विजयी, हे नित्य वलीयान् ये सब तुम्हारे सत्य की साधना और अमर दान का फल हैं।

इसलिये, आज हिंसायुग ने तुम्हारे चरणों में सिर झुकाया है।

हिंसा का पाप आज उसी के वक्षस्थल पर धीरे-धीरे जल रहा है। तुमने उसके हाथों संसार का पाप-भार जलाया है। हे सत्य के अवतार, तुमने पृथ्वी में मैत्री का बीज बो दिया है। इस मिट्टी से किसी-न-किसी दिन मुक्ति का महागान मुखरित हो उठेगा। हे चिर रुद्र, हे चिर विप्लवी, जय जय अभियान !

तुम्हारी इस देह में बुद्ध की महा गति, नानक की कल्याणकर वाणी और—ईसामसीह की परिणति इकट्ठी हुई है। देशमाता के गौरव की प्राप्ति के लिये तुमने अपने अंगों में राणाप्रताप की आशा छिपा रखी है। तुम्हारे कंठ से महावेदव्यास की भाषा और मंत्रका महागान ध्वनित हो उठता है।

नित्य हो तुम—हे चिर विप्लवी

मर्त्य के भगवान्,

सत्य हो तुम, मंगलमय,

सुन्दर-महीयान् ।

बापू के प्रति

श्री नर्मदेश्वर भा

भादों का महीना। दुर्दिन के बादल गरज रहे थे। दुःख का छोर नहीं मिल रहा था। कंस के पाप से भारत काँप रहा था। सब लोग बंदी हो रहे थे। देश का भाग्य बंदी था। गर्भ की ग्लानि उपस्थित थी, उस दिन शरीर धारण कर गोपाल आए थे।

दासत्व के आतंक से जिस दिन हमारा द्वीप (जम्बूद्वीपभारतवर्ष) बिना दीवारों का एक जेल बन गया, क्रौंदी न्याय से हमारे जब सब दरवाजे बन्द होगए, अपमान मात्र ही अपनी सारी सेवाओं के बदले हमें उपहार दिया जाने लगा, जिस दिन संसार के लिए भादों-जैसा समय बीत रहा था, उस दिन बापू तुम आए थे।

हम नए-नए पंथ सीखते जा रहे थे। दूसरों के—असत्य के पथ अपना रहे थे। परम-स्वधर्म भूल गया था। दासत्व की शृंखला जीवन का कंठ कस रही थी। उसी दिन वेणु-सा चरखा का गान देश के गाँव-गाँव में गूँज उठा।

सूर्योदय हुआ, प्रकाश हुआ, स्वदेश को पहचाना। अपना पथ पकड़ा।

चालीस

मैथिलि

स्वयं बनाए वे सब विदेशी बंधन खोल दिए। विदेशी पहनना, विदेशी बोलना, विदेशी सोचना, विदेशी अपनाना सब स्मरण हो आया। कौन हैं हम ? क्या हो गए ? अब उद्धार के लिए क्या उपाय किया जाय ?

बापू, आपके पथ का अनुसरण कर इस लुधा-भुक्त जन-देव का पेट भरा, उसकी लज्जा का निवारण हुआ। हरिजनों के लिए मंदिर का द्वार खुला। आपके सत्य के और उपवास के प्रयोगों ने देश को शुद्धि दी। भाइयों का हमें स्मरण हो आया। देह-जग उठा। इस देश का सोया जीवन भी उठ बैठा। कितने बंधन टूट गए।

यह पुण्यपर्व है। बापू की नई कला प्रकट हुई है। पचहत्तर वर्ष बीत गए। बापू के लिए क्या पचहत्तर, क्या सौ ? वे तो काल के बंधन से ऊपर हैं। भारत-महाभारत—की महान् आत्मा हैं, वे चिर-पुराण हैं चिर-नूतन, चिर शाश्वत। यदि वे नेता हैं, तो भारत आत्मनिष्ठ है, समाधिस्थ है, चिर-विमुक्त है, पशु-बल की पहुँच से ऊपर है।

बापू के लिए, वात, सिंधु, निशि-वासर, रवि, तर्क, व्योम सब मधुमय हो जायँ। अमर आशीष दें। जीवन का सत्य वह पा जाँय। बापू को पाकर—ईश्वर का अमर आशीष पाकर हम धन्य हुए, जंगत् धन्य हुआ। आज काव्य-चरित्र की वंदना कर यह अ-गणिता-मैथिली धन्य हुई।

गांधी-जयन्ती

श्री कृष्ण कृपलानी

यद्यपि विधाता ने भारत के सौभाग्य के साथ संकट का खेल खेला है, यद्यपि आज भारत से राजर्षि और सूरमा विदा हो चुके हैं, यद्यपि हमारे सब दिन अभिशप्त भाग्य को कोसते, दुर्भाग्य को ठोकते बीतते हैं, तब भी एक दिन ऐसा आया जिसमें इतिहास ने करवट ली, और अनुकरण के भाग्य में सत्य का पुनः आविर्भाव हुआ। आज भारत के भाग्य में संदेह को स्थान नहीं है। तुम हतभागों का खोया हुआ सम्मान लौटा लाए, हे भारत के अग्रणी ! हे ईश्वरी रथवान् ! इस सत्याग्रह-संग्राम में आज तुम्हारे नेतृत्व—तुम्हारे सारथीत्व ने कापुरुष को भी गाण्डीवधारी बना दिया है। यद्यपि तुम्हारे साथ किसी अर्जुन के धनुष-बाण नहीं हैं, यद्यपि शिवाजी की तलवार तुमने म्यान में ही लौटा दी है, तब भी बिना शस्त्र, तुम्हारा ऐसा ही प्रताप है कि साम्राज्य तुम्हारे नाम से कांपता है।

आज तुम्हारा जन्मदिन है, हे असहयोगों के हमराह ! विधाता से यह विनती करना ही तुम्हारी सच्ची जयंती है—कि हमें ऐसी पीड़ा सहन करने दो जो शूरवीरों को जन्म दे सके; भारत का भाग्य ही ऐसा है कि व्यथा के मथन में हमने सत्य को पाया है।

धन्य बापू !

श्री सुब्रह्मण्य भारती

धन्य हैं गान्धी जी, धन्य हैं आप, आपने उस भारतवर्ष के उद्धार के लिए अवतार ग्रहण किया है, जहाँ दरिद्रता का आज भी तांडव हो रहा है, जो अपनी स्वतंत्रता से वंचित है, जो पतन के गर्त में समा गया है।

पराधीनता से मुक्त होकर, भारतीय पुनः धन धान्य एवं विद्यावैभव से संपन्न होकर संसार में प्रथम श्रेणी के बन कर रहें, वह तपस्या आपने की है। आपकी कीर्ति असीम है ! आप संसार में सर्व-प्रथम हैं।

मूर्च्छित लक्ष्मण को नागपाश से मुक्त करनेवाले महावीर के समान आप हैं यह कहें, या इन्द्रके कोप से उँगली पर गोवर्धन धारण करने वाले, गोकुल की रक्षा करने वाले गोपाल कहें ? क्या कह कर आपकी प्रशंसा करें ? असीम दुःख देने वाली परतंत्रता की व्यथा को दूर करने के लिए आपने ऐसी औषधि आविष्कार की, जो संसार के लिए अभिनव ही नहीं, अपितु सुलभ भी है।

अपने प्राणों पर जैसी ममता सबको होती है, वैसी ही ममता शत्रु के प्राणों पर भी करना चाहिए, यह आपने हमें बताया है संसार के सभी मानवों को ईश्वर के संतान—समझना आपने हमें सिखाया है। जिस राजनीति में अधर्म, युद्ध, हत्या आदि सम्मिलित हैं, उसमें ऐसे आध्यात्म-तत्त्व को प्रतिष्ठित करने का सत्साहस आपने ही किया है, अतः आप सर्वश्रेष्ठ हैं।

हिंसा की नीति को परित्याग करके आपने परमात्मा के पुत्रों की सेवा के व्रत को ही सबसे बड़ा धर्म माना है, और उसे आपने अपना लिया है। परस्पर का वैमनस्य भूलकर संसार सत्य पर चले और सुख शान्ति प्राप्त करे, यही आपकी साधना है।

महात्मा गांधी

श्री रामलिंगम पिल्ले

महात्मा गांधी का नाम लेते ही हृदय पिघल जाता है, दुराव छिपाव मिट जाते हैं, आँखों से आँसू की बाढ़ आती है, अंग स्वेद से भीग जाता है, सुख का झरना उमड़ पड़ता है।

उनका नाम सुनते ही मन शीतल होता है, मोक्ष मिल जाता है, पूर्णतः नये और मधुर भाव कहीं से उभर आते हैं।

वृद्ध गांधी जी के जरा के संबंध में बोलते समय आत्मा स्फूर्ति में आकर चमक उठती है, दुर्बलता और शिथिलता दूर हो जाती है, शरीर में उत्साह और शक्ति पैदा होती है।

उन पवित्र गांधीजी की शक्ति की बात करते ही हम आहार और हवा भूल

बयालीस

तामिल

जाते हैं, हमारा हृदय काल को भी भगा देनेवाली शक्ति पैदा करने के लिये उठ खड़ा हो जाता है ।

उदार गांधीजी की बात सुनने से नींद टूट गई है, चिन्ता चली गई है, दुख और कष्ट के स्वप्न टल गये हैं, जीवन सुधर गया है, और दृष्टि विशाल हो गई है ।

सत्याग्रही गांधीजी का पावन नाम लेते ही कपट कांप उठेगा, भयंकर क्रोध भस्म होजायगा, भीरु भी दूसरों के समाने पीठ तक नहीं दिखायेगा । साहस दया प्रेम सभी जाग्रत होंगे ।

श्रेष्ठ गांधीजी ने व्यवहार में यह दिखाया है कि संसार के सब जीव-जन्तु समान हैं । ऐसे महात्मा को देखते ही पाप, निन्दा, कुकर्म, सब नष्ट हो जायेंगे,

ओह, ७५ वर्ष की ढली आयु में भी उनमें कैसी तरुणता है ? वे बड़े शानी हैं, साधु हैं, आश्चर्य करने योग्य पवित्र जीवन बिताने वाले हैं ।

आज गांधीजी के तप की शक्ति ने संसार को आक्रान्त किया है उसे जला रही है । छल और कपट राख हो गये हैं । वाद-विवाद ठंडा पड़ गया है, सारी दिशाएँ स्तंभित रह गई हैं ।

दीन दुखियों के बंधु उन गांधीजी की जितनी भी प्रशंसा करें, कम ही है । उनका नाम अमर हो जिनसे त्रिकाल और समस्त विश्व जी उठे ।

भोले भाले बापू

श्री सीतारामांजनेय

आप कर्मिष्ठ हैं जिन्होंने गायत्री को छोड़ दिया है, स्वेच्छापूर्ण शानी हैं जिनकी वाञ्छाएं पूरी नहीं हुई, भक्त हैं जो कभी मंदिर में भी नहीं जाते । आप में कर्म ज्ञान तथा भक्ति तीनों का संयोग है ।

आप अपने जीवन में आश्रम चतुष्टय तथा चातुर्वर्णों के धर्मों का अनुष्ठान करते हैं ।

अत्याचारी के भी हृदय के परिवर्तन में आपका विश्वास है ।

आपका ऐसा कोई मित्र नहीं है, जो आपको शत्रु नहीं मानता हो, फिर भी, आप अजातशत्रु हैं । अतएव, मनुष्य समुदाय को हमारे भोलेभाले बापू अवश्य चाहिये ।

आपके किसी भी मित्र की भूलचूक आपकी कड़ी दृष्टि से बच नहीं सकती, अतः आपके मित्र भी आप से अप्रसन्न होते हैं ।

गांधी महात्मा

श्री उ० कोंडय्या

चरखा तुमको बुलाता है तुम को बुलाता है सेवागांव, चरखा तुमको बुलाता है ।

कहता है यह जन्म, यह जीवन यही नहीं सच्चा, जीवन अलग है, कहता है, चलो किसी पथ पर, चरखा तुमको बुलाता है । कहता है कि बापू के जीवन पर दृष्टि डालो । कहता है, नर भी नारायण होगया है, चरखा तुमको बुलाता है ।

महात्मा

श्री मंगपूरि शर्मा

तब तुम्हारे सत्य के तप से पैदा हुए अद्भुत फल से भारतीय ही नहीं, अखिल विश्व के लोग तुमको मुकुट पहना कर तुम्हारी कीर्ति को गा रहे थे, अब तुम्हारी सत्य-दीक्षा की परीक्षा में देवता लोग भी पराजित होकर लज्जित हो कर तुम्हारे पीडित शिर पर अक्षत डालते हैं आशीर्वाद देते हैं । पवित्र सत्य की खोज में तुम देव ! धर्म तथा देश के लिये आत्मा को समर्पित करते हो, तुम्हारे लिये जय क्या है, पराजय क्या है ?

गांधीजी

श्री वसवररजु अप्पाराव

अंगोछा पहने तो क्या ? हमारे गान्धी जी “हमारे गांधी” बनिया हो कर जनमे तो क्या ? मन माखन जैसा, प्रेम मांता जैसा, परिपक्व मुख पर ब्रह्मतेज, चार बालो की नाचनेवाली चुटिया, चारों वेदों के निचोड़ की जाननेवाली चुटिया, पोपला मुंह, खोलने पर मोतियों की झड़ी बरसती है, मुस्कराने पर सोने की वर्षा होती है ।

खट खट करते हुए चलते हो तो सारी दुनिया थर्रा उठती है, इनकी बातें वेद वाक्य ।

कौशिक क्षत्रिय होकर ब्रह्मर्षि नहीं बने ? आज वाणिक-पुत्र भी ब्रह्मर्षि हुआ ।

मेरे गुरुदेव

श्री वल्लतोल नारायण मेनन

मेरे गुरुदेव के लिए सकल वसुधा ही कुडुम्ब है, उसके पेड़-पौधे, घास-फूस और कीड़े-मकोड़े भी कुडुम्बी हैं । त्याग ही आपकी निजी संपत्ति है । नम्रता ही आप का अम्युदय है । आप योग के पारगामी हैं और इस प्रकार विजयी हो रहे हैं ।

चाहे तारों की मणिमाला से सजा दो, चाहे काली घटा रूपी कीचड़ से, पर आकाश के लिए दोनों बराबर हैं । वह तो इसमें न लित रहता है, न पृथक् ही । उसीप्रकार मेरे पूज्य गुरुदेव भी स्वच्छ हैं, सम हैं और निर्मल हैं ।

चवालीस

मलयालम

आप वह अगाध पवित्र तीर्थ हृद है, जिसमें क्रूर जन्तुओं का निवास नहीं है, और आप वह मंगल दीपशिखा हैं, जिसमें काजल की कालिमा छू तक नहीं गई। आप वह माणिक्य महानिधि हैं, जिसे सर्प ने स्पर्श तक नहीं किया है। आप ऐसी चाँदनी हैं जिसमें परछाई नहीं पड़ती।

आप निरस्त्र होकर भी धर्म-संग्राम करनेवाले रणशूर हैं। विना धर्मग्रन्थों के पुण्य का पाठ सिखानेवाले सतगुरु हैं। आप ऐसे प्रवीण वैद्य हैं, जिनके पास औषधि न रहने पर भी, सब रोगों की जड़ उखाड़ फेंकने की शक्ति है, और आप हिंसा-दोष के बिना ही यज्ञ करनेवाले महायाज्ञिक हैं।

अहिंसा ही आपका अटल व्रत है। आपकी उपासनादेवी चिर शान्ति है। आप इस महान् तत्त्व के घोषणा करनेवाले हैं कि 'तलवार चाहे कितनी ही तेज़ क्यों न हो, अहिंसा के कवच से टकराने पर अवश्य चूर चूर हो जायगी।

अपनी प्रेयसी (अहिंसा) के साथ धर्म के नर्म-संलाप वचन ही आपकी अनमोल उक्ति है, सनातन सत्य की समा के सुमधुर गान हैं, और मुक्ति के मणिमय चरणों की नूपुर-ध्वनि है।

आप प्रेम के बल पर संसार को जीतनेवाले सैनिक हैं। प्रणव के धनुष पर आत्मा का तीर चढ़ाकर ब्रह्म को ही लक्ष्य बनानेवाले हैं। ओंकार को भी क्रम से पिघला-पिघलाकर उसका केवल सूक्ष्मांशमात्र ही धारण किये हुए हैं।

सब महात्माओं की महत्ता—ईसा की त्याग-बुद्धि, कृष्ण परमात्मा के धर्म-रक्षणपात्र, गौतम बुद्ध की अहिंसा, श्री शंकराचार्य की बुद्धिमत्ता, रतिदेव की कृपालुता, हरिश्चन्द्र की सत्यप्रियता और हज़रत मुहम्मद की स्थिरता, एक ही साथ एक व्यक्ति पर देखना चाहें तो आप लोग मेरे गुरु के पास जाइये अथवा उनके पावन चरित्र को पढ़िये।

आपके पावन चरणों का एकबार दर्शन कर लेने पर कायर शूर-वीर हो जाता है, निर्दयी पुरुष दयासागर हो जाता है, कृपण महादानी हो जाता है, कटुभाषी के मुँह से मधुरवर्णन हो जाता है, अशुद्ध हो तो परिशुद्ध हो जाता है और अकर्मण्य कर्मठ बन जाता है।

आप पूर्ण शान्ति से घिरे हुए महान् तपस्वी हैं। आपके शरीर पर शत्रु की तेज तलवार भी नीलोत्पल के समान है। आपके सामने पैने दाँतोंवाला सिंह हरिण का बच्चा है और किनारों पर टकरानेवाली गंभीर लहरोंवाला बड़ा सागर भी क्रीड़ा का सरोवर है।

भले ही जंगल हो, जब आप कार्य-चिन्तन करने लगते हैं तब वह भी आपके लिए सुवर्ण समास्थल है, और गहरी समाधि में लग जाने पर तरह तरह के कोलाहलों से भरा हुआ नगर भी गिरि-कन्दरा है।

अपने सत्कर्मों के बल से प्रत्येक क्षेत्र में शुद्ध स्वर्ण को ही उपजाने-वाले धर्म प्रवर्तक हैं। आपकी दृष्टि में सुवर्ण इस पृथ्वी की पीली मिट्टी के समान है। छत्र चामर युक्त साम्राज्य के ऐश्वर्य भी आपके लिए भयंकर दंष्ट्रायें दिखानेवाले पिशाच हैं। आप इतने विरक्त हैं कि विश्व का वैभव आपको लुभा नहीं सका।

दूसरों के कोमल पैरों में पीड़ा न पहुँचाने के लिए स्वतंत्रता के दुर्गम पथ पर आप रेशम बिछा रहे हैं, लेकिन आप तो स्वयं वल्कल के डुक्ड़े पहने अपना जीवन बिता रहे हैं।

इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि गीता की जन्मभूमि को छोड़ और भूमि इस तरह के कर्मयोगी को जन्म नहीं दे सकती; सिवा हिमालय तथा विन्ध्या चल के मध्यप्रदेश के और कहाँ इस तरह का शमशील सिंह दिखाई पड़ेगा ? गंगा नदी की प्रवाह-भूमि में ही ऐसे मंगल फल देनेवाले अमर-तरु का जन्म हो सकता है। हे जगद्गुरो ! दुर्द्धर्ष महात्मन् ! मैं आपको बार-बार प्रणाम करता हूँ।

महात्मा गांधी

श्री पालानारायण नायर

अक्षय ज्योति स्वरूपाणि मेरी जन्मभूमि जीती है, जिसमें नक्षत्रलोक के साथ केलि संलाप करनेवाले, निर्दोष तथा निष्कल्मष महान ऊँचा हिमालय गंभीर होकर खड़ा रहता है।

सर्वांग सुन्दरी कुलीना मेरी जन्मभूमि जीती है, जिसमें सन्तोष तथा निर्वाण के फूल खिलनेवाले नन्दन वन सुशोभित हैं, मानव को फिर भी अज्ञानान्धकार से उबारने के लिए गीता की सुरीली वाणी गूँजने लगी है।

अंबिके भारतमाता ! तूने इस महान पुत्र को जन्म देकर अपना नाम सदैव के लिए वीर प्रसविनी रख लिया। अज्ञान तथा दरिद्रता के अंधकार को दूर करके ज्ञान की जलती हुई मशाल हाथ में लेकर तेरा पुत्र खड़ा रहता है।

आपका पुत्र इतना गरीब है कि उसकी उपमा कोई नहीं है, पर संसार भर में बुद्धि तथा समृद्धि बाँट रहा है।

आप सत्यान्वेषी साधु अर्द्धनग्न होकर ही खड़ा रहता है; किन्तु परिश्रम से देश भर के लोगों को वस्त्रों से सजा दिया है।

इसके दुर्बल दोनों हाथ विवेक का धक्का देकर विश्व के हृदय को कँपा रहे हैं। बुढ़ापे के कारण लाठी के सहारे खड़े होने पर भी, करोड़ों लोगों को सहारा दे रहा है। इतना ही नहीं, तप से शुष्क इस नेता के मुख से अहिंसा की वासुकी की वाणी गूँज रही है।

हमारे गांधीजी

श्री मारा शामरण

भारतमाता की कोख में जन्म लेकर, परतंत्रता की पीड़ा सहकर, सुख देने-वाली स्वतंत्रता की महान इच्छा को मन में रखकर, हमारा पथ प्रदर्शक कौन हैं ? हमारे गांधीजी !

भोग और भाग्य की कामना तथा राग, द्वेष, मोह की माया छोड़कर योगी की भाँति जीवन बितानेवाले जनता में त्याग का बीज बोनेवाले कौन हैं—हमारे बापूजी !

बड़ों में बड़े और छोटों में छोटे होकर संसार के मार्गदर्शक बनकर—विचरनेवाले कौन हैं ? हमारे गांधीजी !

देश के लिये कठिन कारावास को भी सहन कर अनेक कठिनाइयों को सहते हुए अयोध शिशु के समान दिन बितानेवाले और देशसेवा को ही अपना प्रथम कर्तव्य समझकर सर्वस्व समर्पण कर देनेवाले कौन हैं ? हमारे गांधीजी !

उपवास करते हुए सच्ची अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए समस्त संसार को कँपानेवाले और अपनी ओर आकर्षित करनेवाले पुरुषोत्तम कौन हैं ? हमारे बापूजी !

ज्ञान रूपी मधु को ढूँढते फिरनेवाले मानव मधुप को सर्वदा मधु से संतुष्ट करनेवाले और दीन मधुपों को अपनी ओर आकर्षित करनेवाले कौन हैं ? हमारे गांधीजी !

प्रेमसुधा की इच्छा कर आनेवाले प्रेमियों को बल देनेवाले, क्षेमसुधा चाहनेवालों को क्षेमसुधा सदैव वितरण करनेवाले कामधेनु से सौम्य कौन हैं ? हमारे गांधीजी !

क्रांति में सूर्य के समान, शान्ति में चन्द्र के समान, क्रांति में साधु के समान तेज दिखानेवाले कौन हैं ? हमारे गांधीजी !

भारत जननी के प्रिय पुत्र, उनके पुत्रों में अग्रगण्य हैं, और आँखों के तारे कौन हैं ?—हमारे बापूजी !

गांधी महात्मा

श्री ईश्वर सणकल्ल

हे चैतन्य-निधि ! तुम्हारा नाम सुनकर रोमांच हो रहा है। तुम्हारा चित्र देखकर अश्रुपात हो रहा है, और मौन मन में ही हमने बारंबार नमस्कार किया। देखने को अस्थिपंजर मात्र हो ! किन्तु अंतरतम के आत्मा से संसार को कँपानेवाला हुंकार भर रहे हो। जिस प्रकार तृण रूपी विश्वको भस्मसात् करने-वाली प्रचंड अग्नि छिपी रहती है, उसी प्रकार तुम्हारे आत्मा में एक अदृश्य शक्ति है। शरीर से हार जाने पर भी अपराजितों को तुमने पराजित कर दिया।

खाली हाथ से ही भूक को मिटा दिया। भिखमंगे रहते हुए भी जगत के सम्राट् बन गये। दिगंबर रहते हुए भी संसार को वस्त्र पहना दिया। तुमको बाँधनेवाले बंधन दूसरों की मुक्ति का साधन बन गये, और तुमको मारनेवाली मृत्यु स्वयं मर गई।

तुम्हारे मुख पर खेलनेवाली मंद मुसकान दूसरों की मूर्च्छा को हटा देती है। तुम जहाँ जहाँ जाते हो वहाँ वहाँ सुख शांति नृत्य करती है। जहाँ जहाँ वास करते हो वहाँ वहाँ शांति की वर्षा होती है। जो भारतवासियों के लिये एक सपना था वह तुमसे ही सत्य बन गया। हे भारत के वीर, आज तुम्हारे संकेत पर समस्त संसार वीरता के पथ पर चल रहा है। तुमने स्वयं उपहार बनकर आत्मार्पण कर दिया। यह सब देखकर मैं विवश हो गया, इसीलिए मैं तुम्हारी ओर खिंच आया। मैं तो तुम्हें देखते देखते अंधा बन गया और सुनते सुनते मूक बन गया। द्वन्द्वमय संसार ने तुम्हारी ओर देखकर सचमुच बड़ा अनुभव पाया है, तुमसे ही पूत हो गया है।

उपवास

श्री गोविन्द पाई

महर्षि शुक्र ने भगवान् को देखना चाहा, इसलिए हिमालय के हिमावृत एकांत में अपने हृदय की भूख मिटाने के लिए अपने शरीर का आहार दे देकर लंबे उपवासों द्वारा अपने मन रूपी रंभा (कामना) को जीतकर भगवान् को प्रसन्न किया और भक्ति-रूपी गंगा को भारत की प्यास बुझाने ले आए।

अश्वत्थ वृक्ष के नीचे दीर्घ उपवासों द्वारा भगवान् बुद्ध ने मार (मन्मथ) को जीता और इच्छा-रूपी जंगलों को पार कर उन्होंने हमें अष्टांगिक धर्म-मार्ग के द्वारा “निब्रह्म” निर्वाण-प्राप्ति का मार्ग बतलाया।

रुढ़ियों के अंधकार में जिसे हम धर्म मान बैठे हैं, हम उस सर्वव्यापी भगवान् के प्रकाश की खोज करते हैं। फिलस्तीन के जंगलों में बहनेवाली प्रसिद्ध नदी जोर्डन के तट पर महात्मा ईसा ने चालीस दिनों का लम्बा उपवास करके स्वर्गराज्य का दृश्य देखा।

अरबों के असंस्कृत और अज्ञान से भरे हुए जीवन को देखकर अत्यंत दुखी होकर अरब को नवजीवन देने के ही लिए हीरा पहाड़ की गुफा में लंबे लंबे रतजगे और उपवास कर अन्त में एक भगवान् के सर्वरक्षकत्व की घोषणा की और एक सर्वरक्षक भगवान् के महत्व को बतलाकर अरबों के अज्ञान को दूर किया।

हे गुरुवर महात्मा गांधी ! आपने देहली में एकीस दिनों का उपवास कर भारतीयों के ही क्यों, संसार के हृदय में विश्वप्रेम का बीज बो दिया है। क्या उस बीज से अंकुर कभी नहीं निकलेगा ? अवश्य निकलेगा और वह प्रेमलता भारत की भाग्यलता बनकर हमें अमर बना देगी।

निःस्व

श्री गोविंद पाई

दधीचि महर्षि ने आगापीछा किये बिना ही देवताओं की सहायता के लिए अपनी अस्थियाँ निकालकर दे दीं। एक पत्नी कबूतर को बचाने के लिए राजा शिवि ने अपने ही शरीर का मांस दे दिया। राजा मयूरध्वज (शिखिकेतन) ने अपने शरीर का आधा भाग उन श्रीकृष्ण और अर्जुन के लिए दिया जो दूसरा आधा भी माँगने से न चूँके। राजा भरत ऋषि होने पर भी एक अनाथ मृग-शावक की रक्षा के लिए संसार के बन्धन में आबद्ध हुए।

भगवान बुद्ध ने अपना सब कुछ त्यागकर उस परम सत्य के प्रचार के लिए जिसका उन्हें साक्षात्कार हुआ था देश-विदेशों में भ्रमण किया, गुरु तेगबहादुर ने अपने को तलवार की धार में अर्पण किया, राजपूत की महाराणी पद्मिनी ने चित्तौड़ के गौरव की तथा स्वधर्म की रक्षा के लिए अपने को अग्निकुंड में समर्पित किया।

एक निःस्वार्थी क्या नहीं त्याग सकता और क्या नहीं पा सकता ? पृथ्वी के हित एक निःस्वार्थी ही कष्ट भेल सकता है, और दूसरों के लिए मर सकता है।

जीव संसार की यातनाओं को भोगने ही के लिए है, और यातनाओं का भोगना ही जीव की महानता है। एक निःस्वार्थी के कष्ट भेलने से ही मानव जीवन महत्व को प्राप्त होता है। कष्ट का सहना कभी निष्फल नहीं होता। दुनिया प्रगति को पाती है, इसीलिए कि निःस्वार्थी का त्याग उस प्रगति में निहित है। इसीलिए, उसका कष्ट भेलना कभी निरर्थक या व्यर्थ नहीं होता।

हे पूज्य महात्मा ! सचमुच हम मानते हैं कि भारत का भाग्य आप ही की निःस्वार्थता पर निर्भर है, और आपका निःस्वार्थ ही हमारा पथप्रदर्शक है।

युगे-युगे

श्री सुरकुंद अण्णाजी राव

त्रेतायुग में श्रीरामचन्द्रजी कपि-सेना लेकर लंकाधीश से जब युद्ध करने गये, तब सुन्दर नगर देखकर उन्हें बहुत दुख हुआ। उनके मनमें आया कि जब मैं दशमुख से युद्ध कर उसे परास्त करूँगा, तब यह सुन्दर

कनारसी

उश्वास

राजधानी, यहाँ के गगनचुम्बी भव्य भवन और कला की साक्ष्य देनेवाली अट्टालिकाएँ, सब कुछ मिट्टी में मिल जायेंगी। हाय ! ऐसा नाश मुझसे देखा न जायगा। यह कहकर उन्होंने छल छल आँसू बहाये थे।

महात्माजी जब देहली नगर के राज-प्रतिनिधि से मिलने गये, तब यह विचार मन में आते ही कि आंग्ल-देश में इस घोर लड़ाई के कारण सत्यानाश होगा, वहाँ के सुन्दर भवन धूलि में मिल जायेंगे, कला का नाम भी न रहेगा, उन्हें भी श्रीरामचन्द्रजी के समान दुख हुआ।

शत्रुओं का नगर हो या मित्रों का हो, उसका नाश होते देख ये दोनों महापुरुष दुःख-विह्वल हो गये। ये महापुरुष सत्य की रक्षा के लिए अवतार लेकर इस मृत्यु-भूमि पर आये हैं। जैसे राजाओं में रामचन्द्रजी श्रेष्ठ माने जाते हैं, वैसे ही महात्माजी भरत-देश में श्रेष्ठ और पूज्य हैं।

गांधीजी का पेट

श्री चुआङ्-युङ

जन भीत-भीत अति
 स्तालिन-पुरी पर—
 कम्पिता धरित्री के हृदय पर—
 हो रहा है, क्रूर घात-प्रतिघात !
 स्तालिन-पुरी स्वतंत्र,
 जय-घोष से तुम्हारे मैंने सुना, कि
 है इस धरती का हृदय धड़कने लगा।
 बूढ़ा वह गांधी एक दुःख में,
 लोग करते थे जब उत्सव का समारम्भ,
 किया उसने था तब निज उपवासारम्भ।
 उत्सवोत्साह का प्रदर्शन सड़क पर,
 मुँह ढाँप रोता बूढ़ा रंक गली-मुख पर।
 स्तालिन-पुरी है यदि हृदय धरित्री का
 गांधी का तब तो उदर पाक-यंत्र है।
 खड़े होंगे कैसे हम ?
 उछले हृदय क्यों न—कितना ही
 जब जलता है पेट खाली शुष्क-ज्वाला से—क्लेश से
 और (हाय,) न्याय की स्वतंत्रता की, मान की मनोश आशा
 जंग के महान् उन रेडियो के केन्द्रों से—
 घोषित हैं केवल दो चार बूँद नीबूरस—

कोरे जलबीच, (जिसे गांधी हाथ पीता है ।)

पश्चिम की ओर मुँह किए हम ताकते हैं

उठता जहाँ से है प्रकाश !

हरे खेत पुष्पिकन के, शेली और वायरन के जलधि दुरवगाह
निर्निमेष देखता हूँ होकर समुत्सुक मैं

आशा हूँ लगाए कि

हमारी इस प्राची की निगाह में प्रतीची सा प्रकाश हो ।

मरुभूमि में हरियाली

श्री 'उ-शिञ्जौलिङ्ग' श्री दिवाकर उपाध्याय

गांधी,

मरुभूमि में हरियाली ।

उत्ताल तरंगों ऊपर नीचे निर्मल-जलधारा ।

हिम-क्रूर शीत बाहर है,

भीतर जलती है ज्वाला ।

बीती हैं शरत् पछत्तर,

जीवन कठिनाई वाला ।

पर सुना फूटती मुँह से शिशु दिव्य हँसी की धारा ।

कुछ सत्य मनुज जीवन का

पा सकते स्वाद कहाँ से ?

(केवल वस बन्धु !) यहाँ से ।

महात्मा गांधी

श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर

अनुवाद पृष्ठ ७ में देखिए ।

चिरन्तन भारत

श्रीमती सरोजिनी नायडू

तुम्हारी परिवर्तनहीन आँखों ने युगान्तों के दृश्य, उत्थान और पतन
देखा है ।

शताब्दियों फूलों ने तुम्हारी परिक्रमा की है । आरम्भ के उपःकाल की
शान्ति में संसार के साम्राज्यों से तुम्हारी आयु बढ़ी रही है, और उनके
पौराणिक तेज और श्री से कहीं अधिक तुम्हारा प्रकाश रहा है । काल के दिगन्त-
व्यापी कीर्तिवाले तुम्हारे प्रतिद्वन्दी ईरान, मिस्र, यूनान और बैबीलोन अतल के
विबर में विलीन हो गये ।

अंग्रेज़ी

इक्यावन

तुम्हारी यह गंभीर भविष्यदर्शी आँखें भविष्य का क्या रूप देख रही हैं ?
उसमें संहार की स्थिति और लय कितनी तीव्र और कितनी अभूतपूर्व है ?

कौन से राज्य अकस्मात् उठे और गिरेंगे जब तक कि तुम जरारहित,
सुरक्षित, सर्वोच्च, सीमा और कालहीन स्थिरता में उन सबको पार
करते रहोगे ?

गांधी

श्री हुमायूँ कबीर

विस्तृत भूखण्ड और सीमाहीन काल को पारकर, उसने इस प्राचीन जाति
की आशाओं में जीवन के स्पर्श से निराशा के गहन अन्धकार में भी शक्ति
फूँक दी। अजगर की कुण्डली पर कुण्डली मारकर यह देश, मोह-मुग्ध-सा
सो रहा था। किन्तु उसके स्नायुजाल में साँस की गति का संचार हो रहा है।
गांधी ने सम्मोहन की तन्द्रा भंग कर दी, उसमें जीवन-बल पैदा किया और अब
उन जड़ीभूत अंगों से कँचुल छूट रही है।

भौतिक दुःखों के इस व्यापक दृश्य में भी वह निर्बल स्वरूप अग्रसर हो रहा
है, जहाँ मृत्यु धीरे धीरे सारी लोकस्थिति, आशा, विश्वास और कर्म को भूरे रंग
में रँगकर निर्जीव करती रही है। यह क्या रहस्य है जो इस सारे दृश्य को ही
बदल रहा है ? यह गहरी तीव्र धारा कहाँ से फूट निकली जो इस भूमिपट को
जीवन के वेग से हिला रही है। यह सुकुमार मूर्ति इस दृश्य में प्रतिष्ठित होकर
सारे भौतिक दुःखों पर विजय प्राप्त कर रही है और नवजीवन की पीड़ा और
प्रमा से मृत्यु के इस भूरे दृश्यपट को चीर रही है।

यह मृतक, गतिहीन और विकृतकाय महाद्वीप आशा की नई रागिनी में
पुलकित आगे बढ़ चला है। प्रेरणा संचित हो रही है, जनता हिल उठी है
और आगे बढ़ने के लिए अधीर होकर जोर मार रही है। धीमी और हास-
मयी मृत्यु के आसन पर जीवन की उत्तेजना प्रतिष्ठित हो रही है।

काल की रेतीली भूमि और भारतीय सीमा के छोर पर यह अकेली मूर्ति
खड़ी है और इसके अतल से कठोर विषाद और अमर आशाएँ खींच
रही है।

हिन्दुस्तान के अशान्त कारवाँ को यह साहस और संकट के नये पथ
पर लगा रही है, जहाँ जीवन के तत्वों से ही नये विधान, नये उपदेश और नये
आदेश लेने हैं। वह मूर्ति कौन है ? गांधी, महात्मा, भारत के नेता और इस
देश की आत्मा।

गांधी

मेरी सीग्रीस्ट

यह कौन है, जो जगत के बीच से उस ओर चला जा रहा है ? ईसा या

वाचन

अंग्रेजी

बुद्ध । इस साधारण मार्ग पर यह शान्ति का अवतार, जिसके माध्यम से विश्राम हीन भारत चरम चेतन की ओर आकर्षित है ?

चुप ! क्या विस्मय है यदि हमारी इस धरती पर फिर उसी कोटि का नेता पैदा हुआ हो, जिसमें विजय के वे ही लक्षण हैं जो उसमें थे, जिसने नज़ारेथ में विस्मयजनक मार्ग का अवलम्बन किया था ।

कौन है यह जो कारागार की बन्द कोठरी से अपनी आत्मा को विश्व का अतिक्रमण करने के लिए भेज रहा है ? इस युग में व्याप्त हो उठनेवाला, जिसके भीतर से वेद और उपनिषद् बोल रहे हैं, जो नंगी और भूखी स्थिति में उस स्थान की खोज में जहाँ मनुष्य का दुःख सबसे गहरा है—भारत की विषाद-मयी भूमि में भीषण शोक की अनुभूति के लिए चल पड़नेवाला यह कौन है ?

यह किसका आसन है जो संसार को ललकार रहा है, जो प्रतिरोध का वह दैवी आत्मबल दिखा रहा है, जहाँ किसी भी अन्य मनुष्य की गति नहीं ? यह किसकी ध्वनि है जिसमें पूर्व की रागिनी गूँज रही है, यह किसका प्रेम है जो छल और दम्भ के शरीर छेदन के लिए खुली हुई तलवार है ? यह किसका मौन है जो संसार के एक छोर से दूसरे छोर तक पुकार रहा है ?

इस विस्मय-विभूति उन्नायक में सारी जातियाँ मिलकर एक हो रही हैं, इसके हृदय में पूर्व और पश्चिम का एक ही चिरन्तन रूप है और इसके हृदय से प्रेम की अविश्राम रागिनी निकल रही है ? उन कोटि कोटि पददलितों के लिए जो युगों से अत्याचार के चक्रों के नीचे पिस रहे हैं—वह अविश्रान्त महा-पुरुष उन्हें अतीत की स्मृति में किसी महान् उषःकाल और परम्परा का सत्य सन्देश दे रहा है ।

अपने एकान्त कारागार में, भारत के किसी कोने में वह आकाश और सूर्य की संगति में प्रतीक्षा कर रहा है । क्या है यदि फिर भी कोई ईसा उन्मत्त शक्ति के द्वारा सूली पर चढ़ा दिया जाय ? अन्धे अपना स्वभाव नहीं बदलते ।

इस पृथ्वी पर पैर धीरे से रखो, कदाचित् भारतवर्ष में फिर कोई ईसा पथ-प्रदर्शन कर रहा है ।

गांधी

श्री वेन्जमिन कालिन्स उडबरी

अब कोई सन्त फिर कब प्रकट होगा जो पवित्रात्मा अपनी जाति का उद्धारक होगा ? ईसा फिर कब एक बार और अपना दर्शन देंगे ?

गौतम ने स्वेच्छा ही से तो राजप्रासाद छोड़ा था । और वे जब अपने अज्ञात पथ पर बढ़े थे, शान्ति, क्षुधा, असहाय और संज्ञाहीन के जब उस वट-वृक्ष के नीचे अपने ही भार से दब गये । ईसा ने तो पापियों की मुक्ति के लिए मृत्यु स्वीकार किया ।

अंग्रेज़ी

तिरपन

अपने व्रत का ऐसा ही निष्ठावान एक व्यक्ति अवतरित हुआ है, जो पराधीन मानवों की एक जाति का महात्मा है।

याद आया। गांधी अपने राष्ट्र की आत्मा का बन्धन काट रहा है। आत्मा की मुक्ति यह उसकी माँग है।

क्या बुद्ध को शान्तिपूर्ण निर्वाण मिल गया या ईसा फिर इस धरती पर चल पड़े हैं।

प्रजातंत्र के प्रति

श्री हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय

वह विश्वशान्ति का प्रतीक है। कोई भी अत्याचार उसकी ज्योति को न स्पर्श कर सकता है न मंद कर सकता है। उसके बंदी होने में समस्त देश बंदी है और उसके स्वतंत्र होते ही समस्त देश स्वतंत्र होगा।

प्रजातंत्र ! क्या यह तुम्हारे लिए उपहासास्पद नहीं है कि जो तुम्हारे लिए जीवित है, उसी को तुम बंदी बनाये हो। हमें इस समय तो रोषोन्मेष सा हो रहा है—हे परमात्मा उन्हें क्षमा करो जो यह भी नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।

उसे मुक्त करो, क्योंकि इतिहास प्रतीक्षा नहीं कर सकता ! उसे मुक्त करो, क्योंकि वर्तमान युद्ध के रक्त से लाल हो रहा है। उसे मुक्त करो क्योंकि हमारे भाग्य का निर्णय होने जा रहा है। प्रजातंत्र ! इससे तुम्हारे जीवन को निश्चित दिशा मिलेगी।

मानवता की लेखनी को उसके रक्त बिन्दुओं में डूबकर यह घोषणा न करने दो कि तुम मिथ्या कह रहे हो—क्योंकि यदि यह मानवों के बंदीगृह से सदैव के लिए विदा हो गया, तो क्या उत्तर दोगे ?

मन्दिर के घंटे बजे

श्री एस० के० डूंगरकर

देश में उत्साह और आनन्द व्याप्त हो रहा है। उसके देशभक्त ऋषि, उसके सबसे महान् पुत्र ने एकमात्र आत्मबल से, भीषण अग्निपरीक्षा में विजय प्राप्त कर ली है। उसने जब अपने उपवास की घोषणा की, मृत्यु जैसी निराशा देश में छाया की तरह छा गई। बहुतों ने समझा बस यह अब प्रलय की सूचना है, सर्वनाश और ध्वंस निकट आ गया है। घर-घर से, हृदय-हृदय से संसार के कोने कोने से, निकट और दूर से प्रार्थनाएँ की गईं। अनन्त आकाश मन्दिर का घेरा बन गया, जिसके नीचे कोटि कोटि मानव धड़कते हुए हृदय से घुटनों पर बैठ गये।

आनन्द मनाओ ! और मन्दिर के घंटों को गंभीर ध्वनि में बजने दो, क्योंकि अब वह मुस्करा रहा है और सत्य के सर्वोन्नत ऋषि को फहरा रहा है।

चौवन

अंग्रेजी

किन्तु, तुम क्या देखने गये थे ? वायु से प्रताड़ित तिनके को ? उसकी करुणा हिल उठी ।

वह भी मनुष्य है, जिसने मृत्यु के आवरण के भीतर से अमरत्व की प्रतिष्ठा के लिए सतत प्रयत्न किया ।

अपने मांस और मांस के बन्धनों से तो वह मुक्त हो गया; किन्तु उस पर भी उसने अपने बन्धु के घावों से रक्त बहते देखा ।

मानवता की पीड़ा से मुक्त करने के लिए प्रेम की ओर उसने अपनी आत्मा को मुका दिया है ।

साम्राज्य उसके पथ का अवरोधक बना । उसके प्रतिकार के लिए उसने अपना शस्त्र उठाया—रोष का नहीं—प्रेम का ।

शत्रुओं के लिये भी उसके पास केवल प्रेम है । पत्थर, घूँसे और कारागार उसकी क्षमता को विचलित न कर सके ।

साम्राज्य अपने रक्त रंजित पथ पर दौड़ता जा रहा है । किन्तु उसका राज्य चन्द दिनों का नहीं है ।

प्रेम बन्धन नहीं मानता । सम्राटों से त्यक्त किये गये इस विश्व पर प्रेम का अधिकार है ।

नियति के उस विनम्र गृह के सामने संसार के उसपार उत्सुक मानवता प्रतीक्षा कर रही है जहाँ एकमात्र प्रेम की अनन्त शक्ति है जो आपने शुद्ध काल में आ रही है ।

बुद्ध गांधी

श्री एल० एन० साहू

गांधी, बुद्ध गांधी, वह कितना सशक्त है, आश्चर्यजनक ? वह मरता नहीं, इच्छा हो तो उसे मारकर देखिए, वह नहीं मर सकता । वह अमर महापुरुष है ।

बुद्ध गांधी का निर्माण अनेक साधनाओं से हुआ है । उसने यौवन की अग्नि तथा इच्छाओं की ज्वाला से मोर्चा लिया है । उसने सभी कुत्सित भावनाओं का दमन किया है । वह ऊँचा उठा । वह उच्च नक्षत्रों के साथ प्रलय तथा अग्नि से खेल खेला है । उनको पारकर उसने विश्व-माता महामहेश्वरी के दर्शन किए हैं । उसने पृथ्वी को पदाक्रान्त किया है ।

सभी स्थान उसके हैं । कोई भी नवीन नहीं । महामहा में लीन होने के कारण वह शक्तिमान् है । यह है गांधी, बुद्ध पुरुष । वह भारतवर्ष की वेदना तथा क्रोध का मूर्तिमान् स्वरूप है ।

अग्ने जी

पंचपन

वह संपूर्ण अग्नि तथा संपूर्ण सौंदर्य है। गत बीस वर्षों से अधिक काल से वह किस अग्नि-परीक्षा में लीन है? वह सारे भारतवर्ष को अपने साथ शक्ति तथा मुक्ति की ओर ले चल रहा है। शत्रु चारों ओर हैं। युद्ध की मेरी उच्च घोष कर रही है। परन्तु वृद्ध पुरुष गांधी ने यौवन को सफलतापूर्वक ग्रहण किया है। महान साधक, मनसा पूर्ण संन्यासी, वह भारत की जीवित वाणी तथा प्रतीक है।

बलि-पुरुष

श्री साधु टी० एल० वासवानी

आज मैं अपने हृदय में संगीत लेकर उठा जैसे कि अशोक के वृक्ष में वायु की लहरें उठती हैं।

उसने कहा “वह स्वप्न अभी सत्य होगा, क्योंकि भगवान् के स्वप्न कर्म हैं और भारतीय स्वतन्त्रता का स्वप्न उसी का स्वप्न है।”

मैंने पूछा ‘विजय का मार्ग कहाँ है?’

मेरी मूर्खता ने उत्तर दिया ‘जो कष्ट सहन करते हैं, उन्हीं की जीत होती है।’

दीवारों और पहरों के भीतर आज महान् आत्मा गांधी वन्द हैं। किन्तु, दीवारों और कारागारों ने कब आत्मा को आत्मा से पृथक् किया है? कष्ट और संकट की इस स्थिति में, उस मुक्तात्मा का रहस्य-सिंहासन आज कोटि-कोटि हृदयों में स्थापित है और संसार के चारों ओर यह निनाद घूम रहा है कि शक्ति न्याय से फिर लड़ रही है।

वह कहते हैं—कौद किया। मैं कहता हूँ उसकी आत्मा तो सनासन तीर चलाकर लक्ष्यबोध करती जा रही है। अन्धकार में भी उसका प्रकाश फूटकर हृदय-हृदय में गति प्रदान कर रहा है और उसकी विनीत आत्मा उस संघर्ष का नेतृत्व कर रही है जिसका चरम लक्ष्य स्वतन्त्रता है क्योंकि वह अमर है।

उस एकता और प्रेम के ऋषि को प्रणाम है। राष्ट्र के जीवन में उसका स्वप्न प्रवेश कर रहा है।

हमारे ऊपर चिरन्तन आकाश है, हमारे ऊपर अब भी वीरों की, प्राचीन देवों और ऋषियों की मंगल कामनाएँ हैं और गांधी अभी भी हमारा नेता है।

साथियो! दुर्भाग्य की इस निराश घड़ी में मुझे अभी भी विश्वास है कि भारत के दुःखों का अन्त चरम मोहक और सुन्दर होगा। नित्य के प्रातःकाल का सूर्य, जब मैं उसकी पूजा आहत हृदय से करता हूँ उस बलि पुरुष के जीवन और श्री का सन्देश लाता है और वह यह है कि “पीड़ित राष्ट्र की विजय होगी।”

विपत्ति-ग्रस्त कोई सम्राट् नहीं, केवल एक निरीह छोटी बकरी, अपने नंगे पैरों पर मुस्कराती हुई, जो अपने मुकने में भी लौह-कठोर है।

गांधी एक छत पर लगाये गये शिविर में बीमार हैं, जहाँ सूर्य की किरणों के प्रेम की वर्षा हो रही है।

अपने सिर पर रखे गये रुई के गद्दे की ओर संकेत कर वह कहते हैं—

‘मैं इस पृथ्वी से पैदा हुआ। यह भारत की मिट्टी है जो मेरा मुकुट बन रही है।’

संसार पर उनका जो ऋण है, वह उन्हें ईश्वर से मिलेगा, उन्हें इसका विश्वास है।

उनका संघर्ष स्वर्ग के निकट हो रहा है और उन्हें विश्वास है कि उन्हें अलक्षित विजय मिलेगी। उनकी वह रणभेरी बज रही है जो नरक की अन्तिम परिखा में भी गूँज रही है।

एकान्तवासी वीर जो झिलमिल भविष्य को ललकार कर अपनी ओर खींच रहा है।

किन्तु, उसकी विराट् आत्मा विश्व को भय से प्रकम्पित कर रही है।

इस पुरुष के भीतर से मनुष्य का पतित और तिरस्कृत प्रेम, जीवन की ध्वस्त और भूमिसात् स्वतन्त्रता, शारीरिक श्रम जो सम्मान और पुरस्कार से वंचित रखा गया है, चीत्कार कर अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह की पुकार कर रहे हैं।

ईश्वरीय न्याय की प्रतिष्ठा और यशःस्तुति हो। लोकजीवन के विषाद का गायक जो धरती माता के निकट है।

सत्य का एकान्त अन्वेषक जिसके लिये न तो रात है और न निजी सुख, इस पुरुष से बढ़कर ज्वलन्त देशभक्त और कहाँ है ?

इस पुरुष से बढ़कर भविष्यदर्शी आत्मरूप और कहाँ है ?

भूख और पीड़ा के अन्तहीन पथ पर चलनेवाला अकेला तीर्थ-यात्री, जो प्रकृति से उद्धत प्रथम मनुष्य का रूप देखने के आनन्द में लीन है। वह पुरुष जो दरिद्रनारायण की सेवा को भक्ति कहता है, वह पुरुष जो अपने अधिकार की सम्पत्ति खोकर लघुता का अनुभव करता है।

कौन, केवल दरिद्र ही दूसरे दरिद्र की रक्षा कर सकता है; मैं गांधी के शिविर से निकलकर सीढ़ियों से उतरने लगा। बाहरी सहन में सुन्दर प्रकृति व्यंग्य कर रही है। पक्षी और वृक्ष शान्ति-संगीत में मग्न हैं। एक वृक्ष की छाया में तीन बकरियाँ खेल रही हैं। मैं उनके निकट से जा रहा हूँ जो सहिष्णुता और प्रेम की प्रतीक हैं।

प्रकाशक
पं० भृगुराज भार्गव
अवध-पब्लिशिंग-हाउस, लाटूश रोड, लखनऊ

मूल्य दस रुपया

92 Lo-Touche Road
Lucknow.

मुद्रक
पं० भृगुराज भार्गव
भार्गव-प्रिंटिंग-वर्क्स, लाटूश रोड, लखनऊ
SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY.
Jangamwadi Math, VARANASI.

Acc. No. 3300 7577

E 222





